राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ६४

विविधविद्वत्कृत

एकाक्षरनाम-कोषसंग्रह

प्र का श क

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ६४

विविधविद्वत्कृत

एकाक्षरनाम-कोषसंग्रह

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी, आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ६४

विविधविद्वत्कृत

एकाक्षरनाम-कोषसंग्रह

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विविधविद्वत्कृत

एकाक्षरनाम-कोषसंग्रह

सम्पादक

पन्यासप्रवर मुनि श्री रमणीकविजय

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२१ | भारतराष्ट्रिय शकाब्द १८८६ | खिस्ताब्द १९६४

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य- ९.००

मुद्रक

१—पृ० १ से १७२ तक लक्ष्मीबाईनारायण चौधरी, निर्णयसागर प्रेस,
२६-२८, कोल भाट स्ट्रीट, बम्बई नं० २

२—शेष कार्य - श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, कचेहरी रोड, जोधपुर

ग्रन्थसमर्पणम्

भ्रमति मनोभ्रमरो मे यच्चरणाम्बुजपरागविसरेषु ।
सङ्गायति रसना मे यद्विशदगुणावलीगानम् ।। १ ।।

कायः समुद्यतो मे यन्निर्दिष्टेषु सर्वकार्येषु ।
पुण्यात्मनां नु तेषां पुण्यभुवां पुण्यवरधाम्नाम् ।। २ ।।

आगमप्रभाकराणां विद्वद्वरचतुरविजयशिष्यानाम् ।
सत्कान्तिविजयमुनिपतिपट्टान्तेवासिशिष्यानाम् ।। ३ ।।

पदपदजिज्ञासारतजङ्गमकोशायमानदेहानाम् ।
कोमलकरारविन्दे स्थविराणां ज्ञानयोगानाम् ।। ४ ।।

अर्पयति ग्रन्थमिमं विबुधानां पुण्यविजयप्रख्यानाम् ।
रमणिकविजयो बालो निर्ग्रन्थश्चरणरजःकल्पः ।। ५ ।।

पञ्चभिः कुलकम् ।

विषयानुक्रम

		पृष्ठांक
	संचालकीय वक्तव्य	१ – १२
	सम्पादकीय प्रस्तावना	१ – १२
	भूमिका	१३ – २४

क्र. सं	नाम	कर्त्ता	श्लोक-संख्या	पृष्ठाङ्क
१	एकाक्षरनाममालिका	विश्वशम्भुः	११५	१ – ११
२	एकाक्षरकाण्डः	राघवकविः	८५	१२ – १८
३	एकाक्षरनाममाला	सौभरिः	१००	१९ – २७
४	द्व्यक्षरकाण्डः	,,	१११	२८ – ३७
५	एकाक्षरशब्दमाला	माधवः (हरितालराजामात्य)	१३०	३८ – ४८
६	एकाक्षरकाण्ड नानार्थरत्नमालागत	इरुगपदण्डाधिनाथः	७७	४९ – ५५
७	एकस्वरकाण्डः (अनेकार्थसंग्रहगत)	आचार्य हेमचन्द्रः	१६	५६ – ५७
८	एकाक्षरनाममाला	सुधाकलशमुनिः	५०	५८ – ६२
९	एकाक्षरकोषः	महाक्षपणकः	४१	६३ – ६६
१०	एकाक्षरीयप्रथमकाण्डः	परमानन्दनन्दनः	४४	६७ – ७०
११	एकाक्षरनाममाला	वररुचिः	४७	७१ – ७५
१२	एकाक्षरकोषः	पुरुषोत्तमदेवः	३८	७६ – ७९
१३	एकाक्षरनाममालिका	अमरचन्द्रः	२१	८० – ८१
१४	एकाक्षरीनानार्थकाण्डः	श्रीधरसेनाचार्यः	३५	८२ – ८४
१५	एकाक्षरसंज्ञः काण्डः	महीपसचिवः	४६	८५ – ८९
१६	एकाक्षरकोशः		२९	९० – ९२
१७	एकाक्षरनाममाला	महाराजशाहराजः	२४	९३ – ९४
१८	एकाक्षरनाममाला		१८	९५ – ९८
१९	एकाक्षरनाममाला	मेदिनीकरः	५३	१०० – १०३
२०	एकाक्षरी-मातृकाकोशः		५३	१०४ – १०८
२१	अजिरादि-एकाक्षरी-नाममाला		४६	१०९ – ११३
२२	नत्वादि-एकाक्षरीनाममाला		१५	११४ – ११५
२३	अभिधानादि-एकाक्षरी-नाममाला		३७	११६ – ११९

क.सं.	नाम	कर्त्ता	श्लोक संख्या	पृष्ठांक
२४	एकाक्षरकोष:	मनोहरपण्डित:	३१	१२० – १२२
२५	एकाक्षरी-नाममाला	कालिदासव्यास:	१५३	१२३ – १३६
२६	एकाक्षरी-नाममाला	महेश्वरकवि:	१६	१३७ – १३६
२७	एकादिसंख्या संज्ञाकोष:		३०	१४० – १४२
२८	एकाक्षरी नाममाला (राजस्थानी भाषानिबद्ध)	कवि रतनूं वीरभांण	३४	१४३ – १४५
२६	विद्वत्प्रबोधशास्त्रम् (सौभरिकृतद्वयाश्रटकाव्यरूपं टिप्पणसहितं)	वाचनाचार्य श्रीवल्लभगणि:		१४६ – १७२

परिशिष्ट

एकाक्षरशब्दकोषसंग्रह:—शब्दानुक्रम:	१७३ – २६४
शब्दसूची	२६५ – २७१

शुद्धि - पत्र

१. प्रस्तुत संग्रह में वीरभांण रतनूं कृत राजस्थानी एकाक्षर नाममाला पृ. १४३–१४५ पर छपी है। इसके सब मिला कर ३४ दोहे हैं, परन्तु इनमें 'ग' अक्षर वाचक शब्द बतलाने वाले दो दोहों का अभाव है। वे इस प्रकार हैं—

गो गनेस गंधर्व पुन, गीत गाध गो आंन।
गो जु धेनु अरु सारदा, हंसवाहनी जांन ॥८॥
गो इंद्री जल किरन पुन, धर तरु खं(ख) गो मांन।
छंद दिसा गो कहत है, कविजन सबै बषांन ॥९॥

ये दोहे जोधपुर निवासी विद्याव्यसनी श्री मदनराज दौलतराज मेहता की प्रति में प्राप्त हुए हैं। इस प्रति में ये दोनों दोहे ७ संख्यक दोहे के बाद दिए हुए हैं। परन्तु, मेहताजी की प्रति में मुद्रित प्रति में आया हुआ अन्तिम दोहा अनुपलब्ध है, जो इस प्रकार है—

विदुषन मुख सुनि तरक षट, अष्टादसहि पुरान।
नाममाल एकाक्षरी, भाषी रतनूं भांन॥

(प्र. सं.)

२. पृष्ठ १४३ से १६८ के स्थान पर पृष्ठ संख्या १७३ से १६६ समझें।

सञ्चालकीय वक्तव्य

संसार में विद्यमान प्राचीन भाषाओं के इतिहास में संस्कृत भाषा का स्थान सर्वोपरि है। संस्कृत संसार की एक सर्वश्रेष्ठ प्राचीन भाषा है। भाषा-शास्त्र की दृष्टि से संस्कृत सब प्रकार के उत्तम संस्कारों से अलंकृत है और इसीलिए इसका नाम संस्कृत-संस्कार-विशिष्ट-प्रसिद्ध हुआ है। संसार की प्राचीनतम भाषाओं का परिचायक जो थोड़ा बहुत अल्प-स्वल्प ग्रथित वाङ्मय उपलब्ध हैं उसमें सबसे प्राचीनतम और सबसे उत्तम संस्कृत में ग्रथित वाङ्मय ही है। संस्कृत-वाङ्मय अर्थात् संस्कृत भाषा में ग्रथित साहित्य बहुत विशाल और समृद्ध है। वेद की संहिताओं के आदि रचनाकाल से लेकर आज तक संस्कृत में न जाने कितने ग्रन्थों की रचना हुई? अनुमान करने के प्रमाणों के आधार से कहा जा सकता है कि इन ग्रंथों की संख्या लाखों की होगी। साहित्य कें इतिहास के आधारभूत प्रमाणों से ज्ञात होता है कि इस आनुमानिक संख्या का बहुत बड़ा भाग आज उपलब्ध नहीं है, तथापि जितना भी भाग उपलब्ध है वह भी कई हज़ारों की संख्या में परिगणित है। इनका परिमाण श्लोकों की संख्या में किया जाता है जो ३२ अक्षरों का होता है। अभी तक किसीने इस संख्या का अनुमान नहीं लगाया है, परन्तु उनकी संख्या कई करोड़ों में गिनी जाने योग्य है।

संस्कृत-भाषी आर्य-जाति ने हज़ारों वर्ष तक पूर्वकाल में जो कुछ ज्ञान-विज्ञान प्राप्त किया या अनुभूत किया उस सबको उन्होंने अपनी दिव्य भाषा संस्कृत में ग्रथित किया। ज्ञानोपासक आर्य ऋषियों ने अपनी जाति और अपने राष्ट्र अर्थात् अपने पितृकुल और उनके वासस्थान पितृ-देश के परिचायक नाना प्रकार के सूक्त, आख्यान, कथानक, प्रवाद, जन-श्रुति, किंवदन्ती आदि विषयों के सैकड़ों संकलन, संग्रह और शास्त्र-ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही निबद्ध किये। ये ग्रन्थ संहिता, श्रुति, स्मृति, पुराण आदि के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके अतिरिक्त उन ऋषियों और शास्त्रद्रष्टाओं ने आर्य-जाति से संबद्ध एवं परा-पूर्व से प्रचलित सब प्रकार के जीवन-व्यवहार को प्रदर्शित करने वाले सामाजिक आचार और विचार विषयक असंख्य ग्रन्थ भी इसी संस्कृत भाषा में निबद्ध किये। ये सब ग्रन्थ स्मृति और धर्म-शास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन ऋषियों ने विश्व,

ब्रह्माण्ड, जगत्, पृथ्वी, दिव्य, अन्तरिक्ष आदि सृष्टि विषयक एवं जीव, आत्मा, ईश्वर, ब्रह्म आदि चैतन्य-तत्त्व-विषयक अर्थात् सभी प्रकार के जागतिक, आध्यात्मिक और पारलौकिक विषयों से सम्बन्ध रखने वाले तात्त्विक और दार्शनिक विचार भी इसी संस्कृत भाषा में बहुत ही गम्भीर, गहन, गूढ़ एवं परिष्कृत शैली में गुम्फित किये। इस प्रकार के ग्रन्थ दर्शन-शास्त्रों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार व्यावहारिक मानव-जीवन और जन-समूह से सम्बद्ध राज्य-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था, आरोग्य-व्यवस्था विषयक ग्रन्थ भी संस्कृत में रचे गये। तदुपरान्त गणित, ज्योतिष, खगोल, भूगोल, स्थापत्य आदि विद्या और कलाओं के ज्ञापक सैकड़ों ग्रंथ भी संस्कृत में रचे गये।

उक्त प्रकार के शास्त्रकारों के अतिरिक्त पूर्वकालीन कवियों ने भी अपने भावों को सब प्रकार की अभिव्यक्तियों को संस्कृत ही में प्रदर्शित किया और इस निमित्त हजारों काव्य-कृतियाँ और उससे सम्बद्ध अलंकार, छन्द और काव्यालोचनात्मक अनेकानेक ग्रन्थों का निर्माण हुआ। इन विषयों एवं अन्य विविध विषयों से सम्बन्ध रखने वाली भी संस्कृत में हजारों रचनायें हुई।

संस्कृत-भाषा में इस प्रकार जब उस प्राचीन काल में ही भिन्न-भिन्न विषयों के अनेकानेक ग्रन्थ और शास्त्र निर्मित होने लगे और अनेकानेक वर्ग और देश-जनों द्वारा इस वाङ्मय का निर्माण-क्रम बढ़ने लगा तब भाषा के स्वरूप और वर्ण-ध्वनि में भी भिन्नता उत्पन्न होने लगी। अति प्राचीन कालीन श्रुतियों के शब्द और अर्थ अस्पष्ट प्रतीत होने लगे तब उस विषय के मर्मज्ञ ऋषियों ने भाषा के स्वरूप को स्थिर और नियमबद्ध करने की दृष्टि से शब्द-शास्त्र का संकलन करना प्रारम्भ किया। शब्द क्या है, शब्द का मूल क्या है, किस शब्द का क्या अर्थ है, वह अर्थ क्यों है, मूल शब्द एक ही होने पर भी उसके भिन्न-भिन्न रूप क्यों बनते हैं ? इत्यादि अनेक प्रकार के प्रश्नों का स्पष्टीकरण करने की दृष्टि से शब्द-शास्त्र का भी संस्कृत में विकास होता गया। यह शब्द-शास्त्र व्याकरण-शास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। इस व्याकरण-शास्त्र से संबन्ध रखने वाले भी सैकड़ों ग्रन्थ संस्कृत भाषा में आज तक लिखे जा चुके हैं।

उपर्युक्त स्थूल उल्लेख से ज्ञात होगा कि संस्कृत की वाङ्मय-समृद्धि कितनी विशाल और कितनी विपुल है। भाषा की समृद्धि का मुख्य द्योतक शब्द-समूह है। जो भाषा जितनी अधिक समृद्ध होगी उसका शब्द समूह भी उतना ही विशाल होगा। प्राचीन काल से हमारे पूर्वज संस्कृत के इस प्रकार के विशाल शब्द-समूह के बारे में बराबर चिंतन-मनन करते रहे हैं और जब उनको इस

समूह का ठीक-ठीक आकलन नहीं हो पाता था तो वे कह देते थे कि —'अनन्त-पारं किल शब्दशास्त्रम्' यह शब्द-समूह जो अनन्त है, इसका पार पाना कठिन है। तथापि वे इसके ज्ञान को यथा शक्ति प्राप्त करने-कराने के लिये बहुत प्रयत्नशील रहे हैं और इसी हेतु से उन्होंने उक्त प्रकार से संस्कृत के विशाल शब्द-शास्त्र का प्रणयन किया है।

इस शब्दशास्त्र के दो मुख्य अंग हैं—१. व्याकरण और २. कोष। व्याकरण-शास्त्र शब्द की व्युत्पत्ति और उसके अर्थ-द्योतक विविध स्वरूपों का विवेचन करता है। कोष मुख्यतः शब्दों का अर्थ सूचित करता है। कौन शब्द किस लिंग में व्यवहृत है, इसका भी सूचन कोष में किया जाता है। संस्कृत भाषा की यह एक विलक्षणता है कि उसमें भी मनुष्य जाति की तरह तीन प्रकार का नर, नारी और नपुंसक रूप में लिंग-भेद है। कोई शब्द नर-लिंगी (पुंलिंग) है, कोई शब्द नारी-लिंगी (स्त्रीलिंग) और कोई शब्द नपुंसक-लिंगी (नान्येतर जाति) है। प्राणी एवं जाति वाचक बहुत से शब्द तो उन-उन जातियों के समान ही लिंग-भेद से व्यवहृत होते हैं, परन्तु अन्य पदार्थ-वाचक या भाव-वाचक शब्दों के लिंग भेद का कोई निश्चित आधार नहीं होता। व्याकरण के नियमों द्वारा प्राप्त या प्रदर्शित प्रत्यय ही लिंग-भेद का सामान्य दिग्दर्शन कराते हैं अथवा प्राचीन साहित्य में प्रयुक्त उनके प्रयोग ही लिंग का निर्देश सूचित करते हैं। इस प्रकार के लिंग-भेद का स्पष्टीकरण करने के लिए संस्कृत-शब्द-शास्त्रियों ने स्वतंत्र लिंगानुशासन नाम के कुछ ग्रन्थ भी निर्मित किए हैं। ये लिंगानुशासन कोष-विभाग के ही एक अंग-स्वरूप हैं।

प्रत्येक विद्वान् और ग्रन्थ-लेखक को अपनी भाषा के विशाल शब्द-समूह का उपयुक्त ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। सामान्य जीवन-व्यवहार में प्रचलित और प्रयुक्त शब्दों का ज्ञान तो मनुष्य को अपनी प्रारम्भिक शिक्षा और सामाजिक व्यवहार के द्वारा प्राप्त होता रहता है, परन्तु विशेष विषयों के अध्ययन और लेखन में ऐसे अगणित शब्दों के ज्ञान की आवश्यकता पड़ती रहती है जो हमें विशेष रूप से कोष द्वारा ही प्राप्त होता है। समृद्ध भाषा में एक ही अर्थ के द्योतक अनेक शब्द प्रयुक्त होते रहते हैं, वैसे ही, एक शब्द के भी अनेक अर्थ होते हैं। यह विविध और विभिन्न अर्थ-वाचक शब्दों का एकत्र संग्रह करना ही कोष का मुख्य उद्देश्य और उपयोग है।

इस उद्देश्य की दृष्टि से हमारे शब्दशास्त्रियों ने अनेकानेक प्रकार के शब्द-कोषों की संस्कृत में रचना की। प्राचीन काल से लेकर अद्यावधि ऐसे सैंकड़ों

कोष-ग्रंथों की रचना हुई है। हमारा यह निर्देश उन कोषों को लक्ष्य करता है जो प्राचीन शैली के अनुसार विद्वानों ने पद्यबद्ध रूपों में रचे हैं।

जब से पाश्चात्य विद्वानों का शोध-कार्य इस देश में प्रारम्भ हुआ तब से संस्कृत-वाङ्मय के उक्त सब प्रकार के शास्त्र-ग्रन्थों के अन्वेषण, अनुसन्धान, अनुशीलन, अध्ययन, संकलन, सग्रहण और प्रकाशन आदि कार्यों के साथ कोष-विषयक ग्रन्थों का भी अन्वेषणादि कार्य आरम्भ हुआ। इसके परिणामस्वरूप सैंकड़ों ही छोटे-बड़े कोष-ग्रन्थ ज्ञात हुए और उनमें से अनेकों का प्रकाशन भी हुआ।

संस्कृत-वाङ्मय के ज्ञात एव उपलब्ध ग्रन्थों का एक विशाल सूचि-ग्रन्थ जर्मन विद्वान् डा० ऑफ्रेट ने ई० स० १९०३ में तैय्यार किया था उसमें उन्होंने तत्काल-पर्यंत ज्ञात सस्कृत कोषों की भी सूची दी है, जिसके अनुसार कुल संख्या २२८ है। यद्यपि यह संख्या सुनिर्णीत नहीं है। इसमें कई नामों की पुनरुक्ति भी हैं, कई नाम ग़लत हैं, कई नामान्तर रूप हैं तथापि संस्कृत-भाषा-ग्रथित प्राचीन शब्द-कोषों की विशालता का इससे अच्छा आभास हो जाता है। ऊपर जिन संस्कृत शब्दकोषों की विशालता का परिचयात्मक स्वरूप दिया गया है वे निम्न प्रकार से ३ वर्गों में विभक्त हैं—

१. एकार्थवाचक शब्दकोष,
२. अनेकार्थवाचक शब्दकोष, और
३. एकाक्षर-संग्राहक शब्दकोष।

१. एकार्थवाचक शब्दकोषों में मुख्यतया उन शब्दों का संग्रह है जो एक ही अर्थ अथवा पदार्थ के वाचक हैं, अर्थात् समान अर्थ को प्रदर्शित करने वाले हैं।

उदाहरणार्थ—पृथ्वी-रूप पदार्थ के वाचक जितने शब्द संस्कृत भाषा में उपलब्ध होते हैं, उन सब को एक जगह संग्रह किया गया है; इसी तरह सब पदार्थों, गुणों, भावों आदि के समानार्थक सब शब्द एक साथ संकलित करने का प्रयत्न इन कोषों में किया गया है। इन शब्दों में कई शब्द ऐसे भी हैं जो एक से अधिक पदार्थ के वाचक होते हैं। ऐसी स्थिति में वह शब्द दूसरे पदार्थ के पर्याय नामों में भी पुनरुल्लिखित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, पृथ्वी के वाचक अनेक शब्दों में एक "गौ" शब्द भी है। यह "गौ" शब्द अनेकार्थवाची है। इसका एक अर्थ गौ नामक पशु होता है, दूसरा अर्थ वाणी भी है, तीसरा अर्थ सूर्य की किरण है, चौथा अर्थ स्वर्ग है—इत्यादि। इसलिए यह "गौ" शब्द इन कोषों में कई बार प्रयुक्त किया जाता है। जहां-जहां उन अन्य पदार्थवाची शब्दों का पर्याय-संग्रह

होता है वहां-वहां भी यह शब्द प्रयुक्त करना आवश्यक होता है, अतः अनेकार्थ वाची शब्द इन एकार्थवाची कोषों में अनेक स्थानों पर प्रयुक्त होते रहते हैं।

२. अनेकार्थ-वाचक शब्दकोषों में वे शब्द संग्रहीत होते हैं जो एक से अधिक अर्थ अथवा पदार्थ व्यक्त करते हैं। ये नानार्थवाचक भी कहे जाते हैं।

उदाहरणार्थ—ऊपर सूचित एकार्थवाचक कोषों में "गो" शब्द का प्रयोग जैसे पृथ्वी के नामों में उपलब्ध होता है वैसे ही वह गौ नामक पशु के नामों में, वाणीवाचक नामों में, किरणवाचक नामों में, स्वर्गवाचक आदि नामों में भी प्रयुक्त होता है। इसलिए यह "गौ" शब्द अनेकार्थवाची है। इसी लिए अध्ययनार्थी को यह भी जानना आवश्यक होता है कि इस प्रकार "गो" शब्द के कितने भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं। इस जिज्ञासा की पूर्ति की दृष्टि से ही ऐसे अनेकार्थवाचक अथवा नानार्थवाचक शब्दकोषों का प्रणयन हुआ है। इन कोषों में ऐसे ही सब अनेकार्थवाचक शब्दों का संकलन करने का प्रयत्न होता है। इन शब्दों में जो अधिक प्रचलित और अधिक व्यापक स्वरूप का होता है—उसे मुख्य स्थान देकर कोषकार उसके साथ अन्य पर्याय शब्दों का संकलन करता है। कोषकारों ने इन शब्दों के चयन, संकलन, संग्रह आदि के क्रम के विषय में भिन्न-भिन्न प्रकार की पद्धतियों का उपयोग किया है और उसके बारे में प्रायः प्रत्येक कोष के प्रारम्भ में इसका यथायोग्य निर्देश भी किया है।

इन दोनों वर्गों के छोटे-बड़े ऐसे अनेक कोष हैं। संस्कृत-साहित्य में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रमाणभूत 'अमरकोष' है जो बहुत प्राचीन, विशिष्ट, प्रमाणभूत और प्रत्येक संस्कृत भाषा जानने वाले को सुपरिचित है। यह मुख्य करके एकार्थवाचक शब्दों का संग्रह-रूप है। इसका मुख्य नाम तो नामलिंगानुशासन है। इस अमरकोष के समान ही केशव कृत कल्पद्रुकोष, हेमचन्द्राचार्य कृत अभिधानचिन्तामणि आदि अनेक मुख्य कोष हैं।

अनेकार्थवाचक शब्द-कोषों में हेमचन्द्रसूरिकृत अनेकार्थ-संग्रह, शास्वत कृत अनेकार्थ-समुच्चय, महेश्वरकृत विश्वप्रकाश, अजयपालकृत नानार्थ-संग्रह, मंख कवि कृत अनेकार्थ कोश आदि और भी ग्रन्थ मुख्य हैं।

इन दो वर्गों के मुख्य कोष-ग्रन्थों के अतिरिक्त, इनके समान ही कोटि के परन्तु जिनमें एकार्थ और अनेकार्थ वाचक शब्दों का सम्मिलित संग्रह किया गया है वैसे भी, हलायुध, वैजयन्ती शब्द-रत्नाकर, शब्दरत्नावली आदि कोष-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। कुछ शब्द-कोष ऐसे हैं जिनमें मुख्य करके वनस्पति-विषयक नामों का ही संग्रह किया गया है जो वैद्यकीय विषय से विशेष सम्बन्ध

रखते हैं और निघंटु के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसमें धन्वन्तरिकृत निघंटु, हेमचंद्र सूरि कृत निघंटुशेष, पर्याय-रत्नमाला, पर्याय-मुक्तावलि आदि इस वर्ग के ही मुख्य ग्रन्थ हैं।

कुछ शब्द कोष ऐसे भी उपलब्ध होते हैं जिनमें कई प्रकार के और कई विषयों के शब्दों का प्रकीर्ण संग्रह होता है। उदाहरणार्थ—'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में शब्द-रत्नप्रदीप नामक कोष का हमने प्रकाशन किया है। इस कोष में कुछ एकार्थवाचक, कुछ अनेकार्थवाचक, कुछ विविध विषयों के पारिभाषिक शब्द तथा अव्यय रूप शब्दों का संग्रह किया गया है। मालूम पड़ता है कि लेखक ने अपने अध्ययनकाल में जिन ग्रन्थों से किन्हीं विशेष शब्दों को अपने उपयोग के लिए टिप्पण के रूप में लिख लिए थे उन्हीं को उसने बाद में श्लोकबद्ध करके उसे एक संकलित कोष का रूप दे दिया। इसमें अनेकार्थ शब्दों का अधिक संकलन है। इसमें अर्थ-शास्त्र, कामशास्त्र, राजनीति और व्यावहारिक विषयों के भी कुछ विशेष शब्द उनके अर्थ के साथ संकलित किये गये हैं।

ऐसा ही एक अन्य प्रकार का कोष भी हमने इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित किया है, जिसका नाम है वस्तु-रत्न-कोष। यह कोष श्लोकबद्ध नहीं है, परन्तु प्राचीन शास्त्रीय शैली में सूत्रबद्ध है। इसके कुल १०१ सूत्र हैं। प्रत्येक सूत्र एक-एक विषय के समूह-वाचक शब्दों की संख्या सूचित करता है और फिर उसकी व्याख्या के रूप में उन सब शब्दों का संकलन करता है। उदाहरण-स्वरूप पहले सूत्र में सूचित किया है कि भुवन तीन हैं; फिर, उसकी व्याख्या के रूप में उन तीन भुवनों के नाम दे दिए हैं। इसी तरह दूसरे सूत्र में सूचित किया कि लोक-संस्थान तीन प्रकार का है; फिर, उसकी व्याख्या में उन तीनों के नाम दे दिये हैं। सातवें सूत्र में सूचित किया है कि लोकों में ३६ राजवंश प्रसिद्ध हैं। फिर, उसकी व्याख्या में इन ३६ राजवंशों के नाम दे दिये हैं। इस तरह साहित्य में, जन-व्यवहार में, और लोक-समूह में संख्यांकित जो वस्तु-वाचक शब्दसमूह विश्रुत हैं उनका एकत्र संकलन करने का प्रयत्न इस कोष में किया गया है और इसलिए इसका नाम वस्तु-रत्न-कोष दिया गया है। प्राचीन काल में, कथा-लेखकों, धर्मोपदेशकों और वार्ताकारों को ऐसे कोषों की बहुत आवश्यकता रहती थी और वे इनको प्राय: कण्ठस्थ करते रहते थे। इस प्रकार के कुछ और भी शब्द-संग्रह उपलब्ध होते हैं।

३. जिस तृतीय वर्ग का ऊपर उल्लेख किया है वह है एकाक्षरात्मक शब्दों का संग्रह करने वाले, एकाक्षरी कोष। यद्यपि सामान्यतया ऊपर जिन प्रथम दो वर्गों

के कोषों का उल्लेख किया है उनमें भी प्रसंगानुसार या अर्थानुसार कुछ एकाक्षरी शब्दों का समावेश किया गया है, परन्तु वह बहुत स्वल्प परिमाण में हैं— जैसे, श्री, भू, गौ, नौ, द्यौ, स्वर् आदि शब्द एकाक्षरात्मक हैं और इनका निर्देश उनके अर्थ-वाचक अन्यान्य शब्दों के साथ किया जाता है। परन्तु, ऐसे एकाक्षरात्मक शब्दों की संख्या भी कुछ विशाल है और उनका प्रयोग कई कवियों ने तथा ग्रन्थकारों ने भिन्न-भिन्न संदर्भ में यत्र-तत्र किया है। मंत्र और तंत्र-शास्त्रों में भी अनेक एकाक्षर शब्दों का प्रयोग किया गया है और जो बीजाक्षरों के नाम से उल्लिखित रहते हैं। व्याकरण-ग्रन्थों में कुछ ऐसे अव्यय भी प्रसिद्ध हैं जो केवल एकाक्षरात्मक हैं। इस प्रकार के भिन्न-भिन्न अर्थ-द्योतक एकाक्षरी शब्दों का स्वतंत्र प्रकरण या प्रबन्ध के रूप में संग्रह करने का प्रयत्न भी प्राचीन शब्द-शास्त्रविदों ने बुद्धिपूर्वक किया है। इनके संग्राहकों में कुछ तो वे ही प्रसिद्ध कोषकार हैं जिन्होंने ऊपर सूचित प्रथम और द्वितीय वर्ग के कोष-ग्रन्थों की रचनाएं की हैं। कुछ अन्य विद्वान् भी हैं जिनकी अन्यान्य रचनाओं के विषय में विशेष ज्ञातव्य प्राप्त नहीं होता।

एकाक्षरी शब्द का तात्पर्य है 'एक अक्षर वाला शब्द'—जिस शब्द में एक ही अक्षर होता है वह एकाक्षरी शब्द है। संस्कृत भाषा के शब्दों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि उनमें एक अक्षर से लेकर ६ अक्षरों तक के शब्द हैं; अर्थात् कोई शब्द एक अक्षर वाला है कोई २, ३, ४, ५ या ६ अक्षर वाला है। इससे अधिक अक्षर वाला कोई शब्द नहीं मिलता जो किसी विशेष अर्थ का वाचक हो।

यहाँ पर अक्षर का मतलब भी समझने जैसा है। संस्कृत भाषा में अक्षर का मुख्य अर्थ है, स्वर, यद्यपि सामान्य रूप से व्यंजन और स्वर दोनों प्रकार के वर्णों को अक्षर कहा जाता है—परन्तु, स्वर के सहयोग के बिना अकेले व्यंजन में किसी प्रकार के अर्थ को व्यक्त करने की शक्ति नहीं है, और न ही किसी ध्वनि-विशेष का उससे स्पष्ट विस्फोट होता है। व्यंजन किसी स्वर-वर्ण के सहयोग से ही अपनी ध्वनि स्पष्टतया व्यक्त करता है। स्वर स्वयं शक्तिवान् वर्ण है। अकेले स्वर की ध्वनि स्पष्ट होती है। इसलिये वह स्वयं शब्द-शक्ति का व्यंजक और उसके अर्थ का भी द्योतक होता है। इसलिये शब्द-कोषों में जो शब्दों के अक्षरों की संख्या का उक्त रीति से परिमाण माना है वह स्वरों की संख्या को लक्ष्य करता है। इससे यह तात्पर्य निकला कि एकाक्षरी शब्द का अर्थ है, एक स्वर वाला शब्द। इसी तरह द्व्यक्षरी (दो अक्षर वाला) शब्द का अर्थ है, दो स्वर वाला शब्द। इस प्रकार यावत् ६ अक्षरों वाले शब्द

का तात्पर्य है, जिसमें ६ स्वर वर्ण उपलब्ध हों। हेमचन्द्र सूरि ने अपने अनेकार्थ-शब्दकोष में इसी उद्देश्य को लक्ष्य कर शब्दों की स्वरानुसंख्या के क्रम से कोष का काण्ड-विभाग आलेखित किया है। उन्होंने एक स्वर वाले शब्दों का संग्रह 'एक स्वर-काण्ड' में किया, दो स्वर वाले शब्दों का संग्रह द्वि-स्वर-काण्ड में किया एवं त्रि, चतु, पंच और षट् स्वर काण्ड बना कर उनमें उन-उन संख्या वाले स्वरों के शब्दों को एकत्र संग्रह किया है। कई अन्यान्य कोषकारों ने भी प्राय: इसी क्रम का अनुसरण किया है। इसका अर्थ यह होता है कि संस्कृत कोष-कारों के लक्ष्यानुसार स्वर-वर्ण ही मुख्य अक्षर संज्ञा का वाचक है। उनके मत से व्यंजन वर्ण अवश्य हैं परन्तु अक्षर नहीं। अत: प्रस्तुत एकाक्षरी कोषों में जो शब्द दिये गये हैं वे केवल एक ही स्वर वाले शब्द हैं। उन शब्दों में सम्मिलित व्यंजन वर्णों की संख्या का कोई परिमाण नहीं है। इन शब्दों में से अनेक शब्दों में व्यंजनों का सर्वथा अभाव भी है और साथ ही में कई शब्दों में एक से अधिक व्यंजनों का सहयोग भी है, परन्तु स्वर की मात्रा एक ही होने से ये सब शब्द एकाक्षरी-संज्ञक माने गये हैं। प्रस्तुत संग्रह में जो एकाक्षरी कोषों का संग्रह हुआ है, उनमें इसी तरह के एक-स्वरीय शब्दों का संग्रह है, ऐसा समझना चाहिये।

प्रस्तुत संग्रह में क्रमांक ३ और ४ पर सौभरि-कवि-कृत दो रचनाएं संग्रहीत हुई हैं। इनमें पहली रचना के १०० श्लोक हैं और अन्त में इसे एकाक्षरी नाममाला से उल्लेखित किया है।* दूसरी रचना की श्लोक संख्या १११ है और इसके अन्त में इसका नाम द्वयक्षर-नाममाला, ऐसा दिया है।

इसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि रचनाकार ने इस कृति में उन शब्दों का संग्रह किया है जिनमें दो-दो व्यंजन वर्ण प्रयुक्त हुए हैं; परन्तु, इन शब्दों में भी स्वर तो एक ही है, अत: ये शब्द एकाक्षरी वर्ग के ही हैं। अन्य रचनाकारों ने भी ऐसे संयुक्ताक्षर वाले एकस्वरीय शब्दों को एकाक्षर-नाममाला के अंतर्गत ही आलेखित किया है। उदाहरणार्थ—इसी संग्रहगत क्रमांक ५ पर माधव कृत एकाक्षर-शब्दमाला नाम की रचना मुद्रित है। इसको रचनाकार ने १. स्वर-काण्ड, २. व्यंजनकाण्ड और ३. संयुक्ताक्षरकाण्ड, इस प्रकार ३ प्रकरणों में विभक्त किया है। पहले काण्ड में केवल अकेले एकस्वरात्मक शब्दों का संग्रह

---

*इसके आदि में जो श्लोक छपा है उसमें 'एकार्थं नाममाला' ऐसा भ्रान्त पाठ छपा है; वास्तव में, 'एकाक्षर नाममाला' ऐसा पाठ चाहिए। नीचे पाठ-भेद के रूप में यह पाठ दिया भी गया है—परन्तु, यह शुद्ध पाठ है और ऊपर मूल में आना चाहिए।

किया है, दूसरे काण्ड में एक स्वर और एक व्यंजन वाले शब्दों का संग्रह किया है और तीसरे काण्ड में ऐसे दो-दो व्यंजन वाले, अर्थात् संयुक्त व्यंजन वाले, परन्तु जिनमें स्वर एक ही है—ऐसे शब्दों का संकलन किया है। परन्तु, इन सब शब्दों में एक ही स्वर विद्यमान है अतः ये सब एकाक्षरी वर्ग के ही शब्द माने गये हैं।

प्रस्तुत संग्रह में छोटी-बड़ी सब मिला कर २९ रचनाओं का संकलन किया गया है। इनमें से क्रमांक १ से २६ तक की रचनाएं तो शुद्ध शब्दकोष-स्वरूप ही हैं। इन रचनाओं में से कुछ तो संस्कृत के प्रसिद्ध शब्दकोषों के भाग-रूप ही हैं और कुछ स्वतंत्र रचना के रूप में भी हैं। इन कोषों में प्रयुक्त शब्द-संग्रह की शैली दो तरह की पाई जाती है—कुछ कोषों में पहले केवल स्वर वाले शब्दों का संग्रह किया है, कुछ ने पहले व्यंजनानुक्रम से शब्द संकलन किया है। हेमचन्द्र सूरि ने अपने अनेकार्थकोष के एकाक्षर-काण्ड में केवल स्वरात्मक शब्दों का ही संग्रह नहीं किया है, उन्होंने ऐसे एक-स्वरीय शब्दों को अव्यय-स्वरूप माना है इसलिये इन शब्दों का अव्यय-संग्रहात्मक पृथक् परिशिष्ट संग्रह रच कर उसको एकस्वर-काण्ड में उल्लिखित किया है। यह काण्ड प्रस्तुत संग्रह में संकलित होने से रह गया है।

संग्रहगत २७ क्रमांक पर मुद्रित प्रकरण, एकाक्षरवाचक शब्दसंग्रह न होकर, संख्या-सूचक शब्दों का संकलन-स्वरूप है। संस्कृत के पुराने विद्वान् जहाँ कहीं किसी संख्या का उल्लेख करना चाहते हैं तो संख्यावाचक मुख्य शब्द एक, दो, चार, पाँच, नौ, दस इस प्रकार अंक वाचक शब्दों का सीधा प्रयोग न करके उन अंकों के निर्देशक सांकेतिक शब्दों का प्रयोग करते रहते हैं। ये सांकेतिक शब्द कुछ समूह-वाचक शब्दों को लक्ष्य कर प्रसिद्ध हो गये हैं। संसार में सूर्य एक है, चन्द्रमा एक है, हाथी की सूंड एक होती है, गणपति का दाँत एक होता है—इसलिये एक अंक के प्रयोग के स्थान में इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। मनुष्य प्राणी के हाथ दो होते हैं, पैर दो होते हैं, कान, आँख, स्तन आदि भी दो-दो होते हैं, इस प्रकार दो की संख्या सूचित करने के लिये ऐसे सांकेतिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसी तरह ३, ४, ५, ६ आदि संख्या के सूचक शब्द ज्योतिष आदि ग्रन्थों में विशेष व्यवहृत होते हैं, जिनका ज्ञान सामान्यतया संस्कृतज्ञों को बहुत कम होता है। इसलिये इन संख्या-सूचक शब्दों का क्रमशः परिचय देने की दृष्टि से किसी अज्ञातनामा विद्वान् ने इस 'एकादि संख्या संज्ञा कोष' की रचना की है। ३० श्लोकों की यह लघु कृति है।

इस में १ से लेकर २० संख्या तक के समूह-वाचक शब्दों का समावेश किया है। अन्त में १०० और १००० संख्या के सूचक भी कुछ शब्द दे दिये हैं।

संग्रह के २९वें क्रमांक पर मुद्रित रचना शुद्ध शब्दकोष-स्वरूप नहीं हैं। यह एक कुतूहल-प्रदर्शक काव्याभासी पद्यमय कृति है। इसकी रचना एक जैन विद्वान् श्रीवल्लभ गणि ने की है। यह एक केवल शब्दपाण्डित्य-प्रदर्शक अनोखो रचना है। रचनाकार ने शब्द-वैलक्षण्य की विचित्रार्थता प्रकट करने के उद्देश्य से इस विनोदात्मक पद्यरचना का गुम्फन किया है। प्रस्तुत संग्रह में सौभरि कृत जो 'एकाक्षर नाममाला' मुद्रित हुई है उसके द्व्यक्ष काण्ड में, क्वण, क्वाण, क्वणु, क्वणो आदि अनेक ऐसे संयुक्ताक्षर वाले एकस्वरीय शब्दों का संग्रह किया है जो अन्य संग्रहों में खास करके नहीं मिलते। इनमें अनेकानेक ऐसे संयुक्ताक्षर-युक्त एकस्वरीय शब्द हैं, जिनका उच्चारण भी कठिन और विलक्षण प्रतीत होता है। कुछ की ध्वनि में तो ह्ना, ह्नी, भ्रा, भ्री, स्रा, स्री आदि मंत्राक्षरों जैसा आभास होता है, परन्तु कोषकार ने इनको मंत्राक्षरों के बीज रूप में नहीं लिखा है, विचित्र शब्दध्वनि वाले शब्दों के रूप में संकलित किया है। ग्रन्थों में ऐसे शब्दों का प्रयोग प्रायः नहीं-सा उपलब्ध होता है। तथापि कोषकार के इन शब्दों का अपने कोश में संकलन करने का कोई शास्त्राधार अवश्य रहा होगा और इसी लिये उसने इन्हीं शब्दों को अपनी रचना में विशेष रूप से संग्रहीत किया है। सौभरि-कवि-संकलित इन विचित्र शब्दों का आधार लेकर उक्त श्री-वल्लभ गणि ने संग्रहान्तर्गत अन्तिम कृति 'विद्वत्प्रबोध' का गुम्फन किया है। इसमें उन्होंने सौभरि के संकलित क्वण, क्वाणा आदि बहुत से विचित्र शब्दों का सार्थक उपयोग कर दिखाने की चेष्टा की है। यद्यपि है यह केवल कूतूहल-प्रदर्शक रचना, तथापि संस्कृत भाषा के शब्द-सामर्थ्य का इससे बोध होने जैसा है। यह रचना अर्थ-क्लिष्ट एवं शुष्क-पद्य-प्रबन्ध-रूप है, इसलिये रचयिता ने स्वयं इसके क्लिष्ट शब्दों का अर्थबोध कराने के लिये संक्षिप्त टिप्पण भी साथ में लगा दिये है।

संग्रह में उक्त प्रकार से २८ रचनाएं संस्कृत-भाषा-निबद्ध हैं, केवल एक रचना राजस्थानी भाषा की हैं। वह इसलिये यहां दी गई है कि देश-भाषा के लेखकों ने भी संस्कृत-प्रचलित ऐसे एकाक्षरी शब्द-संग्रह-विषयक कुछ रचनाएं की हैं। इसमें मुद्रित कृति चारण कवि वीरभाण रतनू की है। राजस्थानी में इस लेखक की कई रचनाएं उपलब्ध हैं। राजरूपक नामक ग्रन्थ इसकी प्रसिद्ध रचना है। जोधपुर के राजस्थानी शोध-संस्थान द्वारा प्रकाशित डिंगल कोष में यह रचना प्रकाशित हो चुकी है, परन्तु उसमें इसका पाठ शुद्ध नहीं है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की प्रति पर से यहाँ पर इसका मुद्रण किया गया है, पर इस मुद्रण में भी कुछ पाठ रह गया है, जिसका जोधपुर-निवासी साहित्य-प्रेमी मेहता मदनराजजी द्वारा प्राप्त प्रति के आधारानुसार संशोधित पाठ इसके साथ अलग शुद्धि-पत्र के रूप में दिया जा रहा है। राजस्थानी भाषा में एक अन्य एकाक्षरी कोष भी प्राप्त होता है, जो उक्त डिंगल-कोष में मुद्रित है। वह एकाक्षरी नाममाला के नाम से प्रसिद्ध है। उसका कर्ता उदयराम बारहठ है। उसकी बड़ी रचना 'कविकुल-बोध' है, उसीके अंतर्गत यह एकाक्षरी नाममाला भी ग्रथित की गई है। वह नाममाला वीरभाण को रचना से बड़ी है। हमने उसका पुनर्मुद्रण यहां आवश्यक नहीं समझा।

प्रस्तुत संग्रहगत एकाक्षरी शब्दकोषों में कुल मिला कर जितने एकाक्षरी अथवा एक स्वरीय शब्द संकलित हुए हैं उनका वर्ण-क्रमानुसार एक संक्षिप्त पृथक् परिशिष्ट भी दे दिया है जिसके अनुसार कुल मिला कर इन एकाक्षरी शब्दों की संख्या ८७५ होती हैं।

इन एकाक्षरी शब्द-संग्रहों में से कुछ तो इससे पूर्व ही यत्र-तत्र प्रकाशित हो चुके हैं, पर वे सुलभ नहीं हैं; और, कुछ अभी तक अप्रकाशित भी रहे हैं जैसा कि ऊपर सूचित किया जा चुका है। ये कुछ प्राचीन अप्रकाशित रचनाएं पुराने भंडारों के निरीक्षण के समय हमारे देखने में आईं। संस्कृत-ग्रन्थों का अध्ययन और सम्पादन कार्य करते समय बार-बार ऐसे एकाक्षरी शब्दों के अर्थ के विषय में आधुनिक और प्राचीन कोषों को टटोलना पड़ता है और उनमें से ऐसे शब्दों का अर्थ-ज्ञान प्राप्त करने में काफी समय व्यतीत करना पड़ता है; इससे यह बात महसूस हो रही थी कि ऐसे फुटकल एकाक्षरी कोषों का कोई एक छोटा-सा संग्रह प्रकट किया जाय तो संस्कृत के अध्ययनार्थियों को विशेष लाभदायक होगा।

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' द्वारा ऐसे अप्रकाशित परन्तु अध्ययन और संशोधन की दृष्टि से बहुत ही उपयुक्त लगने वाली रचनाओं को प्रकाश में लाने का हमारा मुख्य ध्येय रहा है। इसी ध्येय को सम्मुख रख कर हमने शब्द-रत्न-प्रदीप, वस्तु-रत्नकोश, उक्ति-रत्नाकर आदि जैसे सर्वथा अज्ञात और अप्रसिद्ध ग्रन्थों को जैसलमेर आदि स्थानों में सुरक्षित ज्ञान-भण्डारों में से प्राप्त कर प्रकाश में रखे हैं।

प्रसंगवश वि० सं० २००७ में हमारा बीकानेर जाना हुआ। उस समय वहाँ के जैन उपाश्रय में सुप्रसिद्ध जैन मुनि, विद्वद्वर्य, आगमप्रभाकर श्री पुण्यविजयजी महाराज विराजमान थे, जो जैसलमेर के ज्ञान-भंडारों की सुव्यवस्था के प्रयास में

रत थे और जैसलमेर से लौट कर वहाँ आये हुए थे। प्रसंगवश उनसे इस प्रकार के एकाक्षरी शब्दकोषों का एक संग्रह प्रकाशित करने की चर्चा चली। मुझे ज्ञात था कि उनके अवलोकन में भी ऐसी कुछ रचनाएं आई हैं और प्रयत्न करने पर कुछ अन्य भी रचनाएं प्राप्त हो सकती हैं। इसलिये मैंने उनसे निवेदन किया कि यदि वे इस प्रकार के संग्रह का सम्पादन करें तो उसे 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में प्रकट करने का निश्चय किया जा सकता है, इत्यादि।

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के प्रयत्नों में उक्त मुनि महोदय का सदैव हार्दिक सहयोग रहता है। प्रारम्भ से ही वे इसके विषय में अनेक प्रकार से अपना सद्भावपूर्ण सक्रिय सहयोग देते रहे हैं। इससे पूर्व, प्राकृतानन्द नामक ग्रन्थ का सम्पादन भी आपने ग्रन्थमाला के लिये करना स्वीकार कर लिया था, अतः इस कोष-संग्रह के सम्पादन-कार्य को भी करने-कराने की स्वीकृति आपने दे दी। यह कार्य आपने अपने निरीक्षण एवं निर्देशन के नीचे अपने चिर-सहवासी तथा सेवा और साहित्य के प्रेमी-पन्यास-पदालंकृत, मुनिवर श्रीरमणिकविजयजी के द्वारा सम्पन्न कराया।

यद्यपि इन लघु कोषों में से कई कोष इतःपूर्व यत्र-तत्र प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु उनका मुद्रण बहुत कुछ अशुद्धिपूर्ण और पाठ अव्यवस्थित है। प्रस्तुत संग्रह के सम्पादन में सम्पादक मुनिवर्य्य ने अनेक प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग किया है। पाठ-शुद्धि की दृष्टि से यह संपादन विशिष्ट महत्व रखता है। किस रचना के संपादन में कितनी प्राचीन प्रतिलिपियों का उपयोग किया गया है उनका यथेष्ट परिचय संपादक मुनिवर ने अपने प्रास्ताविक में दे दिया है। पुस्तक के अन्त में, संग्रह में उल्लिखित सब शब्दों की अकारादि क्रमानुसार सूचि दे दी है, इससे पाठकों को यह ज्ञात हो जायगा कि कौन शब्द किन-किन रचनाओं में उपलब्ध होता है। बड़े परिश्रमपूर्वक यह शब्दानुक्रम तैयार किया गया है।

हम यहाँ पर उक्त दोनों मुनि महोदयों के प्रति अपना विनम्र हार्दिक कृतज्ञ-भाव प्रकट करते हैं।

सम्पादक मुनिवर्य श्री रमणिक विजयजी महाराज के आदेशानुसार बड़ौदा के प्राच्यविद्या-मन्दिर के निवृत्त वृद्ध पण्डित श्री लालचन्द भगवानदास ने संग्रहगत कोषों और उनके रचयिताओं के बारे में संक्षिप्त परिचयात्मक भूमिका लिख कर भेजी थी, जो इसके साथ प्रकट कर दी गई है। एतदर्थ हम पण्डित श्री लालचन्दजी के प्रति भी अपना कृतज्ञभाव प्रकट करना चाहते हैं।

मुनि जिनविजय
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा;
वि० सं० २०२३; दि० २३-३-६६

संपादकीय प्रस्तावना

प्रति-परिचय[1]

प्रस्तुत संपादन में उपयुक्त प्रत्येक नाममालाओंकी प्रतियों का क्रमशः परिचय इस प्रकार है—

१ – विश्वशम्भुप्रणीता एकाक्षरनाममालिका

१–'क' संज्ञक प्रति – तीन पत्रात्मक यह प्रति 'श्री दानसागरजी जैन भण्डार, बीकानेर' की है। भण्डारकी सूचीमें प्रतिका क्रमांक ५५७ है। लंबाई-चौड़ाई १०×४½ इंच प्रमाण है।

२ – 'ख' संज्ञक प्रति – चार पत्रात्मक यह प्रति 'श्रीमहिमाभक्ति जैन भण्डार, बीकानेर' की है। भण्डारकी सूचीमें इसका क्रमांक १५८६ है। लंबाई-चौड़ाई १०½×४½ इंच प्रमाण है।

३ – 'ग' संज्ञक प्रति – तीन पत्रात्मक यह प्रति अहमदाबाद, हाजा पटेलकी पोल-स्थित 'श्रीसंवेगी जैन उपाश्रय ज्ञानभण्डार'[2] की है। भण्डारकी सूचीमें इसका क्रमांक ६७४ है। लंबाई-चौड़ाई १०½×४½ इंच प्रमाण है। प्रतिके अन्तमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—'संवत् १६५७ वर्षे वीरमग्रामे पं. श्री-सीहविजयगणिशिष्य गणिसूरविजयलिखितं स्वपठनार्थं। शुभं भवतु।'

४ – 'घ' संज्ञक प्रति – दो पत्रात्मक यह प्रति 'श्रीनाहटा जैन ज्ञानभण्डार बीकानेर' की है। भण्डार की सूचीमें इसका क्रमांक ४६५४ है। लंबाई-चौड़ाई १०½×४¼ इंच प्रमाण है।

५– 'ङ' संज्ञक प्रति – चौदह पत्रात्मक यह प्रति 'श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्या मंदिर (अहमदाबाद)' स्थित मुनिश्रीपुण्यविजयग्रन्थ-

---

१ – प्रस्तुत एकाक्षर कोष संग्रहका संशोधन-संपादन करनेका निश्चय हुआ इससे कुछ वर्ष पहलेसे ही मेरी रसवृत्तिसे मैंने मेरे विहार-कालमें अन्यान्य ग्रंथसंग्रहोंसे कोई-कोई एकाक्षर नाममालाकी प्रतिलिपियां की थीं, अतः कोई-कोई प्रतिपरिचयमें कुछ त्रुटि हो तो इसके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूं।

२ – यहां निर्दिष्ट प्रतिपरिचयमें जिन प्रतियोंको अशुद्ध सूचित की हैं इनके अतिरिक्त शेष प्रतियां प्रायः शुद्ध हैं, और जिन प्रतियोंके अन्तमें लेखककी पुष्पिका आदि है सो तत्तत्प्रतिपरिचयमें दी गई है, शेष प्रतियोंमें लेखककी पुष्पिका अनुपलब्ध है।

संग्रह' की है। प्रस्तुत कृतिके साथ लेखकने सौभरिकृत एकाक्षर नाममाला और द्वचक्षरकाण्ड, एवं दो कृतियां अधिक लिखी हैं। प्रतिका क्रमांक १६७९ है। लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{१}{४}$ × ४$\frac{१}{४}$ इंच प्रमाण है।

६ – **'च' संज्ञक प्रति** – पंद्रह पत्रात्मक यह प्रति 'श्रीमहिमाभक्ति जैन भंडार, बीकानेर' की है। इसका क्रमांक १५७२ है, और प्रथम पत्र अप्राप्य है। इसके साथ लेखकने निम्न पांच कोषकृतियां भी लिखी हैं—(१) इरुगपदण्डाधिनाथ-विरचिता नानार्थरत्नमाला, (२) वररुचिकृता एकाक्षरनाममाला, (३) अज्ञात-विद्वत्कृत एकाक्षरकोश, (४) अजिरादि एकाक्षरी नाममाला, (५) अभिधानादि-एकाक्षरी नाममाला। लंबाई-चौड़ाई १० × ४$\frac{१}{४}$ इंच प्रमाण है।

२ – राघवकवि-विरचित एकाक्षरकाण्ड

इसका संपादन 'डेक्कन कॉलेज, पूना' द्वारा प्रकाशित आवृत्तिसे यथावत् किया है।

३ – सौभरिकृता एकाक्षरनाममाला

यह नाममाला इन चार प्रतियों के आधार से संशोधित की गई है—

१-२ – **'क' और 'ख' संज्ञक प्रति** – यह दोनों प्रतियां 'श्रीआत्मानंद जैन ज्ञानमन्दिर (वडोदरा) स्थित प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयशास्त्रसंग्रहकी हैं। इन दोनों प्रतियोंमें प्रस्तुत कृतिके साथ सौभरिकृत द्वचक्षरकाण्ड भी लिखा गया है। चार पत्रात्मक 'क' प्रतिका क्रमांक १६०३ और लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{१}{४}$ × ४$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण है। पांच-पत्रात्मक 'ख' प्रतिका क्रमांक ७३८ और लंबाई-चौड़ाई १० × ४$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण है।

३ – **'ग' संज्ञक प्रति** – चार पत्रात्मक तथा ६७९ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर (अहमदाबाद) स्थित मुनिश्रीपुण्यविजयग्रन्थसंग्रह' की है। प्रस्तुत कृतिके साथ सौभरिकृत द्वचक्षर-काण्ड भी लिखा गया है। लंबाई-चौड़ाई १० × ४$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण है।

४ – **'घ' संज्ञक प्रति** – विश्वशम्भुप्रणीता एकाक्षरनाममालिकाकी 'ङ' संज्ञक प्रतिके अन्तर्गत प्रस्तुत कृति है, अतः इसका परिचय तदनुसार जान लेना चाहिए।

४ – सौभरिकृत द्वचक्षरकाण्ड

इसका संशोधन इन तीन प्रतियोंके[1] आधारसे किया गया है—

---

१ – यद्यपि सौभरिकृत एकाक्षरनाममालाकी 'क' और 'ख' संज्ञक प्रतियोंमें प्रस्तुत कृति भी प्राप्त है, किन्तु मुद्रित पाठसे कोई विशेष पाठ इनमें उपलब्ध न होनेसे इन प्रतियोंकी यहां संज्ञा नहीं दी है।

१ – **'क' संज्ञक प्रति** – यह प्रति 'श्रीहेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिर, पाटण' की है।

२-३ – **'ख' और 'ग' संज्ञक प्रति** – यह दोनों प्रतियां क्रमशः सौभरिकृत एकाक्षरनाममालाकी 'ग' संज्ञक और विश्वशम्भुप्रणीत एकाक्षरनाममालिकाकी 'ङ' संज्ञक प्रतिके अन्तर्गत हैं, अतः इन दोनोंका परिचय तदनुसार जान लेना चाहिए।

५ – हरितालराजामात्य-माधवकृता एकाक्षरशब्दमाला

१३४२६ क्रमांक वाली और बंगलालिपिमें लिखित 'प्राच्य विद्या मन्दिर, वडोदरा, के संग्रहकी सत्तर-पत्रात्मक एकमात्र अशुद्ध प्रतिके आधारसे इसका संपादन किया गया है। लंबाई-चौड़ाई १४ × १½ इंच प्रमाण है।

६ – इरुगपदण्डाधिनाथरचित-नानार्थरत्नमालागत एकाक्षरकाण्ड

इसका संशोधन इन चार प्रतियोंके आधारसे किया है—

१ – **'क' संज्ञक प्रति** – दो पत्रात्मक और २९६७ क्रमांक वाली यह प्रति 'आत्मानन्दजैनज्ञानमन्दिर (वडोदरा) स्थित प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयशास्त्रसंग्रह-की है। लंबाई-चौड़ाई १० × ४¼ इंच प्रमाण है।

२-३ – **'ख' और 'ग' संज्ञक प्रति** – क्रमशः दो और पांच पत्रात्मक तथा १८७० और ६७३ क्रमांक वाली यह दोनों प्रतियां अहमदाबाद (हाजा पटेल पोल स्थित श्रीसंवेगि जैन उपाश्रयके ग्रन्थभण्डारकी हैं। दोनों प्रतियोंको लंबाई चौड़ाई १० × ४¼ इंच प्रमाण हैं।

४ – **'घ' संज्ञक प्रति** – विश्वशम्भुप्रणीत एकाक्षरकोशनाममालिका की 'च' संज्ञक प्रतिके अन्तर्गत प्रस्तुत कृति है अतः इसका परिचय तदनुसार जान लेना चाहिए।

७ आचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचित अनेकार्थसंग्रहान्तर्गत एकस्वरकाण्ड

प्रस्तुत एकस्वरकाण्डकी एक ताडपत्रीय प्रतिका उपयोग किया है। ७४/१ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीजैनप्राच्यविद्यामन्दिर (अहमदाबाद) स्थित मुनिश्री-चारित्रविजयज्ञानभण्डार'की है। इस प्रतिमें एकस्वरकाण्डके अतिरिक्त शब्द-भेदनाममाला आदि अन्य कोशविषयक कृतियां भी लिखी हैं। लंबाई चौड़ाई १४ × २¼ इंच प्रमाण है। अन्तमें इस प्रकार पुष्पिका है—'संवत् १३८७ वर्षे माघ वदि ३ रवौ ।।छ.।'

८ – सुधाकलशमुनिविरचिता एकाक्षरनाममाला

इस नाममालाका संशोधन इन छः प्रतियोंसे किया है—

१,३ – 'क' और 'ग' संज्ञक प्रति – क्रमशः एक और दो पत्रात्मक तथा ४९६५ और ४९५१ क्रमांक वाली यह दोनों प्रतियां 'श्रीनाहटा जैन ज्ञानभण्डार बीकानेर' की हैं। १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच प्रमाण लंबाई-चौड़ाई वाली 'क' संज्ञक प्रतिके अंतमें इस प्रकार पुष्पिका है—'संवत् १६५७ वर्षे आश्विनसितपक्षे पूर्णिमायां रवौ लिखितं ।।श्रीरस्तु।।' तथा ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इंच प्रमाण लंबाई-चौड़ाई वाली 'ग' संज्ञक प्रतिके अंतमें इस प्रकार पुष्पिका है।—'संवत् १७ सै ८६ वर्षे मिति माघसित ५ तिथौ श्रीदिल्लीमध्ये लिखितं'।

२ – 'ख' संज्ञक प्रति – १४८० क्रमांक वाली दो पत्रात्मक यह प्रति 'श्री-आत्मानन्द जैन ज्ञान मन्दिर (वडोदरा) स्थित प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयशास्त्र-संग्रह' की है। लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इंच प्रमाण है।

४ – 'घ' संज्ञक प्रति – छः पत्रात्मक और १५८१ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीमहिमाभक्तिजैनज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है। लंबाई-चौड़ाई १०×४$\frac{1}{4}$ इंच प्रमाण है।

५ – 'ङ' संज्ञक प्रति – द्विपत्रात्मक और ७२७ क्रमांक वाली यह प्रति 'प्राच्यविद्यामन्दिर, वडोदरा' के संग्रहकी है। लंबाई-चौड़ाई ९$\frac{1}{3}$×४$\frac{1}{2}$ इंच प्रमाण है। अंतमें इस प्रकार पुष्पिका है—'संवत् १६५७ वर्षे भाद्रवा वदि १२ गुरौ दर्भावतीवास्तव्यः पं. विद्याविजय तत्शिष्य चेला सोमजी लखितं ।। लेखक-पाठकयो चिरंजीवी ।।शुभं भवतु ।।'

६ – 'च' संज्ञक प्रति – वि. सं. २००२ में श्रेष्ठि श्रीदेवचन्द्र लालभाई जैन-पुस्तकोद्धारफंडद्वारा प्रकाशित 'अभिधानचिन्तामणिकोश' नामक ग्रन्थमें प्रस्तुत कृति भी प्रकाशित की है। इसी मुद्रित प्रतिका यहां उपयोग किया है।

९ – महाक्षपणक-विरचित एकाक्षरकोष

इस कोशका संशोधन इन तीन प्रतियों से किया है—

१ – 'क' संज्ञक प्रति – द्विपत्रात्मक और १५८२ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीमहिमाभक्ति जैन ज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है।

२,३ – 'ख' और 'ग' संज्ञक प्रति – क्रमशः दो और सात पत्रात्मक तथा १२२०२ और १२७६९ क्रमांक वाली यह दोनों प्रतियां 'प्राच्यविद्यामन्दिर, वडोदरा' के संग्रह की हैं।

१० – परमानन्दनन्दनविरचित एकाक्षरीय प्रथमकाण्ड

प्रस्तुत कृतिका संपादन 'श्रीला० द० भा० सं० विद्यामन्दिर (अहमदाबाद) स्थित मुनिश्रीपुण्यविजयग्रन्थसंग्रह' की एकमात्र प्रतिसे किया है। यह कृति ४३ पत्रात्मक और ५९६३ क्रमांक वाली 'परमानन्दीयनाममाला'का प्रथमकांड है। लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{१}{४}$×४$\frac{१}{४}$ इंच प्रमाण है। प्रतिके अंतमें 'लिखितेयं पं. शुभंकरेण' ऐसी स्वल्प पुष्पिका है।

११ – वररुचिविद्वत्कृता एकाक्षरनाममाला

इस नाममालाका संशोधन इन तीन प्रतियोंसे किया है—

१ – **'क' संज्ञक प्रति** – प्रस्तुत कृति विश्वशम्भुप्रणीत एकाक्षरनाममालिकाकी 'च' संज्ञक प्रतिके अन्तर्गत है। अतः इसका परिचय तदनुसार जान लेना चाहिए।

२ – **'ख' संज्ञक प्रति** – एक पत्रात्मक और १५८४ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीमहिमाभक्ति जैन ज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है। लंबाई-चौड़ाई ९$\frac{१}{३}$×४ इंच प्रमाण है।

३ – **'ग' संज्ञक प्रति** – तेरह पत्रात्मक और १२५०५ क्रमांक वाली यह प्रति 'प्राच्यविद्यामन्दिर, वडोदरा' के संग्रहकी है। इस प्रतिमें प्रस्तुत कृतिके साथ 'अनेकार्थध्वनिमंजरी' भी लिखी गई है। लंबाई-चौड़ाई ११$\frac{१}{४}$×४$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण है।

१२ – पुरुषोत्तमदेवप्रणीत एकाक्षरकोष

सका संशोधन मुद्रित प्रकाशनों और निम्नलिखित दो प्रतियोंसे किया है—

१,२ – **'क' और 'ख' संज्ञक प्रति** – क्रमशः सत्रह और अठारह पत्रात्मक तथा १२१६३ और १०९३९ क्रमांक वाली यह दोनों प्रतियां 'प्राच्यविद्यामन्दिर, वडोदरा' के संग्रहको हैं। इन दोनों प्रतियोंमें प्रस्तुत कृतिके अतिरिक्त 'अनेकार्थध्वनिमंजरी' भी लिखी गई है। दोनों प्रतियोंकी क्रमशः ९$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{४}$ और १०×४$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण लंबाई-चौड़ाई है।

१३ – अमरचन्द्रकवि-विरचिता एकाक्षरनाममालिका

इसका संशोधन इन तीन प्रतियोंसे किया है—

१ – **'क' संज्ञक प्रति** – सोलह पत्रात्मक लघुरचनासंग्रहात्मक और $\frac{७५}{१}$ क्रमांक वाली यह ताडपत्रीय प्रति 'जैनप्राच्यविद्यामन्दिर (अहमदाबाद)' स्थित मुनिश्रीचारित्रविजयग्रन्थसंग्रह' की है। लंबाई-चौड़ाई १३$\frac{१}{२}$×२$\frac{१}{४}$ इंच प्रमाण है।

२ – 'ख' संज्ञक प्रति – एक पत्रात्मक ग्रौर ४६६६ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीनाहटा जैन ज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है। लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{१}{४}$ × ४$\frac{१}{४}$ इंच प्रमाण है।

३ – 'ग' संज्ञक प्रति – एक पत्रात्मक ग्रौर ७६१६ वाली यह प्रति 'प्राच्य-विद्यामन्दिर, वडोदरा'के संग्रहकी है । अन्तमें पुष्पिका इस प्रकार है—'संवत् १७०१ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे १५ दिने इन्दुवासरे लिखितं। पं. नंदनमेरु-मुनिना ।।शुभं भवतु।।'

१४ – धरसेनाचार्यविरचित एकाक्षरी नानार्थकाण्ड

प्रस्तुत कृति धरसेनाचार्यविरचित विश्वलोचनकोशान्तर्गत है । इसका संशोधन इन दो प्रतियों से किया है—

१ 'क' संज्ञक प्रति – विश्वलोचनकोशनामक ७७ पत्रात्मक ग्रौर १८२७ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीला० द०भा०प्रा० सं० विद्यामन्दिर (ग्रहमदाबाद) स्थित मुनिश्रीपुण्यविजयग्रंथसंग्रहकी है । लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{१}{४}$ × ४$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण है।

२ – 'ख' संज्ञक प्रति – ग्राकलूज-निवासी नाथा रंगजी गांधीकी ग्रोरसे प्रकाशित विश्वलोचनकोशकी यह मुद्रित ग्रावृत्ति है ।

१५ – महीपसचिवकृत एकाक्षरसंज्ञाकाण्ड

प्रस्तुत कृति महीपसचिवकृत ग्रनेकार्थतिलकके ग्रन्तर्गत है। इसका संशोधन इन तीन प्रतियोंसे किया है—

१ – 'क' संज्ञक प्रति – दो पत्रात्मक यह प्रति 'श्रीपार्श्वचन्द्रीयउपाश्रय (शामलापोल, ग्रहमदाबाद) स्थित ग्रातृचन्द्रजैनज्ञानभण्डार'की है । लम्बाई-चौड़ाई १० × ४$\frac{१}{४}$ इंच प्रमाण है ।

२३ – 'ख' ग्रौर 'ग' संज्ञक प्रति – क्रमशः सत्रह ग्रौर सोलह पत्रात्मक तथा ५८ ग्रौर ७६ क्रमांक वालो ग्रनेकार्थतिलकनामक यह दोनों प्रतियां 'प्रर्वतक श्री कान्तिविजयजैन ज्ञानभण्डार छाणी (जी. वडोदरा)'की है । दोनों प्रतियोकी लम्बाई-चौड़ाई ११$\frac{३}{४}$ × ५$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण है ।

१६ – ग्रज्ञातविद्वत्कृत एकाक्षरकोश ।

इसकी एकमात्र प्रति मिली है। विश्वशम्भुप्रणीत एकाक्षरनाममालिकाकी 'च' संज्ञक प्रतिके ग्रन्तर्गत प्रस्तुत कृति है ग्रतः इसका परिचय तदनुसार जान लेना चाहिए।

१७ – महाराजशाहराजकृता एकाक्षरनाममाला

प्रस्तुत नाममाला गायकवाड ओरीएन्टल सीरीज (ग्रन्थांक ५९) द्वारा प्रकाशित 'शब्दरत्नसमन्वयकोश' नामक मुद्रित ग्रन्थमेंसे यथावत् ली गई है।

१८ – अज्ञातविद्वत्कृता एकाक्षरनाममाला

पचास पत्रात्मक और २४ क्रमांक वाली श्रीला० द० भा० प्रा० सं० विद्यामन्दिर (अहमदाबाद) स्थित 'मुनि श्रीपुण्यविजयग्रन्थसंग्रह' की आकाशभैरवकल्पनामक कृतिके अन्तर्गत प्रस्तुत नाममाला है। लंबाई-चौड़ाई ९$\frac{3}{4}$×६ इंच प्रमाण है। अंतमें इस प्रकार पुष्पिका है—'ल. व्यासः सांकला। पं. शास्त्री धीरजरामस्येदं पुस्तकं ॥शुभं भवतु॥'

२० – मेदिनीकारकृता एकाक्षरनाममाला

मुद्रित मेदिनीकोशमें से यह नाममाला यथावत् ली गई है।

२० – एकाक्षरी मातृकाकोश

वि.सं. १९२९में काशीसंस्कृतमुद्रणालयकी ओरसे प्रकाशित 'द्वादशकोशानां सङ्ग्रह' नामक ग्रन्थमें से यह कोश यथावत् लिया गया है।

२१ – अजिरादि-एकाक्षरी नाममाला

इसका संशोधन इन पांच प्रतियोंसे किया है—

१ – 'क' संज्ञक प्रति – एक पत्रात्मक और १५८५ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीमहिमाभक्तिजैनज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है। प्रति अशुद्ध है। लंबाई-चौड़ाई ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{4}$ इंच प्रमाण है।

२ – 'ख' संज्ञक प्रति – एक पत्रात्मक और ८७४३ क्रमांक वाली यह अशुद्ध प्रति 'श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमन्दिर (पाटण) स्थित श्रीसागरगच्छजैनज्ञानभण्डार' की है। लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इंच प्रमाण है।

३ – 'ग' संज्ञक प्रति – सात पत्रात्मक और १२७५ क्रमांक वाली यह अशुद्ध संग्रह प्रति (इसमें छोटी चार कोशरचनायें है) श्रीआत्मानन्दजैनज्ञानमन्दिर (वडोदरा) स्थित प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयशास्त्रसंग्रहकी है। लंबाई-चौड़ाई १३$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{4}$ इंच प्रमाण है।

४ – 'घ' संज्ञक प्रति – विश्वशम्भुप्रणीत एकाक्षरनाममालिकाकी 'च' संज्ञक प्रतिके अन्तर्गत प्रस्तुत कृति है, अतः तदनुसार इसका परिचय जान लेना चाहिए।

५ – 'ङ' संज्ञक प्रति – पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयजीसे प्रस्तुत नाममाला-की मुद्रणार्ह प्रतिकृति प्राप्त हुई है।

२२ – नत्वादि-एकाक्षरीनाममाला

इसको एकमात्र प्रति मिली है। एकपत्रात्मक और ८७४४ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमन्दिर (पाटण) स्थित श्रीसागरगच्छजैनज्ञान-भण्डार' की है। प्रस्तुत कृतिके साथ लेखकने 'भोज्यनामगर्भित वीरस्तवन' भी लिखा है। प्रतिकी लंबाई-चौड़ाई १०×४$\frac{१}{४}$ इंच प्रमाण है।

२३ – अभिधानादि-एकाक्षरी नाममाला

इसका संशोधन इन चार प्रतियोंसे किया है—

१ – 'क' संज्ञक प्रति – विश्वशम्भुप्रणीतएकाक्षरनाममालिकाकी 'च' संज्ञक प्रतिके अन्तर्गत प्रस्तुत कृति है, अतः इसका परिचय तदनुसार जान लेना चाहिए।

२ – 'ख' संज्ञक प्रति – तीन पत्रात्मक और ५५७ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीदानसागरजैनज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है। लंबाई-चौड़ाई १०×४ इंच प्रमाण है।

३ – 'ग' संज्ञक प्रति – दो पत्रात्मक १९५९ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्री-नाहटा जैन ज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है। लंबाई-चौड़ाई १०$\frac{१}{२}$×४$\frac{१}{२}$ इंच प्रमाण है।

४ – 'घ' संज्ञक प्रति – छः पत्रात्मक और १५८१ क्रमांक वाली यह प्रति 'श्रीमहिमाभक्तिजैनज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है। लंबाई-चौड़ाई १०×४$\frac{१}{३}$ इंच प्रमाण है।

२४ – पण्डितमनोहरकृतएकाक्षरकोश

इसकी एकमात्र प्रति मिली है। दो पत्रात्मक और ११५७ क्रमांक वाली यह प्रति 'राजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान, जोधपुर' की है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई २८.५×१३ Cm. है। अन्तमें इस प्रकार पुष्पिका है—'संवत् १८८४ शाके १७४९ पौष सुदि ३ भृगौ लिखितं व्यास दुर्गाशंकर चि० उदयशंकर-देवशंकरपठनार्थं।'

२५ – कालिदासकृता एकाक्षरी नाममाला

इसका संशोधन इन दो प्रतियोंसे किया है—

१,२ – 'क' और 'ख' संज्ञक प्रति – क्रमशः छः और सात पत्रात्मक तथा

२४४९ और २४५० क्रमांक वाली यह दोनों प्रतियां 'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर' की हैं। प्रस्तुत दो प्रतियोंकी लम्बाई-चौड़ाई २२.५ × ११ c.m. है। 'क' संज्ञक प्रतिके अंतमें इस प्रकार पुष्पिका है—'संवत् १९२४का चैत्र मासे कृष्णपक्षे तिथौ १० बुद्धवासरे लिपिकृतं कवेस्वर चिरंजयलाल कृष्णगढमध्ये स्वाध्ययनाय ॥कल्याणमस्तु॥'

२६ – महेश्वरप्रणीता एकाक्षरी नाममाला

मुद्रित महेश्वरविरचित विश्वकोशके पृथक्-पृथक् स्थानोंमें से एकाक्षरशब्दविषयक पद्यसंग्रह लिया गया है।

२७ – एकादिसंख्या-संज्ञाकोश

पूज्यपाद मुनिवर्य श्रीपुण्यविजयजी महाराजजीसे प्रस्तुत कृतिका एक प्राचीन हस्तलिखित पत्र प्राप्त हुआ।

२८ – कवि रतनू वीरभाणकृत राजस्थानी भाषानिबद्ध एकाक्षरी नाममाला

इसकी एकमात्र प्रति मिली है। दो पत्रात्मक और ५३० क्रमांक वाली यह प्रति 'राजस्थानप्राच्यविद्याप्रतिष्ठान, जोधपुर' के संग्रहकी है। प्रतिकी लंबाई-चौड़ाई २५ × १२ c.m. है। अन्तमें इस प्रकार पुष्पिका है—'सं. १८५६ श्रावण वदि ३ रवौ लिखिता श्रीगोडीजीप्रसादात् ॥'

२९ – विद्वत्प्रबोधशास्त्र

इसकी एकमात्र प्रति मिली है। ५२९ क्रमांक वाली प्रस्तुत प्रति 'श्रीनाहटा जैन ज्ञानभण्डार, बीकानेर' की है।

परमज्ञानी शास्त्रकारोंने स्वाध्याय अर्थात् अध्ययन-अध्यापन और परिशीलनको आभ्यन्तर तपकी कोटिमें स्थान दिया है, यह सुविदित ही है। मुझे अपने जीवनमें यथाशक्ति और यथामति शास्त्राध्ययनका योग मिला है और उससे जो चित्तकी एकाग्रता और वृत्ति संयमकी प्राप्ति हुई है वह अपूर्व है, अवर्णनीय है। दीक्षाकालके प्रारम्भसे ही मुझे विद्वत्ता, गम्भीरता, उदारता, सरलता और सहृदयताके महत्सागरवत् पूज्यपाद मुनिराज श्रीपुण्यविजयजीका सहवास प्राप्त हुआ, यह मेरा सौभाग्य है। पूज्य पुण्यविजयजी महाराज तो जैन और जैनेतर आगमोंके पारगामी विद्वान् हैं और विविधशास्त्रीय ग्रन्थोंके सर्व मर्मतलस्पर्शी संशोधन-सम्पादनमें निरन्तर निमग्न रहने वाले एक ज्ञानयोगी हैं। इन्हींकी इस सत्प्रवृत्तिसे प्रेरणा पाकर मेरी शास्त्राध्ययनकी ओर अभिरुचि बढ़ी है जिससे मैं अपने जीवनको कुछ अंशोंमें कृतार्थ कर पाया हूँ।

इस 'एकाक्षरीनाममालासंग्रह' के सम्पादनकी जिम्मेदारी आजसे बारह वर्ष पूर्व मैंने अपने ऊपर ली थी। आज इस ग्रन्थको इस रूपमें प्रकाशित होता हुआ देख कर कुछ संतोष का अनुभव हो रहा है।

वि.सं. २००७के सालमें हमारा चातुर्मास बीकानेर में था। उस समय सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयजीने पूज्यपाद मुनिवर्य श्रीपुण्यविजयजी म.सा. से प्रार्थना की थी कि राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाको आपकी ओरसे कुछ न कुछ प्रसादी मिलनी ही चाहिये। इस प्रार्थना पर पूज्य महाराजश्रीने संस्कृत-एकाक्षरी-कोश तैयार करनेका निश्चय किया। इसका कार्यभार मुझे सौंपा गया। विद्याप्रेमी भाई श्रीअगरचन्दजी नाहटाने अपने भण्डारमें से एवं बीकानेरके खरतरगच्छीय बड़े भण्डारमें से इस ग्रन्थकी हस्तलिखित प्रतियाँ लाकर दी थीं। इस उदारताके लिए मैं इनका आभारी हूँ। बोकानेरसे गुजरातकी ओर विहार हुआ। मार्गमें मैंने इसकी नकल कर ली।

हमारा वि.सं. २००८का चातुर्मास अहमदाबाद में हुआ। इस चातुर्मासमें इस कार्यमें कोई खास प्रगति नहीं हो सकी। वि.सं. २००९के कार्तिक महीनेमें पाटनके 'श्रीहेमचन्द्राचार्य-ज्ञानमंदिर' की व्यवस्थाके लिए पूज्य मुनिवर्य श्रीपुण्यविजयजी म.सा.के साथ पाटन जानेका अवसर मिला। वहाँके ज्ञान भण्डारोंसे इस ग्रन्थकी जो भी प्रतियाँ मिलीं उनका मिलान मैंने अपनी प्रतिसे कर लिया। अहमदाबादके बिहारके समय मार्गमें इसकी प्रेस-कापी बना ली।

अहमदाबाद आनेके बाद तुरंत ही खंभातके 'श्रीशान्तिनाथ-भण्डार' की ताड़पत्रीय प्रतियोंकी व्यवस्थाके लिए धर्मप्रेमी सुश्रावक स्व. मोहनलाल दीपचंद चोकसीके आग्रहसे पूज्य पुण्यविजयजी महाराज साहब खंभात पधारे। मैं भी साथ में था। खंभातसे हम बड़ौदा गये। वहाँ भगवतीसूत्रके योगोद्वहनके निमित्त मेरा चातुर्मास नहीं हुआ। पू. पुण्यविजयजी म.सा.का चातुर्मास अहमदाबाद में हुआ। इसी वजहसे मेरा ग्रन्थ-सम्पादनका कार्य स्थगित सा ही रहा। फिर भी योगोद्वहनकी क्रियाके बाद जो भी थोड़ा समय मिलता था उसके बीच बड़ौदाके श्रीआत्मारामजी-ज्ञानमन्दिरसे, पूज्यपाद प्रवर्त्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजके ज्ञानभण्डारमें से, बड़ौदाके प्राच्यविद्यामन्दिरमें से एवं छानीके प्रवर्त्तक श्रीकान्तिविजयजीके ज्ञानभण्डारमें से इस ग्रन्थकी जो भी प्रतियाँ उपलब्ध हुईं, मैंने उसकी प्रेस-कापी कर ली। इस कार्यमें उपरोक्त संस्थाके संचालकोंने जो सहयोग दिया उसके लिए वे सभी धन्यवादके पात्र हैं।

वि.सं. २०१०में हम पुनः अहमदाबाद आये। यहाँ प्राच्यविद्यामन्दिरके

श्रीचारित्र्यविजय-ज्ञानभण्डारमें से इस ग्रन्थकी ताड़पत्रीय प्रतिकी प्रेस-कापी मैंने बना ली। इस कार्यके लिए इस संस्थाके प्राण श्रीत्रिपुटीजी महाराज (मुनिराज दर्शनविजयजी आदि) का आभार मानता हूँ। साथ ही संस्थाके संचालकोंका भी आभारी हूँ।

पूज्य आचार्य महाराज श्रीविजयमनोहरसूरिजी महाराजकी प्रेरणासे अहमदाबादके राजा पटेलकी पोलके संवेगी उपाश्रयकी प्रतियाँ भी उपयोगमें लाई गईं, इसका भी मैं साभार उल्लेख करता हूँ।

विविध स्थानोंसे २४ नाममालाएँ एवं पुरातत्त्वाचार्य जिनविजयजीकी तरफसे तीन नाममालाएँ—इस प्रकार कुल २७ नाममालाओंका संग्रह इस ग्रन्थमें किया जा सका है। साथ ही राजस्थानी भाषाकी नाममाला और एक 'विद्वत्-प्रबोधशास्त्र' का भी इसमें समावेश कर लिया गया है। इस प्रकार यह कुल २९ कृतियोंका संग्रह-ग्रन्थ हैं।

इन सभी कृतियों एवं उनके कर्ताओंकी विस्तृत परिचयात्मक भूमिका बड़ौदा प्राच्यविद्या मन्दिरके निवृत्त संस्कृतपंडित, ख्यातनामा संशोधक विद्वान् धर्मप्रेमी श्रीलालचंद भगवान गांधीने लिख कर दी है। वृद्धावस्था होते हुए एवं अन्य अनेक कार्य होते हुए भी उन्होंने इस प्रस्तावनाके लिखनेमें अपना बहुमूल्य समय दिया है। अतः इनका भी मैं हार्दिक आभार मानता हूँ। इसकी प्रस्तावनासे मेरा कार्य अत्यन्त सरल बन गया और साथ ही इस ग्रंथकी उपयोगिता भी बढ़ गई, इसमें कोई संदेह नहीं।

इस ग्रन्थके सम्पादन में ली गई ताडपत्रीय प्रतियोंका परिचय अन्यत्र दे दिया गया है।

इस ग्रन्थके संपादनके बहाने मुझे सम्पादन-संशोधनके क्षेत्रमें प्रत्यक्ष काम करनेका जो अवसर मिला है उसका सारा श्रेय पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयजीको ही है। साथ ही श्रीजिनविजयजीकी प्रेरणासे राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानने मुझे यह कार्य सौंपा, अतः यह भी धन्यवादका पात्र है।

मैं यथाशक्ति और बुद्धिके अनुसार इस महत्त्वपूर्ण कार्यको पूरा कर पाया हूँ, यह तो पूज्य मुनिवर्य श्रीपुण्यविजयजीकी कृपाका ही प्रतिफल है, जिनका वात्सल्य प्रतिक्षण मेरे पर बरसता ही रहता है और जिनकी किसी न किसी सत्कार्य और विद्या-प्रवृत्तिकी ओर सदैव प्रेरणा मिलती ही रहती है। उनका आभार किन शब्दोंमें व्यक्त करूँ? इनकी सदैव इसी प्रकारकी कृपादृष्टि बनी

रहे, यही भावना है। इस कार्यमें पंडित अमृतलाल ने बहुत सी सहायता की है उनका भी भूरि-भूरि आभार मानता हूं।

इस प्रासंगिक निवेदनके साथ यह ग्रंथ विद्वानोंके करकमलोंमें भेंट करता हूँ। मेरा विश्वास है कि संस्कृत-प्रेमियों एवं अभ्यासियोंके लिए यह ग्रन्थ अवश्य उपयोगी सिद्ध होगा।

महावीर निर्वाण महापर्व, वि.सं. २०१६
लुनसावाड़ा,
मोटी पोळ जैन उपाश्रय,
अहमदाबाद।

पन्यास रमणीक विजय

भूमिका

साहित्यप्रेमी सज्जनोंको यह सुविदित ही है कि विद्वानोंकी विद्वत्ताका आधार, कविओंकी कवित्वशक्तिका आधार और व्याख्याकार-वृत्तिकारोंको व्याख्या-विवेचनादिशक्तिका मुख्य आधार शब्द-वैभव है। नाममालाओंका एकार्थ-अनेकार्थ-शब्दकोशोंका यथार्थ ज्ञान उनके लिए परम आवश्यक है। उसके ज्ञानसे वे जगत् पर, समाज पर उपकार कर सकते हैं, सर्वत्र विजय पा सकते हैं। अतएव विद्याभ्यासी विद्यार्थि-गणको विद्या-वृद्धिके लिए शब्द-शास्त्रीय ज्ञानके साथ नाममाला-शब्दकोशका पठन-पाठन भी करना उचित माना गया है। विना वास्तविक शब्दार्थ-ज्ञानके अनर्थ होना भी सम्भव रहता है, अतः शब्दकोश-नाममालाका विज्ञान अपेक्षित है।

भारतके प्राचीन कवियोंने, प्रौढ़ विद्वानोंने संस्कृत-प्राकृत-साहित्यमें परोपकारार्थ विविध दृष्टिसे ऐसे अनेक शब्दकोशोंकी, नाममालाओंकी रचना की है, जिनमेंसे कई सद्भाग्यसे साहित्य-संरक्षकोंके सुप्रयत्नसे आज भी उपलब्ध होती हैं और संशोधन-कुशल संशोधक महानुभावोंके शुभ प्रयत्नसे प्रकाशित हुई हैं, जिनको हम दृष्टिगोचर कर रहे हैं।

पाठक लोग परम प्रसन्न होंगे कि इस ग्रन्थमालामें यह एकाक्षरी संस्कृत-नाममालाओंका विशिष्ट संग्रह प्रकाशित हो रहा है। प्राचीन भारतके भिन्न-भिन्न देशोंके कोशकार-कविरत्नोंकी और राजा, मन्त्री, दण्डाधिनाथ आदिकी भी यह प्रसादी है। प्राचीनकालमें २७ आभूषणोंमें मोतीओंकी नक्षत्रमाला होती थी, और श्रीमन्तवर्ग द्वारा कण्ठमें धारण की जाती थी; इसी प्रकार यहाँ २७ संस्कृत - एकाक्षरी - नाममालाओंकी संकलना कण्ठ-धार्य है, २८वीं नाममाला राजस्थानी भाषा-निबद्ध है, और २९वीं मालाके मेर (मेरु) समान विद्वत्प्रबोध-शास्त्र इसमें संकलित किया गया है।

इन सर्व नाममालाओंका और इनके कर्ता कविगणका विस्तृत परिचय कराना सहजसाध्य नहीं, इसलिए यथाशक्य संक्षिप्त स्वरूपमें आगे दर्शानेका स्वल्प प्रयत्न किया जाता है।

इसका संशोधन-संपादन, सम्पादकने अहमदाबाद, बड़ौदा, पाटन, जोधपुर, पूना आदि स्थलोंकी प्राचीन प्रतियोंके आधार पर और प्रकाशित कोशों को भी दृष्टिगोचर कर सावधानतासे बहुत परिश्रमसे प्रशंसनीय शुद्ध रूपमें पाठ्य

स्वरूपमें किया है—ऐसे कथनमें अत्युक्ति नहीं है। प्राचीन प्रतियोंके पृथक परिचय, तथा परिशिष्टोंसे यह संग्रह विशेष उपयुक्त प्रतीत होगा।

इस कोश-संग्रहके सम्पादक मुनिराज पंन्यास-पदालंकृत श्रीरमणिकविजयजी गणी हैं, जो गुरु-परम्परासे साहित्यप्रेमी हैं। वे सद्गत शान्तमूर्ति सुप्रसिद्ध हंसविजयजी मुनिराजके प्रशिष्य और स्व. पन्यासजी म० श्री सम्पद्विजयजीके शिष्य हैं। विशेषमें, आगम-प्रभाकर सुप्रसिद्ध विद्वद्वर्य मुनिराज श्रीपुण्यविजयजीके चिरकालीन सत्सङ्गी सहवासी सहचर भी हैं, अत एव इस सम्पादनके विशेष यशोभागी हुए हैं। हम आशा करते हैं कि वे उत्तरोत्तर साहित्य-संशोधनका विशिष्ट कार्य सतत करते रहें और विद्वानोंके धन्यवादके पात्र हों।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला यशस्विनी है, जिसको आजीवन साहित्योपासक, शतशः प्राचीन ग्रन्थ-संशोधक, अनेक प्राचीन ग्रन्थमालाओंके सम्पादक, सुप्रसिद्ध विद्वद्रत्न, पुरातत्त्वके आचार्य श्रीजिनविजयजी जैसे सुयोग्य संचालक मिल गए हैं, जो परम वृद्धावस्थामें भी, शारीरिक अस्वास्थ्यमें भी साहित्योपासनामें सतत निरत हैं, वे विद्वानोंके सदा धन्यवादके पात्र हैं। इस एकाक्षरीकोशसंग्रहके प्रकाशनसे संस्थाकी प्रतिष्ठा-कीर्तिमें श्रीवृद्धि हुई है।

आशा है, पाठक-गण इसके पठन-पाठन द्वारा सम्पादक और प्रकाशनसंस्थाका प्रयत्न सफल करेंगे और विशिष्ट विद्वत्ता प्राप्त कर समाजका और देशका कल्याण करेंगे।

नाममाला-परिचय

१ – विश्वशम्भु-प्रणीता एकाक्षरनाममालिका

इस कोशकारने कर्मसाक्षी (सूर्यदेव)का ध्यान धरके और उसको नमन करके एकाक्षरवाचिका यह नई नाममाला ११५ पद्योंमें रची है। अ से अः तक प्रत्येक स्वर और क से क्ष पर्यन्त प्रत्येक व्यञ्जन किस-किस अर्थोंमें संस्कृत साहित्यमें माने गए हैं; उसका स्पष्ट निर्देश इसमें वर्ण-क्रमकी विशद रीतिसे लिङ्ग-सूचन-पूर्वक किया गया है।

आजसे ४० वर्ष पहिले जैसलमेर-ग्रन्थभण्डारके सूचीपत्रके सम्पादनमें हमने इसको अप्रसिद्ध ग्रन्थोंमें सूचित किया था (जे. ग्रन्थ सूची गा. ओ. सि. पृ. ५७,६४)। वहाँ डुंगरजी यतिजीके संग्रहमें ह.लि. प्रति है, अन्य सूचित प्रति, एशियाटिक सोसायटी बंगालके सूचीपत्रमें (८,१०१) तथा पिटर्सन रिपोर्टमें (वॉ. ६,९४) दर्शाई थी। इस संग्रहमें क. ख. ग. घ. ङ च. संज्ञक प्रतियोंसे यहाँ सूचन होता है, जिसे देख कर प्रसन्नता होती है।

अन्यत्र अनेकार्थरत्नमंजूषा (दे.ला.पु.ग्रं. ८१)के परिशिष्ट (पृ. १२३-१२७)में प्रो ही. र. कापडिया द्वारा सन् १९३३में इसका सम्पादन हुआ था ।

वाचक समयसुन्दरगणिने सं० १६४९में रची हुई कृति अर्थरत्नावली 'अष्टलक्षार्थी' में इस कोशकारके नामके साथ इस नाममालाके कई पद्योंको उद्धृत किया है ।

प्रो० वेलणकरने 'जिनरत्नकोश' खण्ड १, पृ. ६१में इसका निर्देश किया है, और प्रो. ही. र. कापडियाने 'जैन संस्कृत-साहित्यका इतिहास' (मुक्ति-कमल-जैन मोहनमाला, ख. १, पृ. १३२)में इस एकाक्षर नाममालाका निर्देश करके इसके कर्ता विश्वशम्भुके विषयमें सूचन किया है कि—'सामान्य रीते एओ 'जैन' गणाय छे, एटलेमें आ कृतिनी नोंध लीधी छे' लेकिन हमारे खयालसे यह कोशकार जैन नहीं, सूर्योपासक होना चाहिए क्योंकि उसने मङ्गलाचरणमें कर्मसाक्षी-देवको नमस्कार करके रचना की है । सूर्यके विविध ७२ नामोंसे 'कर्मसाक्षी' उसका एक नाम है, श्रीहेमचन्द्राचार्यने अभिधानचिन्तामणिनाममाला देवकाण्ड, श्लो. ९८ में 'जगत्-कर्मसाक्षी भास्वान् विभावसुः' शब्दोंसे सूर्यके नामोंमें दर्शाया है ।

इस कोशकारका समय और विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ ।

२ – राघवकविविरचित एकाक्षरकाण्ड

कवि राघवने विघ्न-विनाशक विनायकदेवको नमन करके पूर्व कोश-विश्व आदिका समाहरण कर बालोंकी ज्ञान-सिद्धिके लिए नानार्थमञ्जरी-कोशकी रचना की है, जो पुण्यपत्तन (पूना)से प्रसिद्ध है । उसका एक अंशरूप यह एकाक्षर काण्ड है ।

इस कविने पूर्व पण्डित-कोशकारोंकी कोश-रचनाका ३–५ पद्योंमें निर्देश किया है—(१) विश्वप्रकाश, (२) गोपाल, (३) शेषकर, (४) धनञ्जय, (५) शब्दार्णव, (६) वैजयन्ती, (७) सूर्य, (८) रुद्र, (९) यादव, (१०) प्रताप, (११) भागुरि, (१२) दण्डी, (१३) रभस, (१४) हलायुध, (१५) सुभूति, (१६) हरि, (१७) विष्णु, (१८) वररुचि, (१९) अमर, (२०) उत्पल, (२१) अजय । और (२२) शाश्वत, इन कोशोंकी साधन-सामग्री इस कविके सामने विद्यमान ज्ञात होती है, जिसके आधार पर ८५ पद्योंमें मातृकावर्ग-संयुक्त एकाक्षरादि-संयुक्त श्रेष्ठ नानार्थमञ्जरी की रचना हुई है ।

३ सौभरि-कृता एकाक्षरनाममाला

इस कविने देव-देव रमापतिको प्रणाम करके चित्त प्रसन्न करने वाला इस

नाममालाकी रचना की है। इसका अन्यत्र श्रीएकनाथ दत्तात्रय कुलकर्णी एम ए., पी.एच.डी. जैसे प्रसिद्ध विद्वान् द्वारा सम्पादन होकर, प्रकाशन डेक्कन कॉलेजकी सिरीझमें पुण्यपत्तन (पूना)से ईस्वी सन् १९५५में हुआ है। इसके प्रथम पद्यमें एकार्थनाममाला छपा है, इसके स्थानमें घ प्रतिका पाठ एकाक्षरनाममाला उचित प्रतीत होता है। १०० पद्योंकी यह शब्द-माला विद्वज्जनोंके चित्तको प्रसन्न कर सकती है।

४ - सौभरिकृत द्व्यक्षरकाण्ड नाममाला

१११ पद्योंकी यह संयुक्त दो व्यञ्जन वाली ज्ञान-विधायिनी नाममाला भी उपर्युक्त सौभरि कविने ही परम ब्रह्मका ध्यान करके प्रकाशितकी है। अन्तमें कविने सूचित किया है कि इसका पठन, श्रवण करने वाला शब्दार्णवका पारगामी हो सकता है। अन्तमें गद्यमें कविको 'सकलविद्यानिधि मुनीश्वर' सूचित किया है।

यह कृति भी अन्यत्र पूर्वोक्त कृतिके साथ पुण्यपत्तन (पूना)से प्रकाशित है।

५ - हरितालराजामात्य-माधवकृता एकाक्षरशब्दमाला

(१) स्वराक्षरकाण्ड, (२) व्यञ्जनकाण्ड और (३) संयुक्ताक्षरकाण्ड इन तीन काण्डोंमें विभक्त (१) २४, (२) २५ से १२१ और (३) १२२ से १३८ पद्योंमें इस शब्दमालाकी रचना है।

बड़ौदा म.स. युनि. के अन्तर्गत प्राच्यविद्यामन्दिरकी ह.लि. ताडपत्रीय प्रति (नं. १३४२९), जो बङ्गलिपिमें है, उसके आधार पर यहाँ प्रकाशित होती है।

इस शब्दमालाके कर्ता हरिताल राजाके अमात्य माधवका समय, स्थान, परिचयके लिए संशोधन आवश्यक है।

६ - इरुगप दण्डाधिनाथरचित नानार्थरत्नमालागत एकाक्षरकाण्ड

जगदुपकारिणी नानार्थरत्नमालाका यह काण्ड ७७ पद्योंमें पूर्ण होता है, जिसमें लिङ्गका भी निर्देश है। बड़ौदा-प्राच्यविद्यामन्दिर में इसकी ह.लि. प्रति है। अन्यत्र पुण्यपत्तन (पूना) से भी यह प्रकाशित हुआ है।

७ - आचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचित अनेकार्थसंग्रहान्तर्गत एकस्वरकाण्ड

निर्णयसागर प्रेस, बम्बईके अभिधानसंग्रहमें, और काशीकी चौखम्बा सिरीझमें, तथा परदेशमें भी यह अनेकार्थसंग्रह प्रकाशित है। उसका १६ पद्यमय

यह एकस्वरकाण्ड यहाँ उद्धृत किया है। सं० १३८७ में लि. ताडपत्रीय प्रति (चा ज्ञा.भं. प्राच्यविद्यामन्दिर अहमदाबाद) के आधार पर यहाँ शुद्ध किया है। माननीय श्रीहेमचन्द्राचार्य सुप्रसिद्ध है, इसका ऐतिहासिक प्रामाणिक परिचय हमारे ऐतिहासिक लेख-संग्रहमें है, जो 'श्रीसयाजीसाहित्यमाला पुष्प ३३५' में प्रकाशित है।

८ – सुधाकलशमुनिविरचिता-एकाक्षरनाममाला

श्री वर्धमान तीर्थंकरको प्रणाम करके रची गई ५० पद्यों की यह नाममाला विक्रमकी पन्द्रहवीं शताब्दीके प्रारम्भकी प्रतीत होती है। कर्त्ताने अन्तिम पद्यमें अपने परिचय में मलधारिगच्छभर्ता राजशेखरसूरि गुरुका शिष्य दर्शाया है।

यह राजशेखरसूरिके प्रबन्धकोश (चतुर्विंशतिप्रबन्ध)की रचना वि.सं. १४०५ में हुई थी, जो प्रसिद्ध है। 'सिद्धराज और जैनों' नामक मेरी लेखमाला में इसका और पूर्वजोंका परिचय विस्तारसे कराया है, जो अब 'सयाजी-साहित्यमाला-पुष्प ३३५'में प्रकाशित मेरे ऐतिहासिक लेख-संग्रह में प्रसिद्ध है। और अन्यत्र अलङ्कारमहोदधि (गा. ओ. सिरीज नं. ९५)को मेरी संस्कृत-प्रस्तावनामें भी उनके पूर्वजों का परिचय कराया है।

यह एकाक्षरनाममाला, श्रीहेमचन्द्राचार्यकी अभिधान-चिन्तामणिकी अनेक आवृत्तियोंके साथ परिशिष्टोंमें (दे. ला. जैन पु., विजयकस्तूरसूरि-सम्पादित अभिधानचिन्तामणिकोश पृ. २३६-२४०) और अनेकार्थरत्नमंजूषा परि० क (दे. ला. पु. ग्रं ८१)में भी प्रकाशित है।

उ० समयसुन्दर गणिने सं. १६४९में रची हुई अष्टलक्षार्थी अर्थरत्नावलीमें इसका नाम-निर्देश और अवतरण किया है।

इस कोशकार कवि वाचनाचार्य सुधाकलशकी अन्य रचना वि. सं. १३८०में रची गई संगीतोपनिषद् और सं० १४०६ में उसका रचा सार (सारोद्धार) प्राप्त होता है, जो सन् १९६१में डॉ० उमाकान्त प्रेमानन्द शाह द्वारा सम्पादित होकर 'गायकवाड़ ओ. सिरीज नं० १३३' में 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' नामसे प्रकाशित है।

९ – महाक्षपणकविरचित-एकाक्षरकोष

कविने प्रारम्भमें सूचित किया है कि—आगमों, अभिधानों, धातुओं और शब्द-शासनसे यह एकाक्षर-नामाभिधान किया है। ४१ पद्योंमें क से क्ष तकके

व्यञ्जनोंके अर्थ-प्रतिपादनके पीछे स्वरोंके अर्थोंका दिग्दर्शन है। क. प्रतिके अन्तमें पाठ प्राप्त होता है कि 'एकाक्षरार्थसंलापः स्मृतः क्षपणकादिभिः।' इस कोशकारके विषयमें विशेष परिचय प्राप्त नहीं होता है।

१० – परमानन्द-नन्दन-विरचित-एकाक्षरीयप्रथमकाण्ड

इस कोशकारने प्रारम्भमें चिदानन्द-स्वरूप गोस्वामोको, और समस्तवाङ्-मय-व्यापकस्वरूप वाली गीर्देवताको नमन-मङ्गल करके स्व-परोपकारके लिए विविध वर्गों द्वारा नाम-पारायणकी रचना की है। उसका ४४ पद्य-प्रमाण यह प्रथमकाण्ड है। अ से क्ष पर्यन्त वर्णोंका अर्थनिर्देश इसमें किया है। अन्तिम पद्यमें यह सूचित किया है कि विश्वप्रकाश, अमर और हैमप्रमुख बहुत आकरोंका निरीक्षण करके शिशु-प्रबोधके लिए श्रीजगन्नाथ-पदके प्रसादसे यह विचार (रचन) किया है।

अन्तमें गद्यमें इसको गढमल-पुत्र और परमानन्द-नन्दन [मकरन्ददास] विरचित 'परमानन्दीय-नाममालाका' प्रथम काण्ड कहा है।

इसकी प्रति, आगम-प्रभाकर मुनिराज पुण्यविजयजीके भण्डारसे प्राप्त हुई थी।

११ – वररुचिविद्वत्कृता-एकाक्षरनाममाला

इसके प्रारम्भमें मङ्गल, अभिधेय, प्रयोजनादि-सूचक पद्यमें ग–गणेश, गा–भारती, उमा-पार्वती, उ-म-ब्रह्म-रुद्र, मा-लक्ष्मी और अ-विष्णुको प्रणाम करके काव्य-कौशल-सिद्धिके लिए इस एकाक्षर-निघण्टुकी रचना सूचित की है। ४६ पद्योंमें अ से क्ष पर्यन्त वर्णोंका अर्थ-निर्देश है। ४७वें अन्तिम पद्यमें सूचन है कि वाररुच (वररुचि-प्रोक्त) इस निघण्टु (कोश)को जो जानता है, उसका स्वागत वागर्णवमें प्रवृत्त होता है, (पाठान्तरसे) यथेष्ट गणना (रचना) कर सकता है, उसकी ख्याति-प्रवृद्धि होती है।

एक वररुचि कवि, नन्द राजाके समय शकटाल मन्त्रीके समकालीन प्रसिद्ध था। और व्याकरणकार, जिसने 'प्राकृतप्रकाश' व्याकरणकी रचना की थी, वह वररुचि अथवा अन्य इसका कर्त्ता है, विचारणीय है।

१२ – पुरुषोत्तमदेवप्रणीत-एकाक्षरकोष

इसमें ३७ पद्योंमें अ से क्ष पर्यन्त वर्णोंका अर्थ-निर्देश है। आधार और अभिधेय-सूचक ३८वें पद्यमें सूचित किया है कि आगमोंसे, अभिधानोंसे, धातुओं

से और शब्द-शासनसे यह एकाक्षरनामाभिधान किया है।

यह निर्णयसागर प्रेस, बम्बईसे और अन्य स्थलोंसे कोश-संग्रहमें और पृथक् भी अन्यत्र प्रकाशित है।

आचार्यश्रीविजयकस्तूरसूरि-सम्पादित अभिधानचिन्तामणि कोशके परिशिष्टमें पृ० २४१-२४२में 'एकाक्षरकोश' नामसे यह प्रकाशित है, वहाँ कर्त्ताका नाम नहीं है।

पुरुषोत्तमदेवप्रणीत-शब्दभेदप्रकाश कोशको वहाँ परिशिष्टमें (पृ० २३०से २३५में) प्रकाशित किया है।

१३ – अमरचन्द्रकविविरचिता-एकाक्षरनाममालिका

इसके प्रथम पद्यमें कर्त्ताने अमरकवीन्द्र नाम दर्शाया है और सूचन किया है कि विश्वाभिधान कोशोंका अवलोकन करके इस एकाक्षरनाममालाकी रचना की है। २१वें अन्तिम पद्यमें सूचन है कि पूर्वाचार्योंसे ग्रथित एकार्थ, नानार्थ नाममालाओंसें यह शुद्ध करने योग्य है। इसके सम्पादनमें ताडपत्रीय प्रतिका उपयोग हुआ है।

विक्रमकी तेरहवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें पण्डित अमरचन्द्र 'कवीन्द्र' नामसे प्रसिद्ध थे। गुजरातकी वीसलदेवकी राजसभाको इस कविने विभूषित किया था। शीघ्रकवित्व-शक्तिसे संस्कृतमें काव्य-समस्या-पूर्ति करके समकालीन कवि-समाजमें प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया था। इनकी बालभारत, काव्यकल्पलता, (कविशिक्षा) पद्मानन्दमहाकाव्य, स्यादिशब्दसमुच्चय आदि रचना बहुत प्रसिद्ध है। इसके स्यादिशब्दसमुच्चयका सम्पादन-प्रकाशन हमने सं० १९७१में काशीसे किया था। उसकी सं०-प्रस्तावनामें उसका प्रबन्ध, राजशेखरसूरिके प्रबन्धकोशसे उद्धृत करके दर्शाया था। इसके मित्र कवि अरिसिंहके रचे हुए मन्त्रीश्वर वस्तुपालके 'सुकृतसंकीर्तन' महाकाव्यके प्रत्येक सर्गके अन्तिम ४ श्लोक इस पं० अमरकविकी कृति हैं। वायटगच्छीय श्वे० जैनाचार्य जिनदत्त-सूरि (विवेकविलासकार)के ये शिष्य थे।

१४ – श्रीधरसेनाचार्यविरचित-एकाक्षरी-नानार्थकाण्ड

दि० धरसेनाचार्यका विश्वलोचनकोश (मुक्तावली) प्रसिद्ध है। दिगम्बर जैन-समाजके सेनान्वयमें हुए मुनिसेनकविके शिष्य यह श्रीधर-धरसेनाचार्यका समय निश्चित नहीं। पं० नन्दलालशर्माकी भाषाटीकाके साथ सन् १९१२में आकलूज-निवासी नाथा रंगजी गान्धीद्वारा अनेकार्थ यह कोश प्रकाशित हुआ है।

उसका ३५ पद्यप्रमाण यह एकाक्षरी-नानार्थकाण्ड है। इसमें क से लेकर क्ष-पर्यन्त वर्णोंका अर्थ-निर्देश प्रथम २८ पद्योंमें है, और स्वरोंका अर्थ-निर्देश पीछेके ७ पद्योंमें किया है।

१५ – महीपसचिवकृत-एकाक्षरकाण्ड

सचिव महीपने भारतीदेवीका आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण किया है। दूसरे पद्यमें अभिधेय सूचित किया है कि कवीन्द्ररूप कुमुदोंको आनन्दित करनेमें सुधाकर(चन्द्र)सदृश रम्य अनेकार्थसंग्रह चार काण्डों द्वारा रचते हैं। उसमें अकारसे लेकर क्ष पर्यन्त शब्दों द्वारा एकाक्षरनामक प्रथमकाण्ड सविस्तार प्रकट है, यह ४५ पद्योंमें है।

कविने ४६वें पद्यमें तथा प्रत्येक काण्डके अन्तमें अपना परिचय कराया है कि श्रीमत्सोमका पुत्र सलक्ष सचिव वाक्-कण्ठ-भूषणसे भूषित था। उसने और सौभाग्यदेवीने इस महीप पुत्रको उत्पन्न किया था। विद्वानोंके हर्षके लिए अनुपम रचित उसके नानार्थ-नामालय इस ग्रंथमें यह एकाक्षरकाण्ड समाप्त होता है, अन्तमें इस कोशका अनेकार्थतिलक नाम भी दर्शाया है। अन्यत्र पुण्यपत्तन (पूना)के डेक्कन कॉलेज रिसर्च इन्स्टीट्यूटसे सन् १९४७में 'अनेकार्थतिलक' नामसे यह प्रसिद्ध हुआ है।

सं० १६४९में समयसुन्दर गणिकी अर्थरत्नावली (अष्टलक्षार्थी)में इसका भी नाम-निर्देश और अवतरण दर्शाया है।

१६ – अज्ञातविद्वत्कृत-एकाक्षरकोश

२९ पद्य-प्रमाण इस कोशका प्रारम्भ 'कः प्रजापतिरुद्दिष्टः' इस प्रकार है। २० से २२ श्लोकका य, र, ल, व, व्यञ्जनोंका अर्थ-निर्देशक अंश त्रुटित है। २५ से २९ तकके पद्योंमें अ से अः तक स्वरोंका अर्थ-प्रतिपादन है। इसके कर्ताका नाम ज्ञात नहीं हुआ।

१७ – महाराज-शाहराजकृता-एकाक्षरनाममाला

महाराजशाहराजरचित-शब्दरत्नसमन्वयकोश, जो गायकवाड ओरियन्टल-सिरीज नं. ५९में सन् १९३२में प्रकाशित है, उसका ककारादि वकार-पर्यन्त व्यञ्जनोंका अर्थ-प्रतिपादक २४ पद्यप्रमाण यह एक अंश है।

यह कोशकार महाराजशाहराज शाहजी नामसे प्रसिद्ध थे। शाहजी भोसलेका पौत्र और छत्रपति शिवाजीके अपरबन्धु तंजोर राज्यके शासक वेंकाजी

राजके सुपुत्र थे। विद्यानुरागी और विद्वत्पूजक जो ईस्वीकी १६वीं शताब्दीके अन्तमें राज्य करते रहे। इसकी कृतिरूप इस कोशकी प्रसिद्धि है।

१८ – अज्ञातविद्वत्कृता-एकाक्षरनाममाला

इस नाममालाको सम्पादकने अन्तमें [   ] चिन्ह द्वारा बीजनाममाला सूचित की है और आकाशभैरवकल्पके अन्तर्गत दर्शाई है। तान्त्रिक-मतमें प्रसिद्ध अ से क्ष पर्यन्त वर्णोंका तत्वनिर्देश इसमें ५० पद्यों द्वारा दर्शाया है। वरानना अम्बिकाके सम्बोधनसे शिव-शक्तिके संवादरूप यह रचना है।

१९ – मेदिनीकारकृता-एकाक्षरनाममाला

मेदिनीकोश सुप्रसिद्ध है। उसका ५३ पद्यरूप यह एक भाग है। जिसमें क से ह पर्यन्त वर्णोंका अर्थ-निर्देश ४४ पद्योंमें, और स्वरोंका अर्थ-सूचन ४५ से ५३ तकके पद्योंमें किया है।

मेदिनीकरको प्राणकरका पुत्र सूचित किया है, षट्शत गाथाकोशकी रचना से जिसका कौशल विख्यात है, उस कविने प्राचीन अनेक कोश-समूह, लिङ्ग-शास्त्रों, पाणिनि, पुराण, काव्यादिका निरूपण करके इस अनेकार्थ कोशकी रचना की है। वृषाङ्क (महादेव) और गजाननको नमन, स्मरण करके इसकी रचना की है। पिछले कई कोशकारोंने इसका स्मरण किया है।

जीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्यने संस्करण कर कलिकाता राजधानीमें ई० १८७२में यह कोश प्रकाशित किया था।

२० – एकाक्षरी-मातृकाकोश

प्रारम्भ में श्रीगणेश, महेशान, भारती, ईश्वर, शिवको नमन करके बाल-बुद्धिके लिए इस मातृका-निघण्टु (कोश)की रचना है। इसमें ॐसे प्रारम्भ करके अ से अः तक, और क से क्ष पर्यन्त सर्व वर्णोंका अर्थनिर्देश ५३ पद्यों द्वारा किया है। इस मातृकाकोशको एक प्रतिमें तन्त्रकोश नामसे भी सूचित किया है। अन्यत्र काशीके संस्कृत-मुद्रणालयसे सं० १९२९में प्रकाशित (शिलाछाप) बारह कोशोंके संग्रहमें यह भी छपा है।

२१ – अजिरादि-एकाक्षरी-नाममाला

४६ पद्य-प्रमाण इस नाममालाके प्रारम्भमें 'अजिरे' पद होनेसे इसको अजि-रादि नामाङ्कित की है। इसके प्रारम्भके १६ पद्योंमें अ से अः तक स्वरोंका अर्थ-

कथन है, १७वें पद्यसे ४६ तक पद्योंमें क से क्ष तक सब व्यञ्जनोंका अर्थ प्रदर्शित किया है। इसके कर्ताका नाम ज्ञात नहीं हुआ।

२२ – नत्वाऽऽदि-एकाक्षरी-नाममाला

इसके प्रारम्भमें नत्वा शब्द है, इसलिए इसको नत्वादि नामसे उपलक्षित किया है। १५ पद्य-प्रमाण इस संक्षिप्त नाममालाके प्रारम्भमें अब्जिनीधव (सूर्य) को नमन, और कमलाकर-भारतीका ध्यान करके कविने अनेकार्थ-एकाक्षर-अभिधान-अभिधेय सूचित किया है। ॐसे आरम्भ कर क्ष तकके वर्णोंका अर्थ-कथन इसमें है। इसके कर्ताका नाम उपलब्ध नहीं हुआ।

२३ – अभिधानादि-एकाक्षरी-नाममाला

इसके आदिमें 'अभिधान' शब्द होनेसे इसको अभिधानादि नामसे प्रकट किया है। इसमें ३७ पद्यों में अकारादिसे क्षकारान्त वर्णोंका पृथक्-पृथक् अभिधान सूचित किया है, जो बुधजनोंमें परिचित है। इस कोशकारका भी नाम विदित नहीं होता।

२४ - पण्डितमनोहरकृत-एकाक्षरकोश

इसके प्रारम्भमें कोशकारने मङ्गल, अभिधेय और प्रयोजनका सूचन किया है—वरदादेवी वाङ्मयी और अव्यय शिवको नमन करके मैं एकाक्षर-कोशको दिव्यज्ञानकी विवृद्धिके लिए लिखता हूँ। अ से क्ष-पर्यन्त वर्णोंका अर्थ-प्रतिपादक यह मनोहर एकाक्षरकोश ३१ पद्योंमें समाप्त हुआ है। अन्तमें गद्यमें 'पं० मनोहरकृत' सूचित है, इसके सिवाय कर्ताके विषयमें विशेष ज्ञात नहीं होता।

इसका सम्पादन, जोधपुरके प्राच्यविद्याप्रतिष्ठानकी ह. लि. प्रति परसे हुआ है।

२५ – कालिदासव्यासकृत-एकाक्षरी-नाममाला

शङ्करके पादपद्म-युगलको नमन करके, नाना-ग्रन्थोंके अवलोकनसे हृदयके अज्ञानान्धकारका ध्वंस करनेके लिए इसकी रचना ज्ञानके लिए की है, कवि (चन्द्र) ने इसको नानार्थकौमुदी भी कहा है। इस एकाक्षर-संग्रहमें लिङ्ग-निर्देश भी किया है। ३३ पद्योंमें स्वरवर्ग, और ३४ से १५२ पद्योंमें क, का, कि, की से क्ष, क्षा, क्षि पर्यन्त व्यञ्जन-वर्ग-वर्ण-मातृकाका विस्तारसे अर्थ-प्रतिपादन किया है। प्रथम औ प्रान्त (१५३) पद्यमें कविने अपना परिचय दिया है—

प्रह्लादपुर (पालनपुर) में पहिले भूदेव दामोदर ग्रन्थकर्ता हुआ, उसका पुत्र यह व्यास कालिदासकवि समझना चाहिए। जिसका समय विदित नहीं है।

२६ – महेश्वरकविप्रणीता-एकाक्षरी-नाममाला

महेश्वरकविका विश्वप्रकाशकोश सुप्रसिद्ध है, उसका एकभागरूप यह २९-पद्यमय है, जिसमें क से ह-पर्यन्त व्यञ्जनोंका २५ पद्योंमें, और २५ से २९ पद्योंमें अ से औ-पर्यन्त स्वरोंका अर्थ-प्रतिपादन है।

महेश्वरकवि की दूसरी कृति 'शब्दप्रभेद' नामकी है, वह भी प्रसिद्ध है। उसकी टीका, खरतरगच्छीय ज्ञानविमल उपाध्यायने विक्रमसंवत् १६५५ में की थी। सुप्रसिद्ध श्रीवल्लभ पाठक इसके शिष्य थे।

२७ – एकादिसंख्या–संज्ञाकोश

इस कोशमें ३० पद्योंमें १ से २० तक, और १०० तथा १००० संख्या जैन, जैनेतर साहित्यमें प्रसिद्ध भिन्न-भिन्न शब्दों द्वारा सूचित की है। कविका नाम, परिचय ज्ञात नहीं, तो भी विदित होता है कि वह जैन-साहित्य का अच्छा जानकार होना चाहिए, अन्यथा जैनागमादि–प्रसिद्ध संख्या-वाचक शब्दोंका निर्देश अशक्य है। कवि के जैन होनेकी अधिक सम्भावना है।

२८ – कविरतनू वीरभाणकृत-राजस्थानीभाषानिबद्ध-एकाक्षरीनाममाला

अ से लेकर क्ष-पर्यन्तके वर्ण किस किस अर्थमें माने गए हैं, उसका प्रतिपादन कविने राजस्थानी भाषामें ३३ पद्योंमें किया है। यह नई कृति यहाँ प्रकाशित हुई है। कविने ३४वें पद्यमें सूचित किया है कि विद्वानोंके मुखसे षट् तर्क और अट्ठारह पुराण सुन कर इस एकाक्षरी नाममाला रतनू भानने भाषी (की) है। नकार, णकार के पूर्व अक्षर पर यहाँ अनुस्वारकी पद्धति है। अन्तमें इसको घडोईरा रतनू वीरभाण-कृत कही है। जोधपुर (राजस्थान) प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान की सं० १९५६में लिखित प्रति परसे यह सम्पादन हुआ है।

२९ – वाचनाचार्य-श्रीवल्लभगणिविरचित-विद्वत्प्रबोधशास्त्र

यह एक अपूर्व विशिष्टविद्वद्गम्य, अद्भुत संस्कृत-काव्य है। इस एकाक्षरी कोश-संग्रहमें इसका सुसंबद्ध आवश्यक स्थान है। इस संग्रहमें चतुर्थ क्रमाङ्कमें सौभरिकृत-द्व्यक्षरनाममाला प्रकाशित हुई है, उसमें प्रदर्शित विविध अर्थवाले संयुक्त वर्णोंको प्रत्येक श्लोकके प्रत्येक चरणमें प्रयुक्त कर इस चमत्कृतिकर

रसिक काव्यकी रचना कविने की है। संस्कृत-साहित्यमें यह अद्वितीय कहा जाय, ऐसा काव्य है। शायद ही इस पद्धतिका अन्य काव्यविद्वानोंने देखा होगा।

कविने विद्वत्प्रबोधशास्त्रनामक इस काव्यकी रचनाके प्रारम्भमें शारदा-देवी और सुगुरुको प्रणाम करके कहा है कि इसमें वस्तुवर्णना संयोगिवर्ण-समूहसे की जायगी, जिससे उन वर्णोंका प्रबोध हो। क्रमशः क्णासे लेकर क्ष्व-पर्यन्त संयुक्त वर्णों द्वारा यह विशिष्ट रचना है। तीन परिच्छेदमय इस काव्यके प्रथम परिच्छेदमें ५६ पद्योंमें चार चरणधारी गज, अश्व, वृषभ, सिंह और उष्ट्रका वर्णन है। दूसरे परिच्छेदमें ६० पद्योंमें चरणद्वयधारी शुक, तित्तिरि, हंस, बक, चक्रवाक, सारस, टिट्टिभ, मयूर, चाष, खञ्जरीट आदि प्राणियोंका वर्णन है।

तीसरे परिच्छेदमें २१ पद्योंमें यति (साधु), पण्डित और वीरजनोंका वर्णन है। अन्तमें सूचन किया है कि विशुद्ध बुद्धिसे कवि-कौतुकके लिए और स्व-बोधकी वृद्धिके लिए संयुक्त वर्णों द्वारा इस प्रकार वर्णनात्मक काव्यकी रचना की है। खास करके प्रत्येक पद्यमें राजाको सम्बोधन करके प्रासंगिक वर्णन है। यह राजा संभवतः बलभद्रपुरका होना चाहिए जहाँ कविने यह रचना की है।

प्रत्येक परिच्छेदके अन्तमें, गद्यमें कविने अपना परिचय प्रकट किया है कि वे खरतरगच्छीय जयसागरमहोपाध्यायके सन्तानीय, ज्ञानविमल-उपाध्यायके शिष्य थे। काव्यकारका नाम वाचनाचार्य श्रीवल्लभगणि स्पष्ट है।

मेरेमें इतनी योग्यता न होने पर भी सम्पादक मुनिराज पं० रमणिक-विजयजीने इस प्रस्तावनाका भार विश्वास रख कर मुझ पर धर दिया, साथ में आगम-प्रभाकर मुनिराज श्रीपुण्यविजयजीके द्वारा प्रेरणा-समर्थन भी कराया। कुछ अनुकूलता न होने पर भी उनके वचनको मान दे कर यथामति, यथाशक्ति यह प्रयत्न किया है। अनौचित्य या स्खलनाके लिए पाठक क्षमा करें और आवश्यक सूचना करें। आशा है गुणानुरागी सज्जन-गण उचित गुणग्रहण करेंगे।

सद्गुणानुरागी
लालचन्द्र भगवान् गान्धी
[निवृत्त जैनपण्डित, बड़ौदा-राज्य]

वि० सं० २०१९ शरत्पूर्णिमा
बडी वाडी, रामपुरा,
बड़ौदा (गुजरात)

卐 ॐ ऐँ नमः 卐

विश्वशम्भुप्रणीता

[१] एकाक्षरनाममालिका

ध्यात्वा नत्वा निरीक्ष्यान्तःकरणे [1]कर्मसाक्षिणम् ।
क्रियते नूतना नाममालैकाक्षरवाचिका ॥ १ ॥
यतयो ये परं पारं शब्दाम्भोधेर्गता मताः ।
एषा तेषामतो मान्या [2]महाभावमनीषिणाम् ॥ २ ॥
स्वमेवार्थं [3]स्वयं रान्ति यतोऽकारादयः स्वराः ।
स्वराभावे ककारादिव्यञ्जनं व्यर्थमेव हि ॥ ३ ॥
न क्षरत्यक्षरं तेन स्वर एव तदुच्यते ।
[4]व्यञ्जनानि स्वराश्चैव वर्णशब्देन वर्णिताः ॥ ४ ॥

*

अः शिवे केशवे वायौ ब्रह्म-चन्द्रा-ऽ[5]ग्नि-भानुषु ।
आः स्वयम्भूस्तथोक्ते स्यादव्ययं कोप-पीडयोः ॥ ५ ॥
एषामपत्ये [6]कामे स्यादिः सम्बोधन-कोपयोः ।
इः कुत्सार्थेऽपि [7]पापेऽपि निषेधे नयनभ्रमे ॥ ६ ॥
ई [8]रमा-मदिरा-मोहे महानन्दे शिरोभ्रमे ।
स्त्रीलिङ्गोऽयमुणाद्यन्तो नातोऽस्माल्लोपनं सुपः ॥ ७ ॥
ईयौ योऽत्र जसा रूपं स्यादमा [9]रूपमीं शसीः ।
ईशब्दो द्रव्यपर्यायेऽव्ययं वृद्धैः प्रदर्शितम् ॥ ८ ॥

---

१ ख. कर्मसाक्षिकम् । २ महान् भावोऽभिप्रायो येषां ते महाभावाः, महाभावाश्च ते मनीषिणश्च महाभावमनीषिणस्तेषाम् । ३ क. च. स्वकं । ४ क. व्यञ्जनादिस्वराश्चैत० । ५ क. ङ. ऽग्नि-सानुषु । ६ ङ. काशे । ७ क. ङ. पासेऽपि । ८ ख. रसा । ९ क. ङ. रूपमीः शसि ।

उः शब्दः शङ्करे तोये तोयधौ[1] धरणीधरे ।
अवसाने वितर्केऽपि वचनावसरेऽव्ययम् ॥ ९ ॥

एतदर्थे निषेधेऽपि निर्णीतो दीर्घ ऊरपि ।
ऊं मान्तोऽव्ययं कोपेऽपि स्वार्थेऽप्यूं च प्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

रक्षार्थवाचकावेतौ व्याख्यातौ लघु-दीर्घकौ ।
ऋशब्दः पावके सूर्ये धर्मे दाने धने पुमान् ॥ ११ ॥

आ अरौ अर एतानि अरं चारौ ऋश्च शसि ।
ॠर्दीर्घो देवमाता स्याद् ॠभवस्तेन ते सुराः ॥ १२ ॥

स्त्रीलिङ्गोऽयं धने वह्नौ वासवे वरुणालये ।
ॠः रौ रो रूपमेतस्य सन्धिसामान्यसाधनम् ॥ १३ ॥

ऌर्ह्रस्वो लघुसंवादे शक्तौ सर्वर्षिमातरि ।
लघ्वक्षरेऽपि ऌ क्लीबे दीर्घॡर्देवमातरि ॥ १४ ॥

वाराह्यां वर्त्तते दीर्घः सौदामिन्यामिदं द्वयम् ।
सर्पे मन्त्रे तथा तन्त्रे ऌद्वयं लुकिते तते ॥ १५ ॥

केऽपि दीर्घं न मन्यन्तेऽनुकृतेर्मन्वतेऽपरे ।
कामसम्बोधने स्यादे तत एर्ब्रह्मकेवले ॥ १६ ॥

एशब्देनोदिता चण्डी[2] गोचरे[3] गोपतावयम् ।
ऐः स्वर्णेऽपि च पुँल्लिङ्गः शम्भु-श्रीपति-वायुषु ॥ १७ ॥

शारदायां स्वरे सूर्ये मूर्च्छायामैरपि स्मृतः ।
ओशब्दो रक्षणे शेषे सूत्रे[4] पुंसि श्रुतावपि ॥ १८ ॥

औः समुद्रे जलेऽनन्ते पीडने पुंसि भाषणे ।
अं मान्तो ब्रह्मसंवादे परब्रह्मप्रवाचकः[5] ॥ १९ ॥

---

१ घ. तोयदे । २ क. घ. ङ. चन्द्री । ३ ङ. च. गोचरी गो° । ४ ग. मन्त्रे ।
५ ङ. परब्रह्मणि वाचकः ।

व्यसने व्याधिते व्याधौ ज्ञान-विज्ञान-वन्दने ।
अः सान्तः शङ्करे सूर्ये दाना-ऽऽदान-प्रदीप्तिषु ॥ २० ॥
सत्तायां क्षेपणे खेदे [1]तथाऽऽश्चर्ये च निन्दके ।
को ब्रह्मा-ऽऽत्म-प्रकाशा-ऽर्क-केकि-वायु-यमा-ऽग्निषु ॥ २१ ॥
कं मौलि-सुख-तोयेषु कः शब्दः सर्वलिङ्गकः ।
सर्वनामगणोक्तो यस्तस्य रूपं त्रिलिङ्गकम् ॥ २२ ॥
कुः स्त्रियां भुवि कुत्सायामव्ययं कु प्रकीर्त्तितम् ।
कुः काक-शब्दयोर्मान्तः कं कान्तौ कामवाचकः ॥ २३ ॥
वाच्यलिङ्गः खशब्दोऽर्के वितर्के व्योम्नि वेदने ।
प्रश्न-निन्दा-नृप-क्षेप-सुख-शून्येन्द्रिये दिवि ॥ २४ ॥
अवसानेऽपवर्गेऽपि परब्रह्मण्यपीरितः ।
गस्तु गातरि गन्धर्वे शब्द-सङ्गीतयोरपि ॥ २५ ॥
गौर्गणेश-पशु-स्वर्गे व्रजा-ऽऽशा-भूदके[2]ऽक्षिणि ।
वाण्यां किरण-बाणा-ऽस्त्रे पुँल्लिङ्गोऽयमुदीरितः ॥ २६ ॥
आबन्तो गाऽवनीवाची गैः पुमान् शब्द-गीतयोः ।
ईबन्तो गीर्गिरौ वाण्यां धातुवद् गाश्च [3]गाथकः ॥ २७ ॥
मारणे मरणे घाते घण्टायां किङ्किणीरवे ।
शक्तौ सभैरवे देवे घो [4]मन्त्रेऽन्यार्थवाचकः ॥ २८ ॥
पुण्ये प्रवाहे पाषण्डे घं च [5]घोरे [6]घुरो [7]रवे ।
घिरिदन्तो घृते दीप्तौ घाऽऽबन्तो भूमिवाचकः ॥ २९ ॥
ङः शून्ये दानवाञ्छायां निन्दायामाधिसादरे ।
सौदामिन्यां नदे सर्पे [8]सिद्धौ तल्लिङ्गवाचकः ॥ ३० ॥

---

१ क. तथा स्वर्गे। २ क. °के क्षणे । ३ ग. च. गायकः । ४ ख. च. मैत्रे° ।
५ क. ङ. घोरी । ६ क. ख. ङ. घुरौ। ७ क. ग. ङ. रवौ । ८ क. घ. सिद्धे ।

चः पुंसि चेतने चन्द्रे चौरेऽहौ चारुदर्शने ।
इदन्तश्चिः स्त्रियां बुद्धौ [1]ज्ञाने चारे च पावके ॥ ३१ ॥
चान्वाचय-समाहारेतरेतरसमुच्चये ।
समासार्थेऽव्ययं चायमाबन्तश्चा दिवि स्मृतः ॥ ३२ ॥
छः सूर्ये सोमनैर्मल्ये छेदे स्वच्छे च ज्ञातरि ।
छन्दानुवर्त्तिनि प्रोक्तश्छाऽऽबन्तो निम्नगा-गिरौ ॥ ३३ ॥
छौः स्त्रियां लोहधारायां छौस्तु पुंसि परश्वधे ।
वानरे हरिणे [2]छागे छिः पुंसि प्रोच्यते छले ॥ ३४ ॥
जो जेता जं च जीवेऽपि जुर्वेगे नभसि स्वके ।
जाया-जनन्योर्जाऽऽबन्तः शय्यायामपि [3]जारजे ॥ ३५ ॥
स्त्रियां जूर्गतिवाची स्या[4]ज्जापे शापेऽपि जिः पुमान् ।
ह्रस्वो दीर्घोऽपि जृशब्दो जरायां दुर्गतावपि ॥ ३६ ॥
जी रेफान्तस्तदर्थः स्त्री जूर्जुवौ जुव इत्यपि ।
प्रादुर्भावे [5]नवे जः स्यादपत्ये जं च जन्मनि ॥ ३७ ॥
झशब्दः [6]स्वपने शून्ये तथोर्ध्वक्षेपणेऽपि झः ।
विनष्टे विवरे भृङ्गे स्त्रियां झा तडिति स्मृतः ॥ ३८ ॥
[7]वने च भुवने झं स्यादेकान्ते सङ्गते च झम् ।
स्वद्रव्ये भगे भोगे सविलासा सुन्दरी च झा ॥ ३९ ॥
अकस्मादर्शने शोके [8]मूढास्रमोचने च झुः ।
ऊदन्तः स्त्रीलिङ्गो झिश्च सर्वधातुध्वनौ च झीः ॥ ४० ॥
झीर्झिरौ झिर इत्येवंरूपो हानौ जरार्थकः ।
ञो ज्ञाने गायने दाने [9]घुर्घुरध्वनिते च ञम् ॥ ४१ ॥

---

१ क. ख. ज्ञानाचारे । २ क. छाये । ३ क. जारके, ख. जीरजे, ङ. जीरके ।
४ घ. स्याज्जपे । ५ ख. ग. च. जवे । ६ ङ. च. स्वपते । ७ घ. धने ।
८ क. ख. घ. गूढास्रमोचने । ९ ख. ग. घ. घर्घरध्वनिते ।

ञोऽर्द्धेन्दुमण्डले मन्त्रे [१]वाप्यां ञा ञिस्तु पर्वते ।
निषेधे चञ्चले ञुः [२]स्यान्निर्माणे ञीरिति ध्वनिः ॥ ४२ ॥

टः स्थिरे ताडने त्रासे विश्वासेऽश्वे च पुंस्ययम् ।
टाऽऽबन्तो घटिकावाची पृथिव्यां टं करङ्कके ॥ ४३ ॥

भूषायां च मणौ [३]मेण्ढ्रे टुः स्याद् भ्रष्टे टि पक्षिणि ।
पारस्त्रैणे टिशब्दोऽस्ति फटायां टा जटास्वपि ॥ ४४ ॥

मुद्रोर्मि-महिलासु स्त्री टीबन्तः पटहेऽपि टम् ।
ठो महेशे महामन्त्रे मन्त्रि-भूपा-ऽऽ[४]धि-ताण्डवे ॥ ४५ ॥

आसने शयने शून्ये तथाऽऽकाशे जलाशये ।
घटे चक्रे च मुद्रायां कुण्डले [५]भाग्यवत् कचे ॥ ४६ ॥

ठीबन्तो मत्स्यसङ्घाते ठाऽऽबन्तः कर्णकोटरे ।
वि[६]लये विजये देवसेवने ठुः प्रि[७]याऽर्जिते ॥ ४७ ॥

[८]नखोच्छूनकुचे काञ्च्यां ठुः स्त्री कृत्रिमरोदने ।
ठैरदैन्तो वृथाहास्ये सूर्ये तारासु ठौ स्त्रियाम् ॥ ४८ ॥

वञ्चके वेषकारे ठुः ठं बिन्दौ जलबुद्बुदे ।
ठशब्देऽन्येऽपि सन्त्यर्थास्ते नोच्यन्तेऽतिविस्तृते(ताः) ॥ ४९ ॥

डो भयङ्करनादेषु चन्द्रे चञ्चलयोषिति ।
जिह्वायां कुण्डलिन्यां डा [९]चण्डिका-भूतभाषयोः ॥ ५० ॥

धातुवत् डुश्च हिंसायां [१०]बंधे क्षेपे च डौर्द्वयोः ।
डूर्डुवौ डुव इत्येवं डौ डावावपरस्य च ॥ ५१ ॥

---

१ क. ख. ग. ङ. च. चाव्यां ज्ञाविन्मुनीन्दुजाः । २ क. स्यान्निर्म्माण्ये, ख. स्यान्निर्माये, घ. निर्नाथे, ङ. स्यान्निर्माथे । ३ क. ग. घ. ङ. मेन्द्रे । ४ ख. ग. घ. ०धिवाडवे । ५ क. ङ. च. भागवत् । ६ घ. वलये । ७ क. प्रिया जिते । ८ घ. नवोत्थानकुचे । ९ क. ङ. चन्द्रिकाभू० । १० क. ख. बन्धे ।

भ्रान्ते [1]सर्ववधे बाले बलहीने [2]वृथाकुले ।
पुंसि डुर्व्यर्थवाचाले सर्पे शापे च डूः स्त्रियाम् ॥ ५२ ॥
कालक्षेपे तथा [3]दण्डे डी पुंसि व्योमगामिनि ।
उत्पाते [4]जरत्काये डुः फेने दानेऽल्परोदने ॥ ५३ ॥
[5]व्रणे वा पुंसि डं प्राहुः क्षुद्रजन्तौ [6]वृथोदिते ।
मुस्तापत्रे करे डी स्त्री डोरो[7]दन्तोऽन्त्यजे नरि ॥ ५४ ॥
ढो ढक्का निर्गुणे लास्ये गोमुखे ढं नपुंसके ।
ढीर्ना शुनी समाख्याता [8]पक्षिभेदे स्त्रियां ढि वा ॥ ५५ ॥
प्रहारे चायुधे ढः स्यात् पाते ढोऽपाठि पण्डितैः ।
श्वापदे दुर्जने [9]मूढे वाद्यभेदे ढ उच्यते ॥ ५६ ॥
कर्णरोगेऽप्यतिस्थूले गुदवाते ध्वनौ च ढुः ।
प्राभृते वन्दनायां ढा, ढः स्वभावे विमत्सरे ॥ ५७ ॥
णो निर्गुणे [10]जपे योग्ये [11]दुष्टे क्रोडे च तस्करे ।
[12]पशुपुच्छे स्त्रियां णा स्त्री बृहन्माने च णुः पुमान् ॥ ५८ ॥
संप्रत्यये तथा स्वार्थे णः कोणे चैकचक्षुषि ।
[13]क्षीरे रणे धने धान्ये णीः पुमान् णीर्णियौ णियः ॥ ५९ ॥
समे स्वरे चये चारे चरणे णिश्चोभयात्मकः ।
तः प्रेते निष्फले [14]शांते पौनःपुन्येऽव्ययं च तुः ॥ ६० ॥
रङ्गे रागे तुलादण्डे [15]भानौ तूर्यध्वनौ च ता ।
पूजायां तिः स्त्रियां तो(स्तो?)के मनोमाने [16]महाघने ॥ ६१ ॥

---

१ घ. सर्वायुधे । २ ख. घ. वृषाकुले । ३ ख. घ. दम्भे, ग. दन्ते । ४ च. रजकीये । ५ ङ. प्राणे । ६ घ. प्रियोदिते । ७ ख. घ. ङ. डौरौदन्त्योऽन्त्यजे । ८ ख. घ. ङ. पक्षभेदे । ९ ख. मुण्डे । १० क. जये । ११ घ. पृष्टे । १२ घ. पशौ पुच्छे । १३ घ. क्षीणे । १४ ख. ग. शान्ते । १५ ग. ङ. च. भाते, ख. ताते, घ. ताने । १६ ग. घ. महाधने, च, महामघे ।

अविलम्बे जले क्लीबे तस्तन्तौ तन्तुवायके ।
तौश्च तैरेतदर्थेऽस्ति तैर्वसाने [1]वेयत्यपि ॥ ६२ ॥
तैस्तायौ ताय इत्येवंरूपं स्त्री-पुंसयोरपि ।
ह्रस्वदीर्घौ तु-तू भेदे प्रश्ने ध्यानेऽव्ययं द्वयम् ॥ ६३ ॥
थो मिथ्यावाचके श्रान्ते शोके थाऽऽरब्धवस्तुनि ।
निमग्ने [2]चातिगम्भीरे थं स्तोकार्थे नपुंसकम् ॥ ६४ ॥
मरुदेशप्रदेशेऽपि थावन्तः स्थूलयोषिति ।
देवकूटे कषाये स्त्री दृढे परिवृढेऽपि था ॥ ६५ ॥
थुः पुंसि पर्वते द्रोणे व्रणे थुर्निन्दिते पुमान् ।
निष्ठीवने [3]बले भूते थी[4]र्बन्तो भाजने भुवि ॥ ६६ ॥
दो दाने पूजने क्षीणे दानशौण्डे च [5]पालके ।
देवे दीप्तौ [6]दुराधर्षे दोर्भुजे [7]दीर्घदेशके ॥ ६७ ॥
दयायां दमने दीने दन्दशूकेऽपि दः स्मृतः ।
बन्धे च बन्धने बोधे बाले बीजे बलोदिते ॥ ६८ ॥
विदोषेऽपि पुमानेष चालने चीवरे वरे ।
दाऽऽबन्तो दिवि गङ्गायां कुले कालकृते च दा ॥ ६९ ॥
[8]उपदायां च नैवेद्ये निर्नाथा वनिता च दा ।
दैः स्त्रियां देवकन्यायां दीबन्तो [9]देवतर्पणे ॥ ७० ॥
धो विधाता धनं धर्मे धो गुह्ये गुह्यकेश्वरे ।
[10]धंश्चाऽऽधारभूतेऽपि वह्नौ वादेऽवधायके ॥ ७१ ॥
देशभेदे भृते भीते धस्तथोपरि वर्त्तते ।
धं च [11]षण्ढे च पारुष्ये धूर्वधूवद् धुरि स्मृतः ॥ ७२ ॥

---

१ क. ख. ग. वपत्यपि । २ ख. वारिगम्भीरे । ३ घ. वने पूते । ४ क. थावन्तो । ५ घ. पालने । ६ ख. दुराध्यार्थे, घ. दुराधर्थे । ७ घ. च. दीर्घकेशके । ८ क. च. उपमायां । ९ क. ङ. देवतार्पणे, घ. देवतापगा । १० घ. धस्तथाधारभूतेऽपि । ११ ख. च. खण्डे ।

भारे धौ नौवदादिष्टा धीर्बुद्धौ धातुवत् स्त्रियाम् ।
[1]ध्याने धेनौ धरायां च धैरदन्तः पुमानयम् ॥ ७३ ॥
धृ ता(ना) पतिरपि प्रोक्तो [2]धुश्च धूर्नोऽतिधृष्टकः ।
वञ्चने धं च तत्सेना धा स्त्रियां च तथाऽधिके ॥ ७४ ॥
धिः [3]समग्रे सुधावाद्धौ लोहे धौ[4]रपि चेष्यते ।
धोशब्दः के निपातेषु प्राहुः पदविचक्षणाः ॥ ७५ ॥
नो नरे च सनाथेऽपि [5]नोऽनर्थेऽपि प्रदर्श्यते ।
नृशब्दोऽपि नरे नाथे ना नरौ नर इत्यपि ॥ ७६ ॥
न नो इति निपातौ द्वौ नू[6] दीर्घोऽपि तथोदितः ।
पृच्छायां नु वितर्केऽपि नि-र्निशब्दौ तथाऽव्ययम् ॥ ७७ ॥
नीबन्तो लक्ष्मिवाच्यः स्यान्नीर्नेतरि नियौ नियः ।
नुः स्तुतौ दीर्घह्रस्वः स्त्री नैर्नौश्च तरणौ स्त्रियाम् ॥ ७८ ॥
नूशब्दः पातके पुंसि वायौ क्लीबे नु वारिणि ।
नं ब्रह्मणि तथाऽनन्ते सानन्दे नं च नन्दने ॥ ७९ ॥
पः सूर्ये शोषणे वह्नौ पाताले वरुणेऽनिले ।
परित्राणे क्षमे [7]क्षेत्रे निपाते पङ्कसङ्कुले ॥ ८० ॥
उच्चदेशे स्थले पं स्यात् पूः पवित्रे पुवौ पुवः ।
पूः पृथिव्यां वधूवत् स्यात् पौरपि स्त्री यथा च नौः ॥८१॥
[8]पीबन्तः पी च पा लक्ष्मीपर्यायौ धातुवच्च पाः ।
पाशब्दार्थे पुमानेष षष्ठ्यां पः पोस्तथा च पाम् ॥ ८२ ॥
भानुवत् पण्डिते पुः स्यात् [9]पटहे पुरुषोत्तमे ।
पिः पुंसि पीडितारावे सागरे सादरे दरे ॥ ८३ ॥

---

१ क. धाने । २ क. ग. घ. ङ. च. धुश्च धूर्तोतिधृष्टकः । ३ ख. समये । ४ क. धोरपि । ५ क. ग. घ. नोऽनाथेऽपि । ६ क. ग. नू दर्पोऽपि । ७ क. घ. क्षत्रे, ख. नेत्रे । ८ घ. ज्ञानवत् पी । ९ क. पोरहे ।

[1]फोऽपारदर्शने देवे न्याये ज्ञाने च नीरधौ ।
फं चायतन-बीजे फं फले फं निष्फले ध्वनौ ॥ ८४ ॥
फाऽऽबन्तो [2]मृग-मारीचे [3]फां फणा फं फणे च फा ।
[4]चक्रवर्त्तिनि फं क्लीबे लाभे लोभे विपर्यये ॥ ८५ ॥
मूर्त्तौ डयने फं चार्के माहेन्द्रे जालके च फम् ।
[5]सगर्भो योषिता फी स्यात् फूर्वधूवद् रुषाकुले ॥ ८६ ॥
बो दन्त्यौष्ठ्यस्तथौष्ठ्योऽपि वरुणे वारुणे वरे ।
शोषणे पवने गन्धे वासे वृन्दे च वारिधौ ॥ ८७ ॥
वन्दने वदने वादे वेदनायां च बा स्त्रियाम् ।
झञ्झावाते तथा मन्त्रे सर्व[6]मन्त्रेऽमृतात्मकः ॥ ८८ ॥
[7]बी गतार्थे विशेषार्थे विनिपातितखादने ।
जनने प्रजने कान्तौ तद्रूपं बीर्बियौ बियः ॥ ८९ ॥
बीबन्तो बी [8]नदीनाथे बाऽऽबन्तो बा च वासने ।
धातुवद् बा च शब्दार्थे [9]बे बो बौ बि ङिति स्मृतः ॥ ९० ॥
भा भास्करे भास्वरेऽपि [10]भां यां भा भोगयोषिति ।
पितृ-भ्रातृ-पितृव्येषु भोऽतिभीते [11]भं आकुले ॥ ९१ ॥
भं नक्षत्रे भगे भोगे भीतौ भीः स्त्री भियौ भियः ।
भूः पुमान् वेदनायुक्ते भूर्भूमिः स्त्री भुवौ भुवः ॥ ९२ ॥
भाऽऽबन्तो धातुवच्चापि भाषितोऽर्थे भवा-ऽऽशयोः ।
वधूवद् भूर्द्दने भूः स्त्री भू सत्तायां द्वयोरपि ॥ ९३ ॥

---

१ ख. फोऽफारदर्शने । २ ख. मृगसारीचे । ३ घ. फणायां भेषजे च फा । ४ घ. चक्रवर्त्मनि । ५ क. ग. घ. च. सभर्गो यो० । ६ क. ०न्त्रेऽमृगात्मकः, ङ. ०न्त्रे तथात्मकः । ७ घ. बी गतार्थे विशेषार्थे वचने विनिपातितः । खादने प्रजने कान्तौ गतौ च बीर्बियौ बियः ॥ ८९ ॥ ८ घ. नदीवार्योराबन्तो बा । ९ ख. च. व वे वो वि जिति स्मृतः । १० घ. भार्यायां । ११ घ. भ्रमाकुले, ख. ङ. च. भयाकुले ।

मो मन्त्रे मन्दिरे माने सूर्ये चन्द्रे शिवे विधौ ।
मायाविनि वृथामन्त्रे मारण-प्रतिदानयोः ॥ ९४ ॥
मं मौलौ मोघवृत्तौ मं माऽऽबन्तः स्त्री रमा-ऽर्चयोः ।
भुवि माने च मात्रा मा मा निपातो निषेधकः ॥ ९५ ॥
दीर्घ-ह्रस्वौ मु-मूशब्दौ बन्धनार्थे त्रिलिङ्गकौ ।
मेरेदन्तः प्रतिदाने हिंसायां मीर्मियौ मियः ॥ ९६ ॥
धातुवद् मा धने माने बन्धने मौर्यथाऽस्ति गौः ।
स्त्री-पुंसयोर्मितेर्मिः स्यात् प्रेरणे मैस्तथा रणे ॥ ९७ ॥
यः सूर्ये तारके चन्द्रे या रमा-मातृ-यातृषु ।
वायुवेगे जले यं स्याद् याचके योऽतिकुत्सने[1] ॥ ९८ ॥
यो यातरि रुजां लग्ने शयने याने च वाहने ।
युक्तौ च या च यात्रायां यो यथार्थे स्त्रियां च या ॥ ९९ ॥
धातुवद् या च शब्दार्थौ गमने निर्धनेऽशने ।
यमाहुर्योगयोगाढ्यं यं ससारे सरित्पतौ ॥ १०० ॥
रः सूर्येऽग्नौ धने कामे रं जले रङ्ग-वेगयोः ।
रा रमा रमणी बाला रं तीक्ष्णे कर्कटे दृढे ॥ १०१ ॥
रैशब्दोऽथ जले स्वर्णे राध्ये रन्ध्रे च रं स्मृतम् ।
रो नादे वेदने छेदे रा दाने धातुवत् स्मृतः ॥ १०२ ॥
रु-रौ शब्दौ पुमांसौ द्वौ शम्भुशब्दार्थवाचकौ[2] ।
री श्रवणे रुर्भये क्लीबे री च नारी पतिव्रता ॥ १०३ ॥
मेरोः परिभ्रमे भानौ रुः पुंसि रसने स्त्रियाम् ।
महेन्द्रे[3] लो मृते गत्यां ला च लक्ष्मीर्लमम्बरम् ॥ १०४ ॥
लिः पुंसि लौवे शब्दे लीर्धातुवल्लवने त्रिषु ।
लं क्लीबे लोपनेऽपि स्यादपूर्णे लं प्रकीर्तितम् ॥ १०५ ॥

---

१ क. योऽतिकुत्सिते । २ घ. शत्रुशब्दार्थवाचकौ । ३ घ. महेन्द्रे र वा यौ लः । ४ घ. निः शब्दार्थे ।

ला दाने धातुवद् लं च दानाऽऽदाने ल आलये ।
[1]आश्लेषे लं सुखे वादे दृश्ये लौश्चेति भाषितः ॥ १०६ ॥
लू धातुवच्छेदने लौः स्त्री ला लीला-विलासयोः ।
उपालम्भे तथा लाभे लोभेऽपि लैर्दया-ऽऽदरे ॥ १०७ ॥
शः सूर्ये शोभने शीते शं सुखे शा रमाऽम्बयोः ।
आशीर्वादे च शीबन्तः श शशाङ्केऽच्छवारिणि ॥ १०८ ॥
[2]रश्मौ शस्ते तथा स्वच्छे शो महेशे महार्णवे ।
षो[3]ऽतिरोषेऽपवर्गे षः प्रक्षरे सानु-वेधसोः ॥ १०९ ॥
नार्याश्लेषे सुखे षं स्यात् पण्डितेऽपि षमादृतम् ।
ष[4]मूर्मिरहिते षं स्याज्जालके भेषजे च षम् ॥ ११० ॥
सुख-दुःखे समे षौर्ना षुरनित्ये नृपोत्तमे ।
वृषस्यन्ती सती षा स्त्री नभो-नक्षत्रयोरपि ॥ १११ ॥
सः सोमे सोमपानेऽपि सूर्ये पक्षिणि तापसे ।
वृषे च सः सदानन्दे सा श्रियां सं वनं धनम् ॥ ११२ ॥
यौवनेऽपि समाख्यातं वस्तुवृन्दे समाहृतम् ।
पूजायां सु निपातोऽस्ति सूर्वधूवच्च मातरि ॥ ११३ ॥
सोमसूः सूः सुवौ पुंसि प्रसवार्त्ता नितम्बिनी ।
सं सिः पुंसि परोक्षेऽपि सा च देवी सरस्वती ॥ ११४ ॥
हं हर्षे चैव हिंसायां [5]हीरे हारे हरौ च हः ।
हौस्त्यागे चरणे [6]व्याधौ क्षः क्षं क्षेत्रे क्षये गृहे ॥ ११५ ॥
इति श्रीविश्वशम्भुप्रणीता एकाक्षरनाममालिका सम्पूर्णा ॥

*

१ घ. आश्लेषे सुखसंवादे दृश्ये लौ परिभाषितः । २ ख. शः प्रशस्ते तथा स्वच्छे । ३ ख. षोऽतिरोगे । ४ ख. ग. घ. ङ. च. षडूर्मिरहिते । ५ घ. हरे । ६ क. ख. ग. च. ज्याधः ।

[२] राघवकविविरचित
एकाक्षरकाण्डः ।

समस्तविद्यावेत्तारं सुमुखं श्रीविनायकम् ।
अज्ञानतिमिरादित्यं विघ्नघ्नं नौमि सन्ततम् ॥ १ ॥

विश्वादीनि समाहृत्य बालानां ज्ञानसिद्धये ।
कविना राघवेणाद्य कृता नानार्थमञ्जरी ॥ ॥ २ ॥

विश्वप्रकाशो गोपालः शेषकरो धनञ्जयः ।
शब्दार्णवो वैजयन्ती सूर्यो रुद्रश्च यादवः ॥ ३ ॥

प्रतापो भागुरिर्दण्डी रभसश्च हलायुधः ।
सुभूतिर्हरिविष्णू च वररुच्यमरोत्पलाः ॥ ४ ॥

अजयः शाश्वतश्चैते उच्यन्ते पण्डितैः पुरा ।
ओँ प्रश्नेऽङ्गीकृते रोषे प्रौढे ब्रह्मणि चाव्ययम् ॥ ५ ॥

अः स्याद् ब्रह्मणि विष्वीश-कूर्मा-ऽङ्कण-रणेषु च ।
गौरवेऽन्तःपुरे हेतौ भूषणेऽङ्कावुमेज्ययोः ॥ ६ ॥

आ प्रगृह्ये स्मृतौ वाक्ये परितापे पितामहे ।
घटे भावे च आस्तु स्यादव्ययं कोप-पीडयोः ॥ ७ ॥

आङ् ईषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ।
इर्वितर्के स्मरे हारे फणरत्नद्युतौ पुमान् ॥ ८ ॥

अग्रे करेणुकुक्ष्यन्ते गुहायां शशितेजसि ।
ईर्वारिजदले लक्ष्म्यां वाण्यां कमलकेसरे ॥ ९ ॥

उः शम्भौ क्षत्रिये नेत्रे हरमौलौ हरावपि ।
ऊः स्याच्छुचीन्द्वोः पुरुषे राजपुत्रे गले सुरे ॥ १० ॥

प्राङ्गणोपमयोः पूर्णकुम्भे वणिजि रक्षणे ।
ऋः कुञ्जरे शिखरिणि विभेदे देवमातरि ॥ ११ ॥

भावे देवरिपौ नद्यां सुरायां विवरे दिवि ।
ऋः दृष्ट्यां चिकुरे वाताशने विगतसम्पदि ॥ १२ ॥
हिम-पद्म-दिति-स्वर्ग-धन-भूषा-भुजा-ऽम्बुषु ।
ऌः कुलीरे कपर्दन्ते हस्तिनामपि दंष्ट्रके ॥ १३ ॥
स्वर्गा-ऽऽदित्योर्लिप्तगात्रे गतनप्तरि रक्षसि ।
ॡ तु स्यात् कृकलासेन्द्रावङ्केऽक्षिण मकरे सुरे ॥ १४ ॥
लीलागते लोचनास्थ्नि नागमातरि मातरि ।
एकारस्तेजसि जले रात्रौ हर्म्योदरे हरौ ॥ १५ ॥
व्योम्न्येकादशसंख्यायां दिनादौ मणिकुट्टिमे ।
ऐ हस्ते दिङ्मुखे वाते हरेऽद्रिशिखरे त्वचि ॥ १६ ॥
ओ वारिजे जले कुड्ये श्रीद-मेघेन्दु-योनिषु ।
शक्रे जीवे विरिञ्चे स्यादौः स्कन्दे गणनायके ॥ १७ ॥
विशुद्धाङ्गेन्दुकलयोरनन्ते सिद्धपुष्पके ।
अंशब्दो वक्रवाक्येऽतिदीर्घेऽञ्जलि-नियोगयोः ॥ १८ ॥
सप्तस्वरादिमाने च परज्योतिषि च स्मृतम् ।
अः शिखायां सिद्धमन्त्रे प्रगाहेऽर्के रथार्वणि ॥ १९ ॥
चक्रे कुक्कुटमूर्ध्नीन्दुबिम्बे ब्रह्मेश-विष्णुषु ।
को ब्रह्मण्यर्क-वाय्वग्नि-शमन-स्वर्ग-केकिषु ॥ २० ॥
विष्णावाहतशब्देऽब्धौ धियां शुक्ले वसौ द्युतौ ।
कं शिरो-ऽम्बु-सुखेषु स्यात्तत्रैव च कमव्ययम् ॥ २१ ॥
किं प्रश्ना-ऽऽक्षेप-कुत्सासु वितर्के क्लीबमव्ययम् ।
कुः स्त्री भूम्यां च पापेऽल्पे कुत्सायां वारणेऽव्ययम् ॥ २२ ॥
अथ कामजले खः स्यात् खा [स्याद् ?] नखर-तीक्ष्णयोः ।
खमिन्द्रिये सुखे स्वर्गे शून्यबिन्दौ विहायसि ॥ २३ ॥

कृपा-नक्षत्र-संवेश-तन्द्री-शान्तरसेषु च ।
कुणि-संम्भेद-गरुड-क्षेत्र-खड्ग-पुरीष्वपि ॥ २४ ॥

स्वर्ग-दृग्-बाण-वज्रा-ऽम्बु-दिग्-वाग्-भू-धेनु-लोमसु ।
चन्द्रा-ऽर्क-वृष-नागेषु पशौ करण-वस्त्रयोः ॥ २५ ॥

कृत्वार्जुनीप (?) अर्वार्थ-मृग-स्त्री-श्रवणेषु च ।
लक्ष्य-दृष्ट्योः स्त्रियां पुंसि गौर्गं गमन-गीतयोः ॥ २६ ॥

गा च गाथायां स्त्रीलिङ्गो गो गन्धर्व-गणेशयोः ।
मेघे निदाघे किङ्किण्यां घण्टायां घट्टने च घः ॥ २७ ॥

घं वाद्या-ऽमृतयोर्घा भू-वार्ता-घोरेषु च त्रिषु ।
ङं क्लीबमञ्जने ना तु भैरवे विषये जने ॥ २८ ॥

चस्तुलुष्केश्वरे चापे चकारे चन्द्रमस्यपि ।
चा स्त्री शोभा-शोणितयोश्चं क्लीबे विमले त्रिषु ॥ २९ ॥

चान्वाचये समाहारेतरेतरसमुच्चये ।
छ इत्याच्छादनेऽब्जे च छं क्लीबे संवृतौ पुमान् ॥ ३० ॥

त्रिष्वयं निर्मले नित्ये मलिने भेदकेऽपि च ।
जो जये विजये मेरौ शब्दे जेतरि मत्सरे ॥ ३१ ॥

जा स्त्रियां देववाहिन्यां योनि-सागरवेलयोः ।
ज्या भूमिमौर्व्योः शम्यायां वाहिन्याः पृष्ठभागके ॥ ३२ ॥

जं कटीभूषणे पत्न्यां तेजस्यम्बुनि जन्मनि ।
जुः कीर्त्यां सङ्गरे व्योम्नि जव-पैशाचयोरपि ॥ ३३ ॥

जूराकाशे बृहद्भाने भारत्यां जीवनेऽपि च ।
झः पुमान् भ्रमणे नष्टे प्रतापे हंस-चोरयोः ॥ ३४ ॥

धातरि स्यादथो झा तु मदवार्योरपि स्त्रियाम् ।
ञः प्राज्ञे चन्द्रतनये विषये चात्म-गर्वयोः ॥ ३५ ॥

व्यूहे लेपे मूर्ध्नि खरध्वाने क्लीबे भय-पद्मयोः ।
उत्ताने मूढरूपे च पण्डितैस्त्रिषु कथ्यते ॥ ३६ ॥

टः पुमान् करटे धूमे चापेऽर्ककिरणे ध्वनौ ।
कवाटा-ऽऽवर्तयोः सूनौ भ्रूव्यावृत्त्योस्तु टा स्त्रियाम् ॥ ३७ ॥

ठः शङ्करे बृहद्ध्वाने वृत्ते वर्णेऽपि वाच्यवत् ।
स्तम्भने साहसे चन्द्रमण्डले कर्णवेष्टने ॥ ३८ ॥

डः पुमान् विषये शम्भौ हासे त्रासे जये ध्वनौ ।
शङ्खस्वने रौद्ररसे वृथावाचि तु डा स्त्रियाम् ॥ ३९ ॥

त्रिषु दृढे शठे शून्ये केल्यान्दोलिकयोरपि ।
डं क्लीबे डामरे दुर्गे वधे डमरुकेऽपि च ॥ ४० ॥

ढः पिशाचे भये काले जडे गायक-रागयोः ।
ध्वनौ पान्थे नपुंसि स्यात्तूर्ये च ज्ञान-मूर्खयोः ॥ ४१ ॥

ढक्कायां स्त्री गुणे सर्पे त्रिषु स्याद् गूढ-सौम्ययोः ।
णशब्दस्तु पुमाञ्जारे भैरवे कण्टके ध्वनौ ॥ ४२ ॥

णा स्त्रियां ध्वजिनी-शय्या-धेनु-नासा-कृपासु च ।
णं सरोजदले ज्ञाने त्रिषु निस्तुषवस्तुनि ॥ ४३ ॥

तः पुंसि कोपे पुच्छे च सम्भोगे निश्चयेऽपि च ।
धातुवादविधौ चोरे प्रकृतार्थे तु त्रिष्वयम् ॥ ४४ ॥

करुणायां तु ता स्त्री स्याद्धातुवादे तद(म?)व्ययम् ।
ते क्रीडने चाभिधेये तृट् पिपासेहयोः स्त्रियाम् ॥ ४५ ॥

स्वित् प्रश्ने च वितर्के च तुः स्याद्भेदेऽवधारणे ।
थः पुंसि भङ्गे शैलेन्दौ तरङ्गिण्यामपि स्त्रियाम् ॥ ४६ ॥

क्लीबे भयहरे शुक्ले श्यामले पृथुलेऽपि च ।
दः पुंसि दातरि च्छेदे दा स्त्रियां क्षान्ति-दानयोः ॥ ४७ ॥

शुद्धौ दूः परितापे स्त्री दुष्टे दिः क्षय उच्यते ।
दं क्लीबे दान-वैराग्य-कलत्रेष्ववलोकने ॥ ४८ ॥

भेद्यलिङ्गस्त्वयं मूढे ग्रहान्तरे द्रावके शुचौ ।
दर्शन-ज्ञान-नेत्रेषु दृक् स्त्री द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ४९ ॥

धः पुं शिलीन्ध्रेन्द्वोर्ध्याने श्रीदे धन्वन्तरे घटे ।
धं वेश्मनि धने धान्ये बुधे धीस्तु धियि स्त्रियाम् ॥ ५० ॥

धूर्णा धूपे स्त्री तु कम्पे वित्ते भारे युगा-ऽग्रयोः ।
शम्भोर्जटायां हेरम्बे धिङ् निर्भर्त्सन-निन्दयोः ॥ ५१ ॥

नः पुंसि नाभौ हेरम्बे क्लीबे नं ज्ञान-वाद्ययोः ।
सूक्ष्म-पद्या-ऽपरिक्लिष्ट-शून्य-भिन्नेषु तत् त्रिषु ॥ ५२ ॥

नुः शब्दे स्तुतौ च स्त्री स्यान्नौः काले तरणावपि ।
नु पृच्छायां विकल्पे च निर्निश्चय-निषेधयोः ॥ ५३ ॥

पः पुमान् पचने शैले प्रकाशे कौस्तुभे क्षणे ।
शुभलग्ने च पं क्लीबे हेम्नि पाः पातृ-पानयोः ॥ ५४ ॥

स्यात् स्त्रियामम्बुधारायां सुधायां समितावपि ।
पुस्त्रिष्वार्त्ते प्रपन्ने च पूः [स्यात् ?] पुर-शरीरयोः ॥ ५५ ॥

स्फो झञ्झानिल आस्फोटे फूत्कारे वारणेऽपि च ।
फा स्त्रियां निष्ठुरोक्तौ च काल-केली-कुटीषु च ॥ ५६ ॥

अथ स्फारे परोक्षे च फः शब्दो वाच्यलिङ्गकः ।
बः कुम्भे वरुणे बिन्दौ विकले च गुरौ मदे ॥ ५७ ॥

विभूतिकारे कलहे पक्षे गर्भे च पर्वणि ।
बा स्त्रियां काहली-वल्ली-शृङ्खलास्वमले त्रिषु ॥ ५८ ॥

भः शम्भौ भ्रमरे भावे शुक्रेऽशे जलदे पुमान् ।
भा भुव्यलङ्कृतौ दीप्तौ स्त्रियां भा किरणे द्युतौ ॥ ५९ ॥

भं क्लीबे गगने राशौ नक्षत्रे च सुदर्शने ।
भीः स्त्री भीत्यां खगे पुंसि स्थान-भून्योस्तु भूः स्त्रियाम् ॥ ६० ॥
मः शम्भौ धातरीन्द्रे च चन्द्रे मासे च पुंस्ययम् ।
मा स्त्री माने मृतौ वेला-मेधा-पद्मासु च स्त्रियाम् ॥ ६१ ॥
अव्ययं प्रतिषेधे च जने तु स्यान्नपुंसकम् ।
मुः पुंसि बन्धनेऽपि स्यात् पिङ्गलाभिधवर्णयोः ॥ ६२ ॥
यस्त्यागे निलये वायौ यामे दातरि यातरि ।
या स्त्रियां यान-मञ्जर्योः शोभा-लक्ष्म्योश्च निर्मितौ ॥ ६३ ॥
त्रिषु स्यात् सर्वनामाख्ये व्यये हेतावथो स्त्रियाम् ।
ख्या ख्यातौ च प्रकथने ज्या मौर्वी-मातृ-भूमिषु ॥ ६४ ॥
द्यौर्ना दिव्यह्नि वह्नौ च स्वर्व्योम्नोः पुंसि च स्त्रियाम् ।
रः पुमान् पावके कामे क्षये वज्रे शयेऽप्यरौ ॥ ६५ ॥
रा स्त्रियां हेम्नि शालायामाशंसायां गतावपि ।
रं क्लीबे रुधिरे मूर्ध्नि ध्याने व्योमा-ऽण्ड-कुक्षिषु ॥ ६६ ॥
त्रिषु स्याद्धक्तू(?)भययोर्विरसे त्याग-तीक्ष्णयोः ।
रास्तु द्वयोर्ध्वनौ स्वर्णे रिशब्दस्तु स्रवे क्षये ॥ ६७ ॥
स्त्री रुग् ज्वालेच्छयोः कान्तौ रुर्ना युद्धे भये ध्वनौ ।
स्त्री कामिनी-वम्रिकयोर्द्रुः स्वर्णे पादपेऽपि च ॥ ६८ ॥
श्रीर्वेष-रचना-वृक्ष-भा-सम्पत्-सरथासु च ।
वाणी-लक्ष्मी-लवङ्गेषु विषे बिल्वेऽप्ययं त्रिषु ॥ ६९ ॥
जटायां पूरणे स्रुक् स्त्री होमाङ्गे च गतौ स्त्रियाम् ।
ध्रूः(घ्रूः) स्याद्यानमुखे मारे कम्पने च तदिष्यते ॥ ७० ॥
दर्शन-ज्ञान-नेत्रेषु दृक् स्त्री द्रष्टरि तु त्रिषु ।
लः खण्डने त्रिष्वाधाने स्त्री नेन्द्रे लवणे तु लम् ॥ ७१ ॥
वः पुमान् सान्त्वने वायौ संयमे वरुणे स्मरे ।
वा स्याद् विकल्पोपमयोरेवार्थे च समुच्चये ॥ ७२ ॥

विश्वक्षुषि व्योम्नि वाते परमात्मनि पक्षिणि ।
विट् पुरीषे जने वैश्ये क्रमात् पुंसि द्वयोः स्त्रियाम् ॥ ७३ ॥
स्वोऽस्त्री धने पुमाञ्ज्ञातौ त्रिष्वात्मीये स्वमात्मनि ।
स्वः स्वर्गे परलोके च त्विट् कान्ति-ज्वालयोः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥
वल्के लवङ्गवल्के त्वग् द्वार्ध्वारोपाययोः स्त्रियाम् ।
रमायां देवपूजायां शक्तौ शोभा-वरेण्ययोः ॥ ७५ ॥
शः परोक्षे त्रिलिङ्गे स्याद् शं सुखा-ऽर्था-ऽज्ञ-शक्तिषु ।
शिः शिवे शिवकान्तायां स्वापे निर्वाण-हिंसयोः ॥ ७६ ॥
षः पुमान् विषये स्वर्गे षा श्रियां षं विरामके ।
गर्भमोक्षे मर्षणे च परोक्ष-श्रेष्ठयोस्त्रिषु ॥ ७७ ॥
त्विद् दीप्तौ व्यवसाये च जिगीषायां च धन्वनि ।
सः पुंस्युमासुते वायौ देहभाः-श्री-द्रु-वाजिषु ॥ ७८ ॥
सं पक्षिस्पन्दने क्लीबे ज्ञाने ध्याने निवारणे ।
सू प्रेरणे गर्भमोक्षे सेऽभिधेये च सेवने ॥ ७९ ॥
सत् सत्ये विदुषि श्रेष्ठे साधौ क्लीबमुडौ त्रिषु ।
हः शङ्करे हरे हंसे रण-रोमाञ्च-वाजिषु ॥ ८० ॥
गर्भे प्रचेतसि स्त्री तु हा त्यागे गति-वीणयोः ।
हं क्लीबमस्त्र-सुखयोः क्वणिते मणिरोचिषि ॥ ८१ ॥
परब्रह्मा-ऽऽमन्त्रणयोस्त्रिषु तून्मत्त-हास्ययोः ।
हेतु-सम्बोधनेऽपि स्यात् हा स्त्रियां परिदेवने ॥ ८२ ॥
हुं वितर्के परिप्रश्ने न्यासे च भय-दानयोः ।
ही विस्मये विषादे च हि हेतावववधारणे ॥ ८३ ॥
क्षः संरोधे विरोधे च क्षेम-दुःस्वप्नयोश्च ना ।
क्षा स्त्री क्षमायां निद्रायां क्षं क्लीबे क्षेत्र-रक्षसोः ॥ ८४ ॥
या राघवकृता श्रेष्ठा मातृकावर्गसंयुता ।
सैकाक्षरादिसंयुक्ता पूर्णा नानार्थमञ्जरी ॥ ८५ ॥

राघवकविविरचित एकाक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ [२]

[३] सौभरिकृता एकाक्षरनाममाला ।

प्रणम्य सुधियां नाथं देवदेवं रमापतिम् ।
[1]एकार्थनाममालां तु कुर्वे चेतःप्रसादनीम् ॥ १ ॥

अः कृष्णः शङ्करो ब्रह्मा शक्रः सोमोऽनिलोऽनलः ।
सूर्यः प्राणो जनः कालो वसन्तः प्रणतः सुखी ॥ २ ॥

आः स्वयम्भूरिभो वाजी खेदः शङ्कर-वासवौ ।
पारिजातः समः प्राज्ञो निवासश्चणकः सुतः ॥ ३ ॥

इः कामः स्थाणुरिन्द्रोऽर्को वरुणः पादपो द्विपः ।
शुचिः श्रीमानजो बालो विरञ्चिः कृत्तिकासुतः ॥ ४ ॥

ईरीश्वरो भवेच्छत्रुः पुरुषः करुणोऽरुणः ।
अप्रजाः सुप्रजाः शङ्कु[2]र्मुकुरो नकुलोऽकुलः ॥ ५ ॥

उर्गौरीपतिरुः कालः सेतुर्नाथः परायणः ।
नारदोऽर्कोऽनिलः पाशी मार्कण्डेयोऽथ रावणः ॥ ६ ॥

ऊः परेतो जडस्त्वष्टा विवस्वानग्निसारथिः ।
वह्निर्निशाकरः पूर्णो दरिद्री सरमाधिपः ॥ ७ ॥

ऋर्निर्ऋतिर्नलो नाकः खगराडथ वासुकिः ।
शालः पितृष्वसुः पुत्रोऽदितिर्दितिरुमा रमा ॥ ८ ॥

ॠर्निषेधो भवः पूषा वरुणोऽमरराडजः ।
करी तरुर्नरः पाप्मा विद्वानथ रमापतिः ॥ ९ ॥

ऌर्म्लेच्छोऽरुणवर्णः स्यात् क्लीबः पापी पराजितः ।
वीतरागोऽथ पाषण्डी कमलं मरणं च ऌ ॥ १० ॥

ॡर्महात्मा सुरो बालो भूपः स्तोमः कथानकः ।
मूर्खः शिश्नो गुदः कक्षा केशः पापरतो नरः ॥ ११ ॥

---

१ ग. एकाक्षरनाममालां कुर्वे । २ घ. मंकुरो. ॥

एः कुमारोऽसुरोऽरातिर्ज्ञातीयोऽहित उद्धतः ।
आत्मा शेषो विवस्वांश्च कृतार्थो मध्वरिः शरः ॥ १२ ॥

ऐः क्रूरो धरणीनाथः पूरो मारोऽमरोऽसुरः ।
कुलालो ना धरः प्राज्ञो मन्दः पुत्रोऽथ वानरः ॥ १३ ॥

ओर्वेधा ज्ञो ध्रुवोऽगस्त्यो गरुडोऽगोऽक्षयोऽसुरः ।
आखुः काणोऽथ मार्जारः साधुः सङ्गः परासरः ॥ १४ ॥

औः[1] श्वा युवा नरो नारी भावः सूक्ष्मः प्रजापतिः ।
स्थूलो जारः कलावांश्च सुखी दुर्गा रतिः कविः ॥ १५ ॥

अं सुखं कश्मलं दुःखं पूर्णं दूरं गतं वरम् ।
अः प्रागुक्तो जिनाद्येषु विष्णुभृत्ये नयः स्तुतः[2] ॥ १६ ॥

को ब्रह्मा का मही दुर्गा किः सुग्रीवो रमापतिः ।
आखण्डलोऽथ सूर्योऽग्निर्व्याधः कर्षुक इत्यपि ॥ १७ ॥

कीर्गजस्तुरगो व्यालो जारो जीवः पिपीलिका ।
धरा[च ?][3]रुमा च द्विट् च पुरुषः पाटलश्च गौः ॥ १८ ॥

कुः पृथ्वी कुः कुचः कूलं कूः कृत्या भूरपि स्मृता ।
केः प्राणोऽर्को मदः सारः क्लीबः कैः प्रणतः शुचिः ॥ १९ ॥

कोः [4]कुर्कुरो जनः श्यावः श्यानः शोकश्च कौर्वृषः ।
कं शिरः कं सुखं तोयं पयो दुःखं विषं भयम् ॥ २० ॥

कः प्रागुक्तोऽथ खः सूर्यः खा मा क्ष्मा कमला च गीः ।
खिः कामः खीर्गदो धाता खुर्वह्निः खूर्बृहस्पतिः ॥ २१ ॥

खेः प्राणः खैर्भवो भ्राता पुत्रः खोः खञ्ज उच्यते ।
खौः सुरेशोऽग्निरीशोऽर्को(र्कः) खं व्योम च खमिन्द्रियम् ॥ २२ ॥

---

१ क. औः वायुः वानरो । २ घ. सुतः । ३ घ. रमा । ४ क. ख. कुक्कुरो ।

खः प्रागुक्तोऽथ गः प्रीतो भवः श्रीपतिरुत्तमः ।
गा क्ष्मोमा[1] च रमा गिर्धीर्गीः श्रीमानथ बुद्धिमान् ॥ २३ ॥
गीर्वाणी गीः सुरा पत्नी सुधा गुः प्राण आसवः ।
गुः कान्तिर्मदनो भीरुर्गूश्च सेतुः सखा रविः ॥ २४ ॥
गुरुः पुरीषं गूः श्वादो गेः पापी जनवञ्चकः ।
गैः पलाशोऽप्यशोकोऽग्निः सूर्यो गोर्द्विपदः करी ॥ २५ ॥
गोर्वज्रं गौः प्रभा भूमिर्वाणी तोयं त्रिविष्टपम् ।
धेनुर्बस्तो वृषो दिग् गौर्नेत्रं लज्जा गुरू रमा ॥ २६ ॥
इन्द्रियं श्रीरुमा गं च वादित्रं शरणं वरम् ।
गः प्रागुक्तोऽथ घः सूनुर्वह्निः पूषा नृपो गजः ॥ २७ ॥
घा रमा च शची दुर्गा भूमिर्घिर्धृतधर्मकः ।
घीः कुमारोऽमराचार्यो घुर्मूढोऽकरुणः फणी ॥ २८ ॥
घूर्भूमिर्घूः सुराधीशो घुंदः[2] सङ्कर्षणोऽमलः ।
घेः शङ्खः कुर्कुरः कीलो घैः सूर्यः सरमासुतः ॥ २९ ॥
घोर्घोषो घौः सुरावासः पाप्मा घं पापमुच्यते ।
घः प्रागुक्तोऽथ ङः प्राणस्तुरगो ङा धरा रमा ॥ ३० ॥
ङिर्बीभत्सुर्नृगः सूक्ष्मो ङीर्भूपः कृकलासपः ।
ङुः सूकरोऽथ ङूर्व्याघ्रो ङेः सूतो ङैः परासरः ॥ ३१ ॥
ङोश्च सिंहोऽथ ङौः सूर्योऽरुणो वह्निः कलानिधिः ।
ङं वितानं सुखं ब्रह्म[3] सर्पिस्तोयं विषं पयः ॥ ३२ ॥
ङः प्रागुक्तोऽथ चश्चञ्चुश्चारणोऽर्चिर्मूखो रविः ।
चा कैर्दूरदितिः[4] कन्या चिः पूषा माष एव च ॥ ३३ ॥
चीर्मर्षिर्दन्तिपत्नी स्याच्चुः कालोऽथ पविः शरः ।

१ क. ख. क्ष्मा मा. । २ क. गुन्द. । ३ घ. वा स्यात् । ४ ख. कर्दूर° ।

भीरुश्भूर्मार्गणोऽपि[1] स्यात् पक्षी भूमिजराड् रविः ॥ ३४ ॥
चेः कृष्णोऽर्कस्तुराषाड् वा चैः सोमो विनतासुतः ।
चोः पाषण्डी च चौर्धेनुरनड्वानऽग्निरुद्धतः ॥ ३५ ॥
चं चरित्रं सुखं दुःखं कश्मलं भ्रमणं पयः ।
चः प्रागुक्तोऽथ छः सोमः छा च रुट् छिः कुलालकः ॥३६॥
छीश्छविश्छुः शुकः छूर्भूः छेः पाशी छैः सुरालयः ।
छोः पूर्णोऽलङ्कृतो वायुः छौः समीरस्तरुर्नगः ॥ ३७ ॥
छमर्चिर्भूतलं स्वः स्यात् कूटं कूलं मुखं कुलम् ।
छः प्रागुक्तोऽथ जो जारो जा योनिर्जिः सदाशिवः ॥३८॥
जीर्जिष्णुः करुणो यूका जुर्विष्णुर्जूः कुलालजः ।
जेः शुनीजोऽथ जैः पूषा वह्निर्जोः कमलासनः ॥ ३९ ॥
जौर्जारोऽजो युवा जं च जातं रजतमेव च ।
जः प्रागुक्तोऽथ झो हस्तो झा योनिर्झिः कला कपिः ॥४०॥
झीः करी झुर्भृगुर्झूश्चध्रुवः सङ्गोऽमरोऽरुणः ।
झेश्चर्मकृद् भवः सोमो रोमो[2] रामोऽथ झैर्गुरुः ॥ ४१ ॥
झोः कर्णो झौः स्मृतो नाको झं मैथुनमिति स्मृतम् ।
झः प्रागुक्तोऽथ ञः श्वाऽऽग्निर्ञा जरा राशिरेव च ॥ ४२ ॥
ञिः सम्राड् ज्ञानवृद्धोऽग्निर्ञीः पाषण्डी सुराप्रियः ।
ञुः सुनेत्रा ञूः सुवासा ञेः कार्त्तस्वरसन्निभः ॥ ४३ ॥
ञैः कृष्णा ञोः पलाशः स्यात् ञौर्गौः पाषण्डवाक् करी ।
पूर्वा ध्रुवा च ञं सर्पिः परं ब्रह्म निगद्यते ॥ ४४ ॥
ञः प्रागुक्तोऽथ टः प्लीहा मूत्रकृच्छ्रोऽथ पिप्पलः ।
टा सूपा टिः करेणुर्भूः सरमा टीर्धराधरः ॥ ४५ ॥

---

१ घ. ण्णो मलः । २ घ. रोमा ।

टुः कङ्कणोऽथ चूडः स्यात् टूर्ननन्दा स्वसा च भीः ।
टेः काणष्टैर्द्विडऽन्धः स्यात् टैः प्रोतो[1] नभसी (?)हयः ॥ ४६ ॥
टोः परेतो गुरुः शिष्यो टौर्विनीतो दवो वृषः ।
टं नेत्रं श्रवणं पात्रं भ्रमणं मरणं तथा ॥ ४७ ॥
टः प्रागुक्तोऽथ ठः सूनुर्ज्ञानी मध्वरिरेव च ।
वाचालः शून्य आसारः ठा शून्या नासिकेत्यपि ॥ ४८ ॥
ठिः कुमारोऽमरारातिष्ठीः कुटुम्ब्यथ पुत्रवान् ।
ठुः कदम्बो यमस्त्वष्टा ठूः प्रज्ञा[2] धृतिरेव च ॥ ४९ ॥
ठेः समासोऽपि ठैर्व्यासष्ठोः समः ठौश्च गौतमः ।
ठं ज्ञानं विवरं शून्यममृतं शारदं पयः ॥ ५० ॥
ठः प्रागुक्तोऽथ डः सार्थो डा क्षमा च सरमा रमा ।
डिर्गौरी डीः शिवा धात्री डुश्चन्द्रो डूः कलापवान् ॥ ५१ ॥
डेर्धर्म्मो डैर्वृषोऽकर्णो डोः पापी पुरुषाधमः ।
डौर्धेनुश्च करो जारो डं नेत्रं च पयस्तथा ॥ ५२ ॥
डः प्रागुक्तोऽथ ढः श्वादः श्वा मार्जारस्तथा खरः ।
ढा नाभिर्ढिर्गुदो मेढ्रो ढीर्धूमो वह्निरुत्कटः ॥ ५३ ॥
ढुः कूर्मः शूकरो व्यालो ढूः कुचो ढेः कुरङ्गजः ।
ढैर्मारो ढोः सुखी वर्यो ढौर्भूमिर्ढं पयो वरम् ॥ ५४ ॥
ढः प्रागुक्तोऽथ णो नक्रो णा नाभिर्णिर्वृकोऽजरः[3] ।
णीः स्वर्गो णुः करेणुर्भूर्णूः कालिन्दी सैटा[4] जरा ॥ ५५ ॥
णेर्मार्जारो विडङ्गश्च णैः शृगाली हरीतकी ।
णोः सर्षपोऽथ णौर्माया णं दर्शनमिति स्मृतम् ॥ ५६ ॥

---

१ घ. प्रेतो । २ क. ख. प्रजा । ३ क. ख. ॰कोद्गरः, ग. ॰कोङ्गरः ।
४ घ. जटा ।

तः सुवेषोऽथ ता नारी तिर्मूषक उमेश्वरः ।
तीर्नदी जलधिः प्रोक्तस्तुः सारङ्गो रमेश्वरः ॥ ५७ ॥

तूर्म्लेच्छस्तेः करी नक्रस्तैः कलापी दितिप्रसूः ।
तोः सूर्यो विघ्नकृत् स्वामी तौः स्वर्गो भूस्तथा गरः ॥ ५८ ॥

आचार्यो यजमानश्च तं तृणं जलमेव च ।
तः प्रागुक्तोऽथ थः सूर्यो गणेशो विनतासुतः ॥ ५९ ॥

था धरित्री प्रभा गङ्गा थिर्गोदा यमुना तथा ।
थीः समुद्रो व्रणो रेवा थुः साक्षी थूः परासरः ॥ ६० ॥

थेर्व्यासः थैः शुकः प्रोक्तः थोर्धर्मो गाधिपुत्रकः ।
थौः शङ्खः थं विषं कर्म बहुलं सूक्ष्ममेव च ॥ ६१ ॥

थः प्रागुक्तोऽथ दो दाता दा दात्री धरणी शुभा ।
दिर्दानी दीः सुधानाथो दुर्दरिद्री करोऽवरः ॥ ६२ ॥

दूर्दुःखी देः स्मृता जाया दैर्मत्स्यो वामनर्षभः ।
दोर्हस्तश्चरणः शिश्नो दौः स्वर्गः प्राण आत्मजः ॥ ६३ ॥

दं दानं शरणं कर्म भव्यं न्यूनमकिल्बिषम् ।
दः प्रागुक्तोऽथ धो धाता विष्णुर्वा गिरिजात्मनः ॥ ६४ ॥

धा धरित्री रमा गौरी धिर्धर्मो धीर्वृकोऽसुरः ।
धुस्तनुर्धूः करो भारो धूर्वृषो धेश्च रावणः ॥ ६५ ॥

धोः पापी वृषणः पूषा धौर्धर्मः पृथिवी गिरा ।
धं धनं धूननं दानं धारणं करणं सुखम् ॥ ६६ ॥

धः प्रागुक्तोऽथ नोऽभावो ना पुमान् गरिमा तथा ।
निर्दुर्गतिश्च नी रागो नुर्देहो नूः कलत्रवान् ॥ ६७ ॥

नेः समो नैः कुरङ्गोऽग्निर्नौस्तरिः पुरुषोऽमरः ।
नं नेत्रमञ्जनं श्रोत्रं करणं कारणं सुखम् ॥ ६८ ॥

नः प्रागुक्तोऽथ पः पापी पूषा वृषण आत्मजः ।
पा पर्णा पिः पवित्रोऽग्निः पीः स्मृताऽथ पिपीलिका ॥६९॥

पुः पुत्रे पूः पुरं देहः पेः पेशी पैश्च गालवः ।
पोः पौत्रः पौः पुमान् भूमिः पं प्रीणनमृणं पयः ॥ ७० ॥

पः प्रागुक्तोऽथ फो माथः फा फूत्कारवती विषा ।
फुः कार्त्तिकोऽथ फूः सर्पो वासवः शरणागतः ॥ ७१ ॥
फेः फाल्गुनोऽथ फैः शङ्खः फोः कालः फौः फणीश्वरः ।
गर्गो द्रोणो रणो बाणः फं फल्गु चारु वा स्मृतम् ॥ ७२ ॥

फः प्रागुक्तोऽथ बो बिम्बो बा स्मृता नर्मदासरित् ।
बिः पूर्णो बीर्बिंदुः पादो बेः साक्षी बैः कणो रणः ॥ ७३ ॥
बोः प्राणो बौः सरिद्गङ्गा बं बलं बहुलं स्मृतम् ।
बः प्रागुक्तोऽथ भः सोमो भा कान्तिर्मदिरेन्दिरा ॥ ७४ ॥
भिः पत्नी भीश्च भीतिः स्याद् भुर्भुजङ्गोऽथ भूर्मही ।
जाता जातश्च भेः कान्तिर्भैर्ब्रह्मा वरुणो यमः ॥ ७५ ॥

भैः प्रहारोऽथ भीरुः स्याद् भोः कंसो भौ रमापतिः ।
भं नक्षत्रं भयं ब्रह्म भरणं धरणं पयः ॥ ७६ ॥

भः प्रागुक्तोऽथ मः स्तोमः सोमो रामो रणो गजः ।
मा जालन्ध्री व्यथा लक्ष्मीर्माता माः मास ईरितः ॥ ७७ ॥

मिः कर्णो मीर्महाबाहुर्मुर्माता मूर्महाबलः ।
मेः सारङ्गोऽथ मैः पूषा सारथिः प्रणतो वरः ॥ ७८ ॥

मोः पत्नी मौः सुरावासो मं गलं मलिनं पलम् ।
मः प्रागुक्तोऽथ यः पुञ्जोऽसु देवी सूनुरीश्वरः ॥७९॥
या योनिर्यिश्च सञ्ज्ञामो यीर्गजः सारथिर्द्रुमः ।
युः सर्प्पो यूः स्मृता यूका येः सार्थो यैश्च वासवः ॥ ८० ॥

योः पादो यौः कणः स्वर्गो यं यन्त्रं करणं मधु ।
यः प्रागुक्तोऽथ रः कामो वह्निः सूर्योऽथ तोयधिः ॥ ८१ ॥
रा लक्ष्मीः रा समृद्धिः स्याद् रिः कर्पूरो महेश्वरः ।
रीः कामी मृगपत्न्यग्नी रुर्मृगो रूः प्रजापतिः ॥ ८२ ॥
रेः खेदो वापि-सम्बुद्धौ रैः कृष्णो वर्ण उच्यते ।
रो रोषो रौर्भवः स्वर्गो रं रत्नं रोदनं धनम् ॥ ८३ ॥
रः प्रागुक्तोऽथ लश्चौरो लक्ष्मणो ललना च ला ।
लिः सर्पो लीर्धरा लुर्भूर्लू रुद्रो गरुडोऽरुणः ॥ ८४ ॥
लेर्लवो लैः कुशो रामो लोर्मत्स्यो लौः प्रजापतिः ।
लं लक्षणं सुखं नाम रक्षः श्रोत्रं वचो विषम् ॥ ८५ ॥
लः प्रागुक्तोऽथ वः पङ्गुः सुखी वा त्रिदशप्रसूः ।
विः पक्षी गरुडः सूर्यो जलधिः सोम उच्यते ॥ ८६ ॥
वीर्विष्णुर्वुः पदातिः स्याद् वूः सङ्घो गज उच्यते ।
वेः पारिजातो वैः सारो वोः कालो वौः सुखावहः ॥ ८७ ॥
वं सुखं वसनं रक्तं वपुर्वचनमासुरम् ।
वः प्रागुक्तोऽथ शः शम्भुः शा गौरी कमलालया ॥ ८८ ॥
शिः पक्षी श्यथ सौभाग्ये शिशुः शुः शार्करोऽचलः ।
शूः शूद्रः शेः शिरीषोऽगः शैः स्मृतो धंधुहा नृपः ॥ ८९ ॥
शोर्दोषः शौः शिशुः शङ्खः शं सुखं शरणं वपुः ।
शः प्रागुक्तोऽथ षः खञ्जो वह्निः सूर्यो रणः कणः ॥ ९० ॥
परिखा षा खरी शावा षिः शङ्खो वर्तुलः स्मृतः ।
षीः पुत्रः षुः खुरः पुरः षूः सोमो म्लेच्छ एव च ॥ ९१ ॥
षेः सार्थः षैः खरः पारः षोर्देहो मलिनो जनः ।
षौः खट्वा धरणी बुद्धिः षं सस्यं मधु धारणम् ॥ ९२ ॥

---

१ क. ख. नृपपत्न्यग्नी ।

षः प्रागुक्तोऽथ सः सूर्यः सा सीता सिः सखाऽमरः ।
सीः सुखी सुः कुठारोऽर्कः सूर्धरा गर्भिणी नरी ॥ ९३ ॥
सेः सारः सैः शुकः श्वादः सोः सोमः सौः सहोदरः ।
सं सुखं शरणं कार्यं प्रधानं सरणं[1] वरम् ॥ ९४ ॥
सः प्रागुक्तोऽथ हो हर्षो हिरण्याक्षोऽथ तस्करः ।
हा गन्धर्वोऽथ हिः सर्पो हीर्नरो हर्षवान् मृगः ॥ ९५ ॥
हुः स्मृतो नैघुषो[2] राजा हूर्विप्रो हेः प्रसादकृत् ।
हैर्हासो होश्च सम्बुद्धिर्हौर्विरञ्चिः षडाननः ॥ ९६ ॥
हं चौर्यं हरणं पूर्णं भासुरं भरणं भरम् ।
हः प्रागुक्तः स्मृतं ळं तु परं ब्रह्म सनातनम् ॥ ९७ ॥
क्षः क्षान्तः क्षा मही सीता क्षिर्ज्योतिः क्षीर्हुताशनः ।
क्षुः क्षुद्रो वासवोऽर्कः(कश्च?) क्षूः पापिष्ठः प्रणाशनः ॥९८॥
क्षेः कर्षुकोऽथ क्षैर्मूर्खो जारः क्षोः क्षुरको व्रणः ।
क्षौः खञ्जो धरणी धर्त्ता क्षं क्षेत्रं क्षं पयो मधुः ॥ ९९ ॥
क्षः प्रागुक्त इयं माला शाब्दी सौभरिणा कृता ।
सा श्रुताऽङ्गिरसा चाऽस्तु विद्वच्चेतःप्रसादनी ॥ १०० ॥

इति श्री सौभरिकृता एकाक्षरनाममाला सम्पूर्णा ॥ [३]

*

१ ख. गमनं । २ ख. नहुषो ।

[४] सौभरिकृतो द्व्यक्षरकाण्डः ।

क्वणितं परमं ब्रह्म धीमहि प्रणताः सदा ।
ध्यात्वा प्रकाश्यते [1]माला सर्वज्ञानविधायिनी ॥ १ ॥

क्णः कणः क्णा धरा क्णिर्धीः क्णुः पुत्रः क्णूर्हुताशनः ।
[2]क्णौः कलापी स्मृतिः क्णं तु वृक्णं साधुसमीरितम् ॥ २ ॥

क्तः सिक्तो वरुणोऽपि क्तः क्ता दुर्गा मातृका गिरा ।
क्तिः सूर्यः क्ती स्मृतो वह्निः क्तुः सूनुः सोम एव च ॥३॥

क्तौर्लक्ष्मीः क्तं वरं ज्योतिः क्थः सङ्घो हरिणो गजः ।
क्था मही सरमा दुर्गा क्थिः कृष्णो वरुणो वरः ॥ ४ ॥

क्थी शिवः क्थुः सुतस्तातः [3]क्थूः शङ्खो गरुडो नरः ।
[4]क्थेः [5]सूतो वरुणो मारो रवः क्थौः सरमासुतः ॥ ५ ॥

क्थं रित्थं(क्थं?) [6]क्थनं दुःखं दैन्यं क्नः कर्ण उत्सवः ।
क्ना रमोमा मही भित्तिः क्निः सूकर उरुक्रमः ॥ ६ ॥

क्नुः शिवोऽर्कोऽम्बुधिः शूद्रोऽमरः क्नूः पतिरात्महा ।
क्नं श्रोत्रं करणं भीमं क्मः कामः कमलाहितः ॥ ७ ॥

क्मा रतिः कामपत्नी स्यात् क्मिः कामी क्मी रतीशवान् ।
क्मुर्बभ्रुः क्मूः स्वभूः शङ्खः शूकरः क्मौः कजालया ॥ ८ ॥

क्मं कर्म क्यः पलाशोऽग्निरर्कः क्या रेणुरुच्यते ।
ख्यः खरोऽग्निः खरी ख्या स्याद् ग्यो [7]गर्गः कमलासनः ॥९॥

ग्या योनिर्घ्यः स्वनो [8]घूको घ्या पत्नी धरणी स्मृता ।
च्यश्चयश्चातुरी च्या स्यात् छ्यः छागः छ्या च भारती ॥१०॥

---

१ क. नाममालाज्ञानविधायिनी । २ क. क्णो । ३ ख. ग. क्थुः । ४ ख. ग. क्थूः । ५ क. सुतो । ६ क. ग. कथनं । ७ क. ग. गार्ग्यः । ८ ख. मूको ।

ज्यो जयो यजमानश्च ज्या[1] जया विजया रमा ।
झ्यो नदो झ्या नदी प्रोक्ता ट्यः कूटः ट्या धरा सुरा ॥११॥

ठ्यो नादवोऽनलो ठ्या द्यौः ड्यो दाडिमतरुः करः ।
ड्या रमा नर्मदा गङ्गा ढ्य आढ्यः शिशुरुत्करः ॥ १२ ॥

ढ्या मही ण्यः स्मृतोऽग्रण्यः शरण्यो ण्या नदी गिरा ।
त्योऽन्त्यजः कमलानाथो गुरुस्त्या धरणी नदी ॥ १३ ॥

थ्यो नाथः थ्या कथा द्योऽब्धिर्द्या दया द्यौस्त्रिविष्टपम् ।
ध्योऽन्धो ध्याऽन्धा क्षुधा शुद्धा न्यो नयोऽर्णव उज्ज्वलः ॥१४॥

न्या नीतिर्नतिरुग्राणी प्यः पयः प्या कृपा रुचिः ।
फ्यः फेनः फ्या फणा ब्योऽर्को ब्या[2]ऽम्बा भ्यो भ्याऽभयः पुमान् ॥१५॥

म्यो मयो यम ईशानो म्या रमा सरमा क्षमा ।
य्यो जय्यो विबुधाधीशो य्या शय्या ल्योऽय उद्धतः ॥१६॥

ल्याऽहल्या नलिनी व्योऽब्धिर्वयः पक्षी च कूबरः ।
व्यो वायुर्व्याल ईशानो व्या भव्या वडवा सुधा ॥ १७ ॥

श्य आश आशयो नारी श्या वेश्या कृषिरित्यपि ।
ष्यः प्रेष्यः ष्या सुरा शुद्धा स्यः प्रशस्योऽमराधिपः ॥ १८ ॥

स्या कृषिः कृषिदैवं च ह्यो हयो ह्या तुरङ्गमा ।
ल्ल्या सर्वजगदम्बा च सर्वेशानी सुरेश्वरी ॥ १९ ॥

क्यं कार्यं च ख्यमाकाशं सख्यं ग्यं गम(ग)नं गतम् ।
घ्यं तोयं च्यं स्मृतं याच्यं शोच्यं पैशाच्यमेव च ॥ २० ॥

छ्यं छेवं(?) ज्यं स्मृतं याज्यं जातं झ्यं झषनाशनम् ।
ट्यं स्फेट्यं ठ्यं स्मृतं शाठ्यं[3] ड्यं जाड्यं ढ्यं धनं वनम् ॥२१॥

---

१ क. ग. जया सिञ्जिनी । २ क. ब्याऽम्बा भ्योऽभयः पुमान् । ३ क. वाक्यं ।

ण्यं न्याय्यं त्यं स्मृतं ह्यऽन्त्यं थ्यं पथ्यं द्यं [1]सुखं चिरम् ।
निन्द्यं ध्यं ह्यऽध्यमित्युक्तं न्यं न्याय्यं नयनं वरम् ॥ २२ ॥
प्यं कुप्यं पात्रमित्युक्तं फ्यं पयो मरणं रजः ।
ब्यं सुखं भ्यं भयं रौद्रं म्यममायं त्वमुत्करम् ॥ २३ ॥
य्यं कृत्यं न्याय्यमाधारं ल्यं प्रोक्तं निलयं बुधैः ।
व्यं वियद्वदनं वस्त्रं श्यं [2]शापे वश्य इत्यपि ॥ २४ ॥
स्यं [3]सस्यं कांस्यमित्युक्तं ह्यं हस्तिवदनं गृहम् ।
क्ष्यं क्षीरं क्षेत्रमुत्क्षारं क्ष्या पृथ्वी जगदीश्वरी ॥ २५ ॥
क्वः कविः काव्यं तातः स्यात् क्वा भूरिति निगद्यते ।
क्वं काव्यं कमलं च स्याद् ग्वो गौर्गरुड उच्यते ॥ २६ ॥
ग्वा धेनुर्ग्वं स्मृतं गुह्यं घ्वो घोषो घ्वाऽरणिः स्मृता ।
घ्वं घुष्टं घर्षणं घासं छ्वः छागः छ्वा छविः स्मृता ॥ २७ ॥
छ्वं [4]स्वच्छमुच्छ्रं गोमूत्रं ज्वो जवो ज्वा च चञ्चला ।
ज्वं जुष्टं झ्वः समुद्रः स्याद् झ्वा वशिष्ठवधूः स्मृता ॥ २८ ॥
झ्वं दुग्धं दधि च प्रोक्तं ट्वोऽत्री रामपिता मनुः ।
ट्वा खट्वा ट्वं स्मृतं पुष्टं ठ्वो [5]वशिष्ठोऽथ विठ्ठलः ॥ २९ ॥
पीठः ठ्वा मधुरा ठ्वं तु पुष्करं चाक्षमुच्यते ।
ड्वो भरद्वाजपुत्रः स्याद् ड्वा [6]ढाढा ड्वं महोदरम् ॥ ३० ॥
ढ्वो [7]ढेढो ढ्वाऽशनः रूयग्र्याः(?) ढ्वं पयोदधिश्चोदनम् ।
ण्वो नाथो जमदग्निः स्याद् ण्वा वाण्युज्जयिनी प्रभा ॥ ३१ ॥
ण्वं [8]रूपमणु च प्रोक्तं त्वस्तुरङ्गो महेश्वरः ।
त्वाऽश्वपत्नी च गौरी च त्वं तुल्यं तरणं [9]स्मृतम् ॥ ३२ ॥

---

१ ख. मुखं । २ ख. ग. स्वापे । ३ क. शस्यं काश्यमि° । ४ क. स्वच्छमुखं । ५ क. ॰वसिष्ठोऽथ । ६ ख. डाढा । ७ ख. ढेढे । ८ क. निरूपमणु च । ९ क. ग. तथा ।

थ्वोऽर्थोऽक्षरोऽरुणो थ्वा [च] स्त्री थ्वं मैथुनमुच्यते ।
द्वो दावो द्वा पुरी गङ्गा द्वं दूरं[1] वरदं च युत्[2] ॥ ३३ ॥

ध्वो धवोऽग्निर्वधोऽध्वा ध्वा धरा धारा वधूत्तमा[3] ।
ध्वं धन्यं धूननं ध्वस्तं ध्नोऽहिर्बुध्नो धनी स्मृतः ॥ ३४ ॥

ध्ना धन्या मातुली साला[4] ध्नं धनं साधनं वनम् ।
न्वो नवो न्वा नवा तन्वी न्वं नवं वस्तु गद्यते ॥ ३५ ॥

प्वो वायुः प्वा स्मृता धूलिः प्वं पुण्यं पतनं गिरेः ।
ब्वो ब्रह्मा गीष्पतिर्ब्वाऽम्बा ब्वं वाक्यं मधु विद्विषः ॥३६॥

भ्वो भवो भरतो ब्रह्मा भ्वा गौरी भ्वं निवेशनम् ।
म्वो वृक्षो म्वा धरा म्वं खं ब्रह्म पुस्तकमुत्तमम् ॥ ३७ ॥

य्वो यवो जवनो यक्षो य्वा योषिज्जघनोत्तमा ।
यतनं यभनं य्वं तु रुदनं मर्दनं जगत् ॥ ३८ ॥

ल्वो लवो रामपुत्रस्तु ल्वा लव्या ल्वं तु सूदनम् ।
शल्यं श्वं शरणं यन्त्रं मैथुनं गगनं[5] गतम् ॥ ३९ ॥

श्वं प्रोक्तं शयने याने श्वः प्रातरशनो हयः ।
श्वाऽश्वा तु चन्द्रमःपत्नी स्वः स्वर्गः सुहृदित्यपि ॥ ४० ॥

स्वो निजो भगवान् विष्णुर्भक्तो भासुर इत्यपि ।
स्वा स्वकीया च योषिच्च गौरी शक्तिः परेश्वरी ॥ ४१ ॥

स्वं गृहं धनमायुष्यं पुण्यं पाप्मा गतिः सुखम् ।
ह्वः प्रह्वः शतजिह्वः स्यात् ह्वा जिह्वा तरुणी सरित् ॥ ४२ ॥

ह्वं वायुगमनं क्ष्वेडा क्ष्वः क्षोदो[6] क्ष्वा सरिद्वरा ।
क्ष्वं क्षीवं क्षरणं क्षीरं पालनं तारणं पितुः ॥ ४३ ॥

---

१ क. नूरं । २ क. ग. यत् । ३ क. वधूः क्षमा । ४ ग. माला । ५ क. ग. गमनं । ६ क. क्षोदौ ।

स्नः सारः स्ना [1]प्रमुच्छ्रेष्ठा स्नं स्नानं मधुवारणम् ।
घ्नो घनो नाशको घ्ना द्यौः घ्नं जलं निबिडं पतत् ॥ ४४ ॥
म्नो मानो म्नाऽमरोत्तरा म्नं मनो मरणं मधु ।
क्लः कलः क्ला कला क्लं तु कलं कलमनुत्तमम् ॥ ४५ ॥
स्कः शुष्कः स्कन्धशूरः स्यात् स्का स्कन्दजननी सुरा ।
स्कं शुक्रं शरणं वृत्तं वादित्रं [2]वेदनं सुखम् ॥ ४६ ॥
स्लं [3]शूलमसुखं स्ला तु सरमा स्लस्तु षट्पदः ।
बाणो नरोऽमरो दैत्यो राक्षसो गरुडोऽरुणः ॥ ४७ ॥
श्लः शिलः शलभः शुक्लः श्ला शलाका शिला तथा ।
श्लं शुक्लं चूर्णमाधारं [4]गगनं शूलभृच्छिरः ॥ ४८ ॥
क्ष्लः [5]श्लोकः क्षुद्रवदनो क्ष्ला क्षोण्यऽक्षौहिणी तथा ।
क्ष्लं क्षुद्रं वस्तु मरणं भवनं शरणं वनम् ॥ ४९ ॥
ह्लं लक्ष्म ह्ला स्मृता गौरी ह्लो लोकस्तर्क इत्यपि ।
ख्लः खलः ख्ला सुरा क्षुद्रा योषित् कमललोचना ॥ ५० ॥
ग्लौः शनिर्ग्लौ गुडो ग्लाऽम्बा ग्लं गलं गलनं सरित् ।
घ्लोऽश्वो घ्ला जघना घ्लं तु वृकणं सारथिपातनम् ॥ ५१ ॥
छ्लः छलं छलकृत् छ्लोर्द्ध्वा पुरी छ्लं तु शिवालयम् ।
प्लः प्लवङ्गः प्लवः शूरः प्ला पाटी परमेश्वरी ॥ ५२ ॥
प्लं मांसं प्लवनं मद्यं पूरणं धरणीतलम् ।
फ्लं फलं बाणपूरं च वदनं सकलं वपुः ॥ ५३ ॥
ब्लं बलं ब्ला स्मृता रक्ता [6]वरटी कङ्गुरित्यपि ।
ब्लो बालोऽघासुरः कंसोऽज्ञोऽध्वा [7]मारोऽनलो यमः ॥ ५४ ॥

---

१ ख. ग. प्रमच्छ्रेष्ठा । २ ख. ग. गदनं । ३ ख. शूलं ससुखं । ४ क. गमनं । ५ क. ग. शोकः । ६ ख. बरटी कङ्गुरित्यपि, ग. वराटी कङ्गुरित्यपि । ७ क. मारोऽनिलो ।

ढ्लं माल्यं मधुरं ढ्ला क्ष्मा ढ्लिर्देवेशोऽमरावती ।
ढ्लः कल्पः कमलानाथो गरुडो हंससारथिः ॥ ५५ ॥
क्रः करः शरभो व्याघ्रो नाथः क्रा सुरभिर्मही ।
क्रं खमिन्द्रियमित्युक्तं ख्रो खौ रासभे खले ॥ ५६ ॥
ख्रा पूतना सूर्पणखा[1] ताडका कैकयी क्षितिः ।
ख्रं खड्गं दुष्टहृदयं मैथुनं मरणं तथा ॥ ५७ ॥
ग्रो गैदो[2] गुद आसारो ग्रा राज्ञी ब्रह्मयोषिता ।
ग्रं गृहं ग्रहचक्रं खमगारं[3] शुक्रमेव च ॥ ५८ ॥
घ्रो घोषो मदनश्चूतो भगोऽङ्गो यामिनीपतिः ।
घ्रा घृणा सरमापुत्री घ्रं गृहं वदनं निजम् ॥ ५९ ॥
ङ्रो नरोऽशरणोऽशूरो ङ्रा मारिणिरिति स्मृता ।
ङ्रं गृहं रुदनं[4] नाशा प्रभा हानिश्च कथ्यते ॥ ६० ॥
च्रश्चरश्चरमः श्लोकश्चूतश्चारण इत्यपि ।
च्रा चञ्चूश्च चमूश्चाटु च्रं मैथुनकमप्रजम्[5] ॥ ६१ ॥
छ्रो द्वेषी छुरको खड्गः सरुरङ्गणमार्गगः ।
छ्रा विष्टा शुनकी वेश्या छ्रं छलं गमनं गृहम् ॥ ६२ ॥
ज्रो वृद्धो गगनेऽटोऽग्निर्ब्रह्मोमेशो रमाधिपः[6] ।
जटायुश्च जरायुश्च जमदग्निर्जनीपतिः[7] ॥ ६३ ॥
ज्रा जरा जरठा जारवत्सला षट्पदी घृणिः ।
ज्रं यज्ञोतमजस्त्रं(?) च रजस्वलामुखं रजः ॥ ६४ ॥
झ्रो नदो[8] जरठो दारो झ्रा जरा हानिरीश्वरी ।
झ्रं जुष्टं भ्रमरे घुष्टं पुष्टं सृष्टं[9] गृहं कजम् ॥ ६५ ॥

---

१ ख. सूर्पणखी । २ क. ग. गरो । ३ क. खमाघारं । ४ क. ग. रोदनं । ५ क. मैथुनकमवज्रम् । ६ क. ग. रमापतिः । ७ ख. ग्निर्जुनीपतिः । ८ ख. नादो । ९ क. सुष्टुगृहं कधम् ।

ञ्रूश्चौरो ञ्रा स्मृता नीतिर्गतिः ञ्रूं भगवन्मुखम् ।
ट्रूः पीठः ट्रा स्मृता पूपा ट्रूं घोटकमुखं सरः ॥ ६६ ॥
ठ्रो मिष्टान्न-फलस्रावः[1] ठ्रा टिट्टा भ्रमरी सुरा ।
ड्रो दण्डो डमरुर्दक्षो दूरगो ड्रूं सुरोदकम् ॥ ६७ ॥
ड्रा टिट्टी मत्स्यगन्धा स्यात् झषपत्नी महोदरी ।
ड्रूं मद्यं मधुरं पुष्पं नर्मदाजलमम्बुजम् ॥ ६८ ॥
ढ्रूः स्याद् धृष्टं द्युम्नं तातो विदुरो नर्मदाझषः ।
ढ्रा गान्धारी सती स्वाहा स्वधाऽऽज्ञा सरयूरपि ॥ ६९ ॥
ढ्रूं फल्गु मरणं भ्रष्टं सुख्वास्यं स्पन्दनाक्षमम् ।
ण्रो नष्टोऽम्बरगो भीरुः कर्णो बीभत्सुरुद्भवः ॥ ७० ॥
ण्रा नर्मदा च गौर्गोदा गङ्गा द्रुपदजाऽम्बुजा[2] ।
ण्रूं नामसयुधं(?) पात्रं वाक्यं नारदभाषितम् ॥ ७१ ॥
त्रस्त्रिनेत्रोऽब्जजः पाता गरुत्मान् मघवानपि ।
त्रा गौरी गरदा पात्री तारणी सरमा तरी ॥ ७२ ॥
त्रं स्मृतं त्रुटितं घुष्टं जुष्टं पुष्टं परं पदम् ।
गान्धारीवदनं कर्णं वचनं द्रौपदीरितम् ॥ ७३ ॥
थ्रस्तीर्थवासकृत्पूतो जारः पुष्टोऽम्बिकात्मजः ।
थ्रा स्थिताऽथ रमा राज्ञी रजनी रजकात्मजा ॥ ७४ ॥
थ्रं तीर्थं सुखमायुक्तं मरणं मध्वरेर्मुखम् ।
द्रो द्रोणो द्रोणसूनुः स्यात् काकः काकसमो नरः ॥ ७५ ॥
भयकृद्भरतो राजा रतिदेवो रमापतिः ।
द्रा दरी सरमा क्षुद्रा द्रोणमूर्तिर्दुरात्मजा ॥ ७६ ॥
द्रं भयं[3] गमनं क्षुद्रं क्षोदनं सरमामुखम् ।
सुतटं सुखदं सामस्मरणं श्रयणं गुरु ॥ ७७ ॥

---

१ ख. मिष्टान्नफलस्रावः । २ क. द्रुपजाऽम्बुजा. । ३ क. भद्रं ।

ध्रो भूध्रो धारकः साक्षी धृष्टद्युम्नो धरात्मजः ।
वृकोदरो गदापाणिर्गरुत्मद् भ्रातृवल्लभः ॥ ७८ ॥
ध्रा धरा कुध्रजा कूलगा खगा पथिगाऽम्बुगा ।
ध्रं ध्रुवं धरणं धारा धरस्थानं च कूबरम् ॥ ७९ ॥
न्रा नारी नर्मदा दुष्टा नरवाग् नरकोद्भवा ।
पृथा पुष्टा परेशानी परमानन्ददायिनी ॥ ८० ॥
न्रो नरो नरकोऽङ्गारो नामदो नार्मदो ह्रदः ।
न्रं गृहं नरकोऽगारं गरुडाङ्गं गरोद्भवम् ॥ ८१ ॥
प्रा प्रकृष्टा महादेवी महालक्ष्मी रजोद्भवा ।
मैथुरा[1] मर्ममाराऽम्बा क्ष्मा क्षमा क्षामनासिका ॥ ८२ ॥
प्रः प्रकृष्टोऽन्धकारातिर्मुरारातिः कजोद्भवः ।
कामोऽरातिर्ध्रुवोऽगस्त्योऽरुणोऽरुणपितामरः ॥ ८३ ॥
प्रं ब्रह्म गगनं भूरि भ्रमराङ्गं धरान्तरम् ।
गङ्गातीरं पयः पेयं पाथः पारपरं[2] सरम् ॥ ८४ ॥
फ्रः फूत्कारः स्वनः फेनः स्फूरन् स्पष्टोऽम्बरे चरः ।
फ्राऽलीरपत्नी कमला खरी क्षारनदी सुरा ॥ ८५ ॥
फ्रं स्फुरद्वसनं जुष्टं यन्त्रं स्फेटितमुद्धृतम् ।
प्राकृतं गगनं ध्वस्तं धृतं धरणमुच्यते ॥ ८६ ॥
ब्रो बृहस्पतिराचार्यो बटुर्बुद्धोऽम्बरावृतः ।
बौष्कलो[3] बहुदोऽम्बाजो बहुव्रीहिश्च बुद्बुदः ॥ ८७ ॥
बालो बाणोऽबलो बद्धोऽम्बष्ठोऽब्दो बधिरः स्मृतः ।
ब्रा बाला बधिराम्बष्ठी बटुी बद्धाऽम्बरेश्वरी ॥ ८८ ॥
ब्रं ब्रह्म बलमुच्छ्रेष्ठं बधिराङ्गं तथाऽम्बरम् ।
बहुलं बाहुसारं च बधिरास्यं बटोर्मुखम् ॥ ८९ ॥

---

१ क. मधुरा. । २ ख. ग. परपरः सरः । ३ ख. बाकलो ।

भ्रो ब्रह्मा प्रकरो[1] भारो भ्रमरो धूसरोऽधरः ।
भासुरो भ्रामको भ्रष्टो भीमसेनोऽभयः स्मृतः ॥ ९० ॥
भ्रं भासुरं तथाऽभ्रं तु भ्रामकं भ्रमणं[2] भयम् ।
भ्रा भ्रष्टा ब्राह्मणी भा च हिडम्बा धरणी तथा ॥ ९१ ॥
म्रोऽमरो मृत्युरमर्त्यो मैथुनी माधवो बलः ।
म्राऽमरी मानवी मारमानिनी यामिनी शुनी ॥ ९२ ॥
म्रं मैथुनं मृताङ्गं च मरणं मस्तकं मधु ।
य्रो यादवोऽर्जुनो जारो य्रा जरा जरठाऽजरा ॥ ९३ ॥
य्रं जुष्टं भोजनं भ्राजत् जायमानं जरोद्भवम्[3] ।
य्रिः कामिनी प्रिया पुष्टा परमा पारगाऽम्बुधेः ॥ ९४ ॥
ल्रो लण्डो लालितोऽल्कोऽङ्को ल्रा लाजा लालिताम्बुल(?) ।
ललिता प्लावितं ल्रं खं लालितं ललनामुखम् ॥ ९५ ॥
व्रोऽवरो ह्यवरो वास्रो वाडवो वासरोऽम्बुधिः ।
व्रा श्रेष्ठा गिरिजा लक्ष्मी रत्नाकरगता तथा ॥ ९६ ॥
व्रं लुलायमुखं भीमं भासुरं श्रेष्ठमुच्यते ।
श्रः शरोऽसारदोऽसारः शरण्यः सारथिः शिवः ॥ ९७ ॥
श्रा गौरी तु रमा रामा रत्नाकरकृतालया ।
श्रं शरण्यं सुनृणं[4] च तारुण्यं तादृशं शिवम् ॥ ९८ ॥
ष्रः सुरेशोऽदितीशोऽर्कोऽरुणोऽर्णव उरुक्रमः ।
प्रा गौरी सारवत्पत्नी पारणा परमामरी ॥ ९९ ॥
ष्रं कष्टं करुणं काष्ठं कोमलेतरमुज्ज्वलम् ।
स्रः शरः सरमाभर्त्ता भक्तोऽभासुर-भासुरः(रौ) ॥ १०० ॥
स्रा शिवाऽभयपत्री च भक्ता ब्रह्मसुता तथा ।
स्रं श्रेष्ठं सारदं वस्तु वदनं वरुणासनम् ॥ १०१ ॥

---

१ क. ग. प्रकारो । २ क. भरणं । ३ क. नरोद्भवं । ४ क. सुमुणं, ग. सुरूणं ।

ह्रो हरो हरिणो हारो हरिर्हाहा हुहुर्हयः ।
हर्षो हंसोऽहरुद्धर्षो हासो हस्ती च नाहुषः ॥ १०२ ॥
ह्रा गौरी हरिणी हंसी हर्षयुक्ता च हस्तिनी ।
देवयानी च शर्मिष्ठा ह्रूं तु चौर्यं चरो गरः ॥ १०३ ॥
क्ष्रः क्षरः क्षरणः क्षारोऽक्षोडोऽक्षराक्षरः(?) ।
क्ष्रा लक्ष्मीः क्ष्रं [1]क्षयि क्षारं क्षोदनं [2]क्षरणं खरम् ॥ १०४ ॥
स्तः सुतः स्तिः सुरः शङ्खः सुता सारसयोषिता ।
स्ता प्रशस्ता [3]शदा पक्षिपत्नी पाटलगौः स्मृता ॥ १०५ ॥
स्तुः सारस्तूण आचार्यो [4]लक्षं स्तूस्तोरणः स्मृतः ।
स्तं शस्तं शरणं राजगृहं गगनमुद्धतम् ॥ १०६ ॥
ष्ट्रो भ्रष्ट्रः शकटो व्रात्यो विप्रो [5]वरुण आसवः ।
ष्ट्रुः सुष्ठु शरणं भ्रष्टं भासुरं भक्तमेव च ॥ १०७ ॥
ष्ट्रिर्यष्टिर्विष्टिरावृष्टिरावृत्तिर्वरुणाङ्गना ।
ष्ट्री यष्टी सरमा भ्रष्टा भ्रामका [6]भ्रमिरासुरी ॥ १०८ ॥
ष्ट्रा घुष्टा गृहिणी गाली सूर्यपत्नी जलालया ।
ष्ट्रं श्रेष्ठं शरणं साधु गदनं वदनं मधु ॥ १०९ ॥
ष्ट्रः [7]षष्ठोऽनुस्वरोऽङ्गारोऽघासुरोऽसुरसत्तमः ।
गोविन्दो गरुडो गण्डो घासोऽगारोऽगरोऽमरः ॥ ११० ॥
इत्येषा रचिता मालाऽक्षरी **सौभरिणा** शुभा ।
यः पठेत् श्रृणुयाच्चेमां स शब्दार्णवपारगः ॥ १११ ॥

॥ इति श्रीसकलविद्यानिधिना श्रीसौभरिणा मुनीश्वरेण विरचिता
द्व्यक्षरनाममाला समाप्ता ॥ [४]

*

---

१ ख. क्षयं । २ क. क्षारणं । ३ क. सदा । ४ क. ग. लक्ष्य । ५ ख. वरुण वासवः । ६ क. भ्रामिरी सुरी । ७ क. षण्ढो मुखरोऽङ्गारो, ग. षष्ठोऽनु-स्वरोऽङ्गारो ।

हरितालराजामात्यमाधवकृता

[५] एकाक्षरशब्दमाला

वेद-विष्णु-महेशान-कमलेष्वम्बिकेज्ययोः ।
अन्तःपुरी-भूषणे च चरणे कारणे रणे ॥ १ ॥
अकारः कथितो धीरैरङ्किते गौरवेऽपि च ।
असवर्णेऽभिव्याप्तौव परितापे विदाहिनि ॥ २ ॥
ईषदर्थे विस्मये च सन्तोषा-ऽमर्षयोरपि ।
सुखेन आङ् तथा सीम्न(म्नि) चिरविस्मृतिसंस्मृतौ ॥ ३ ॥
अल्पवस्तुनि च प्रोक्तो सलिला-ऽऽक्षेपयोरपि ।
इकारः कुसुमास्त्रे च हारे चन्द्रमसः करे ॥ ४ ॥
तथा करेणुकट्यन्ते महीभृत्कुहरेऽपि च ।
भुजङ्गफणङ्के च मृगे धेनौ च रूप्यके ॥ ५ ॥
उकारः सायके शर्वे वरे नीरजकेसरे ।
शक्रचापे हरौ पाणौ कमलारचनास्वपि ॥ ६ ॥
क्षोणीभृत्कुहरे पद्मदलेषु गदितो बुधैः ।
ऊकारः क्षत्रिये शम्भौ हरमौलौ हरौ शनौ ॥ ७ ॥
तपो-द्रुमाग्र-चन्द्रार्ध-गौरभूषु विलोचने ।
ऊकारे रजनीनाथे पुरुषे राजपुत्रके ॥ ८ ॥
गले मङ्गलकुम्भे च देवे फणिनि तक्षके ।
उपमाने प्राङ्गणे च कचिदर्थे प्रवर्द्धके ॥ ९ ॥
ऋकारस्तु रिपौ बुद्धिविशेषे कुञ्जरेऽपि च ।
शवे देवतटिन्यां च सुरायां देवमातरि ॥ १० ॥
विधुरे महति प्रोक्तो नामशासनकोविदैः ।
ॠकारश्चिकुरे सर्पमणौ विगतसम्पदि ॥ ११ ॥
भूते भुजङ्ग–स्यां (?) च तथा दनुजमातरि ।
भू(त)र्पणे सलिले पद्मे तुहिने तरले घने ॥ १२ ॥

ॠकारस्तु तथैवोक्तः प्राज्ञैकाक्षरकोविदैः ।
ऌकारो लिप्तमात्रे(गात्रे) च त्रिदिवेशे वने – ते (?) ॥ १३ ॥
किटिदन्ते हस्तिदन्ते कुलीर-कपिदन्तयोः ।
सुपर्णमातरि प्रोक्तो रजस्यपि मनीषिभिः ॥ १४ ॥
ॡकारस्तु गिरौ देहे(वे) कृकलासेऽङ्ग-बाणयोः ।
मकरीवदनागारे जनन्यां नागमातरि ॥ १५ ॥
लीलागमननेत्रेषु रोचनाङ्गेषु च स्मृतौ ।
एकारः कथ्यते विष्टौ रजनीशाविधानयोः ॥ १६ ॥
हर्म्योदरे दीनमृगे गगने मणिकुट्टिमे ।
तेजस्त्रैकालिकाख्यायां संख्यायामपि दृश्यते ॥ १७ ॥
ऐकारः सङ्करे हस्ते दन्तागेष्विन्दु(द्र)वारणे ।
– – लावर्त्तदेशेषु त्वचि स्याच्छिखरे गिरौ ॥ १८ ॥
ओकारो वर्णशीतांशुपङ्कदायाब्ज(ब्ज)केषु च (?) ।
त्रिदिवेशे पयोवाहजीवस्वसदनेऽपि च ॥ १९ ॥
योनौ सरोजतोयार्थे कुड्ये च कथितो बुधैः ।
औकारः पर्वते पुत्रे प्रश्ने चौषधिमानयोः ॥ २० ॥
विशुद्धकायेऽनन्ते च कलायां रजनीपतौ ।
तथा सिद्धविमानार्थे कथ्यते कृतबुद्धिभिः ॥ २१ ॥
कार्ये स्याद् वज्रकवचे मुनौ कम्पयुते जये ।
सप्तस्वरान्तमाने च सङ्गीतज्ञैरुदाहृतः ॥ २२ ॥
अं शब्दोऽञ्जलिपर्याये परस्मिन्नपि तेजसि ।
अः शब्दो गिरिजानाथे सिद्धमन्त्रे रमापतौ ॥ २३ ॥
दिनेशस्य निशेशस्य ग्रहोपद्रवसम्भवे ।
शिखायां चन्द्रबिम्बे च चरणा – धमस्तके ॥ २४ ॥

॥ इति हरितालमाधवस्य कृतौ एकाक्षरमालायां स्वराक्षरकाण्डः प्रथमः ॥

*

॥ अथ व्यञ्जनकाण्डः ॥

कः स्याद्रुते महे बुध्ने मारुते शमने वने ।
सितवर्णे मयूरे च हठे चाट्टुनि वारिदे ॥ २५ ॥
वशे च हरिशबरे च प्रकाशे पुंसि कथ्यते ।
स्त्रीलिङ्गे च सुराणां तु कं तु स्याच्च नपुंसके ॥ २६ ॥
सलिले जलजे चैव ब्रह्मण्यपि च मस्तके ।
शर्वकामेऽपि किंशब्दस्त्रिषु लिङ्गेषु संस्मृतः ॥ २७ ॥
अथाऽध्याये निरुक्तेऽपि कु च प्रश्नार्थयोरपि ।
कुशब्दस्तूपसर्गे स्यादुर्व्यां विसहितेऽपि च ॥ २८ ॥
चक्रे च कैतवे हारे ध्वांक्षे कोपे शिखिन्यपि ।
कं स्यात् पक्षे विशेषे च गुप्तकार्ये युधिष्ठिरे ॥ २९ ॥
त्रिलिङ्गे का-कुशब्दस्तु ध्वनिवैरूप्यसम्भवे ।
गायकानां कण्ठदोषे कै कं कें का शिखिस्वने ॥ ३० ॥
क---नभेदे च शास्त्रभेदे च अन्नदे ।
क-को-कशब्दः कुमतः पुंनपुं---र्दहाः (?) ॥ ३१ ॥
--र्थिने च तादर्थ्ये कप्रत्ययमुदाहृतम् ।
खः पुल्लिङ्गे कृशे-ने स्वर्ग-शून्य-दरा-ऽम्निषु ॥ ३२ ॥
कृपणे निश्चये शान्ते रथे विहगनायके ।
कर्मेन्द्रिये सुखे क्षेत्रे क्ली[बलिङ्गे] विहायसि ॥ ३३ ॥
दन्तधावन-संवेद-पुण्यादिफलदेष्वपि ।
गशब्दः पुंसि गान्धारे गन्धर्वे गणनायके ॥ ३४ ॥
उपमार्थे महीपुत्रे छन्दस्सु गुरुवाचके ।
स्त्रियां तु सुखशै--गो गत्योरपि गा स्मृता ॥ ३५ ॥
नपुंसके च गलिते नागे च परिकीर्त्तितः ।
गौः स्यात् पुंसि निशानाथे क्रतुभेदे प्रभाकरे ॥ ३६ ॥

वृषभे मुनिभेदे च स्त्रियां तु धरणीविभौ ।
आशायां च सरस्वत्यां सुरभावपि कथ्यते ॥ ३७ ॥

स्त्रीपुंसयोस्तु **गो**शब्द इष्टि-दीधिति-रागिषु ।
व्योम्नि स्वर्गे खगे दण्डे **गङ्गा** तु सुरवाहिनी ॥ ३८ ॥

घशब्दः पुंसि वै नागे पराक्रम-निदाघयोः ।
घण्टा-हननयोश्चापि वैशाखे च निगद्यते ॥ ३९ ॥

घा चाऽऽर्त्तिः किङ्किणी च स्याद् घं नादा-ऽमृतयोर्भवेत् ।
ङशब्दो निनदे पुंसि सुरभौ परिकीर्त्यते ॥ ४० ॥

ङशब्दः शरपौरार्थे त्रिषु लिङ्गेषु वर्त्तते ।
ज(ङ)कारः पुंसि शब्दज्ञे भैरवे देशयोजने ॥ ४१ ॥

अनुबन्धानु – – – – पुव्यसनशायिषु ।
पुंसि केत्वञ्जने स्याद् वा त्रिलिङ्गे च भयङ्करे ॥ ४२ ॥

चः पुंल्लिङ्गे निशानाथे तुरुष्के तस्करे खरे ।
चा शोभायां स्त्रियामुक्ता रुधिरे च नपुंसके ॥ ४३ ॥

चशब्दस्त्रिषु लिङ्गेषु – – – र्थी व्ययेषु सः (?) ।
समुच्चया-ऽपचययोः पक्षान्तरनिरूपणे ॥ ४४ ॥

समासके समाहारे मिथोयोगेऽप्युदाहृतः ।
चञ्चुः स्त्रियां पक्षिमुखे चिञ्चा स्यात् तिन्तिणीफले ॥ ४५ ॥

चे नदीतोयमित्यर्थे चञ्चु प्रत्ययमिष्यते ।
छः पुंसि छ – – – – छागे शक्तिधने छगे ॥ ४६ ॥

श्रुते प्रलापे मन्त्रस्य विभागे ह्यक्षरस्य च ।
आदानेऽपि चरित्रे च वर्त्तते पुं-नपुंसके ॥ ४७ ॥

सर्जा-निर्मलयोरुक्तः छकारो वाच्यलिङ्गकः ।
जः पुमान् विजले मुक्ताविस्तारे मत्सरीजने ॥ ४८ ॥

जं तूक्तो वरशब्दे जा स्त्रियां देहविदा(वा)हिनी ।
योनौ समुद्रवेलायां पुंनपुंसकमम्बुदे ॥ ४९ ॥

कटीविभूषणे पद्यां जः स्याज्जनन-जैनयोः ।
झः पुंलिङ्गे जवे व्योम्नि विचारे च प्रकीर्त्यते ॥ ५० ॥

झा स्त्रियां तु सरस्वत्यां झा झिः स्यात्तरुसम्भवे ।
पुंलिङ्गे तु ञकारः स्याद् ससी – – – सम्भवे ॥ ५१ ॥

ञं ञूनि(रि)ति प्रतापे च हंसके भ्रमरे मदे ।
उपाये ञ निधाने [च] ञं तु स्याद् द्युति-पद्मयोः ॥ ५२ ॥

भयङ्कराख्यशब्दे स्यात् त्रिषु लिङ्गेषु कीर्त्तितः ।
ञकारोऽपि तथाऽनष्टे ञंञा तीव्रसमीरणे ॥ ५३ ॥

टकारः पुंसि विषये विरुद्धे गर्दभस्वने ।
त्रिलिङ्गे – हरिगः (?) स्यादुत्ताने मूढरूपके ॥ ५४ ॥

टशब्दः सोऽध्वगे सूनौ करटे धूम-तापयोः ।
आवर्त्ते भानुरद्धा (?) च कराटे टुः प्रकीर्त्यतेः ॥ ५५ ॥

टा स्त्रियामपि मृज्यायां व्याहृतौ च निगद्यते ।
ठशब्दः कथ्यते पुंसि बृहद्ध्वान-महीपयोः ॥ ५६ ॥

नपुंसके साहसे स्यात् सम्भवे चन्द्रमण्डले ।
त्रिलिङ्ग्यां तु शठे शून्ये मनोजे कठिनेऽपि च ॥ ५७ ॥

ठुकारः कथ्यते पुंसि विषये शङ्करेऽधरे ।
हस्त्यश्वानां निनादे च क्षये क्षौद्ररसे धने ॥ ५८ ॥

स्त्रियां तु वाजिशिक्षायां पीडायामपि ठा स्मृता ।
भवेन्नपुंसके दुर्गपथे समरुगे तथा ॥ ५९ ॥

डशब्दः पुंसि डिण्डीरे हस्ते चापि भगन्दरे ।
पिशाचे पथिके काले रागे च परिकीर्त्यते ॥ ६० ॥

डुशब्दस्तु त्रिलिङ्गे स्याद् गूढे सौम्या-ऽपसद्मयोः ।
णशब्दः कण्ठके जारे भैरवे च भगन्दरे ॥ ६१ ॥

णा स्त्री रजन्यां जायायां वेदनायामपि स्मृता ।
णं संशोध्यजले ज्ञाने गमने परिकीर्त्यते ॥ ६२ ॥

णशब्दस्त्रिषु लिङ्गेषु भवेन्निश्चलवस्तुषु ।
तकारः पुंसि संयोगे निश्चये विस्तरे समे ॥ ६३ ॥

तु [स्याद् ?] वादविधौ क्रोधे ता कृपायां स्त्रियां मता ।
पश्चादर्थे विवक्षायां तत् शब्दस्याव्ययं भवेत् ॥ ६४ ॥

तद्वत् समुच्चये हेतौ निश्चये चावधारणे ।
ततः शब्दोऽनन्तरार्थे तातस्तु जनके पुमान् ॥ ६५ ॥

तन्तुः पुंसि गणे स्तोमे स्त्रियां ततिरुदाहृतः ।
नपुंसके तन्तुवाद्ये वीणादौ परिकीर्त्यते ॥ ६६ ॥

ततं चैव त्रिलिङ्गे स्याद् विस्तृतार्थे प्रदृश्यते ।
थः पुमान् सिंह-कल्लोल-विरामेषु महीधरे ॥ ६७ ॥

स्यादास्फालनशब्देषु जाले धातौ स्त्रियां च था ।
थं नपुंसकलिङ्गे तु भवेद् भयनिवारणे ॥ ६८ ॥

त्रिलिङ्ग्यां तु थकारोऽसौ सिता-ऽसित-पृथुष्वपि ।
पुमान् धातरि दः शब्दो दा स्त्रियां क्षोणि-दानयोः ॥ ६९ ॥

दं नपुंसकलिङ्गे तु भवेत् पुत्र-कलत्रयोः ।
दाने सम्बोधने प्रान्ते वैराग्ये चावलोकने ॥ ७० ॥

त्रिलिङ्ग्यां मुषिते मूले गृहीते द्रावके शुचौ ।
पुंनपुंसकयोर्बाहौ दोः स्यात् स(ष)ण्ढे च दोः स्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

कृच्छ्रे स्वे निन्दिते दुःखे चोपसर्गे च दुर्मतः ।
धः पुमान् सन्निभे स्याद् धं मृदुरेणु-कशेरयोः ॥ ७२ ॥

धकारः पुंसि कथितः सानौ मानविशेषके ।
धने धान्ये स्त्रियां धा स्याद् भये धूपे च धः पुमान् ॥ ७३ ॥

नकारः पुंसि हेरम्बे ना भवेत् पुरुषे तथा ।
नकारस्तु स्त्रियां नादो संवाद्यज्ञान--- ॥ ७४ ॥

नशब्दस्त्रिषु लिङ्गेषु दन्ते चाभिन्न-सूक्ष्मयोः ।
प्रस्तुते चापरिश्लेषे शून्ये रिक्तेऽपि च स्मृतः ॥ ७५ ॥

ना स्त्रियां संस्तुतौ नावि नौ स्यादेवं निरूप्यते ।
नुन्नशब्दस्त्रिलिङ्गेषु प्रेरिते कथ्यते बुधैः ॥ ७६ ॥

अन्ययः प्रतिषेधार्थे नकारः स्थिरनिश्चये ।
ना तथा प्रतिषे[धे] स्यादुपसर्गे तु निः स्मृतः ॥ ७७ ॥

निश्चये च निषधार्थे नूनं स्यात्तर्कनिश्चये ।
नानाप्रकारे भेदे स्याद् भवेन्नु त्ववधारणे ॥ ७८ ॥

पुंल्लिङ्गे चोपकारे स्याद् वपने पर्वते क्षणे ।
पकारस्तु भवेल्लग्ने पत्रे शास्त्रा-ऽर्चयोरपि ॥ ७९ ॥

पा स्त्रियां सङ्गते वारिधार-पान-सुधास्वपि ।
नपुंसके पं कनके विपन्ने वाच्यलिङ्गवत् ॥ ८० ॥

आप्ये चापे च दैवे स्यात् स्त्रियां पूर्नगरी स्मृता ।
प्रपशब्दस्तपुरार्थे(?) बुधैः पुंसि निगद्यते ॥ ८१ ॥

पम्पा सरोविशेषे स्त्री पापं पुण्येतरेऽपि च ।
तद्वति त्रिषु लिङ्गेषु पाऽप्युक्ता शब्दशासने ॥ ८२ ॥

झञ्झावर्त्ते फकारः स्यात् प्रासादे प्राङ्गणे रणे ।
फकारो गोश्च पूत्कारे पुं स्यादथ च फः स्त्रियाम् ॥ ८३ ॥

दिक्षु प्रोक्ते कला-केश-कुटी-धनुःषु कथ्यते ।
विशेष्यनिघ्नः फशब्दः परोक्षेऽपि हिते तथा ॥ ८४ ॥

बः पुमान् पुरुषे कुम्भे विकल्पे गगने गुरौ ।
कलहे खगभेदे च भेदे चाल्पे च पर्वणि ॥ ८५ ॥
विभूत्तिकार (?) बिन्दौ च हलाकृष्टविसर्जने ।
बाकारस्तु स्त्रियां वल्ली-काहली-शृङ्खलास्वपि ॥ ८६ ॥
नपुंसके बले पुं स्यादमले वाच्यलिङ्गवत् ।
बिः पुमानण्डजे व्योम्नि बिम्बत्वेऽथ नपुंसके ॥ ८७ ॥
पलिभेदे पुष्पभेदे मण्डले पुंनपुंसकम् ।
भकारः पुंसि जलभे(दे) छादे शम्भौ शिलीमुखे ॥ ८८ ॥
सुधीः स्त्रियां च भा दीप्तौ स्याद् दाराणामलङ्कृते ।
नपुंसके भं नक्षत्रे गगने मन्त्र-चक्रयोः ॥ ८९ ॥
भीः स्त्रियां साध्वसे भाश्च रश्मौ भूर्भुवि बोध्यते ।
भो भो सम्बोधने दृष्टो माधवे च मनीषिणि ॥ ९० ॥
पुमान् भकारः श्रीकण्ठे चन्द्रे वह्नौ विभावसौ ।
सत्यवादे प्रकोष्ठे च तन्वक्षे संयुते तथा ॥ ९१ ॥
कपिले पिङ्गले वर्णे बिम्बके भुः प्रकीर्त्यते ।
म स्त्रियां मञ्जुकायां च लक्ष्म्यां माने च मातरि ॥ ९२ ॥
मदिरा-मदयोः स्तेन-चेलयोरपि दृश्यते ।
नपुंसके जने पुं स्यादव्ययं मा निवारणे ॥ ९३ ॥
यकारः पुंसि पवने यमे धातरि यातरि ।
त्यागे भावे चये लिप्ये विनये कल्पपादपे ॥ ९४ ॥
या स्त्रियां यान-मञ्जर्योः शोभा-लक्ष्म्योश्च निर्मिता ।
नपुंसके यकारस्तु यशो-रूपकयोर्भवेत् ॥ ९५ ॥
यदु पूर्वभवे – – चाश्वमेधतुरङ्गमे ।
यायी गमनशीले च प्रोक्तो रूढे च मन्त्रिणि ॥ ९६ ॥

रः स्यात् पुमान् शिवे वह्नौ वज्रे कामे रवौ गुरौ ।
अनाथे कपिले पिण्डे वीरे पाके तरीश्वरे ॥ ९७ ॥

नपुंसके रशब्दस्तु धान्य-रोमाञ्च-कुक्षिषु ।
रशब्दस्तु नये बुद्धे भये चैव हि रा स्त्रियाम् ॥ ९८ ॥

आशायां च धने व्योम्नि शालायां च गतौ तथा ।
उत्तमाङ्गे च वदने रुधिरे चापि कथ्यते ॥ ९९ ॥

विशेष्यनिघ्नो रः शब्दो वीरशक्त्यादितीक्ष्णयोः ।
नीचसम्बोधने रे स्यादव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥ १०० ॥

मुनिभेदे रुरुः पुंसि मृगभेदे च कथ्यते ।
लः पुंसि रस्त्रि लि स्त्रि स्याल्लं ला लेऽथ नपुंसके (?)॥१०१॥

लकारो लवने लूने वाच्यलिङ्गो भवेदसौ ।
मुखनिस्सृतनिष्ठ्यूते लाला लीला तु विभ्रमे ॥ १०२ ॥

लाल उत्कृष्ट-चलयोर्वाच्यलिङ्गो निगद्यते ।
वः पुमान् स्वान्तगे वाते मरणे संयमेऽधरे ॥ १०३ ॥

प्रबोधे मदने चैव विहगे गगनेऽपि विः ।
शिक्षाभृद्-गन्ध-गतिषु वा स्त्री वं तु नपुंसके ॥ १०४ ॥

वशब्दो नयने वाहे अव्ययं स्यात् समुच्चये ।
उपमायां विकल्पे च निश्चये च निगद्यते ॥ १०५ ॥

उपसर्गे च विश्लेषे पृथगर्थे विकारके ।
विलये च विशेषे च विहतौ वि भवेत् तथा ॥ १०६ ॥

शकारः पुंसि गिरिशे शिष्ये स्वस्मिन् तनूकृते ।
वल्मीके कच्छपे चैव शिकारस्तु सदाशिवे ॥ १०७ ॥

शा स्त्रियां वेदपूजायां शान्ते शोभा-वरेण्ययोः ।
शक्तौ भक्त्यां रमायां च शकारः शयना-ऽऽशिषोः ॥ १०८ ॥

विततावपि शूकारो हिंसायां च निगद्यते ।
षकारः पुंसि त्रिदिवे परोक्षे च भवेत्तथा ॥ १०९ ॥

षोऽस्त्रियां मधुरायां च षकारोऽथ नपुंसके ।
अवसाने गर्भमोहे सुषेणे च निरूप्यते ॥ ११० ॥

नित्राणे निवहे चैव रवे चैत्यादिषु स्मृतः ।
विशेष्यनिघ्नः षशब्दो श्रेष्ठार्थे समुदाहृतः ॥ १११ ॥

सकारः पुंसि साकारे गौरीपुत्रे प्रभञ्जने ।
धर्मे हिते च साकारो देहकान्त्यां स्त्रियां मतः ॥ ११२ ॥

सुस्तदागर्भमोक्षे च सन्धाने विनिवारणे ।
ज्ञाने रथपथे चैव त्रिलिङ्ग इति संस्मृतः ॥ ११३ ॥

श्रेष्ठे विकल्पे सं स्याद्धि सद्वृत्ते उपसर्जने ।
सीसं नपुंसकं प्रोक्तं धातुभेदे मनीषिभिः ॥ ११४ ॥

हकारः पुंसि जनने हरिण्यां हरि-सिंहयोः ।
ईश्वरे सावशेषे च रेणु-रोचन-वाजिषु ॥ ११५ ॥

हा स्त्रियां त्यजने गत्यां वीणायां च निगद्यते ।
नपुंसके हकारस्तु क्षणिते मणिरोचिषि ॥ ११६ ॥

धारणौ हीरब्रह्मण्ये शास्त्रे चाऽऽमन्त्रणेऽपि च ।
सुखे विशेषणे चैव त्रिलिङ्ग्यामपि कथ्यते ॥ ११७ ॥

उपमा-हास्ययोश्चैव हाऽव्यये कृष्ट-शोकयोः ।
आर्त्ति-सर्जनयोरुक्ता हे च सम्बोधने भवेत् ॥ ११८ ॥

हिर्हिते च प्रसिद्धे च ह अङ्गीकरणेषु च ।
हाहा हूहूश्च गन्धर्वे हाहो सम्बोधनेऽव्ययम् ॥ ११९ ॥

हाहा दैत्याद्भुते भेदे कथ्यते नामशासनात् ।
क्षकारः पुंसि दुःस्वप्ने क्षेत्र-राक्षसयोस्तथा ॥ १२० ॥

क्षेमे तु विरहे रोधे विशेषे च निगद्यते ।
क्षा स्त्री क्षमायां निन्दायां क्षं स्याद् द्वश्ये नपुंसके ॥ १२१ ॥
क्षेत्रे निर्भर्त्सने चैव क्षोऽव्ययं मञ्जुवाचकः ।

इति हरितालराजामात्यस्य माधवस्य कृतौ
व्यञ्जनकाण्डो द्वितीयः ॥

खशब्दोऽव्ययरूपः स्यात् क्षुरलि(?) प्रश्नवाचके ॥ १२२ ॥
ख्या(ख्या)तौ स्त्रियां तु ख्या(ख्या)शब्दो ग्लौः स्यात् पुंसि कलानिधौ ।
ज्ञशब्दः सौम्यविदुषो ज्ञा स्त्री स्यादवबोधने ॥ १२३ ॥
ज्याशब्दः कार्मुकगुणे स्त्रीलिङ्गः कथितो बुधैः ।
त्राकारः कथितस्त्राणे स्त्रियां द्वाद्वारि कथ्यते ॥ १२४ ॥
द्रुशब्दः कथितो धीरैः पुंल्लिङ्गो वृक्षवाचके ।
[सं]ख्याभेदे त्रिशब्दश्च द्विशब्दः परिकीर्त्यते ॥ १२५ ॥
द्यौः स्त्रियामम्बरे स्वर्गे धन-कान्त्योर्निगद्यते ।
उपसर्गे प्रकारस्तु प्रकृष्टार्थस्य वाचकः ॥ १२६ ॥
बिल्ववृक्षे विषे लक्ष्म्यां श्रीशब्दः कथ्यते स्त्रियाम् ।
स्वशब्दः स्वात्मनि ज्ञातौ धनेऽपि च नपुंसके ॥ १२७ ॥
स्वकीये तु त्रिलिङ्गः स्यादव्ययं स्वस्त्रिविष्टपे ।
उषायां जन्तुभेदे च स्त्रीशब्दः कथ्यते स्त्रियाम् ॥ १२८ ॥
शृशब्दः शैलकटके पुंनपुंसकयोर्भवेत् ।
ह्रीः स्त्रियां कथ्यते व्रीडा ह्योऽव्ययं दिवसे गते ॥ १२९ ॥
क्षाशब्दः कथ्यते प्राज्ञे स्त्रीलिङ्गे भूमिवाचके ।
अनुसम्बोधने धीरे जिते क्षश्च निगद्यते ॥ १३० ॥

॥ इति माधवकृतौ एकाक्षरशब्दमालायां
संयुक्ताक्षरकाण्डस्तृतीयः ॥ [५]

[६] इरुगपदण्डाधिनाथरचितो नानार्थरत्नमालागत एकाक्षरकाण्डः

रूपभेदात् साहचर्यात् कण्ठोक्त्या वा विभावयेत् ।
लिङ्गा[1]न्यथा[2]दि त्वन्तं[3] वा पदं पूर्वेण नान्वयि ॥ १ ॥
त्रिष्विति त्रिषु लिङ्गेषु ज्ञेयं द्वन्द्वे द्वयोरिति ।
लिङ्गान्तरनिषेधोऽत्र शेषलिङ्गविधायकः ॥ २ ॥
अकारो ब्रह्म-विष्णवीश-कमठेष्वङ्कणे रणे ।
गौरवेऽन्तःपुरे हेतौ भूषणेऽङ्गावुमेज्ययोः ॥ ३ ॥
आकारस्तु घटे भावे परितापे पितामहे ।
इकारः फणरत्नार्चि[4]र्ष्यग्रतोऽर्थ-गुहार्थयोः ॥ ४ ॥
हारे करेणुकुक्ष्यन्ते निशाकरकरे स्मरे ।
ईकारोऽब्जदले लक्ष्म्यां वाण्यां कमलकेसरे ॥ ५ ॥
रचनायां शक्रचापे बाणे फणिनि कन्दरे ।
उकारः क्षत्रिये नेत्रे हरमौलौ हरे हरौ ॥ ६ ॥
ऊकारः पुरुषे चन्द्रे राजपुत्रे गले सुरे ।
प्राङ्गणोपमयोः पूर्णकुम्भे वणिजि रक्षके ॥ ७ ॥
ऋकारः कुञ्जरे शैले धीभेदे देवमातरि ।
भावे देवे रिपौ नद्यां सुरायां विवरे दिवि ॥ ८ ॥
ॠकारश्चिकुरे सर्पदष्ट्यां[5] विगतसम्पदि ।
हिम-पद्म-दिति-स्वर्ग-धन-भूषा-भुजा-ऽम्बुषु ॥ ९ ॥
ऌकारो दन्तिनां दन्ते कुलीर-कपिदन्तयोः ।
स्वर्गा-ऽदित्योर्लिप्तगात्रे गतनप्तरि रक्षसि ॥ १० ॥

---

१ लिङ्गानि विभावयेद् इत्यन्वयः । २ अथादि—अथ आदौ यस्मिन् तद् अथादि ।
३ त्वन्तम्—तु अन्ते यस्मिन् तत् त्वन्तम् । ४ घ. °र्चिष्ष्वग्र° । ५ घ. सर्पे दष्ट्यां ।

ॡकारः कृकलासेऽद्रावङ्गेऽक्षिण मकरे सुरे ।
लीलागतौ लोचनास्थि नागमातरि मातरि ॥ ११ ॥

एकारस्तेजसि जले रात्रौ हर्म्योदरे हरौ ।
व्योम्न्येकादशसङ्ख्यायां दिनादौ मणिकुट्टिमे ॥ १२ ॥

ऐकारो दिग्मुखे हस्ते हरेऽद्रिशिखरे त्वचि ।
ओकारः पद्म-कुल्या-ऽम्बु-श्रीद-मेघेन्दु-योनिषु ॥ १३ ॥

शक्रे जवे विरञ्चौ स्यादौकारस्त्वम्बिकासुते ।
विशुद्धाङ्गेन्दुकलयोरनन्ते सिद्धपुष्पके ॥ १४ ॥

अंशब्दश्चक्रवाकेऽतिदीर्घेऽञ्जलि-नियोगयोः ।
सप्तस्वरान्तमाने च परज्योतिषि च स्मृतः ॥ १५ ॥

अः शिखायां सिद्धमन्त्रे प्रग्रहेऽर्करथार्वणि ।
वक्त्रे [1]कुर्कुटमूर्ध्नीन्दुबिम्बे ब्रह्मेश-विष्णुषु ॥ १६ ॥

को ब्रह्मा अनिला-ऽर्का-ऽग्नि-चित्त-धी-यम-केकिषु ।
[2]विषणा (ष्ण्वा) वाहनशब्देऽब्धौ सितवर्णे वसौ द्युतौ ॥ १७ ॥

कं शिरो-[3]ऽम्बु-सुखे क्लीबे तत्रैव च कमव्ययम् ।
किं प्रश्ना-ऽऽक्षेप-कुत्सासु वितर्के च त्रिलिङ्गकः ॥ १८ ॥

किमव्ययं च कुत्सायां विकल्प-कुत्सयोरपि ।
कुः स्त्री भुवि कु पापेऽल्पे कुत्सायां वारणेऽव्ययम् ॥ १९ ॥

खः पुमान् गरुडे खड्गे स्वर्गे शान्तरसे कुणौ ।
खमिन्द्रिय-सुख-व्योम-नक्षत्र-क्षेत्र-पट्टणे ॥ २० ॥

कूपा-फलकयोः शून्यबिन्दौ [4]संवेश-रन्ध्रयोः ।
गं गीते गा च गाथायां गो गन्धर्व-गणेशयोः ॥ २१ ॥

---

१ घ. कुकुटमूर्द्धेन्दुः । २ ङ वीणावाह(द)नशब्दे । ३ ङ ०म्बुमुखे । ४ क. ख. घ. ङ. संवेस० ।

गौर्नाके वृषभे चन्द्रे वाग्-भू-दिग्-धेनुषु स्त्रियाम् ।
द्वयोस्तु रश्मि-दृग्-बाण-स्वर्ग-वज्रा-ऽम्बु-लोमसु ॥ २२ ॥
मेघे निदाघे किङ्किण्यां घण्टायां घट्टने च घः ।
घं वाद्या-ऽमृतयोर्घा भूर्वार्तायां घो तु घस्त्रिषु ॥ २३ ॥
ङं क्लीबमञ्जने ना तु भैरवे विषये जने ।
चस्तुरुष्के स्वरे चौरे चकोरे चन्द्रमस्यपि ॥ २४ ॥
[1]चा स्त्री शोभा शोणिते तु चं क्लीबे विमले त्रिषु ।
[2]छो भान्त्राच्छादना-ऽब्जेषु छं क्लीबे संवृतौ पुमान् ॥ २५ ॥
त्रिष्वयं निर्मले नित्ये मलिने भेदकेऽपि च ।
जो जवे विषये मेरौ शब्दे जेतरि मत्सरे ॥ २६ ॥
जा स्त्रियां देववाहिन्यां [3]योनि-सागरवेलयोः ।
जं कटीभूषणे पत्न्यां तेजस्यम्बुनि जन्मनि ॥ २७ ॥
जीः कीर्त्त्यां संवरे जूर्ना जवे व्योम-पिशाचयोः ।
जः स्त्री वाण्यां झशब्दस्तु पुमान् धातरि हंसके ॥ २८ ॥
प्रतापे भ्रमरे[4] नष्टे चौरे झञ्झानिले मदे[5] ।
ञो व्यूहे विषये गर्वे लेपे मूर्ध्नि खरध्वनौ ॥ २९ ॥
त्रिषूत्ताने मूढरूपे क्लीबे तु भय-पद्मयोः ।
ज्ञः प्राज्ञे त्रिषु ना चन्द्रसूनावात्मनि वेधसि ॥ ३० ॥
टः पुमान् करटे धूमे तापेऽर्कविवरे ध्वनौ ।
कवाटा-ऽऽवर्त्तयोः सूनौ भू-व्यावृत्त्योस्तु टा स्त्रियाम् ॥ ३१ ॥
ठः शङ्करे बहुध्वाने ठं क्लीबे चन्द्रमण्डले ।
स्तम्भने साहसे चाथ त्रिषु शून्ये शठे दृढे ॥ ३२ ॥

---

१ घ. चा स्त्री-शोभा-शोणितेषु. । २ क. घ. ङ. छलित्वाच्छा° । ३ ख. ग. जो निशाकर-वेलयोः. । ४ ङ. ॰रेऽनिष्टे. । ५ घ. गदे. ।

डः पुमान् विषये शम्भौ हासे त्रासे क्षये ध्वनौ ।
शङ्खध्वनौ रौद्ररसे व्रीडा-वाचोस्तु नैः (डः) स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥
डं क्लीबे डामरे दुर्गपथे डमरुकेऽपि[2] च ।
अन्दोलने च त्रिषु तु डशब्दो गायने जडे ॥ ३४ ॥
ढः पिशाचे भये काले रागे पान्थे ध्वनौ च ना ।
ढक्कायां तु स्त्रियां क्लीबे ज्ञाने तूर्यमुखेऽपि ढम् ॥ ३५ ॥
त्रिष्वयं निर्गुणे गूढे सौम्ये सव्या-ऽपसव्ययोः ।
णशब्दस्तु पुमान् जारे भैरवे कङ्कटे ध्वनौ ॥ ३६ ॥
णा स्त्रियां रजनी-शय्या-धेनु-नासा-कृपासु च ।
णं सरोजदले ज्ञाने त्रिषु निस्तुषवस्तुनि ॥ ३७ ॥
तशब्दः पुंसि सम्भोगे निश्चये कोप-पुच्छयोः ।
धातुवादविधौ चौरे करुणायां तु ता स्त्रियाम् ॥ ३८ ॥
तत्शब्दः प्रकृतार्थोक्तौ त्रिषु हेतौ तदव्ययम् ।
तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥
तृट् पिपासेहयोः स्त्री स्यात् थः पुंस्यूर्मि-गिरीन्द्रषु ।
स्त्रीलिङ्गोऽयं तरङ्गिण्यां क्लीबे भयनिवारणे ॥ ४० ॥
वाच्यलिङ्गस्तु धवले श्यामले पृथुलेऽपि च ।
दः पुंसि दातरि च्छेदे दा स्त्रियां क्षान्ति-दानयोः ॥ ४१ ॥
दं क्लीबे दान-वैराग्य-कलत्रेष्ववलोकने ।
मेयलिङ्गस्त्वयं मूके गृहीते द्रावके शुचौ ॥ ४२ ॥
दर्शन-ज्ञान-नेत्रेषु दृक् स्त्री द्रष्टरि तु त्रिषु ।
धः पुंसीन्द्रे ध्वनौ ध्याने श्रीदे धन्वन्तरे घने ॥ ४३ ॥
धं वेश्मनि धने ध्याने बुद्धौ स्त्री धा च धिश्च धीः ।
धूर्ना धूपे स्त्री तु कम्पे वित्ते भारे युगाऽग्रयोः ॥ ४४ ॥

---

१ क. ख. घ. ङ. न स्त्रियाम् ॥ २ क. ख. ग. डमरुगे ॥

हेरम्बे नः पुमान् ना स्त्री नाभौ नं ज्ञान-संज्ञयोः ।
वर्ष्म-सूक्ष्मा-ऽपरिक्लिष्ट-शून्या-ऽभिन्नेषु नस्त्रिषु ॥ ४५ ॥
नुशब्दस्तु स्तुतौ स्त्री स्यात् नौः स्त्री तरणि-कालयोः ।
पः पुमान् पवने शैले प्रकाशे कौस्तुभे क्षणे ॥ ४६ ॥
शुभलग्नेऽप्ययं क्लीबे हेम्नि पा यातृ-पानयोः ।
स्त्रीलिङ्गे त्वम्बुधारायां सुधायां सम्मतौ च पाः ॥ ४७ ॥
पस्त्रिष्वात्तौ प्रपन्ने च पूः स्त्री पुर-शरीरयोः ।
पूरणे चाथ पुंशब्दः पुरुषे परमात्मनि ॥ ४८ ॥
फो झञ्झानिले आस्वादे फूत्कारे[1] वारणे रणे ।
फा स्त्रियां निष्ठुरोक्तौ च कला-केका-कुटीषु च ॥ ४९ ॥
अथ स्फारे परोक्षे च फशब्दो वाच्यलिङ्गकः ।
बः कुम्भे वरुणे बिन्दौ विकल्पे खे गुरौ मदे ॥ ५० ॥
विभूतिकारे कलहे पक्षिगर्भे च पर्वणि ।
बा स्त्रियां काहली-वल्ली-शृङ्खलास्वमले त्रिषु ॥ ५१ ॥
भः शम्भौ भ्रमरे भावे शुक्रेऽशौ जलदे पुमान् ।
भा तु[2] व्यलङ्कृतौ दीप्तौ स्त्रियां भाः किरणे द्युतौ ॥ ५२ ॥
क्लीबे तु गगने राशौ तारायां पुण्ड्र-वक्त्रयोः ।
भीः स्त्री भीत्यां खगे पुंसि स्थान-भूम्योस्तु भूः स्त्रियाम् ॥५३॥
मः शम्भौ धातरीन्दौ ना चन्द्रे मासे च माः पुमान् ।
मा स्त्री माने मृतौ वेला-मेधा-श्री-मद्य-मातृषु ॥ ५४ ॥
माऽव्ययं प्रतिषेधे च जने तु स्यान्नपुंसकम् ।
मुः पुंसि बन्धने पिङ्ग-पिङ्गलाभिधवर्णयोः ॥ ५५ ॥
यस्त्यागे निलये वायौ यमे दातरि पातरि ।
या स्त्रियां[3] यान-मञ्जर्योः शोभा-लक्ष्म्योश्च निर्मितौ ॥ ५६ ॥

---

१ ख. घ. ङ. पूत्कारे° ॥ २ घ. अलङ्कृतौ. । ३ क. दान° ।

यत्शब्दः सर्वनामाख्ये त्रिषु हेतौ यदव्ययम् ।
ख्या स्त्री ख्यातौ प्रकथने ज्या मौर्वी-मातृ-भूमिषु ॥ ५७ ॥
द्युर्ना दिव्यह्नि वह्नौ च स्वर्व्योः नोद्यौ-दिवौ स्त्रियाम् ।
रः पुमान् पावके कामे क्षये वज्रे शबेऽप्यृतौ ॥ ५८ ॥
रा स्त्रियां हेम्नि शालायां ना शंसायां गतावपि ।
रं क्लीबे रुधिरे मूर्ध्नि ध्यान-व्योमा-ऽण्ड-कुक्षिषु ॥ ५९ ॥
चक्रे भये च त्रिषु तु विरसे स्त्यान-तीक्ष्णयोः ।
रास्तु द्वयोर्धने स्वर्णे रीशब्दस्तु स्रवे[2] क्षये ॥ ६० ॥
स्त्री रुग् ज्वालेच्छयोः कान्तौ रुर्ना युद्धे भवे ध्वनौ ।
स्त्री कामिनी-वम्रि(र्मि)कयोः रू स्वर्णे कामरूपिणि ॥ ६१ ॥
श्रीर्वेष-रचना-शोभा-सम्पत्-सरल-शाखिषु ।
वाणी-लक्ष्मी-लवङ्गेषु विषे बिल्वेऽप्यथ त्रिषु ॥ ६२ ॥
जटायां प्रास्तरणे स्त्री स्रुग् द्योमार्गे गतौ स्त्रियाम् ।
लः खण्डले त्रिष्वादाने स्त्री नेन्द्रे लवणे तु लम् ॥ ६३ ॥
वः पुमान् सान्त्वने वायौ[3] संयमे वरुणे स्मरे ।
विश्वक्षुषि व्योम्नि वाते परमात्मनि पक्षिणि ॥ ६४ ॥
वैश्यजने पुरीषे विट् क्रमात् पुंसि द्वयोः स्त्रियाम् ।
स्वोऽस्त्री धने पुमान् ज्ञातौ त्रिष्वात्मीये स्वमात्मनि ॥ ६५ ॥
स्वरव्ययं च त्रिदिवे त्विट् कान्ति-ज्वालयोः स्त्रियाम् ।
वल्के लवङ्गवल्के त्वग् द्वार्द्वारोपाययोः स्त्रियाम् ॥ ६६ ॥
शो वल्मीके शिवे कूर्मे भूपे शिष्ये तनूकृतौ ।
शा स्त्रियां देवपूजायां शक्तौ शोभा-वरेण्ययोः ॥ ६७ ॥
रमायां वाऽथ शं क्लीबे शास्त्रे श्रेयसि मङ्गले ।
कीर्त्तौ शक्त्यायुधे स्वर्गे शः परोक्षे त्रिलिङ्गकः ॥ ६८ ॥

---

१ ङ. याचके । २ घ. श्रवे । ३ घ. शयौ ङ. कपौ ।

शमव्ययं च सौख्यार्थे शिः शम्भौ विवशा-ऽन्तयोः ।
शीर्बाण-हिंसा-स्वापेषु षः स्वर्गे विषये च ना ॥ ६९ ॥
षा स्त्री रमायां षं क्लीबे गर्भमोक्षा-ऽवसानयोः ।
मर्षणे च त्रिलिङ्गस्तु परोक्ष-श्रेष्ठयोरयम् ॥ ७० ॥
सः पुंस्युमासुते वायौ देहकान्तौ तु सा स्त्रियाम् ।
सं क्लीबे स्यन्दनपथे ज्ञाने ध्याने निवारणे ॥ ७१ ॥
सन् सत्ये विदुषि श्रेष्ठे साधौ भवति च त्रिषु ।
सं क्लीबमृक्षे सूशब्दः प्रेरणे गर्भमोचने ॥ ७२ ॥
सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ।
हः शङ्करे हरौ हंसे रण-रोमाञ्च-वाजिषु ॥ ७३ ॥
गर्वे प्रचेतसि स्त्री तु हा त्यागे गति-वीणयोः ।
हं क्लीबमस्त्र-मुखयोः क्वणिते मणिरोचिषि ॥ ७४ ॥
परब्रह्मा-ऽऽमन्त्रणयोस्त्रिषु तून्मत्त-हासयोः ।
क्षः संरोधे विशेषे च क्षेम-दुःस्वप्नयोश्च ना ॥ ७५ ॥
क्षा स्त्री क्षमायां निद्रायां क्षं क्लीबे क्षेत्र-रक्षसोः ।
अप्राचुर्यात् प्रयोगस्य लिङ्गं क्वचिदुपेक्षितम् ।
एकाक्षरेषु शब्देषु तदूह्यं लक्ष्यवेदिभिः ॥ ७६ ॥ ॥ षट्पदी ॥
इति जगदुपकारिण्यामिरुगपदण्डाधिनाथरचितायाम् ।
एकाक्षरकाण्डोऽयं पूर्णो नानार्थरत्नमालायाम् ॥ ७७ ॥

॥ इति इरुगपदण्डाधिनाथरचितायां नानार्थरत्न-
मालायाम् एकाक्षरकाण्डोऽयं सम्पूर्णः [६] ॥

---

[७] आचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितानेकार्थसङ्ग्रहान्तर्गत एकस्वरकाण्डः ।

ध्यात्वाऽर्हतः कृतैकार्थशब्दसन्दोहसङ्ग्रहः ।
एकस्वरादिषट्काण्ड्या कुर्वेऽनेकार्थसङ्ग्रहम् ॥ १ ॥

अकारादिक्रमोऽत्रादौ ककारादिक्रमोऽन्ततः ।
उद्देश्यवचनं पूर्वं पश्चादर्थप्रकाशनम् ॥ २ ॥

यत्रैक एव रूढोऽर्थो यौगिकस्तत्र दर्श्यते ।
अनेकस्मिंस्तु रूढेऽर्थे यौगिकः प्रोच्यते न वा ॥ ३ ॥

पदानां भङ्गतो योऽस्मिन्ननेकार्थः प्रकाशते ।
प्रदर्शनीयो नैवासौ तस्यानन्त्यप्रसङ्गतः ॥ ४ ॥

को ब्रह्मण्यात्मनि रवौ मयूरेऽग्नौ यमेऽनिले ।
कं शीर्षेऽप्सु सुखे **खं** स्वः संविदि व्योमनीन्द्रिये ॥ ५ ॥

शून्ये बिन्दौ सुखे **खस्तु** सूर्ये **गौरुदके** दृशि ।
स्वर्गे दिशि पशौ रश्मौ वज्रे भूमाविषौ गिरि ॥ ६ ॥

त्वग् वल्कले चर्मणि च **न्यग्** निम्ने नीच-कार्त्स्न्ययोः ।
रुक् शोभा-किरणेच्छासु **वाग्** भारत्यां वचस्यपि ॥ ७ ॥

जूराकाशसरस्वत्यां पिशाच्यां जवनेऽपि च ।
ज्ञः स्याद् विचक्षणे पद्मासने चान्द्रमसायनौ ॥ ८ ॥

सद् विद्यमाने सत्ये च प्रशस्ता-ऽर्चित-साधुषु ।
भः शुक्रे भमुडौ **भां**ऽशौ **भूस्तु** भूमिरिव क्षितौ ॥ ९ ॥

स्थाने च **मः** पुनः शम्भौ **मा** लक्ष्म्यां वारणेऽव्ययम् ।
किं क्षेप-निन्दयोः प्रश्ने वितर्के **ज्या** तु मातरि ॥ १० ॥

क्ष्मा मोर्व्योर्द्युर्दिने वह्नौ **द्यौस्तु** स्वर्गे विहायसि ।
रस्तीक्ष्णे दहने **रास्तु** सुवर्णे जलदे धने ॥ ११ ॥

द्रूः कामरूपिणि स्वर्णे धूर्यानमुख-भारयोः ।
पूः शरीरे नगरे च श्रीर्लक्ष्म्यां सरलद्रवे ॥ १२ ॥
वेषोपकरणे वेषरचनायां मतौ गिरि ।
शोभा-त्रिवर्गसम्पत्त्योः स्रूः स्रवे निर्झरेऽपि च ॥ १३ ॥
वः पश्चिमदिगीशे स्यादौपम्ये पुनरव्ययम् ।
द्यौः स्वर्ग-नभसोः स्वो ज्ञात्यात्मनोः स्वं निजे धने ॥ १४ ॥
दृग् द्रष्टृ-दर्शन-ध्यक्षिण विट् प्रवेशे नृ-वैश्ययोः ।
तृट् तृष्णावत् तर्षवच्च भवेल्लिप्सा-पिपासयोः ॥ १५ ॥
त्विट् शोभायां जिगीषायां व्यवसाये रुचौ गिरि ।
भाः प्रभावे मयूखे च मास् तु मासे निशाकरे ॥ १६ ॥

॥ इत्याचार्यश्रीहेमचन्द्रविरचितेऽनेकार्थसङ्ग्रहे
एकस्वरकाण्डः प्रथमः [७]

[८] सुधाकलशमुनिविरचिता
एकाक्षरनाममाला ।

श्रीवर्धमानमानम्य सर्वातिशय[1]शालिनम् ।
एकाक्षरनाममालां कीर्तयामि यथाश्रुतम् ॥ १ ॥
अः पुंल्लिङ्गः शार्ङ्गधारिण्यः स्वल्पार्थेऽव्ययः पुनः ।
[2]विरञ्चावाश्च पुंल्लिङ्ग आ वाक्ये स्मरणेऽव्ययः ॥ २ ॥
आः सन्तापेऽव्ययः क्रुध्याम[3]व्ययोऽवधृतौ स्मृतौ ।
इः कामे पुंल्लिङ्ग इ चाव्ययः कोपोक्ति-खेदयोः ॥ ३ ॥
ईः पद्मायामव्ययस्त्वी प्रत्यक्षे दुःखभावने ।
प्रकोपे सन्निधौ चैव पुंल्लिङ्ग उर्वृषध्वजे ॥ ४ ॥
रोषोक्तौ मन्त्रणेऽप्यर्थेऽव्यय उं त्वव्ययस्तथा ।
प्रश्ने [4]चाङ्गीकृतौ रोषे पुंल्लिङ्ग ऊस्तु रक्षणे ॥ ५ ॥
ऊमव्ययः [5]प्रकोपोक्तौ प्रश्ने ऋर्देवमातरि ।
अव्ययः ऋ तु कुत्सायां वचनेऽपि तथैव च ॥ ६ ॥
ॠस्त्वऽजे दानवाञ्छायां ॠश्च स्याद् देवमातरि ।
ॠर्वाराह्यां भवेदॢस्तु विष्णावैस्तु वृषध्वजे ॥ ७ ॥
ओरूर्ध्वलिङ्ग आहूतावव्ययः स्यादनन्त ओ ।
संबोधने चाव्यय औ परब्रह्मण्यमः शिवे ॥ ८ ॥
कः सूर्य-मित्र-वाय्वग्नि-ब्रह्मा-ऽऽत्म-यम-केकिषु ।
प्रकाश-वक्त्रयोश्चापि कं नीर-सुख-मूर्धसु ॥ ९ ॥
कुर्भू-कुत्सितशब्देषु पापीयसि निवारणे ।
ईषदर्थे च किंशब्दः कुत्सने क्षेप-प्रश्नयोः ॥ १० ॥

---

१ घ. ङ. च. ०्यसुन्दरम् । २ घ. च. विरिञ्चावाश्च । ३ घ. ङ. च. ०्योऽप्यधृतौ । ४ घ. ङ. च. चाङ्गीकृते । ५ च. प्रकर्षोक्तौ ।

वितर्का-ऽऽश्चर्य-निन्दासु किंशब्दः स्यात् कियानपि ।
खमिन्द्रिय-स्वर्ग-शून्य-भूपा-ऽऽकाश-सुखेषु च ॥ ११ ॥
संविदि शून्यखण्डे च वर्त्तते खश्च भास्करे ।
गो गन्धर्वे गणेशे च गीते गं गश्च गीतरि ॥ १२ ॥
गौर्वाणी-बाण-भू-रश्मि-वज्र-स्वर्गा-ऽक्षि-वारिषु ।
दिशि धेनौ श्रुतेश्चर्यां गणेशे चापि गौः स्मृतः ॥ १३ ॥
घः कुम्भे हनने घोषा-ऽन्तर्भाव-किङ्किणीष्वपि ।
ङो विषये भैरवे च ङस्तरौ चन्द्र-चौरयोः ॥ १४ ॥
चुश्चकोरे समाख्यातश्चकारः पुनरव्ययः ।
अन्योन्यार्थे विकल्पार्थे समासे पादपूरणे ॥ १५ ॥
पक्षान्तरे समूहार्थे हेताववधृतावपि ।
अन्वाचये तथा तुल्ययोगितायां च कीर्तितः ॥ १६ ॥
छः सूर्ये छेदके ख्यातस्तथा संवरणे भवेत् ।
छं³ च छन्दसि तडिति निर्मले च तथा स्मृतः ॥ १७ ॥
जश्च जेतरि जनने विगते जिस्तु जेतरि ।
जूर्विहायसि ⁴जवने पिशाच्यां विगतेऽपि च ॥ १८ ॥
झो नक्तं गायने नष्टे घर्घरध्वनिनामनि ।
चारुवाक्-चारयोर्झस्तु व्यूहने गूढरूपके ॥ १९ ॥
टः पृथिव्यां ध्वनौ वायौ करङ्के टं पुनर्भुवि ।
चकोरेऽब्दे तथा ठस्तु घटे शून्ये बृहद्ध्वनौ ॥ २० ॥
चन्द्रस्य मण्डले रुद्रे डो वृषाङ्के ध्वनावपि ।
बन्दिवृन्दे तथा डः स्याद् यामिनीपतिमण्डले ॥ २१ ॥
ढो ढक्कायां समाख्यातस्तथा ढा निर्गुणे ध्वनौ ।
णः प्रकटे निष्फले च प्रस्तुते ज्ञान-बन्धयोः ॥ २२ ॥

---

१ ग. मातरि । २ क. सुखे सत्ये । ३ क. ख. छं तु । ४ ख. वाण्यां च पिशाच्यां जवनेऽपि ।

तकारस्तस्करे युद्धे [1]क्रोडे पुच्छे च ता श्रियाम् ।
तु स्यात् पूर्वनिवृत्तौ च पूर्वस्मादवधारणे ॥ २३ ॥
विलक्षणे विकल्पार्थे थो भवेद् भयरक्षणे ।
भूधरे च तथा भारे दो दाने दायकेऽपि च ॥ २४ ॥
दाने दातरि दा केचिद् विदुर्दो [2]छेदे-बन्धयोः ।
दं कलत्रं तथा धं च धीरे च धनदे [3]धने ॥ २५ ॥
धश्च चित्रेऽश्ववारे च धीर्बुद्धाविषुधावपि ।
गुह्यकेशे [4]विरिञ्चौ धा तथा धूर्भार-कम्पयोः ॥ २६ ॥
धूते धुराकम्पने च नो बुद्धौ [5]ज्ञान-बन्धयोः ।
अस्मानस्मभ्यमस्माकमेषां स्थाने भवेच्च नः ॥ २७ ॥
निषेधार्थेऽव्ययौ नो च नकारश्च नरस्तु ना ।
निः श्रुते नेतरि ख्यातो [6]नुः स्तुतौ च प्रकीर्त्तितः ॥ २८ ॥
निः स्यात् [7]क्षेपे च नित्यार्थे भृशार्था-ऽऽश्रय-राशिषु ।
कौशले बन्धने मोक्षे संशये [8]दारुकर्मणि ॥ २९ ॥
अधोभावोपरमयोः सन्निधानेऽव्ययो मतः ।
नुः प्रश्ने च वितर्के च विकल्पेऽनुशये[9]ऽव्ययः ॥ ३० ॥
तरण्यां नौस्तथा ख्यातः पः पाने पवने पथि ।
प्रौढे च वर्णके पश्च पा पातरि तथा श्रुते ॥ ३१ ॥
फकारो निष्फले जल्पे पुष्करे भयरक्षणे ।
[10]फं फा वाते फले फेने [11]फूत्कारे फूस्तथोदितः ॥ ३२ ॥

---

१ क. क्रोधे । २ ङ. वेध-बन्धयोः । ३ ग. ध्वने । ४ ख. ग. घ. विरञ्चौ । ५ ग. ज्ञानमन्दयोः । ६ क. ख. नुः स्तुतावव्ययोस्तु नौ । ग. नुस्तुताव्यययोस्तु नो । ७ ख. ग. क्षये । ८ ख. ग. दानकर्मणि । ९ क. ये पुनः । १० क. ख. ङ. झञ्झावाते । ११ ख. ग. पूत्कारे ।

ब[1]ः कुम्भे वरुणे पद्मे कलहे विगतौ तथा ।
भश्चालि-शुक्रयोर्भावे भा च दीप्तौ भये तु भीः ॥ ३३ ॥
भं धिष्ण्ये भूर्भुवि स्थाने मश्चन्द्रे च विधौ शिवे ।
मौलौ च बन्धने मूः स्यान्मा माने वा[2]रणेऽव्ययः ॥ ३४ ॥
अस्मच्छब्दे द्वितीयायां मा च षष्ठ्यां च मे पुनः ।
मा मातरि तथा लक्ष्म्यां यस्तु वाते यमेऽपि च ॥ ३५ ॥
धा[3]तर्यपि पशौ यः स्याद् या याने यातरि श्रियाम् ।
खट्वाङ्गेऽपि च रः कामे तीक्ष्णे वैश्वानरे नरे ॥ ३६ ॥
रामे वज्रे च शब्दे स्याद् रा द्रव्ये कनके पुनः ।
आश्रये नीरदे च स्याद् रुः सूर्ये रक्षणेऽपि च ॥ ३७ ॥
भये शब्दे च री[4] भ्रान्तौ लकारश्चलने पुनः ।
लाऽऽदाने लूश्च लवने लश्च लौ[5]श्च बिडौजसि ॥ ३८ ॥
लश्चामृते दि[6]शायां च लीः श्लेषे वलये तथा ।
वो वाते वरुणे रुद्रे सान्त्वने चाव्ययः पुनः ॥ ३९ ॥
एवार्थे[7] उपमाने च विकल्पे च समुच्चये ।
विः श्रेष्ठेऽतीते नानार्थे वै हेतौ पादपूरणे ॥ ४० ॥
द्वितीयायाश्चतुर्थ्याश्च षष्ठ्या युष्मद्बहुत्वके ।
वश्चाऽऽसां च विभक्तीनां द्वित्वे वां कथितो बुधैः ॥ ४१ ॥
आकाशे विहगे वि[9]श्च शं श्रेयसि सुखेऽव्ययः ।
शा[10] तु शान्ते च सास्नायां शीः शये हिंसनेऽपि च ॥ ४२ ॥
शुश्चन्द्रे षः स[11]दारः स्यात्तथेष्टे प्रसवे तु षूः ।
सः सूर्ये च परोक्षे च सं श[12]ङ्कावव्ययस्तु सम् ॥ ४३ ॥

---

१ क. ख. ग. बकारो । २ घ. च. मारणे । ३ घ. च. यश्च धातरि सूर्ये । ४ घ. रा । ५ घ. च. लूश्च । ६ ख. दयायां । ७ क. ख. ग. ङ. पदार्थे । ८ घ. च. छे भीते । ९ घ. च. विश्वे । १० ग. घ. च. शस्तु । ११ क. सादरः । १२ च. सङ्कोचेऽव्ययस्तु ।

सङ्गार्थे शोभनार्थे च प्रकृष्टार्थ-समर्थयोः ।
प्रथमान्तस्तदः स्थाने स्मृतौ लक्ष्म्यां च सोच्यते ॥ ४४ ॥

हः शूलिनि करे नीरे क्रोधे गर्भप्रभाषणे ।
निवासेऽथाव्ययो हः स्यात् सम्बुद्धौ पादपूरणे ॥ ४५ ॥

अव्ययो हा स्मृतः शोके तथा दुःख-विषादयोः ।
हि हेतौ पादपूर्त्तौ च विशेषे चावधारणे ॥ ४६ ॥

स्फुटे दानेऽथाव्ययो ही दुः[1]खे हेतौ च विस्मये ।
विषादे चाव्ययो हं त्वे[2]नुनये कोपभाषणे ॥ ४७ ॥

हुमव्ययः परिप्रश्ने वितर्के वचने तु हौ ।
हे कुत्सायां तथा हे[3] तु हूतौ सम्बोधने तु हौ[4] ॥ ४८ ॥

राक्षसे क्षस्तथा क्षेत्रे शब्दा ये द्व्यक्षरादयः ।
स्वरान्ता व्यञ्जनान्ताश्च ज्ञेया ग्रन्थान्तरात्तु ते ॥ ४९ ॥

मलधारिगच्छभर्तुः सूरेः श्रीराजशेखरस्य गुरोः ।
शिष्यः सुधाकलश इत्येकाक्षरनाममालिकामतनोत् ॥ ५० ॥

॥ इत्येकाक्षरनाममाला सम्पूर्णा ॥ [८]

*

---

१ घ. च. दुःखहेतौ । २ घ. च. तु नये काये च भाषणे । ङ. हं त्वनये कोपे प्रभाषणे । ३ घ. च. हेतौ । ४ क. हा ।

[९] महाक्षपणकविरचित एकाक्षरकोषः ।

आगमेभ्योऽभिधानेभ्यो धातुभ्यः शब्दशासनात् ।
एतदेकाक्षरं नामाऽभिधानं क्रियते मया ॥ १ ॥
कः प्रजापतिरुद्दिष्टः को वायुरिति शब्दितः ।
कश्चाऽऽत्मनि समाख्यातः कः प्रकाश उदाहृतः ॥ २ ॥
कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
पृथिवी कुः समाख्याता कुः[1] शब्दे कुत्सितेऽपि च ॥ ३ ॥
खमिन्द्रियं समाख्यातं खमाकाशमुदाहृतम् ।
स्वर्लोकेऽपि च खं प्रोक्तं खे[2]ः सामान्ये प्रकीर्त्तितः ॥ ४ ॥
गो[3] गणेशः समाख्यातो गन्धर्वो गः प्रकीर्त्तितः ।
गं[4] च गीतं च गा गाथा गौश्च धेनुः सरस्वती ॥ ५ ॥
घो घण्टेति समाख्यातो किङ्किणी घः प्रकीर्त्तितः ।
घो मेघश्च समाख्यातो घूर्घनं चापि कीर्त्तितम् ॥ ६ ॥
हनने घः समाख्यातो घूर्घोणाऽपि प्रकीर्त्तिता ।
ङकारो भैरवे ख्यातो ङकारो विषयः स्मृतः ॥ ७ ॥
चन्द्रमा चः समाख्यातश्चस्तस्कर उदाहृतः ।
निर्मलं छं समाख्यातं तरलं छं प्रकीर्त्तितम् ॥ ८ ॥
छेदने[5] छं समाख्यातं शिरसि छः प्रकीर्त्तितः ।
वेगिते जः समाख्यातो जनने[6] जः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥
जेता[7] जश्च समाख्यातः सूरिभिः शब्दशासने ।
झो[8] रवावपि निर्दिष्टो विषयो झः प्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

---

१ ख. ग. कुशब्दः कुत्सितेऽपि च । २ ख. खं शून्येऽपि प्रकीर्त्तितम् । ३ ख. गो गणपतिरुद्दिष्टो । ४ क. गं च गीता च गाथा च गा धेनुश्च सरस्वती । ख. गं च गीतं तथा गाथा गौ धेनुश्च सरस्वती. । ५ ग. म्लेच्छश्छस्तु समाख्यातो । ६ क. जयने । ७ ख. जेता जिश्च । ८ ग. भैरवेऽपि च निर्दिष्टोऽपथ्येऽपि झः प्रकीर्तितः ।

झञ्झावायुर्झकारः स्यान्नष्टे झः समुदाहृतः ।
ञकारो गायने प्रोक्तो ञकारो घर्घरध्वनौ ॥ ११ ॥
ट[1]ः पृथि[2]व्यां समाख्यात[3]ष्टकारश्च ध्वनावपि ।
[4]ठो महेशः समाख्यातः ठः शून्ये च प्रकीर्त्तितः ॥ १२ ॥
बृहद्ध्वनौ च ठः प्रोक्तस्तथा च शशिमण्डले ।
डकारः शङ्करे त्रासे डकारो ध्वनि[5]रुच्यते ॥ १३ ॥
[6]ढकारः कथितो ध्वाने ढो हि विश्वेश्वरेऽपि च ।
णकारः कथितो ज्ञाने निर्णये निश्चयेऽपि च ॥ १४ ॥
तः स्याच्चारे तथा चौरे क्रोडपुच्छे[7] प्रकीर्त्तितः ।
शिलोच्चये थकारः स्यात् थकारो[8] लक्षणे स्मृतः ॥ १५ ॥
द[9]ः कलत्रे दोहने च छेदे दाने च दातरि ।
धो धर्मे च धना[10]ध्यक्षे धो धातौ[11] धर्मवानपि ॥ १६ ॥
धं धने बन्धने बोधे धा ध्वनौ धिर्मणावपि ।
धिषणा धीः समाख्याता धु[12]श्चैव भाव-चिन्तयोः ॥ १७ ॥
स्याद् भारेऽपि च धूःशब्दस्तथैव भय-वेतने ।
न[13]कारः स्वागते बन्धौ नुः स्तुतौ वृद्धि-वृक्षयोः ॥ १८ ॥
नेता नश्च समाख्यातस्तरणौ नः प्रकीर्त्तितः ।
पवने पः समाख्यातः प[14]स्तु पाने प्रकीर्त्तितः ॥ १९ ॥

---

१ ग. जनता (जननी) जनके टश्च। २ व्यां कण्टके च टका क. प्रतौ पाठान्तरम्। ३ ख. तष्टष्टङ्कार उदाहृतः । ४ ग. ठो महेशे मठे ठः स्यात्तथा शून्ये प्रकीर्तितः । ५ गर्भे उच्यते क. प्रतौ पाठा० । ६ ख. ढकारः कीर्त्तितो ढक्का निर्गुणे निर्धनेऽपि च। ग. ढकारः कीर्त्तितो ढक्का निर्गुणे च ध्वनावपि । ७ च्छेऽपि तच्छ(क्ष)के. क. प्रतौ पाठा०। ८ ख. ग. थकारो भयरक्षणे। ९ ख. दं कलत्रं बुधैः प्रोक्तं दान-च्छेदन-दातृषु। ग. दं कलत्रं बुधैः प्रोक्तं छेदे दाने च दातरि ॥ १० ख. धनेशे च । ११ ता धी मतावपि क. प्रतौ पाठा०, असङ्गतोऽयं पाठः । १२ क. धर्मे धश्च प्रकीर्त्तितः । १३ ग. नकारः सौगते बुद्धौ नुः । १४ ख. पाऽथ पाने च पातरि ।

प[1]ः कुबेरः समाख्यातः पश्चिमे पः प्रकीर्त्तितः ।
फ आह्वाने च वाते च विख्यातो वासनेऽपि फः ॥ २० ॥
फूः फूत्कारे च फूः फूत्के प्रोक्तो निष्फलभाषणे ।
प्रचेता बः समाख्यातो बः फले कलशेऽपि च ॥ २१ ॥
बः पक्षी बिः समाख्यातो गगने बिः प्रकीर्त्तितः ।
वक्षःस्थले च बः प्रोक्तो गदा बः समुदाहृता ॥ २२ ॥
भं नक्षत्रं बुधैरुक्तं भ्रमरे च वने च भः ।
दीप्तिर्[2]भा चापि भूर्भूमिर्[3]भीर्भीतौ कथिता बुधैः ॥ २३ ॥
मः शिवश्चन्द्रमा वेधा मा लक्ष्मीः परिकीर्तिता ।
मा च मातरि माने च बन्धने मः प्रकीर्त्तितः ॥ २४ ॥
यं यशः कथितं शिष्टैर्यो वायुरिति शब्दितः ।
[4]यां याने यातरि [5]यस्त्यागे कथितः शब्दवेदिभिः ॥ २५ ॥
[6]रश्च कामे च रः सूर्ये शब्दे रश्च प्रकीर्त्तितः ।
इन्द्रिये धनरोधे च भये रश्च प्रकीर्त्तितः ॥ २६ ॥
ईश्वरे चालिने वह्नौ रु स्याद् भूमि-रि (ऋ) चावपि ।
ल इन्द्रे लवणे लृः (लः) स्याल्लाऽऽदाने च प्रकीर्तितः ॥ २७ ॥
दीप्तिर्ला चापि लूर्भूमिर्लीर्भये च प्रकीर्त्तितः ।
[7]लीं श्लेषे वलये चैव साधने कथिता बुधैः ॥ २८ ॥
सत्वरे वारुणे वाते वकारः परिकीर्त्तितः ।
वो वह्निर्वो बुधः श्रेयः शश्च शर्वो निगद्यते ॥ २९ ॥
[8]शं श्रेयः शी शये चैव शश्च शास्त्रे निगद्यते ।
शयने शमिति प्राहुर्हिंसायां शूश्च कथ्यते ॥ ३० ॥

---

१ पकारः पार्श्वके पृष्ठे क. प्रतौ पाठान्तरम् । २ ख. °र्भाश्चैव भूर्भूमि° । क. °र्भावश्च भूर्भूमि° । ३ ख. मिर्भीर्भयं समुदाहृतम् । ख. °मिर्भीर्भीमो कथिता बुधैः । ४ ख. पाने पातरि यस्त्यागे । ग. दाने यातरि यस्त्यागे । ५ यस्त्यागे क. प्रतौ पाठा° । ६ ख. ग. रश्च कामे गते सूर्ये । ७ ख. ली श्लेषणे वलये चैव कथितः शब्दकोविदैः । ८ ख. ग. वदन्ति शं बुधाः श्रेयः शं च शास्त्रे निगद्यते ।

षः कीर्तितो बुधैः श्रेष्ठः षश्च गम्भीरलोचने ।
षकारः कीर्त्तितः खड्गे षश्च गर्भविमोचने ॥ ३१ ॥
षः कीर्त्तिश्च बुधैः प्रोक्ता गौरी षा च ष ईश्वरः ।
षोपसर्गः समाख्यातो षूश्च स्वर्गविमोचने ॥ ३२ ॥
सः कोपे सश्च धनुषि सः परोक्ष उदाहृतः ।
सा च लक्ष्मीर्बुधैः प्रोक्ता सा गौरी स च ईश्वरः ॥ ३३ ॥
सः कामे वरणे प्रोक्तस्तथा शूलिनि कीर्त्तितः ।
सत्कारे वारणे [1]ख्यातो हकारश्च शिवे तथा ॥ ३४ ॥
हिश्च छेदे समाख्यातो हा गर्तेषु निगद्यते ।
हिः पाद्याचरणे प्रोक्तो हिः स्याद्धेत्ववधारणे ॥ ३५ ॥
क्षेत्रे च क्षः स्थले प्रोक्तः क्षेत्रपाले च क्षो मतः ।
क्षिः क्षेत्रे च क्षणेऽपि स्यान्नृसिंहे च[2] प्रकीर्त्तितः ॥ ३६ ॥
अकारो वासुदेवः स्यादाकारश्च पितामहः ।
प्रलये वातमण्डल्यामाकारः परिकीर्त्तितः ॥ ३७ ॥
इकारः कथ्यते कामो लक्ष्मीरीकार उच्यते ।
उकारः शङ्करे विष्णा[3]वूकारो ब्रह्मणि स्मृतः ॥ ३८ ॥
ऋकारो देवमाता स्याद् ॠकारः स्वर्ग उच्यते ।
ऌकारो देवयोनीनां माता च दनुजप्रसूः ॥ ३९ ॥
ॡकारः स्मर्यते पूर्वैर्जननी शब्दकोविदैः ।
एकार उच्यते विष्णुरैकारः स्यान्महेश्वरः ॥ ४० ॥
ओ[4]कारस्तु भवेद् ब्रह्मा औकारोऽनन्त उच्यते ।
अं च स्यात् परमब्रह्म अस्तथा च महेश्वरः ॥ ४१ ॥

इति श्री[5]महाक्षपणकविरचित एकाक्षरकोषः ॥ [९]

*

---

१ ख. ग. हः स्यात्तथा शूली निगद्यते । २ चापि शासने क. प्रतौ पाठान्तरम् ।
३ ष्णावूकारश्चापि रक्षणे. क. प्रतौ पाठा० । ४ ग. ओकारो भैरवो देवो ।
५ एकाक्षरार्थसंलापः स्मृतः क्षपणकादिभिः क. प्रतौ पाठा० ।

[१०] परमानन्दनन्दनविरचित

एकाक्षरीयप्रथमकाण्डः ।

यद्ध्यानात् प्राणिनां सद्यो भवन्ति विपुलाः श्रियः ।
चिदानन्दस्वरूपाय तस्मै गोस्वामिने नमः ॥ १ ॥
यत्स्वरूपेण संव्याप्तं समस्तं वाङ्मयं परम् ।
विष्णुनेव जगत् तस्यै नमस्कुर्यां गिरे सदा ॥ २ ॥
अन्येषामुपकाराय निजबोधाय च स्फुटम् ।
नामपारायणं वक्ष्ये नानावर्गैरहं मुदा ॥ ३ ॥

अः कृष्णे गरुडेऽप्याश्च द्रुहिणे पुष्पकेतने ।
आ निपातः स्मृतौ वाक्ये कोप-सन्तापयोस्तथा ॥ ४ ॥
ईषदर्थ-क्रियायोग-सीमा-ऽभिव्याप्तिषूक्त आङ् ।
इः कामे कल्मषे चापि निपातः खेद-कुत्सयोः ॥ ५ ॥
ईर्लक्ष्मी-धरयोरुश्च शम्भौ मोक्षोर्द्ध्व-शक्तिषु ।
भावे स्यादुत् प्रकाशे च निपातः क्रोध-लोभयोः ॥ ६ ॥
विभागे बन्धने चापि ऊर्गुरौ पालने वने ।
ऋर्देवमातरि क्ष्मायां ॠकारो दैत्यमातरि ॥ ७ ॥

ऌर्देव्यां ॡस्तु वाराह्यां लताभेदेऽपि कीर्त्तितः ।
एर्विष्णु-शैलयोरैश्च शम्भावोर्धातरि स्मृतः ॥ ८ ॥
अं वेधसि तथा रुद्रेऽप्यंकारः कथितो बुधैः ।
कं जले मस्तके सौख्ये कः स्वर्गे स्मर-सूर्ययोः ॥ ९ ॥
ब्रह्म-वायु-सुहृत्-केकि-वह्न्युद्द्योत-यमा-ऽऽत्मसु ।
कुः पापीयसि मह्यां च निवारण-कुशब्दयोः ॥ १० ॥
किमाश्चर्ये वितर्के च प्रश्ने क्षेप-जुगुप्सयोः ।
कियत्यथ खमित्युक्तमिन्द्रिया-ऽऽकाशयोर्नृपे ॥ ११ ॥

चन्द्रबिम्बे वर्ण-खण्ड-संवित्-स्वर्ग-सुखेषु च ।
खो रवौ कथितं गीते गं गस्तु गणनायके ॥ १२ ॥
गीत-गात्रोरप्याख्यातो गौर्जलं वज्र-बाणयोः ।
वृष-धेन्वोर्गिरौ वाचि नेत्र-दिग्-भू-सुखेषु च ॥ १३ ॥
रश्मि-वह्न्योश्च सत्या-ऽक्षि-स्वर्ग-मातृषु भाषितः ।
गीश्च वाण्यां दिशा-ब्राह्म्योर्दुर्गायामथ घो घटे ॥ १४ ॥
रुद्रे च हनने घा तु क्षुद्र-घण्टौ घनध्वनौ ।
ङकारो विषये भीमे चः सूरौ चन्द्र-चोरयोः ॥ १५ ॥
चाऽव्ययं च समाहारे पक्षान्तर-समानयोः ।
कारणे पादपूर्तौ च विनियोग-समस्तयोः ॥ १६ ॥
चुः कोकेऽप्यथ संस्थाने जश्चारे छेदके रवौ ।
जं वृत्ते निर्मले प्रोक्तं जोऽथ केशव-जीवयोः ॥ १७ ॥
जूर्व्योमवाचि जवन-पिशाच्योः कीटकेऽपि च ।
झो मञ्जुलसमीरे स्यान्नष्टेऽपि परिकीर्त्तितः ॥ १८ ॥
ञो मुनौ चतुरे चन्द्रपुत्रे ब्रह्मणि ञः पुनः ।
गायने घर्घरध्वाने गूढ-रूपकयोस्तथा ॥ १९ ॥
टो भूमि-वायु-शब्देषु शरीरास्थनि टं पुनः ।
गवि ठः सुस्वने रुद्रे चन्द्रमण्डल-शून्ययोः ॥ २० ॥
डः शब्द-भर्गयोर्ध्वाने ढो ढक्का-ऽध्वविशेषयोः ।
णस्तु निःश्रेयसे स्पष्टे निष्फलेऽपि समर्थितः ॥ २१ ॥
तशब्दस्तस्करे पुच्छे क्रोडे युद्धेऽपि ता श्रियाम् ।
धरिण्यामपि ताशब्दस्त्वक् च वल्कल-चर्मणोः ॥ २२ ॥
त्विड् च वाण्यां प्रभायां च जिगीषा-व्यवसाययोः ।
रुचौ तृट् च मता लोभ-तृष्णयोस्तु स्मृतौ पुनः ॥ २३ ॥
अव्ययं तु समाहार-साकल्य-करणेष्वपि ।
थो भयाद् रक्षणे भूध्रे दम्पत्यां दा प्रदेशने ॥ २४ ॥

दाष्णु(?)-बन्धनयोर्दृक् स्यान्नेत्र-दर्शनयोरपि ।
द्यौः स्वर्ग-नभसोर्द्युस्तु वह्नि-वासरयोरथ ॥ २५ ॥
धः पुनर्धनदे धीराश्ववारक-सुचित्रयोः ।
धं वृक्णे धीस्तु बुद्धौ स्यान्निषङ्गे धा तु धातरि ॥ २६ ॥
गुह्यकेशेऽथ धूर्धूते भरे कम्प-रथास्ययोः ।
नो ज्ञान-स्थानयोर्बुद्धे निर्बन्धेऽस्माकमप्यतः ॥ २७ ॥
अस्मानस्मभ्यमप्येवं नुः स्तवेन्वव्ययं पुनः ।
विकल्प-प्रश्नयोस्तर्के निर्भरेऽनुशये नृपे ॥ २८ ॥
निः क्रीते निश्चये व्यूहे निषेधे नो-न-नाः पुनः ।
निपाताः प्रतिषेधार्थां नीर्धुन्यां नौस्तरी मता ॥ २९ ॥
न्यग् नीच-कात्स्न्र्ययोर्निम्ने पोऽम्भः पाने च पातरि ।
समीर-मार्गयोः प्रौढे पूस्तु देह-पुरोरपि ॥ ३० ॥
फो डण्डापवने फेने फूर्वातूल-कर्पूरयोः ।
बि नरेऽवस्करे वैश्ये बः पद्म-घटयोरपि ॥ ३१ ॥
बिः पक्षि-नभसोर्बस्तु प्रचेतसि च शङ्करे ।
बाग् वचः-श्रतदेव्योः स्याद् बौपम्येऽव्ययमीरितम् ॥ ३२ ॥
भः काव्ये भ्रमरे भं तु धिष्ण्य-राश्योश्च भाः करे ।
प्रभावे साध्वसे भीः स्यात् स्थित्युत्पत्ति-महीषु भूः ॥ ३३ ॥
मः शिवे चन्द्र-विध्योश्च मा लक्ष्म्यां मातृ-मानयोः ।
निषेधे माऽव्ययं ख्यातं मा निशाकर-मासयोः ॥ ३४ ॥
मूर्बन्ध-वेश्मनोर्योऽथ ब्रह्म-वात-यमेषु च ।
यं जले या रमा-यात्रोः खट्वाङ्ग-रथयोरपि ॥ ३५ ॥
रः काम-वह्नि-शब्देषु तीव्रे रामे नरे पवौ ।
राः स्वर्ण-धनयोर्मेघे स्थानके रुर्भये ध्वनौ ॥ ३६ ॥
रक्षणा-ऽऽदित्ययो रीस्तु भ्रमे रुक् [छ]वि-वाञ्छयोः ।
घृणि-रुग्व्यथयोश्चापि रै हूतावव्ययं स्मृतम् ॥ ३७ ॥

लोऽमृते चलने शक्रे लाऽऽदाने लीस्तु कङ्कणे ।
श्लेष-बन्धनयोः श्रीश्च सरलद्रव-सम्पदोः ॥ ३८ ॥

लक्ष्मी-प्रभा-भारतीषु शं सुख-श्रेयसोरपि ।
शीः स्वापे शुर्निशानाथे षूः प्रसूतौ च षो वरे ॥ ३९ ॥

सा लक्ष्म्यां सः परोक्षे स्वो ज्ञातावात्मनि च स्मृतः ।
स्वरव्ययं स्वर्ग-भद्र-परलोकगतिष्वथ ॥ ४० ॥

सच्छब्दः पूजिते सत्ये साधु-शोभनयोः सति ।
स्वं निजे द्रविणे होऽथ वीरे रुद्रे भयङ्करे ॥ ४१ ॥

ह सम्बुद्धौ पादपूर्त्तौ हा दुःखे शुग्-विषादयोः ।
ही विस्मये विषादे हुं स्वापे प्रश्न-वितर्कयोः ॥ ४२ ॥

हे सम्बुद्धौ हुं च खेदे क्रोधोक्तौ संस्मृतावपि ।
हि हेतौ पादपूर्त्तौ च क्षः क्षेत्रे रक्षसि क्षमे ॥ ४३ ॥

विश्वप्रकाशा-ऽमर-हेममुख्यनामाकरान् भूरितरान् निरीक्ष्य ।
शिशुप्रबोधाय कृतो विचारः श्रीमज्जगन्नाथपदप्रसत्त्या ॥४४॥

श्रीगढमलपुत्र श्रीमत् परमानन्दनन्दन [मकरन्ददास]
विरचितायां परमानन्दीयनाममालायां प्रथमः काण्डः
समाप्तः [१०] ॥

---

[११] वररुचिविद्वत्कृता एकाक्षरनाममाला ।

[1]गं गामुमामुमौ मो[2]मं सन्नम्य व्याहराम्यहम् ।
काव्यकौशलसिद्ध्यर्थमेकाक्षरनिघण्टुकम् ॥ १ ॥
अकारो वासुदेवः स्यादाकारस्तु पितामहः ।
इकार उच्यते कामो लक्ष्मीरीका[3]र उच्यते ॥ २ ॥
उकारः शङ्करे प्रोक्त ऊकारस्त्विह [4]रक्षणे ।
ऋकारो देवमाता स्याद् ॠ[5] धाता तु प्रकीर्त्तितः ॥ ३ ॥
ऌकारो देवयोनीनां ॡ धाता तु प्रकीर्त्तितः ।
एकार उच्यते विष्णुरैकारः स्यान्महेश्वरः ॥ ४ ॥
ओकार उच्यते ब्रह्मा औकारोऽनन्त [6]उच्यते ।
अं भवेत् परमं ब्रह्म अँः स्याच्चैव महेश्वरः ॥ ५ ॥
कः प्रजापतिरुद्दिष्टः को वायुरिति शब्दितः ।
क आत्मा च समाख्यातः प्रकाशे क उदाहृतः ॥ ६ ॥
सखा कश्च बुधैरुक्तो मुखे सूर्येऽपि कः स्मृतः ।
कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखे परिकीर्त्तितम् ॥ ७ ॥
पृथिव्यां कुः समाख्यातः कुशब्दः कुत्सितेऽपि च ।
खमिन्द्रियं समाख्यातं खमाकाशमुदाहृतम् ॥ ८ ॥
स्वर्गेऽपि च खं संप्रोक्तं शून्ये खड्गेऽपि खं स्मृतम् ।
खगोऽपि खः समाख्यातः स्वर्गेऽपि ख उदाहृतः ॥ ९ ॥
सूर्येऽपि खः समाख्यातः शून्यार्द्धे खमपि स्मृतम् ।
बिन्दौ सुखे श्रोतसि खं कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ १० ॥

---

१ गं गणेशम्, गां भारतीम्, उमां पार्वतीम्, उमौ ब्रह्म-रुद्रौ, मां लक्ष्मीम्, अं विष्णुम् । २ ग. मामे । ३ ख. ०रमेव च । ४ ख. लक्षणे । ग. लक्ष्मणे । ५ ग. ऋकारो दनुजप्रसूः । ६ ख. एव च । ७ क. ग. अः इति स्यान्महेश्वरः । ८ ख. शिखी । ९ ख. मूर्खे ।

गो गणपतिरुद्दिष्टो गो गन्धर्वे प्रकीर्तितः ।
गं[1] च गीतं गश्च गाता गौर्धेनुर्गौः सरस्वती ॥ ११ ॥
गौर्वाणी[2] च समाख्याता गावो बाणाः प्रकीर्त्तिता ।
दिशि भू-रश्मि-वज्रेषु गौरक्षिण स्वर्ग-चारिणि ॥ १२ ॥
घो घण्टायां समाख्यातः किङ्किणी[3] घा प्रकीर्त्तिता ।
हनने घर्घरे[4] घोषेऽन्तर्घाते घो घटेऽपि च ॥ १३ ॥
ङकारो[5] भैरवे प्रोक्तो ङकारो विषये स्मृतः ।
चश्चन्द्रमाः समाख्यातस्तस्करश्चा उदाहृताः ॥ १४ ॥
चुं[6]श्चकोरे चकारोऽपि पक्षान्तरे समुच्चये ।
निर्मलं छं समाख्यातं त[7]डिच्छः सम्प्रकीर्त्तितः ॥ १५ ॥
छेदने छः समाख्यातः सूक्ष्मेऽपि छ उदाहृतः ।
छ[8]न्दःसु छं समाख्यातं छश्च संवरणेऽपि च ॥ १६ ॥
वेगिते[9] जः समाख्यातो जनने जः प्रकीर्त्तितः ।
जं[10]स्तेजसि समाख्यातो जेता जश्च प्रकीर्त्तितः ॥ १७ ॥
चारुचारो झकारः स्याज्झक्तं झः समुदाहृतः ।
झञ्झावायुर्झकारः स्याज्झषो झः समुदाहृतः ॥ १८ ॥
ञकारो गूढरूपेषु ञकारो व्यूहिते[11]ऽपि च ।
ञकारो गायने प्रोक्तो ञकारो घर्घरे ध्वनौ ॥ १९ ॥
टः पृथिव्यां चकोरेऽब्दे टं टो वायौ प्रकीर्त्तितः ।
ठो महेशः समाख्यातः ठश्च शून्ये प्रकीर्त्तितः ॥ २० ॥

---

१ ख. गतगीतश्च गा माता गौर्धेनुर्गौः सरस्वती । ग. गं गीतं गो भवेद् गाथा गौश्च धेनुः सरस्वती । २ ग. गौर्वाणी गो भवेन्माता । ३ क. ख. किङ्किणीषु प्रकीर्त्तितः । ४ क. घुर्घुरे । ५ ग. ङकारश्चौरे विख्यातो । ६ ग. चुश्चौरेऽपि । ७ ग. तरणिश्छः प्रकीर्तितः । ८ क. ख. छन्दश्च । ९ क. ख. विगते । १० क. ख. तेजस्तु जिः समाख्यातः सूरिभिः शब्दशासने । ११ ग. गूहितेऽपि ।

बन्दिवृन्दे च डः प्रोक्तो डकारश्चन्द्रमण्डले ।
डकारः शङ्करे त्रासे डकारो ध्वनिरुच्यते ॥ २१ ॥
ढकारः कीर्त्तिता ढक्का निर्गुणे च ध्वनावपि ।
णकारः कीर्त्तितो ज्ञाने निर्गुणे णः प्रकीर्त्तितः ॥ २२ ॥
णकारः प्रकटे बन्धे णुः स्तुतौ च प्रकीर्त्तितः ।
तकारः कथितश्चौरे [1]क्रोडे युद्धे च कीर्त्तितः ॥ २३ ॥
तुः स्यात् [2]पूर्वनिवृत्तौ च पूर्वस्माच्च विलक्षणे ।
अवधारणे तुकारो विकल्पार्थे तथोदितः ॥ २४ ॥
शिलोच्चये थकारः स्यात् थकारो भार उच्यते ।
[3]दं कलत्रं बुधैः प्रोक्तं दो दानेऽपि च दातरि ॥ २५ ॥
धं धने धनदे धीरे धी धीरिषुधिरुच्यते ।
धूर्धुरा कम्पने धूर्ते धश्चाऽश्ववार-चित्रयोः ॥ २६ ॥
रथाङ्गे धूः समाख्याता चिन्तायां धूः प्रकीर्त्तिता ।
नकारः कीर्त्तितो ज्ञाने नुः स्तुतौ च प्रकीर्त्तितः ॥ २७ ॥
नेता नीर्ना मनुष्ये च तरण्यां नौ प्रकीर्त्तिता ।
नो निषेधे नकारेऽपि निःश्रुतेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥ २८ ॥
नौ निषेधे नकारेऽपि नौ तथाप्यावयोस्तु नौ ।
अस्मानऽस्माकमस्मभ्यमित्यस्मिन् नः प्रकीर्त्तितः ॥ २९ ॥
[5]पकारः पवने प्रोक्तः पा स्तुतौ पा च पातरि ।
पकारो वर्णके प्रौढे पकारः प्रकटे पथि ॥ ३० ॥
फम्फावाते फकारः स्यात् तथा [6]निर्ष्फलभाषणे ।
पुष्करेऽपि फकारः स्यात् फकारो भयरक्षणे ॥ ३१ ॥

---

१ ग. क्रोडे पक्षे च युद्धके । २ ख. सर्वनिवृत्तौ । ३ ख. बुद्धिदा च । ४ ग. धूमे । ५ ग. पकारः पवमाने स्यात् पावने नैव (चैत्र) पातरि । ६ ग. स्थाने च कीर्त्तितः । फूत्कारेऽपि च फः प्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे ।

प्रचेता बः समाख्यातः कलहे ब उदाहृतः ।
पक्षी च बिर्निगदितो गगनं बिस्तथोदितम् ॥ ३२ ॥
नक्षत्रं भं बुधाः प्राहुर्भ्रमरे भः प्रकीर्त्तितः ।
दीप्तिर्भा [1]भूर्भवेद् भूमिर्भीर्भयं कथितं बुधैः ॥ ३३ ॥
मः शिवश्चन्द्रमा वेधा मा च लक्ष्मीः प्रकीर्त्तिता ।
मा तु मातरि माने च बन्धने मुः प्रकीर्त्तितः ॥ ३४ ॥
मे ममार्थे निषेधे मा मामित्यत्र प्रकीर्त्तितः ।
[2]यमो यः कथितः शिष्टै[3]र्यो धातरि च सम्मतः ॥ ३५ ॥
या नियन्तरि या लक्ष्मीः कथिता शब्दकोविदैः ।
रश्च रामेऽनले [4]वज्रे शब्दे रश्च प्रकीर्त्तितः ॥ ३६ ॥
धने रा आश्रये ख्यातो रुर्भये रक्षणेऽपि च ।
[5]इन्द्रेऽपि लवने चैव लू[6]र्लाऽऽदाने प्रकीर्त्तितः ॥ ३७ ॥
दिशश्चापि लवश्चैव लकारश्चामृते स्मृतः ।
ले श्लेषणे समाख्यातः शब्दशासनकोविदैः ॥ ३८ ॥
सान्त्वने वरुणे वाते वकारः सम्प्रकीर्त्तितः ।
वा वितर्के विकल्पे च युष्माकं वः प्रकीर्त्तितः ॥ ३९ ॥
युष्मभ्यं च तथा युष्मान् वां युवयोश्च कीर्त्तितः ।
[7]पक्षिणि गगने चैव विश्च प्रोक्तो मनीषिभिः ॥ ४० ॥
ब्रुवन्ति शं बुधाः श्रेयः शान्ते शा च निगद्यते ।
शीश्चापि शयने प्रोक्ता हिंसायां शुर्निगद्यते ॥ ४१ ॥
षकारः कीर्त्तितः [8]श्लेष्मा षू च गर्भविमोचने ।
सदारः षः समाख्यातः सा च लक्ष्मीः प्रकीर्त्तिता ॥ ४२ ॥

---

१ क. ख. भश्च भूर्भूमिर्भीर्भयं । २ ग. यशो । ३ ग. ०ष्टैर्यो धाता च वायुरित्यपि । ४ ग. वह्नौ शठे रुश्च प्रकीर्त्तितः । ५ ग. लं याने लवने लुः स्याल्लो दाने च प्रकीर्त्तितः । ६ ख. लूर्लविच्छेदयोः स्मृतौ । ७ ख. विहङ्गे । ८ ख. श्रेष्ठे ।

सः परोक्षे च कामे च सः कोपे वारुणे स्मृतः ।
सः सूर्येऽपि समाख्यातः सं सम्यक् परिकीर्त्तितम् ॥ ४३ ॥

हः कोपवाची रणे हस्तथा शूले निगद्यते ।
हिः स्याद्धेतौ वि[1]तरणे तथा हिरवधारणे ॥ ४४ ॥

हे तु सम्बोधने प्रोक्तो है हा चेति [तु] कष्टयोः ।
हुं प्रश्ने चाथ होमे च हं परब्रह्मलक्षणम् ॥ ४५ ॥

हो निपाते च बोधे हो हस्ते दारुणि शूलिनि ।
क्षः क्षेत्रे राक्षसे चापि क्षिः क्षये सम्प्रकीर्त्तितः ॥ ४६ ॥

इति वाररुचं प्रोक्तं यो वेत्त्येनं निघण्टुकम् ।
वा[2]गर्णवे यथाकामं तस्य स्वा[3]न्तं प्रवर्त्तते ॥ ४७ ॥

इति वररुचिविद्वत्कृता एकाक्षरनाममाला समाप्ता [११] ॥

---

१ ख. च दृष्टान्ते । ग. विवरणे । २ ख. गणयेच्च यथा कामं ख्यातिस्तस्य प्रवर्द्धते । ३ ग. स्वातन्त्र्यं वर्त्तते ।

[१२] पुरुषोत्तमदेवप्रणीतः एकाक्षरकोषः ।

अकारो वासुदेवः स्यादाकारस्तु पितामहः ।
पूजायामपि माङ्गल्ये आकारः परिकीर्त्तितः ॥ १ ॥
इकार उच्यते कामो लक्ष्मीरीकार उच्यते ।
उकारः शङ्करः प्रोक्त ऊकारश्चापि [1]लक्षणे ॥ २ ॥
रक्षणे चापि ऊकार ऊकारो ब्रह्मणि स्मृतः ।
ऋकारो देवमाता स्याद् ॠकारो दनुजप्रसूः ॥ ३ ॥
[2]ऌकारो देवजातीनां माता सद्भिः प्रकीर्त्तिता ।
ॡकारः स्मर्यते पूर्वैर्जननी शब्दकोविदैः ॥ ४ ॥
एकार उच्यते विष्णुरैकारः स्यान्महेश्वरः ।
ओकारस्तु भवेद् ब्रह्मा औकारो[3]ऽनन्त उच्यते ॥ ५ ॥
अं स्याच्च परमं ब्रह्म अः [4]स्याच्चैव महेश्वरः ।
कः प्रजापतिरुद्दिष्टो कोऽर्क-वाय्वनलेषु च ॥ ६ ॥
कश्चाऽत्मनि मयूरे च कः प्रकाश उदाहृतः ।
कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखं च प्रकीर्त्तितम् ॥ ७ ॥
पृथिव्यां कुः समाख्यातः कुः[5] शब्देऽपि प्रकीर्त्तितः ।
खमिन्द्रिये खमाकाशे खः स्वर्गेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥ ८ ॥
[6]सामान्ये च तथा शून्ये खशब्दः परिकीर्त्तितः ।
गो[7] गणेशः समुद्दिष्टो गन्धर्वो गः प्रकीर्त्तितः ॥ ९ ॥
गं गीतं गा च गाथा स्याद् गौश्च धेनुः सरस्वती ।
घा[8] घण्टाऽथ समाख्याता घो घनश्च प्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

---

१ ख. ग. रक्षणे । २ ग. ऌकारो देवयोनिः स्याद् । ३ ग. रो रुद्र उ । ४ ग. स्यादेवो । ५ ख. ग. कुत्सायां कुः प्रकीर्त्तितः । ६ ग. खं सर्पे च प्रकीर्त्तितं तथा श्वभ्रे च खं प्राहुः । ७ ख. ग. गो गणपतिरुद्दिष्टो । ८ ग. घो घण्टायां समाख्यातः किङ्किणी घा प्रकीर्त्तिता ।

घण्टीशे हनने घर्मे घुर्घोणा घूर्ध्वनावपि ।
ङकारो भैरवः ख्यातो ङकारो विषयस्पृहा ॥ ११ ॥

चश्चन्द्रमाः समाख्यातो भास्करे तस्करे मतः ।
निर्मलं छं समाख्यातं तरले[1] छः प्रकीर्त्तितः ॥ १२ ॥

छेदके छः समाख्यातो विद्वद्भिः शब्दकोविदैः ।
जं[2]कारो गायने प्रोक्तो जयने जः प्रकीर्त्तितः ॥ १३ ॥

जेता जश्च प्रकथितः सूरिभिः शब्दशासने ।
र[3]वो झकारः कथितो नष्टे झश्चोच्यते बुधैः ॥ १४ ॥

झकारश्च तथा वायौ नेपथ्ये समुदाहृतः ।
ञकारो गायने प्रोक्तो ञकारो झर्झरध्वनौ ॥ १५ ॥

टो धरित्र्यां च करके टो ध्वनौ च प्रकीर्त्तितः ।
ठकारो जनतायां स्यात् ठो ध्वनौ च शठेऽपि च ॥ १६ ॥

ठो महेशः समाख्यातः ठश्च शून्ये प्रकीर्त्तितः ।
बृहद्ध्वनौ च ठः प्रोक्तस्तथा चन्द्रस्य मण्डले ॥ १७ ॥

डकारः शङ्करे त्रासे ध्वनौ भीमे निरुच्यते ।
ढकारः कीर्त्तिता ढक्का निर्गुणे निर्धने मतः ॥ १८ ॥

णकारः सूकरे ज्ञाने निश्चये निर्णयेऽपि च ।
तकारः कीर्त्तितश्चौरे क्रोडपुच्छे प्रकीर्त्तितः ॥ १९ ॥

शिलोच्चये थकारः स्यात् थकारो भ[4]यरक्षणे ।
दं[5]कारोऽभ्रे कलत्रे च छेदे दाने च दातरि ॥ २० ॥

धं धने सधने धः स्याद् विधातरि मनावपि ।
धिषणा धीः समाख्याता धूश्चैव भार-वित्तयोः ॥ २१ ॥

---

१ ख. ग. तरणी । २ ख. ग. वेगिते जः समाख्यातो । ३ ग. झञ्झावाते झंकारः स्यान्नष्टे । ४ क. नयरक्षणे । ५ ख. ग. दं कलत्रं समाख्यातः दो दान-च्छेद-दातृषु ।

नेता[१] नश्च समाख्यातस्तरणौ नः प्रकीर्त्तितः ।
नकारः सौगते बुद्धौ स्तुतौ नस्तु प्रकीर्त्तितः ॥ २२ ॥

नशब्दः स्वागते बन्धौ वृक्षे सूर्ये च कीर्त्तितः ।
पः कुबेरः समाख्यातः पश्चिमे च प्रकीर्त्तितः ॥ २३ ॥

पवने पः समाख्यातः पः स्यात् पाने च पातरि ।
कफे वाते फकारः स्यात् तथाऽऽह्वाने प्रकीर्त्तितः ॥ २४ ॥

फूत्कारेऽपि च फः प्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे ।
बकारो वरुणः प्रोक्तः कलशे बः फलेऽपि च ॥ २५ ॥

वक्षःस्थले च बः प्रोक्तो गदायां समुदाहृतः ।
नक्षत्रे भं बुधाः प्राहुर्भवने[२] भः प्रकीर्त्तितः ॥ २६ ॥

दीप्तिर्भा स्याच्च भूर्भूमिर्भी भयं कथितं बुधैः ।
मः शिवश्चन्द्रमा वेधा मा लक्ष्मीश्च प्रकीर्त्तिता ॥ २७ ॥

मा च मातरि माने च बन्धने मँ[३]ः प्रकीर्त्तितः ।
यशो यः कथितः प्राज्ञैर्यो वायुरिति शब्दितः ॥ २८ ॥

याने यातरि यस्त्यागे कथितः शब्दवेदिभिः ।
रश्च रौमे[४]ऽनिले वह्नौ भूमावपि धनेऽपि च ॥ २९ ॥

इन्द्रियेन्धने[५]रोधे च रुर्भये च प्रकीर्त्तितः ।
लो दीप्तौ द्यां लश्च भूमौ भये चाऽऽह्लादनेऽपि च ॥ ३० ॥

लो वाते लवणे च स्याल्लो दाने च प्रकीर्त्तितः ।
लः श्लेषे चाशये चैव प्रलये साधनेऽपि लः ॥ ३१ ॥

मानसे वरुणे चैव वकारः सान्त्वनेऽपि च ।
विश्च पक्षी निगदितो गगनं परिकीर्त्तितम् ॥ ३२ ॥

---

१ ख. ग. नेता नीश्च समाख्यातस्तरणौ नौ प्रकीर्त्तितः । २ ख. ग. भ्रमरे । ३ ख. ग. मूः । ४ ख. ग. कामेऽनिले । ५ क. घ. नरोगे ।

शं सुखं शङ्करः श्रेयः शश्च सीम्नि निगद्यते ।
शयने शः समाख्यातो हिंसायां शो निगद्यते ॥ ३३ ॥

षः कीर्त्तितो बुधैः श्रेष्ठे षश्च[1] गम्भीरलोचने ।
उपसर्गे परोक्षे च षकारः परिकीर्त्तितः ॥ ३४ ॥

सः कोपे वरणे सः स्यात्तथा शूलिनि कीर्त्तितः ।
सा च लक्ष्मीर्बुधैः प्रोक्ता गौरी सा च स ईश्वरः ॥ ३५ ॥

हः कोपे वारणे[2] हश्च तथा शूली प्रकीर्त्तितः ।
हिः पद्यावरणे प्रोक्तो हिः स्याद्धेत्ववधारणे ॥ ३६ ॥

क्षः क्षेत्रे वक्षसि[3] प्रोक्तो बुधैः क्षः शब्दशासने ।
क्षिः क्षेत्रे क्षत्ररक्षे च नृसिंहे च प्रकीर्त्तितः ॥ ३७ ॥

आगमेभ्योऽभिधानेभ्यो धातुभ्यः शब्दशासनात् ।
एवमेकाक्षरं नामाभिधानं क्रियते मया ॥ ३८ ॥

॥ इत्येकाक्षरकोषः समाप्तः [१२] ॥

---

१ ख. ग. षूश्च गर्भमोचने । २ ख. ग. धारणे । ३ ख. ग. रक्षसि ।

[१३] अमरचन्द्रकविविरचिता
एकाक्षरनाममालिका ।

विश्वाभिधानकोशानि प्रविलोक्य प्रभाष्यते ।
अमरेण कवीन्द्रेणैकाक्षरनाममालिका ॥ १ ॥
अः कृष्णः आः स्वयम्भूरिः काम ईः श्रीरुरीश्वरः ।
ऊः रक्षणमृ ॠ ज्ञेये देव-दानवमातरौ ॥ २ ॥
ऌर्देवसूॡर्वाराही भवेदेर्विष्णुरैः शिवः ।
ओर्वेधा औरनन्तः स्यादं ब्रह्म परमः शिवः ॥ ३ ॥
को ब्रह्मा-ऽऽत्म-प्रकाशा-ऽर्क-केकि-वायु-यमा-ऽग्निषु ।
कं शीर्षेऽप्सु सुखे कुस्तु भूमौ शब्दे च किं पुनः ॥ ४ ॥
स्यात् क्षेप-निन्दयोः प्रश्ने वितर्के च खमिन्द्रिये ।
स्वर्गे व्योम्नि नृपे शून्ये सुखे संविदि खो रवौ ॥ ५ ॥
गस्तु गातरि गन्धर्वे गं गीते गौर्विनायके ।
स्वर्गे दिशि पशौ रश्मौ वज्रे भूमाविषौ गिरि ॥ ६ ॥
जलेऽक्षिण घस्तु घण्टीशे घा किङ्किण्यां वधे ध्वनौ ।
ङस्तु भैरव-विषयेच्छयोश्चश्चन्द्र-चौरयोः ॥ ७ ॥
छः सूर्ये छेदके छं तु निर्मले जस्तु जेतरि ।
विगते जूर्नभोवाचि पिशाच्यां जवने[१]ऽपि च ॥ ८ ॥
झो नष्टे चारुवायौ ञो गायने घर्घरध्वनौ ।
टं पृथिव्यां करङ्के च टो ध्वनौ ठो महेश्वरे ॥ ९ ॥
शून्ये बृहद्ध्वनौ चन्द्रमण्डले डः शिवे ध्वनौ ।
जापे ढो निर्गुणे शब्दे ढक्कायां णस्तु निष्फले ॥ १० ॥
ज्ञाने तस्तस्कर-क्रोडपुच्छयोस्ता पुनः श्रियाम् ।
थो भीत्राणे महीध्रे दं पत्न्यां दा दातृ-दानयोः ॥ ११ ॥

---

१ ख. ग. जननेऽपि ।

छेदे बन्धे च धा गुह्यकेशे[1] धातरि धीर्मतौ ।
धूर्भार-कम्प-चिन्तासु नः पुनर्बन्ध-बुद्धयोः[2] ॥ १२ ॥
निस्तु नेतरि नुः स्तुत्यां नौस्तर्यां पस्तु पातरि ।
पवने जलपाने च फो झञ्झानिल-फेनयोः ॥ १३ ॥
फूस्तु फूत्कारे निष्फलभाषणे बः प्रचेतसि ।
कलशे बिः खा-ऽण्डजयोर्भमुडौ भोऽलि-शुक्रयोः ॥ १४ ॥
भा कान्तौ भूर्भुवि स्थाने भीर्भये मः शिवे विधौ ।
चन्द्रे शिरसि मा माने श्री-मात्रोर्वारणेऽव्ययम् ॥ १५ ॥
मूः पुनर्बन्धने यस्तु मातरिश्वनि यं पशौ ।
या तु यातरि खट्वाङ्गे याने लक्ष्म्यां च रो ध्वनौ ॥ १६ ॥
तीक्ष्णे वैश्वानरे कामे राः स्वर्णे जलदे धने ।
री भ्रमे रुर्भये सूर्ये ल इन्द्रे चलनेऽपि च ॥ १७ ॥
लूर्लवे[3] लीः पुनः श्लेषे वलये वो महेश्वरे ।
वैरुणे[4] मारुते च स्यादौपम्ये पुनरव्ययम् ॥ १८ ॥
शं शुभे शा च साम्नायां शी शयने शुर्निशाकरे ।
षः श्रेष्ठे षूः पुनर्गर्भविमोक्षे सः परोक्षके ॥ १९ ॥
सा लक्ष्म्यां हो निपाते च हस्ते दारुणि शूलिनि ।
क्षः क्षेत्रे रक्षसीत्युक्ता माला प्राक्सूरिसम्मता ॥ २० ॥
पूर्वाचार्यैस्तु ग्रथिता शोध्या सद्गुणशालिभिः ।
नाम्नामेकार्थ-नानार्थैकाक्षराणामियं मया ॥ २१ ॥

इति पण्डितअमरचन्द्रकृता एकाक्षरनाममाला समाप्ता [१३]

❀

---

१ ग. गुह्ये केशे । २ ख. पुनर्बन्धु-बुद्धयोः । ३ ख. ग. लिर्लवे । ४ ख. वः पश्चिमदिगीशे स्या ।

[१४] धरसेनाचार्यविरचित एकाक्षरीनानार्थकाण्डः ।

को ब्रह्मा-ऽनिल-सूर्या-ऽग्नि-यमा-ऽऽत्म-द्योत-बर्हिषु ।
कं सुखे वारि शीर्षे च कुः शब्दे ना भुवि स्त्रियाम् ॥ १ ॥
कु निन्दायामीषदर्थे किल्बिषे वारणेऽपि च (ऽव्ययम्) ।
खमाकाशे दिवि सुखे बुद्धौ संवेदने पुरे ॥ २ ॥
शून्यवदिन्द्रिय-क्षेत्रे कुशा-हलफले क्वचित् ।
गो गन्धर्वे गणेशेऽर्के गं गीते शास्त्रगातरि ॥ ३ ॥
गौ पुमान् वृषभे स्वर्गे खण्ड-वज्र-हिमांशुषु ।
स्त्री गवि भूमि-दिग्-नेत्र-वाग्-बाण-सलिले स्त्रियः ॥ ४ ॥
घो [1]घण्टीशे च घा घाते किङ्किण्यां स्त्री ध्वनौ तु घः ।
भैरवे विषये ङः स्याच्चस्तु तस्कर-चन्द्रयोः ॥ ५ ॥
छश्छेदका-ऽर्कयोश्छा च छिदि छं लाञ्छना-ऽच्छयोः ।
जः [2]स्याज्जयिनि जोद्भूतौ [3]जीविते नरि जिर्भुजि ॥ ६ ॥
जूराकाशे सरस्वत्यां पिशाच्यां [4]जयने त्रिषु ।
[5]झकारश्चारुवायौ स्यान्नष्टेऽपि क्वचिदिष्यते ॥ ७ ॥
ञकारस्तु क्वचित् ख्यातो गायने घर्घरध्वनौ ।
ज्ञः पण्डिते बुधे वेधस्यज्ञो मूढे जडे त्रिषु ॥ ८ ॥
टा पृथिव्यां ध्वनौ टः स्यात् करङ्के टं नपुंसकम् ।
ठश्चन्द्रे मण्डले [6]शून्येऽजे करेणूच्चशब्दिते ॥ ९ ॥
डकारः पार्वतीनाथे चासे शब्देऽपि दृश्यते ।
स्याद् ढकारस्तु ढक्कायां निर्गुणे विषमध्वनौ ॥ १० ॥
णकारो निर्णये ज्ञाने शूकरेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
पालने पालके तः स्यात् तुश्चौर-क्रोडपुच्छयोः ॥ ११ ॥

---

१ ख. घण्टायां । २ ख. स्याज्जविनि । ३ ख. जयने जिः प्रकीर्त्तितः । ४ ख. जविने । ५ ख. रस्त्वारवायौ । ६ ख. शून्ये स्यात् ।

थः स्याच्छिलोच्चये भीतत्राणे थं मङ्गुलेऽपि[1] थम् ।
दः शुद्धौ देवने दास्तु दातरि च्छेद-दानयोः ॥ १२ ॥
धो धने च धनेशे च धास्तु धातरि धीमतौ ।
नौस्तु[2] नेतरि नावि स्त्री नकारो जिन-पूज्ययोः ॥ १३ ॥
नुः स्तोतरि नुतौ स्त्री च स्यान्नेत्रमञ्जनं च नम् ।
पो वाते पा तु पाने स्यात् पास्तु पातरि वाच्यवत् ॥ १४ ॥
फु मन्त्रे फे रुते सङ्ख्ये स्फा वृद्धौ फेरवे पुमान् ।
फः स्याज्झञ्झानिले पुंसि स्फूः स्फुटे फुल्ल-भाषयोः ॥ १५ ॥
बं प्रचेतसि पुंसि स्यादुपमाने तदव्ययम् ।
भा स्यान्मयूखे शुक्रेऽपि पुंसि पुष्पन्धये तु भः ॥ १६ ॥
दीप्तौ च स्थानमात्रे भा भं नक्षत्रे भये तु भी ।
मः शिवे पुंसि मश्चन्द्रे मो विधौ मा तु मातरि ॥ १७ ॥
स्त्रियां स्यान्मा रमायां च मा क्षेपे मान-बन्धयोः ।
मा निषेधेऽव्ययं मे च ममेत्यर्थे ममाऽव्ययम् ॥ १८ ॥
यो वात-यशसोः पुंसि या यान-त्याग-यातृषु ।
रस्तु कामानले वह्नौ तीक्ष्णे रास्त्वर्थ-रुक्मयोः ॥ १९ ॥
रुर्ना शब्दे भये भागे रीः श्रोतरि भुवि स्त्रियाम् ।
क्रेतरि क्रीः क्रये तु स्त्री घ्रा घ्राणे घ्रातरि स्मृतः ॥ २० ॥
द्रुर्वृक्षेऽपि द्रुमेऽपि(?) स्याद् द्रुः स्वर्णे कामरूपिणि ।
श्रीर्लक्ष्मी-भारती-शोभा-प्रभासु सरलद्रुमे[3] ॥ २१ ॥
वेश-त्रिवर्गसम्पत्तौ वेषोपकरणे[4] मतौ ।
स्रुः स्रवे निर्झरे चाथ ह्री व्रीडे लज्जिते त्रिषु ॥ २२ ॥
ल इन्द्रे ला तु दाने स्यादाऽऽश्लेषेऽपि लयेऽपि च ।
अपि लूश्छेदके पुंसि लवने लूरपि स्मृता ॥ २३ ॥

---

१ ख. मङ्गलेऽपि । २ ख. नास्तु । ३ क. सरलद्रुवौ । ४ ख. शेषोपकरणे ।

वः कुम्भे वरुणे व स्यादिवार्थे सान्त्वनेऽव्ययम् ।
वा वात-तातयोर्ग्रन्थौ विः खगा-ऽऽकाशयोः पुमान् ॥ २४ ॥
स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं तु त्रिष्वात्मीये धनेऽस्त्रियाम् ।
शः शतायुषि हिंसायां शं धर्मे शा तु मातरि ॥ २५ ॥
शी स्त्रीषु स्वे-परस्त्रीषु शीः स्यात् सदन-निद्रयोः ।
षकारस्तु मतः श्रेष्ठेऽपि स्याद् गर्भविमोचने ॥ २६ ॥
सा पुंस्यन्धौ रमायां स्याद् रत्यां से श्री-श्रुतेऽपि सः ।
सोरच्युते तु पार्वत्यामंसः स्कन्ध-विभूषयोः ॥ २७ ॥
सरोषवारणे हीरे हः स्यादीशात्मजे तु हिः ।
राक्षसे क्षेत्रमात्रेऽपि क्षकारः परिकीर्त्तितः ॥ २८ ॥
अः श्रीकण्ठेऽव्ययं तुल्या-ऽभावयोराः पितामहे ।
सन्तापे च प्रकोपे च भवेदाः स्मृतमव्ययम् ॥ २९ ॥
इस्तु कामे पुमान् खेदे रुषोक्तौ चाव्ययं भवेत् ।
ई लक्ष्म्यामव्ययं त्वी स्याद् दुःखभावन-कोपयोः ॥ ३० ॥
उः शिवे नाऽव्ययं तु स्यात् सम्बुद्धौ रोषभाषणे ।
ऊः स्यादनव्ययं रक्षा-ऽऽरक्ष-सूत्रिषु रक्षके ॥ ३१ ॥
ऋर्देवमातरि स्त्री स्यादव्ययं वाक्य-कुत्सयोः ।
ॠश्च स्त्री देवताम्बायां स्यादेः पुंसि चतुर्भुजे ॥ ३२ ॥
स्मृति-सम्बोधना-ऽऽह्वानेऽव्ययमैस्तु शिवे पुमान् ।
अव्ययं त्वै समाख्यातं स्मृत्या-ऽऽमन्त्रणा-ऽऽहूतिषु ॥ ३३ ॥
ओः पुमान् ब्रह्मणि ख्यातोऽव्ययमाऽऽमन्त्रणा-ऽऽह्वयोः ।
और्नभस्यव्ययं तु स्यात् सम्बुद्धा-ऽऽह्वानयोर्मतम् ॥ ३४ ॥
परब्रह्मण्यनुमतावं स्यादश्च तथाऽव्ययम् ।
अः पुंसि शङ्करे ख्यातः कथितः शब्दवेदिभिः ॥ ३५ ॥

इति एकाक्षरीनानार्थकाण्डः समाप्तः [१४]

[विश्वलोचनकोशः]

❀

---

१ क. स्वपुरी स्त्री तु ।

[१५] महीपसचिवकृत एकाक्षरसंज्ञः काण्डः ।

या संस्मृता प्राणभृतां क्षणेन
संसाधयेदिष्टसमस्तसिद्धिम् ।
विश्वस्य सृष्टि-स्थिति-नाशहेतुः
सा भारती यच्छतु वाञ्छितं वः ॥ १ ॥

कवीन्द्रकुमुदानन्दकन्दोद्गमसुधाकरः[1] ।
विरच्यते चतुष्काण्ड्या रम्योऽनेकार्थसङ्ग्रहः ॥ २ ॥

मुख्योऽत्र शब्दः प्रथमं प्रथमालङ्कृतः[2] कृतः ।
परस्त्वर्थान्तराख्यायी सप्तम्यन्त इति स्थितिः ॥ ३ ॥

विना लिङ्गविशेषेण नाऽन्यत्र पुनरुक्तता ।
नानार्थस्यार्थबाहुल्यात् स्थितिरेकत्र न क्वचित् ॥ ४ ॥

अथाऽकारादिभिः[3] शब्दैः क्षान्तैरेकाक्षराभिधः ।
ग्रन्थेऽस्मिन् प्रथमः काण्ड आविरस्ति सविस्तरात्[4] ॥ ५ ॥

अः कृष्णे विनतासूनावा विधातरि मन्मथे ।
आ अव्ययं स्मृतौ वाक्ये स्यादाः सन्ताप-कोपयोः ॥ ६ ॥

आङ् सीमायामभिव्याप्तौ क्रियायोगेषदर्थयोः ।
इः स्मरेऽघेऽव्ययं खेदे कोपोक्ताविर्भुवि श्रियाम् ॥ ७ ॥

उः शम्भावुत् प्रकाशे स्यान्मोक्षे भावोर्द्ध्व-शक्तिषु ।
उ क्रोधे बन्धने लोभे विभागेऽव्ययमूर्गुरौ ॥ ८ ॥

पालने रक्षणे ऋः[5] स्यात् पृथिव्यां देवमातरि ।
ॠर्दैत्यमातरि[6] स्याद् ऌ देव्यां ॡस्तु लतान्तरे ॥ ९ ॥

---

१ ख. कवीन्द्रकुमुदोद्गच्छदङ्कुरङ्कुरकुक्रमात् । २ ग. स्वं युक्तालङ्कृतः । ३ ख. ग. अकाराद्यादिभिः शब्दैः क्रमादेकाक्षराभिधः । ४ ख. सविस्तरः । ५ ख. ऋः स्याद् गवि गीर्वाणमातरि । ६ ख. ॠर्दितौ स्यादजे ऌः स्याददितौ ॡर्लतान्तरे ।

वाराह्यामेर्महीध्रे च विष्णावैरद्रिजापतौ ।
ओर्धातर्य्यौरनन्ते स्याद् ब्रह्मण्यः कपालिनि ॥ १० ॥
कं सुखे सलिले शीर्षे कः स्वर्ग-स्मर-वह्निषु ।
सुहृत्-सूर्य-यमोद्द्योत-केकि-ब्रह्मा-ऽऽत्म-वायुषु ॥ ११ ॥
कु भूमौ कुत्सिते शब्दे पापीयसि निवारणे ।
ईषदर्थेऽथ किं प्रश्ने वितर्का-ऽऽश्चर्ययोरपि ॥ १२ ॥
कुत्सना-ऽऽक्षेप-निन्दासु किं कियत्यपि दृश्यते ।
खं सैन्ये[1] गगने बिन्दाविन्द्रिये चन्द्रमण्डले ॥ १३ ॥
वर्ण-खण्ड-सुख-स्वर्ग-शून्य-संवित्सु खो रवौ ।
गं गीते गस्तु गन्धर्वे गणनायक-गीतयोः ॥ १४ ॥
गौर्वज्रेऽप्सु वृषे धेनौ वाचि दिग्-बाणयोर्गिरि ।
भू-मयूख-मुख-स्वर्ग[2]-सैन्य-वह्न्यक्षि-मातृषु ॥ १५ ॥
गीस्तु वाचि सरस्वत्यां दुर्गायां ककुभि स्मृता ।
घो घटे हनने रुद्रे घा किङ्किण्यां घनस्वने ॥ १६ ॥
ङशब्दो विषये भीमे चश्चन्द्रे तस्करे तरौ ।
चाऽव्ययं तु समाहारे पादपूर्त्तौ समुच्चये ॥ १७ ॥
परस्परार्थे साकल्ये कारणेऽवधृतावपि ।
पक्षान्तरे समाने स्यात् चुश्चकोरे चतुष्पथे ॥ १८ ॥
छः सूर्ये छेदके चारे छं तु छन्दसि निर्मले ।
जो जिष्णौ[3] विगते जीवे जूशब्दोऽम्बरै[4]वाचि च ॥ १९ ॥
पिशाच्यां जेवने[5] कीटे झो नष्टे चारुमारुते ।
ज्ञः स्याद् विचक्षणे चन्द्रपुत्रे मुनि[6]-विरिञ्चयोः ॥ २० ॥

---

१ ख. ग. नृपे । २ ख. ग. स्वर्ग-सत्य-व । ३ ग. विष्णौ । ४ ग. रवाच्चिषु ।
५ ग. यदने । ६ ग. मुनि-विरञ्चयोः ।

[1]ञः शब्दो गायने गूढरूपके घर्घरध्वनौ ।
टः शब्दे पवने भूमौ करङ्के टू[2] जले भुवि ॥ २१ ॥
ठो घटे सुस्वने रुद्रे चन्द्रमण्डल-शून्ययोः ।
डो ध्वनौ गिरिशे जापे ढोऽगुणे ध्वनि-ढक्कयोः ॥ २२ ॥
णो मोक्षे निष्फले स्पष्टे तः क्रोडे चौर-पुच्छयोः ।
युद्धे च ता मही-लक्ष्म्योः त्वक् च चर्मणि वल्कले ॥ २३ ॥
त्विट् प्रभायां च[3] कुत्सायां व्यवसाये रुचौ गिरि ।
तृट् तृष्णे च मता विड्ढिः पिपासा-लिप्सयोरपि ॥ २४ ॥
तु स्मृतौ च समाहारे साकल्ये कारणेऽव्ययम् ।
थो भीत्राणे भरेऽद्रौ दं पत्न्यां दा दातृ-दानयोः ॥ २५ ॥
बन्धे विखण्डने चाथ दृक् स्याद् दर्शन-नेत्रयोः ।
द्युर्वह्नौ दिवसे द्यौस्तु नाके नभसि धं धने ॥ २६ ॥
धो धीरे धनदेऽपि स्यादश्ववारक-चित्रयोः ।
धीर्धियामिषुधौ धा च गुह्यकेशे चै धातरि ॥ २७ ॥
धूस्तु धूते भरे कम्पे रथास्ये नस्तु संविदि ।
अस्मानस्माकमस्मभ्यं स्थाने बुद्ध[5]-निबन्धयोः ॥ २८ ॥
नु स्तोत्रे[6] नु वितर्के च विकल्पेऽनुशयेऽव्ययम् ।
प्रश्नेऽथ निर्नरे भूपे निर् निश्चय-निषेधयोः ॥ २९ ॥
क्रीताद्यर्थे चये ना न नो निषेधेऽव्ययानि च ।
नौस्तरण्यां च नी नद्यां न्यग् निम्ने नीच-कात्स्न्र्ययोः ॥३०॥
पः पातरि पयःपाने प्रौढे पवन-मार्गयोः ।
पूः शरीरे पुरे चाथ फो झञ्झानिल-फेनयोः ॥ ३१ ॥

---

१ क. ञः पुनर्गा । २ ख. ग. टं पुनर्गवि । ३ ग. जिगीषायां । ४ ख. स्वयंभुवि । ५ ग. निर्बन्ध-बुद्धयोः । ६ ख. ग. स्तुतौ ।

फूः फूत्कृतौ[1] च वातूले बः पद्मे वरुणे घटे ।
बिद् प्रवेशे नरे वैश्ये बाग् भारत्यां वचस्यपि ॥ ३२ ॥

बः शम्भौ वरुणे बा च स्यादौपम्ये गणेऽव्ययम् ।
बिः खगे खेऽपि भं धिष्ण्ये मेषादौ भोऽलि-शुक्रयोः ॥ ३३ ॥

भाः प्रभावे मयूखे भूरुत्पत्ति-स्थिति-भूमिषु ।
भीर्भये मो विधौ[2] चन्द्रे शिवे शिरसि मा श्रियाम् ॥ ३४ ॥

माने मातरि माशब्दो निषेधार्थेऽव्ययं स्मृतौ ।
मूशब्दस्तु ग्रहे[3] बन्धे मास् तु मासे निशाकरे ॥ ३५ ॥

यो वेधसि यमे वाते यमम्भसि पशावपि ।
या यातर्यपि खट्वाङ्गे लक्ष्म्यां यानेऽथ रः स्मरे ॥ ३६ ॥

तीव्रे वैश्वानरे शब्दे रामे वज्रे नरेऽथ राः ।
कनके विभवे मेघे स्थानके रुस्तु रक्षणे ॥ ३७ ॥

भये[4] दिनाधिपे शब्दे रीर्भ्रमे[5] रुक् प्रभेच्छयोः ।
मयूखे[6] रुज् व्यथायां च रे हूतावव्ययं स्मृतौ ॥ ३८ ॥

ला दाने लूस्तु लवने ल इन्द्रे चलनेऽमृते ।
लिर्लवे लीर्द्रवे श्लेषे कङ्कणे दृढबन्धने ॥ ३९ ॥

श्रीः प्रभा-भारती-लक्ष्मी-सम्पत्सु सरलद्रवे ।
शं सुखे स्याच्च कल्याणे शीः शये शुर्विधौ[7] सति ॥ ४० ॥

षू प्रसूतौ च षः श्रेष्ठे सः परोक्षेऽथ सा श्रियाम् ।
सत् शोभने प्रशस्ते स्याद् विद्यमाने च सज्जने ॥ ४१ ॥

सत्य-पूजितयोश्चाथ स्वः स्वर्ग-परलोकयोः ।
स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं तु निजेऽर्थे हः शिवे करे ॥ ४२ ॥

---

१ ग. फूत्कारे । २ ख. विभौ । ३ ग. गृहे । ४ ख. ग. मीतौ । ५ क. रीर्गते । ६ ख. ग. किरणे । ७ ख. ग. शुः सुधाकरे ।

वीरे भयङ्करे हः स्यात् सम्बुद्धौ पादपूरणे ।
हा शुग्-दुःख-विषादेषु ही विषादेऽपि विस्मये ॥ ४३ ॥
दुःखहेतौ च हुं स्वप्ने परिप्रश्न-वितर्कयोः ।
हि हेतौ पादपूर्त्तौ च विशेषेऽप्यवधारणे ॥ ४४ ॥
हे हूतावपि सम्बुद्धौ हं खेदे रोषभाषणे ।
[1]संस्मृतावव्ययं चाथ क्षः क्षेत्रे रक्षसि [2]क्षमे ॥ ४५ ॥

श्रीमत्सोमभवः सलक्षसचिवो वाक्कण्ठभूषाङ्कभृत्,
सम्प्रासूत सुतं महीपममलं सौभाग्यदेवी च यम् ।
तत्सृष्टेति मुदे विदामनुपमे नानार्थनामालये,
ग्रन्थेऽस्मिन् प्रथमः पृथौ समभवत् काण्डोऽयमेकाक्षरः ॥ ४६ ॥

॥ इति सचिवश्रीमहीपकृतौ महीपकोशस्यानेकार्थतिलके
एकाक्षरसंज्ञः प्रथमः काण्डः ॥ [१५]

---

१ ख. अव्ययाः क्ष्मा भुवि ज्यायां । २ ख. समे ।

[१६] अज्ञातविद्वत्कृत एकाक्षरकोशः ॥

कः प्रजापतिरुद्दिष्टः को वायुरिति शब्दितः ।
कश्चाऽऽत्माऽपि समाख्यातः कः प्रकाश उदाहृतः ॥ १ ॥

कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखं च प्रकीर्त्तितम् ।
कुः पृथिवी समाख्याता कुशब्दः कुत्सितेऽपि च ॥ २ ॥

खमिन्द्रियं समाख्यातं खमाकाशमुदाहृतम् ।
तथा सुखेऽपि खं प्रोक्तं खं शून्येऽपि तथोदितम् ॥ ३ ॥

गो गणपतिरुद्दिष्टो गन्धर्वो गौर्वसुन्धरा ।
गं च गीतेऽपि गो मात्य (माता) गौश्च धेनुः सरस्वती ॥ ४ ॥

घो घण्टीशः समाख्यातः किङ्कणी घा प्रकीर्त्तिता ।
घन(घश्च) मेघः समाख्यातस्तथा घो घर्घरस्वने ॥ ५ ॥

ङकारो भैरवः ख्यातो ङकारो विषये स्मृतः ।
चन्द्रमाश्चः समाख्यातस्तस्करश्च उदाहृतः ॥ ६ ॥

निर्मलं छं समाख्यातं तरलं छु प्रकीर्त्तितम् ।
छेदने छः समाख्यातो विद्वद्भिः शब्दवेदिभिः ॥ ७ ॥

वेगिते जः समाख्यातो जनने जिः प्रकीर्त्तितः ।
जो जेता च समाख्यातः सूरिभिः शब्दशासने ॥ ८ ॥

चारुवाद्ये झकारः स्यान्नष्टे झः समुदाहृतः ।
झञ्झावायुर्झकारः स्याद् ञकारो घर्घरस्वरे ॥ ९ ॥

टा पृथिव्यां करङ्के टो टो ध्वाने च प्रकीर्त्तितः ।
ठो महेश्वर आख्यातस्तथा शून्ये प्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

बृहद्ध्वनिश्च ठः प्रोक्तस्तथा चन्द्रस्य मण्डले ।
डकारः सङ्गरे त्रासे डकारो ध्वनिरुच्यते ॥ ११ ॥

ढकारः कीर्त्तिता ढक्का निर्गुणे च ध्वनावपि ।
णकारो निर्णये ज्ञाने शूकरेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥ १२ ॥
तकारः कथितश्चौरः क्रोडपुच्छे प्रकीर्त्तितः ।
शिलोच्चये थकारः स्यात् थकारो भयरक्षणे ॥ १३ ॥
दं कलत्रं बुधैः प्रोक्तं दान-च्छेदन-दातृषु ।
धं धने च धनेशे च धा च धर्मरतिर्मता ॥ १४ ॥
सम्पत्तौ च तथा धः स्यात् तथैव यक्ष-चन्द्रयोः ।
नकारः सुगते बन्धेऽनुगतौ परिकीर्त्तितः ॥ १५ ॥
पः कुबेरः समाख्यातः पश्चिमे च प्रकीर्त्तितः ।
पवने पः समाख्यातः पा स्यात् पाने च पातरि ॥ १६ ॥
फूत्कारेऽपि च फः प्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे ।
वरुणे बः समाख्यातः कलशे ब उदाहृतः ॥ १७ ॥
पक्षिचञ्चू(?ञ्चौ) निगदितो गगनं बि प्रकीर्त्तितम् ।
नक्षत्रं भं बुधाः प्राहुर्भ्रमरे भः प्रकीर्त्तितः ॥ १८ ॥
दीप्तिर्भा भूश्च भूमिश्च भीर्भयं समुदाहृतम् ।
मः शिवश्चन्द्रमा वेधा मा च लक्ष्मीः प्रकीर्त्तिता ॥ १९ ॥
मार्गे माताऽभिमाने च बन्धने मूः प्रकीर्त्तितः ।
[[1] .... ॥ २० ॥
.... ।
.... ॥ २१ ॥]
.... ।
वदन्ति शं बुधाः श्रेयः शास्तु शास्ता निगद्यते ॥ २२ ॥
शी [च] शयनमित्याहुर्हिंसा शु च निगद्यते ।
षश्च संकीर्त्तितः श्लेष्मा षु च गर्भविमोचने ॥ २३ ॥

---

१ अत्र 'य-र-ल-व' इत्येकाक्षरार्थद्योतकाः श्लोका गलिताः सम्भाव्यन्ते ॥

सः परोक्षः समाख्यातः सा च लक्ष्मीर्निगद्यते ।
सः कोपे वारणे हः स्यात् तथा शूलिनि कीर्त्तितः ॥ २४ ॥

क्षेत्रे वपुषि क्षः प्रोक्तः प्रवदन्ति मनीषिणः ।
अः केशवे निषेधे च आकारश्च पितामहः ॥ २५ ॥

अत्यर्थवाचि मण्डन्यां आशब्दः परिकीर्त्तितः ।
इकार उच्यते कामो लक्ष्मीरीकार इष्यते ॥ २६ ॥

उकारः शङ्करः प्रोक्त ऊकारश्चैव रक्षणे ।
ऋकारो देवमाता स्याद् ॠकारो दनुजप्रसूः ॥ २७ ॥

ऌकारो देवयोनीनां माता सद्भिः प्रकीर्त्तिता ।
एकारो विष्णुराख्यात ऐकारः स्यान्महेश्वरः ॥ २८ ॥

ओकारस्तु भवेद् ब्रह्मा औकारोऽनन्त उच्यते ।
अं चापि स्यात् परंब्रह्म अः स्याच्चैव महेश्वरः ॥ २९ ॥

॥ इति अज्ञातविद्वत्कृत एकाक्षरकोशः समाप्तः ॥ [१६]

[१७] महाराजशाहराजकृता एकाक्षरनाममाला ।

को वायु-शमना-ऽर्केषु ब्रह्मण्यात्मनि पावके ।
सर्वनाम्नि मयूरे च सुख-शीर्ष-जलेषु कम् ॥ १ ॥
खमिन्द्रिये व्योम्नि पुरे शर्मणि त्रिदशालये ।
क्षेत्रे संवेदने बिन्दौ शून्येऽपि च निगद्यते ॥ २ ॥
गौः स्वर्गे च बलीवर्दे कुलिशे किरणे पुमान् ।
स्त्री सौरभेयी-दृग्-बाण-दिग्-वाग्-भूष्वप्सु भूम्नि च ॥ ३ ॥
घो घण्टासु समाख्यातः किङ्कणीषु समीरितः ।
दुस्तरे घर्घरे घोषेऽप्यन्तर्धाने घटेऽपि च ॥ ४ ॥
घोऽश्वमेधे समाख्यातो दानवे घुर्निगद्यते ।
अथार्थे वाक्यविस्तारे प्रसङ्गे पादपूरणे ॥ ५ ॥
समया(स्य)ने बले शेषे चशब्दः परिपठ्यते ।
चश्चन्द्रमाः समाख्यातस्तरणिश्चापि कीर्त्तितः ॥ ६ ॥
चश्चौरे समरे ख्यातः परौ च परिपठ्यते ।
निर्मले छः समाख्यातः सरणिश्छः प्रकीर्त्तितः ॥ ७ ॥
जूराकाशे सरस्वत्यां पिशाच्यां जवने स्त्रियाम् ।
ज्ञो ब्रह्म-बुध-विद्वत्सु श्री [[१]............... ॥ ८ ॥
... . ।
.... ॥ ९ ॥
.... ।
...............] ठः शून्ये प्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥
डः पुमान् वाडवाग्नौ स्याड्डाकिन्यामपि च स्त्रियाम् ।
महाबुद्धे तु तः प्रोक्तस्तु विकल्पेऽवधारणे ॥ ११ ॥
कथ्यते ता सटायां तु योगिनां गोविदां वरैः ।
थं रक्षणे मङ्गले च साध्वसे च नपुंसकम् ॥ १२ ॥

---

१ अत्र झ-ञ-ट अक्षरार्थद्योतकः पाठस्त्रुटितो ज्ञायते ।

शिलोच्चये पुमानेव क्वचिच्च भयरक्षके ।
दुःशब्दो दुष्टवचनो दुशब्दस्तु तरावपि ॥ १३ ॥
न नो निषेधे गदितो ना नरेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
पो वायौ च तथा पाने फो स्थूले यज्ञसाधने ॥ १४ ॥
प्रकटेऽथ रणे फः स्याद् झञ्झावाते च पुंस्ययम् ।
भं नक्षत्रे गभस्तौ स्त्री पुंसि स्याद् भृगुनन्दने ॥ १५ ॥
भूः स्थानमात्रे गदिता धरण्यामपि योषिति ।
मो यमे समये चन्द्रे विषे मा तु श्रियां स्त्रियाम् ॥ १६ ॥
मः शङ्करे च गदितो मा निषेधेऽव्ययं मतम् ।
यः सर्वनामा-ऽनिलयोर्या श्रियां ज्या तु मातरि ॥ १७ ॥
मौर्व्यां धरण्यां निर्दिष्टा द्यु स्याद् गगन-नाकयोः ।
द्यौर्व्योम्नि स्वर्गे गदिता शब्दतत्त्वार्थवेदिभिः ॥ १८ ॥
रः स्मये जलदे तीक्ष्णे वह्नौ राः स्वर्ण-वित्तयोः ।
रीर्भूमौ रुर्भये सूर्ये द्रुस्तरौ च निगद्यते ॥ १९ ॥
त्रिस्तु सङ्ख्याविशेषे स्याद् ह्रीर्लज्जायां प्रकीर्त्तिता ।
श्रीर्वेष-रचना-शोभा-भारती-सरलद्रुमे ॥ २० ॥
लक्ष्म्यां त्रिवर्गसम्पत्तौ वेषोपकरणे मतः ।
स्रुः स्रवे निर्झरे चापि द्रुः स्वर्णे कामरूपिणि ॥ २१ ॥
ल इन्द्रे लवणे व्याजे दाने ला परिकीर्त्तितः ।
ली श्लेषे चपले चापि ग्लौः [कौ] चन्द्रेऽपि गद्यते ॥ २२ ॥
वं प्रचेतसि जानीयादिवार्थे च तदव्ययम् ।
स्वं ज्ञातावात्म-धनयोरात्मीये च प्रचक्षते ॥ २३ ॥
गन्धने वं तु सन्ताने पुंसि वः पवने मतः ।
वा समुच्चय उद्दिष्टं विकल्पोत्प्रेक्षयोरपि ॥ २४ ॥

× × × [अग्रे खण्डितः] × × ×

श्रीमन्महाराजशाहराजस्य कृतौ शब्दरत्नसमन्वयकोशः [१७]

*

[१८] अज्ञातविद्वत्कृता एकाक्षरनाममाला ।

अकारं ब्रह्मदैवत्वं श्वेतं सर्ववशङ्करम् ।
सर्वज्ञत्वं मनोज्ञत्वं कामरूपत्वमम्बिके ! ॥ १ ॥
आकारं तु परा शक्तिः श्वेतमाकर्षसिद्धिदम् ।
इच्छासिद्धिं स्वात्मसिद्धिं रससिद्धिं वरानने ! ॥ २ ॥
इकारं विष्णुदैवत्वं शामरक्षाकरं भवेत् ।
रूप-कान्तिकरं श्रेष्ठं वरेण्यं मोहसिद्धिदम् ॥ ३ ॥
ईकारं दैवतं माया शाममोहकरं परम् ।
वीराणां वनितानां च वशीकारं वरानने ! ॥ ४ ॥
उकारं कालदैवत्वं शामलोकवशङ्करम् ।
मातृकोत्थापनं पुण्यं क्रूररोगविनाशनम् ॥ ५ ॥
ऊकारं पृथिवीबीजं शामरक्षाकरं परम् ।
भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं रिपुनाशनम् ॥ ६ ॥
ऋकारं विधिदैवत्वं पीतं सर्वार्थसिद्धिदम् ।
चिरायुष्यं तपःसिद्धिं पराभोगं वरानने ! ॥ ७ ॥
ॠकारं शिवदैवत्वं रक्तं सर्ववशङ्करम् ।
जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधिवर्जितं श्री-जयप्रदम् ॥ ८ ॥
अश्विनीभ्यां ऌ ॡ च स्याद् रक्तं रोगविनाशनम् ।
तीव्रसिद्धिं भिषक्सिद्धिं औषधीनां च सिद्धिदम् ॥ ९ ॥
एकारं वीरभद्राख्यं पीतं सर्वार्थसिद्धिदम् ।
निग्रहा-ऽनुग्रहकरं भीषणं जयवर्द्धनम् ॥ १० ॥
ऐंकारं भारतीविद्यास्फटिकं ज्ञानसिद्धिदम् ।
चतुःषष्टिकलासिद्धिदायकं परमं शिवे ॥ ११ ॥
ओकारं शिवदैवत्वं ज्योतिर्मयमनुग्रहम् ।
मनोवेगप्रदं श्रेष्ठं शान्तं सर्वफलप्रदम् ॥ १२ ॥
औकारं शाङ्करीविद्यास्फटिकं सर्वसिद्धिदम् ।
सारस्वतं विशेषेण शत्रूणां कोपनाशनम् ॥ १३ ॥

अंकारं बीजरुद्रं स्याद् रक्तं देववशङ्करम् ।
सर्वलोकजयं कार्यसिद्धिदं चित्तशुद्धिदम् ॥ १४ ॥
अःकारं कालरुद्रं स्याद् रक्तं पापनिकृन्तनम् ।
स्वप्रपञ्चोपसंहारं परमात्मप्रबोधकम् ॥ १५ ॥
ककारं ब्रह्मणो बीजं पीतं वृष्टिकरं परम् ।
सञ्जीवनमशेषाणां लोकानां वृद्धिदायकम् ॥ १६ ॥
खकारं जाह्नवीबीजं स्फटिकं पापनाशनम् ।
भोग-मोक्षप्रदं पुण्यं भुक्ति-मुक्तिप्रदायकम् ॥ १७ ॥
गकारं तु गणेशः स्यात् पीताभं विघ्ननाशनम् ।
पूर्वा-ऽपरस्थितिज्ञानं भूलोकविजयं शुभम् ॥ १८ ॥
घकारं भैरवं विद्याद् रक्ताभं शत्रुनाशनम् ।
महाघोरग्रहहरं सारूप्य-जयवर्द्धनम् ॥ १९ ॥
ङकारं कालबीजं स्यात् कृष्णजीवजयं परम् ।
महाभीमजगत्क्षोभ-मरणापत्तिभञ्जनम् ॥ २० ॥
चकारं भद्रकालीयं रक्ताभं शोभनं भवेत् ।
स्वेच्छाकर्षणसिद्धिः स्यात् स्वस्थावेशमयत्नतः ॥ २१ ॥
छकारं भीमकालीयं रक्ताभं वैरिनाशनम् ।
सङ्क्रमेण त्रिलोकघ्नं समरे विजयप्रदम् ॥ २२ ॥
जकारं जातवेदाख्यं सूर्य-सौदामिनीप्रभम् ।
अभिचारं महाघोरमपमृत्युभयापहम् ॥ २३ ॥
झकारमर्द्धनारीशं शामं रक्तसमाकुलम् ।
सर्वसौख्यकरं श्रेष्ठं भोग-मोक्षफलप्रदम् ॥ २४ ॥
ञकारं परमात्मीयमवाङ्मनसगोचरम् ।
सर्वज्ञानप्रदं ब्रह्मज्ञानदं श्री-जयप्रदम् ॥ २५ ॥
टकारं पृथिवीबीजं श्वेतं संहारकारकम् ।
क्रव्यादावोषधीवृद्धिपातालनिधिदर्शनम् ॥ २६ ॥

ठकारं चन्द्रबीजं स्यात् स्फटिकं शत्रुनाशनम् ।
रोग-क्ष्वेडहरं दिव्यं महाज्वरहरं परम् ॥ २७ ॥
डकारं शुक्रबीजं स्यात् पीताभं विजयं भवेत् ।
मृतसञ्जीवनं चास्य महामायावशं शिवे ॥ २८ ॥
ढंकारं वैष्णवं विद्यात् पीतं सर्वार्थसिद्धिदम् ।
बलप्रदं जलस्तम्भं पातालस्यापि दर्शनम् ॥ २९ ॥
णंकारं बलभद्रीयं श्वेतं बलविवर्धनम् ।
नित्यत्वं युद्धवीर्यत्वं रिपुदर्पविनाशनम् ॥ ३० ॥
तकारं धनदं विद्यात् पीतमैश्वर्यवर्धनम् ।
यक्ष-किन्नर-सिद्धानां वशीकारं जगद्वशम् ॥ ३१ ॥
थंकारं तु परा शक्तिः रक्तं कालजयं भवेत् ।
शान्तिदं पौष्टिकं चैव भाग्यमायुष्यवर्धनम् ॥ ३२ ॥
दकारं दुर्गाबीजं स्यात् शामं सर्वार्थसिद्धिदम् ।
निग्रहा-ऽनुग्रहकरं भोग-मोक्षैकसाधनम् ॥ ३३ ॥
धकारं धर्मबीजं स्यात् श्वेतं पुण्यविवर्धनम् ।
सर्वदेवमयं दिव्यं सर्वदर्शनदर्शकम् ॥ ३४ ॥
नकारं निर्विकल्पं स्यादप्रमेयाभमक्षरम् ।
वायुवेगं मनोवेगमिच्छारूपं भवेद् ध्रुवम् ॥ ३५ ॥
पकारमग्निबीजं स्याद् रक्तं सर्वहरक्षणम् ।
स्त्री-पुं-नपुंसकादीनां भवेदाकर्षणं शिवे ॥ ३६ ॥
फंकारं भैरवं विद्याद् रक्ताभं विजयप्रदम् ।
महाग्रहहरं सर्वज्वररोगविनाशनम् ॥ ३७ ॥
बकारमश्विनीबीजं पीतं रोगहरं परम् ।
औषधस्य महावीर्यवृद्धिदं जयवर्द्धनम् ॥ ३८ ॥
भकारं भार्गवं ज्ञेयं ज्योतिषाभमनामयम् ।
आयुरारोग्यदं श्रेष्ठमशेषश्रीविवर्द्धनम् ॥ ३९ ॥

मकारमीश्वरं विद्याज्ज्योतिरक्तं सुखावहम् ।
वश्या-ऽऽकर्षण-सन्तान-सिद्धिदानैकतत्परम् ॥ ४० ॥
यकारं वायुबीजं स्यात् कृष्णं बलविवर्धनम् ।
सर्वोच्चाटकरं क्रूरं सङ्ग्रामे जयवर्धनम् ॥ ४१ ॥
रेफं कृशानुबीजं स्याद् रक्ताभं सर्वनाशनम् ।
जङ्गमाकर्षणं युद्धे दिष्टसेनाबलं तथा ॥ ४२ ॥
लकारं शक्रबीजं स्यात् पीतं सर्वफलप्रदम् ।
अग्निस्तम्भं जलस्तम्भं स्वेच्छास्तम्भं विशेषतः ॥ ४३ ॥
वकारं वरुणं विद्यात् श्वेतं स्वेच्छाभिवृद्धिदम् ।
आकर्षणं जलध्वानमशेषज्वरनाशनम् ॥ ४४ ॥
शकारं शङ्करं विद्यात् तेजः-सौभाग्यवर्धनम् ।
अन्योन्यकलहा[द्] देववैरिणां नाशनं भवेत् ॥ ४५ ॥
षकारं द्वादशादित्यं ज्योतिरारोग्यवर्धनम् ।
शमनं सर्वरोगाणामायु-र्विद्याभिवर्धनम् ॥ ४६ ॥
सकारं भारतीबीजं श्वेतं सारस्वतप्रदम् ।
प्रतिविद्वज्जनजयं वराणां योषितां वशम् ॥ ४७ ॥
सदाशिवं हकारं स्याद् धूम्रं ज्ञानार्थसिद्धिदम् ।
अणिमाद्यष्टसिद्धिः स्याच्चतुःषष्टिकला अपि ॥ ४८ ॥
ळंकारं पृथिवीबीजं शामं सिद्धिकरं परम् ।
संहरेद् दोषराशीनामपि भूद्रव्यदर्शनम् ॥ ४९ ॥
क्षकारं श्रीनृसिंहः स्यात् स्फटिकं मोक्षसिद्धिदम् ।
रिपुगर्वहरं सर्वलोकक्षोभकरं परम् ॥ ५० ॥

इति अज्ञातविद्वत्कृता एकाक्षर[?बीज]नाममाला ॥ [१८]
[आकाशभैरवकल्पान्तर्गता]

*

[१९] मेदिनीकारकृता एकाक्षरनाममाला ।

को ब्रह्मणि समीरा-ऽऽत्म-यम-दक्षेषु भास्करे ।
कामग्रन्थौ चक्रिणि च पतत्त्रि-पार्थिवे तथा ॥ १ ॥

मयूरेऽग्नौ न पुंसि स्यात् सुख-शीर्ष-जलेषु कम् ।
खमिन्द्रिये पुरे क्षेत्रे शून्ये बिन्दौ विहायसि ॥ २ ॥

संवेदने देवलोके कर्मण्यपि नपुंसकम् ।
गौः स्वर्गे च बलीवर्दे रश्मौ च कुलिशे पुमान् ॥ ३ ॥

स्त्री सौरभेयी-दृग्-बाण-दिग्-वाग्-भूष्वप्सु भूम्नि च ।
घो घण्टायां घर्घरे ना स्त्रियां तु काञ्चि-घातयोः ॥ ४ ॥

ङः पुमान् विषये ख्यातः स्पृहायां विषयस्य च ।
चश्चण्डेशे पुमानुक्तः कच्छपे चन्द्र-चौरयोः ॥ ५ ॥

चाऽन्वाचये समाहारेऽप्यन्योन्यार्थे समुच्चये ।
पक्षान्तरे तथा पादपूरणेऽप्यवधारणे ॥ ६ ॥

छा छादने स्त्रियां ख्याता निर्मलेऽन्यवदिष्यते ।
जो ना मृत्युञ्जये जन्यां तातमात्रे जनार्दने ॥ ७ ॥

जूस्त्वरागमने प्रोक्ता सामान्यगमने स्त्रियाम् ।
जूराकाश-सरस्वत्यां पिशाच्यां जवने स्त्रियाम् ॥ ८ ॥

झो झण्टीशे सुरगुरौ दैत्यराजे ध्वनावपि ।
ञः पुमान् स्याद् बलीवर्दे शुके वाममतावपि ॥ ९ ॥

ज्ञो ब्रह्म-बुध-विद्वत्सु कथितः शब्दवेदिभिः ।
टः पुमान् वामने पादे निःस्वनेऽपि क्वचिन्मतः ॥ १० ॥

ठो मण्डले चन्द्रबिम्बे शून्ये च लोकगोचरे ।
डः पुमान् वाडवाग्नौ स्याड्डाकिन्यां स्त्री निगद्यते ॥ ११ ॥

ढो ढक्कायां पुमानुक्तः शुनि तस्य च लाङ्गुले ।
णः पुमान् बिन्दुदेवे स्याद् भूषणे गुणवर्जिते ॥ १२ ॥
पानीयनिलयेऽपीति केचिदूचुर्विपश्चितः ।
तश्चौरा-ऽमृत-पुच्छेषु क्रोडे म्लेच्छे च कुत्रचित् ॥ १३ ॥
अपुमांस्तरणे पुण्ये कथितः शब्दवेदिभिः ।
तु पादपूरणे भेदे समुच्चयेऽवधारणे ॥ १४ ॥
पक्षान्तरे नियोगे च प्रशंसायां विनिग्रहे ।
थं रक्षणे मङ्गले च साध्वसे च नपुंसकम् ॥ १५ ॥
दः पुमानचले दत्ते स्त्रियां शोधन-दानयोः ।
छेदोपताप-रक्षासु पुमांस्तु दातरि स्मृतः ॥ १६ ॥
धो ना धर्मे कुबेरे च क्लीबं तु वसुनि स्मृतम् ।
धो धा च ब्रह्मणि ख्यातो धा तु स्याद्धारकेऽपि च ॥ १७ ॥
धीर्ज्ञाने ज्ञानभेदेऽपि धूः स्मृता धूनने स्त्रियाम् ।
नः पुमान् सुगते बन्धे द्विरण्डे प्रस्तुतेऽपि च ॥ १८ ॥
न स्यान्निषेधोपमयोर्निर्निवेश-भृशार्थयोः ।
नित्यार्थ-संशय-क्षेप-कीश-लोप-रमेषु च ॥ १९ ॥
सामीप्या-ऽऽश्रय-दानेषु मोक्षा-ऽन्त-भवबन्धने ।
राश्यधोभावविन्यासे नु वितर्का-ऽपमानयोः ॥ २० ॥
विकल्पा-ऽनुनया-ऽतीते प्रश्ने हेत्वपदेशयोः ।
पो ना वाता-ऽण्ड-पूतेषु पाने पातरि कीर्त्तितः ॥ २१ ॥
स्त्रियां तु रक्षणे पाने पूते पूरितके च सः ।
फो यज्ञसाधने स्फाने झञ्झावाते च पुंस्ययम् ॥ २२ ॥
फं रूक्षोक्तौ फूत्कारे च तथा निष्फलभाषणे ।
बः पुमान् वरुणे सिन्धौ भगे तोये गतेऽपि च ॥ २३ ॥

गन्धने तन्तुसन्ताने पुंस्येव वपने स्मृतः ।
भं नक्षत्रे गभस्तौ स्त्री पुंसि स्याद् भृगुनन्दने ॥ २४ ॥

भूः स्थानमात्रे कथिता धरण्यामपि योषिति ।
मो यमे समयेऽपि स्याद् विषे च मधुसूदने ॥ २५ ॥

मा स्त्री पद्मालयायां स्यात् पुंलिङ्गश्चन्द्रशेखरे ।
मा वारणे विकल्पे च स्माऽतीते पादपूरणे ॥ २६ ॥

यो ना वायौ यमने या यात्रा-ऽऽप्ति-धूमित-त्यागेषु ।
वारण-योग-समज्ञा-यानेषु पुमांस्तु गन्तरि ख्यातः ॥ २७ ॥

ज्या मातरि वसुधायां मौर्व्यां द्यु क्लीबमह्नि गगने च ।
ना ज्वलने द्यौस्त्रिदशालय-त्रिदशवर्त्मनोर्योषित् ॥ २८ ॥

रः स्मृतः पावके तीक्ष्णे रा पुंसि स्वर्ण-वित्तयोः ।
श्रीर्वेश-रचना-शोभा-भारती-सरलद्रुमे ॥ २९ ॥

लक्ष्म्यां त्रिवर्ग-सम्पत्ति-वि[?वि]धोपकरणेषु च ।
विभूतौ च मतौ च स्त्री स्रुः स्त्रियां निर्झरे स्रवे ॥ ३० ॥

लः शक्रे ला तु दाने स्याद् ग्रहणेऽपि निगद्यते ।
ली श्लेषणे च चपले ग्लौ धरण्यां निशापतौ ॥ ३१ ॥

वः सान्त्वने च वाते च वरुणे च निगद्यते ।
वं प्रचेतसि जानीयादिवार्थे च तदव्ययम् ॥ ३२ ॥

वा स्याद् विकल्पोपमयोर्वितर्के पादपूरणे ।
समुच्चये च विस्रम्भे नानार्था-ऽतीतयोरपि ॥ ३३ ॥

वै स्यात् सम्बोधने पादपूरणेऽनुनयेऽपि च ।
वि निग्रहे नियोगे च तथैव पदपूरणे ॥ ३४ ॥

निश्चयेऽसहने हेतावव्याप्ति-विनियोगयोः ।
ईषदर्थे परिभवे शुद्धावालम्बनेऽपि च ॥ ३५ ॥

स्वः स्यात् पुंस्यात्मनि ज्ञातौ त्रिष्वात्मीये धनेऽस्त्रियाम् ।
शं वदन्ति बुधाः श्रेयः शश्च शस्त्रं निगद्यते ॥ ३६ ॥

शीश्च शयनमित्याहुः शास्त्रं शा च निगद्यते ।
षः कचे पुंसि विज्ञेयः श्रेष्ठे स्यादभिधेयवत् ॥ ३७ ॥

क्षः संवर्त्ते राक्षसे च नरसिंहे च विद्युति ।
क्षेत्रे नाशे क्षेत्रपाले क्षिर्निवासे गतौ क्षये ॥ ३८ ॥

सा जीवेच्छे पञ्चवक्त्रे भृगौ भासि निशापतौ ।
शक्तौ तु सा स्त्रियां सुस्तु प्रसवे गर्भमोचने ॥ ३९ ॥

हः शिवे सलिले शून्ये धारणे मङ्गलेऽपि च ।
गगने नकुलीशे च रक्ते नाके च वर्ण्यते ॥ ४० ॥

ह स्यात् सम्बोधने पादपूरणे च विनिग्रहे ।
नियोगे च क्षिपायां स्यात् कुत्सायामपि दृश्यते ॥ ४१ ॥

हा विषादे च शोके च कुत्सा-दुःखार्थयोरपि ।
हि पादपूरणे हेतौ विशेषेऽप्यवधारणे ॥ ४२ ॥
प्रश्ने हेत्वपदेशे च सम्भ्रमा-ऽसूययोरपि ।
ही दुःखे हेतावाख्यातो विषादे विस्मयेऽपि च ॥ ४३ ॥

हे सम्बोधन आह्वानेऽप्यसूयादौ च दृश्यते ।
है सम्बोधन आह्वाने हो हौ शब्दौ तथैतयोः ॥ ४४ ॥

अशब्दः स्यादभावेऽपि स्वल्पार्थ-प्रतिषेधयोः ।
अनुकम्पायां च तथा वासुदेवे त्वनव्ययम् ॥ ४५ ॥

आ प्रगृह्यं स्मृतौ वाक्येऽनुकम्पायां समुच्चये ।
इ खेदे च रुषोक्तौ चापाकरणा-ऽनुकम्पयोः ॥ ४६ ॥
ई विषादेऽनुकम्पायां लक्ष्म्यां पुनरनव्ययम् ।
उ सम्बोधन-रोषोक्त्योरनुकम्पा-नियोगयोः ॥ ४७ ॥

पदस्य पूरणे पादपूरणेऽपि च दृश्यते ।
ऊ वाक्या-ऽऽरम्भ-रक्षा-ऽनुकम्पास्वपि च दृश्यते ॥ ४८ ॥
ऋशब्दो गर्हणे वाक्ये देवाम्बायां त्वनव्ययम् ।
ॠ वाक्यारम्भे रक्षायां वक्षः-स्मृत्योरनव्ययम् ॥ ४९ ॥
देवाम्बायां दनौ चापि भैरवे दनुजे गतौ ।
ऌकारो देवताम्बायां भुवि कुध्रे च कीर्त्तितः ॥ ५० ॥
ॡकारो देवनार्यां स्यान्नार्यात्मन्यपि मातरि ।
ए स्मृतावप्यसूया-ऽनुकम्पा-ऽऽमन्त्रण-हूतिषु ॥ ५१ ॥
ऐशब्दो दृश्यते हूतौ स्मृत्या-ऽऽमन्त्रणयोरपि ।
ओ सम्बोधन आह्वाने स्मरणे चानुकम्पने ॥ ५२ ॥
औशब्दः कथितो हूतौ तथा सम्बोधनेऽपि च ।
स्त्री तु विश्वम्भरायां स्यात् पुमांस्तु निःस्वने स्मृतः ॥ ५३ ॥

इति मेदिनीकारकृता एकाक्षरनाममाला ॥ [१९]

[मेदिनीकोशान्तर्गता]

[२०] एकाक्षरीमातृकाकोशः ।

श्रीगणेशं महेशानं भारतीमीश्वरं शिवम् ।
नत्वा वक्ष्ये मातृकाणां निघण्टं बालबुद्धये ॥ १ ॥

ॐ. ध्रुवस्तारस्त्रिवृद् ब्रह्म वेदादिस्तारकोऽव्ययः ।
प्रणवश्च त्रिमात्रोऽपि ॐकारो ज्योतिरादितः ॥ २ ॥

अ. श्रीकण्ठः केशवश्चापि निवृत्तिश्च स्वरादिकः ।
अकारो मात्रि(तृ)काद्यश्च वात इत्यभिधीयते ॥ ३ ॥

आ. नारायणस्तथाऽनन्तो मुरवृत्तो गुरुस्तथा ।
विष्णुः(ष्णु)शय्या तथा शेषो दीर्घ आकार एव च ॥ ४ ॥

इ. माधवः सूक्ष्मः(क्ष्म)संज्ञश्च विद्या दक्षिणलोचनम् ।
गन्धर्वः पाञ्चजन्यश्च इकारश्चमुकाङ्कुरः ॥ ५ ॥

ई. गोविन्दश्च त्रिमूर्त्तीशः शान्तिः स्याद् वामलोचनम् ।
नृसिंहास्त्रं तथा माया ईकारोऽपि सुरेश्वरः ॥ ६ ॥

उ. अमरेशस्तथा विष्णुरिन्धिका च गजाङ्कुशः ।
दक्षकर्णश्च विजयी उकारो मन्मथाधिपः ॥ ७ ॥

ऊ. अर्वीशो(उर्वीशो) दीपिका वामश्रवणं मधुसूदनः ।
इन्द्रचापः षण्मुखश्च ऊकारो रक्षणाधिपः ॥ ८ ॥

ऋ. देविका दक्षनाशा च भारभूतिस्त्रिविक्रमः ।
देवमाता रिपुघ्नश्च ऋकारस्तापनस्तथा ॥ ९ ॥

ॠ. अतिथीशो वामनश्च मोचिका वामनासिका ।
दैत्यमाता च दैवज्ञ ॠकारस्त्रिपुरान्तकः ॥ १० ॥

ऌ. श्रीधरश्च परास्थाणुर्दक्षगण्डस्त्रिवेदकः ।
एकाङ्घ्रिर्वज्रदण्डश्च व्योमर्द्धिर्ऌ स्वरः स्मृतः ॥ ११ ॥

ॡ. हृषीकेशो हरः सूक्ष्मो वामगण्डः कुबेरदृक् ।
अर्द्धर्चो नीलचरणी ॡकारश्च त्रिकूटकः ॥ १२ ॥

ए. झण्टीशः पद्मनाभश्च शक्तिः सूक्ष्मामृता भगः ।
ऊर्ध्वोष्ठगः कामरूप एकारश्च त्रिकोणकः ॥ १३ ॥

ऐ. ज्ञानामृतो भौतिकश्चाधरो दामोदरस्तथा ।
वागीशो वर्म भयद ऐकारस्त्रिपुरस्तथा ॥ १४ ॥

ओ. सद्योजातो वासुदेव ऊर्ध्वदन्तस्त्रिमात्रकः ।
आप्यायनीमन्त्रनाथ ओकारो नागसंज्ञकः ॥ १५ ॥

औ. सङ्कर्षणी[1] तु ग्रहेशो मुरारिर्व्यापिनी तथा ।
अधौदन्तगतो मायी नृसिंहाङ्गस्तथौ [2]स्वरः ॥ १६ ॥

अं. अक्रूरो व्योमरूपश्च प्रद्युम्नश्चन्द्रसंज्ञकः ।
अनुस्वारस्तथा बिन्दुरङ्कारश्च शिरोऽव्ययः ॥ १७ ॥

अः. अनन्तश्च महासेनोऽनिरुद्धो रसवर्णकः ।
कन्यास्तननिभः सर्गो विसर्गश्चान्तिमस्वरः ॥ १८ ॥

क. क्रोधीशो धातृसंज्ञश्च चक्री सृष्टिः करादिगः ।
वर्गादिर्गैः[3] पादवेषः ककारः कामगः स्मृतः ॥ १९ ॥

ख. क्रुधर्द्धि-गदि-चण्डीशाः खेटो दक्षिणकूर्परः ।
कैटभारिश्च मातङ्गः संहारः खार्णकः स्मृतः ॥ २० ॥

ग. स्मृतिः पञ्चान्तकः शार्ङ्गी गणेशो मणिबन्धगः ।
गोमुखो गजकुम्भश्च गकारः सिंहसंज्ञकः ॥ २१ ॥

घ. खड्गी शिवोत्तमो मेधा दक्षिणाङ्गुलिमूलगः ।
घनो घनस्वरश्चैव घकारो ङादिमः स्मृतः ॥ २२ ॥

---

१ ख. ०र्षणोऽनुग्रहेशो । २ क. रसः । ३ ख. ०दि यादवेशः स्यात् ककारः ।
४ ख. ०ङ्गुलगः परः ।

ङ. शङ्खाङ्को[1] रुद्रकान्तिश्च दक्षाङ्गुल्यग्रसंस्थितः ।
क्लीबवक्त्रश्च भद्रेशो ङकारश्चानुनासिकः ॥ २३ ॥

च. हली कूर्मेश्वरो लक्ष्मीर्वामबाह्वादिगस्तथा ।
चित्रधारी चञ्चलश्च चकारः संस्मृतो बुधैः ॥ २४ ॥

छ. एकनेत्रश्च मुशली वामकूर्परगोद्युतिः ।
त्रिबिन्दुकस्तथा[2] चारी छकारः श्लेष्मकाभिधः ॥ २५ ॥

ज. स्थिराजपद्मोजपजः शूली च चतुराननः ।
मणिबन्धगतो वामे जकारो[3] जनकोत्तमः ॥ २६ ॥

झ. स्थितिः पाशी तथाऽजेशो वामाङ्गुलितलस्थितिः[4] ।
स्वस्तिकः स्थाणुसंज्ञश्च झकारो जान्तसंज्ञकः ॥ २७ ॥

ञ. वामाङ्गुल्यग्रगः सिद्धिरङ्कुशी शर्वसंज्ञकः ।
झान्तगो[5] ह्यनुनासश्च ञकारश्च निरञ्जनः ॥ २८ ॥

ट. जरा मुकुन्दः सोमेशो दक्षपादादिगोमुखः ।
गजाङ्कुशश्च बालेन्दुरमृताद्यष्टकः स्मृतः ॥ २९ ॥

ठ. लाङ्गलीशो नन्दजश्च पालिनी च कमण्डलुः ।
दक्षजानुगतः स्थायी ठकारः स्थविरः स्मृतः ॥ ३० ॥

ड. नन्दी क्षान्तिर्दारकश्च डामरो दक्षगुल्फगः ।
व्याघ्रपादः शुभाङ्घ्रिश्च डकारस्तोमरो मतः ॥ ३१ ॥

ढ. ऐश्वरी चार्द्धनारीशो नरः शाखान्तराकृतिः ।
दक्षपादाङ्गुलीमूलो ढलो ढक्को ढकारकः ॥ ३२ ॥

---

१ क. संज्ञाको । २ क. त्रिबुन्दक । ३ क. ञ्कारोऽञ्जनको० । ४ ख. स्थितः ।
५ क. मातङ्गो ह्यनुगानश्च ।

ण. उमाकान्तो नरकजिद् रतिर्दक्षपदाग्रगः ।
निर्वाणस्त्रिगुणाकारस्त्रिरेखो णः समीरितः ॥ ३३ ॥

त. वामोरूमूलनिलय आषाढी कामिका हरिः ।
तीव्रश्च तरलो नीलस्तकारः कीर्त्तितो[1] बुधैः ॥ ३४ ॥

थ. दण्डीशो वरदः कृष्णो वामजानुगतः स्मरः ।
शौरी चापि विशालाक्षः थकारः परिकीर्त्तितः ॥ ३५ ॥

द. सत्योऽत्रीशो ह्लादिनी च वामगुल्फगतस्तथा ।
शूली कुबेरो दाता च दकारो धादिमः स्मृतः ॥ ३६ ॥

ध. मीनेशः सात्वतः प्रीतिर्वामपादाङ्गुलीगतः ।
धनेशो धरणीशश्च धकारो दान्तिमः स्मृतः ॥ ३७ ॥

न. शौरी मेषेश्वरी दीर्घा वामपादाग्रसंस्थितः[2] ।
नरो नदीनो नादी च नकारश्चानुनासिकः ॥ ३८ ॥

प. तीक्ष्णश्च लोहितः शूरो दक्षपार्श्वश्च पार्थिवः ।
पद्मेशो नान्तिमः फादिः पकारोऽपि प्रकीर्त्तितः ॥ ३९ ॥

फ. [3]जनार्दनः शिखी रौद्री वामपार्श्वकृतालयः ।
फट्कारः प्रोच्यते सद्भिः फकारः पान्तिमः स्मृतः ॥४०॥

ब. छलगण्डो भूधरश्च भयपृष्ठगतस्तथा ।
सुरसो वज्रमुष्टिश्च बकारो भादिमो मतः ॥ ४१ ॥

भ. विश्वमूर्त्तिर्द्विरण्डेशो निद्रा नाभिगतोऽपि च ।
भ्रकुटी च भरद्वाजो भकारश्च [4]जयावहः ॥ ४२ ॥

म. वैकुण्ठश्च महाकालस्तन्द्री जठरसंस्थितः ।
मन्त्रेशो मण्डलो मानी विषः सूर्यो मकारकः ॥ ४३ ॥

---

१ ख. कीर्यते । २ ख. दाङ्गुलीगतः । ३ क. जनार्दनी । ४ क. जयापहः ।

य. क्षुधा बाला च वायुस्त्वग्[1] हृद्गतः पुरुषोत्तमः ।
यमुनो यामुनेयश्च यकारो मान्तिमः स्मृतः ॥ ४४ ॥

र. क्रोधिनी च भुजङ्गेशी ज्वाली रुधिर-पावकौ ।
रोचिष्मान् दक्षिणांशश्च रुचिरो रेफ ईरितः ॥ ४५ ॥

ल. क्रिया ककुद्गतो मांसं पिनाकी भूर्बलानुजः ।
लम्पटः शक्रसंज्ञश्च वाद्यो रान्तो लकारकः ॥ ४६ ॥

व. वालो वामांसनिलयो मेदो वारिद-वारुणौ ।
[2]उत्कारी जलसंज्ञश्च खड्गीशोऽपि वकारकः ॥ ४७ ॥

श. मृत्युर्बको वृषघ्नश्च हृदो दक्षकरस्थि[3]तिः ।
शङ्कुकर्णोऽस्थिसंज्ञश्च शकारो विद्भिरीरितः ॥ ४८ ॥

ष. वृषः श्वेतेश्वरः पीता मज्जा हृद् वामबाहुगः ।
षडाननः षकारश्च कीर्त्ति[4]तश्च बुधैः खरः ॥ ४९ ॥

स. भृगुः श्वेतस्तथा हंसो हृदो दक्षिणपादगः ।
समयः सामगः शुक्रः सङ्गतिः सार्णकः शशी ॥ ५० ॥

ह. नभो वराहो नकुलो हृदो वामपदस्थितः ।
सदाशिवोऽरुणप्राणो हकारश्च हयाननः ॥ ५१ ॥

ळ. हृदयान्नाभिसंस्थानः शिवेशो विमलोऽसितः ।
लघुप्रयत्नश्चोपान्त्यो ल(ळ)कारः प्रोच्यते बुधैः ॥ ५२ ॥

क्ष. संवर्त्तको नृसिंहश्च हृदयान्मुखसंस्थितः ।
अनन्तः परमात्मा च वज्रकायोऽन्तिमाक्षरः ॥ ५३ ॥

इति हादिमते [5]मातृकाकोशः समाप्तः ॥

---

१ क. ग्, घृतश्च पुरु । २ ख. उत्कारो जल । ३ ख. स्थितः । ४ ख. कीर्तितोऽपि ।
५ ख. तन्त्रकोशः ।

[२१] अजिरादि-एकाक्षरी नाममाला

अजिरे कथितोऽकारो हरि-हर-कमठ-[1]प्रजापतीज्यासु ।
गौरीगोरवकारणचरणरणन्नूपुराभरणे ॥ १ ॥

सुखविततौ परितापे स्यादिह आकार आपकुम्भे च ।
[2]चिरेविस्मृतसंस्मरणे लघुसम्मतसर्वगे भावे ॥ २ ॥

कुसुमशरे गिरिकुहरे शशधरकिरणे करेणुक-क्षौद्रे ।
भुजगफणामणिरोचिषि पठित इकारस्तु हीकारे ॥ ३ ॥

ईकारः कमलायां कमलदले कमलकेसरे भुजगे ।
गिरिशिखरे गिरिवारुणि सुरपतिचापे च रचनायाम् ॥ ४ ॥

तरुशिखरे [3]गिरिमौलौ गौरीहृदये च निगदित उकारः ।
[4]शशधररोचिषि शुचेरपि (? शुचिनि च) [5]शुक्ले पक्षेऽत्रपे नेत्रे ॥५॥

ऊकारो [6]रजनीकृति पुरुषे [7]राजन्यगवलमङ्गी च ।
प्राङ्गणमङ्गलकलशे देवे क्वचिदप्यथोन्मादे ॥ ६ ॥

विभवे महति ऋकारो रिपुसूदन्यां गजे गिरौ विवरे ।
ऋद्धिविशेषे देवे वि[8]नये योनौ सुराणां च ॥ ७ ॥

अम्बुनि चिहुरे फणिदृशि ॠकारस्तुहिन-कमल-करुणासु ।
[9]ॠयुक्ते त्रिदशेऽपि च फणिपतिबाह्वोरलङ्कारे ॥ ८ ॥

मरुदशने करिदशने दानवदशने कुलीरदशने च ।
[10]लिप्ताङ्गहृदयदेहे ऋजुर्ॡकारं सदा पठितम् ॥ ९ ॥

---

१ क. ख. ०प्रजापतीर्यासु । ग. घ. ङ. ०प्रजापतिर्यासु । २ ग. चिरविस्मृतिसंस्मरणे । ३ क. ख. गिरिमूले । ग. हरमौलौ । ४ क. ख. घ. ङ. शशधररोचिशुचिरपि । ५ क. ख. घ. शुक्लः सुक्षेत्रपे नेत्रे । ग. शुक्ले सुक्षेत्रपे नेत्रे । ६ क. ख. रजनीकृतपुरुषे । ७ क. ख. ग. राजन्यजगलमङ्गी च । ८ ग. घ. ङ. द्वितये । ९ क. ख. ऋजुरुक्ते । ग. रीयुक्ते । १० क. ख. लिप्ताङ्गहृदये देवे । ग. लिप्ताङ्गहृदयदेवे ।

[1]शक्रशरे कृकलासे [2]नीलीजातौ [3]स्वैरे च लृकारः ।
मकरे [4]शितमकरेन्द्रे नयनच्छवि-लोचनापाङ्गे ॥ १० ॥

मणिकुट्टिम-हर्म्योदर-वासरसुख-गगन-नीरधारासु ।
एकारो निशि निगदित एकादशमे [5]पशावपि च ॥ ११ ॥

ऐकारो दिग्दन्तिनि सुरपतिदन्तावले च सितपिच्छे ।
[6]ऐरावत इभभेदे पर्वतशिखरेऽपि चार्वर्थे ॥ १२ ॥

ओतौ केतौ धनदे शरा-ऽसि-जम्बाल-सरसिज-जलेषु ।
कुड्या-ऽम्बुनामदेवे विदित ओकार [7]खट्वासु ॥ १३ ॥

औकारः परमार्थे सिद्धविमाने [8]विशुद्धकार्ये च ।
औषधपाने नेमि(?) च चन्द्रकलायामुमातनये ॥ १४ ॥

अंकारः सुखवपने मन्त्रे द्राघीयसि सुनिष्कम्पे ।
[9]अञ्जन-योग-नियोगे सप्तस्वरसे[गे ?] सुगाने च ॥ १५ ॥

रविरथतुरङ्गरश्मौ अःकारः कथितः सिद्धमन्त्रे च ।
शशिमण्डले च [10]चक्रे कुर्कुटशिरसः शिखायां च ॥ १६ ॥

ब्रह्मणि शिरसि च [11]सलिलेऽनाहतशब्दे च निगदितः ककारः ।
चामीकरेऽप्युदात्ते यज्ञविधौ शुक्लवर्णे च ॥ १७ ॥

खः स्यादिह [12]खगराजो नभोगतौ निश्चये [13]तथा दीने ।
पावनमपि दन्तीनां शान्तरसे चैव उदराग्नौ ॥ १८ ॥

---

१ ङ. शक्रधरे । २ क. ख. ग. लीलाजातौ । ३ ग. घ. ङ. सरे । ४ ङ. शतसकरीन्द्रे । ५ क. ख. ग. पशोरपि । ६ ग. ईरापतिइभदेवे । घ. एरापतिइभदेवे । ङ. ऐरापतिइभदेवे । ७ क. ख. ग. घ. खट्वां च । ८ ङ. विशुद्धकार्येषु । ९ क. ख. अञ्जन-योग-नियोगे सप्तमअसुरे भुनागे च । ग. अञ्जनिनामनि योगे सप्तस्वरसे समाने च । घ. अञ्जनयाननियोगे सप्तअरसे सगाने च । १० क. ख. शुक्रे । ११ ग. घ. ०ले अनहतशब्दे । १२ ङ. नगराजो । १३ क. ख. ग. क्षमे । घ. क्षते ।

क्षितिनयने परमार्थे सुरसिद्ध्यां च इव(?) निगदितः गकारः ।
गत्याक्षेपे वस्तुनि गान्धारेऽप्यथ च वाचायाम् ॥ १९ ॥
घर्घरशब्द-पराक्रम-निदाघ-संवेग-वाद्यभूमिश्च ।
[1]विशिखश्चिगवेतस्याभोगीने(?) स्याच्च घः शब्दः ॥ २० ॥
नित्यविशेषे विरसे स्याद् दिव्ये केपये(?) [2]पैराभागे ।
विप्रकनिष्ठाङ्गुल्यां भरहररेखासु च चकारः ॥ २१ ॥
भवति प्रलापनित्ये शक्तिपरे चाम्बुदे फणिपतौ च ।
त्र्यक्षरमन्त्रविभागे छः शब्दः पारदे दाने ॥ २२ ॥
[3]योन्यामधरितशब्दे जः स्यादिह नीर[4]देऽप्यसम्बध्ये ।
कार्याधरण-महोत्सव-विस्तार-समुद्रवेलासु ॥ २३ ॥
पक्वौषध्यापाने [5]पैात्रविशेषे च निगदितः झकारः ।
पद्मासने च दर्पे भद्रोपायाप्रतापे च ॥ २४ ॥
[6]तीव्रनिनादोत्ताने ञः शब्दः [7]स्याँदले विपत्तौ च ।
दावाग्नौ [8]चापि गते उपलेप-कलाप-सीमासु ॥ २५ ॥
[9]रक्षोदर-सव्याकृति-धूमर्दास्येतनो(?) रथावर्त्ते ।
ठः शब्दः स्याद् भवने दिनकरकिरणेषु परितापे ॥ २६ ॥
भवति डकारोऽतिशये रतदुरसाविस्मये च दुर्गपथे ।
अन्दोलने च नारी (र्यां) इक्षुरसे वाम-दक्षिणयोः ॥ २७ ॥
ढः शब्दस्तु पिशाचे मूका-ऽलस-मूर्ख-मुग्ध-रोगेषु ।
सव्या-ऽपसव्ययोरपि सुभगेऽप्यधिके भगे चैव ॥ २८ ॥

---

१ ग. वैशाद्यश्चिगचेतनस्याभोगीनः स्याद् घः शब्दः । घ. वैशषश्चिगचेततस्याभोगीनः स्याद् घः शब्दः । ङ. वैशेपिस्विकचेतः स्याद् भोगीनः स्याच्च घशब्दः । २ ङ. पराभोगे । ३ क. ख. घ. योन्यामधिरितशब्दो जः । ४ क. ख. ०देऽप्यसन्धन्यः । ग. ०देऽप्यसन्धत्या । घ. ०देऽप्यसन्थव्यः । ५ ङ. पानविशेपे । ६ क. ख. तीव्रे निनादोत्ताने । ७ ङ. स्यादिले । ८ क. ग. चास्ति । ९ क. ख. रक्षोदरसिध्याकृति । घ. रक्ष्योदरसव्याकृति ।

नाशाग्नौ परिवर्त्तन-जात्यन्ध-कृकाटिकासु **ण**ः शब्दः ।
स्यादिह [1]पङ्कजपत्रे वेदनिनादे च विप्रसङ्गत्याम् ॥ २९ ॥
पश्चादर्थे-परिश्रम-वियोग-सम्भोग-तत्त्व-करुणासु ।
धातुर्वादविधावपि **त**ः स्याद् वीणादिके वाद्ये ॥ ३० ॥
ग्रहकल्लोल-सितासित-धुताधुतश्चारनालशब्देषु ।
सन्मिषया परिमार्जने[2]-कल्प-विरामेषु च **थ**कारः ॥ ३१ ॥
भवति **द**कारो दाने भावे सम्बोधने च वैराग्ये ।
द्रावकवस्तुविशेषे गृहीतमुक्तेषु च विशुद्धौ ॥ ३२ ॥
ऐरावतस्य कुम्भे आश्लेषे पावनेऽपि सामर्थ्ये ।
धन्वन्तरे [3]बिभीते **ध**ः शब्दः स्यात् कलत्रायाम् ॥ ३३ ॥
नः शब्दः प्रतिषेधे स्थिर-निश्चय-शुष्कवाद-शून्येषु ।
[4]स्यादपरपरिश्लिष्टे चर्वित-छिन्ना-ऽतिभिन्नेषु ॥ ३४ ॥
पः शब्दः स्यादमृते प्रसन्न-करभोरु-वारिधारासु ।
कौस्तुभमणिप्रकाशे सन्ततिशुभलक्षणोपेते ॥ ३५ ॥
[5]**फो**ऽविहतगतौ परोक्षे चन्द्रकलायां कलेवरे कुट्याम् ।
केकायां शुचिभक्ते [6]प्रभवेऽपाच्यां प्रतीकारे ॥ ३६ ॥
बः शब्दः स्याद् विमले बिन्दु-विसर्गे च कुवलये चैव ।
बलभद्राकर्षणनिभविकल्पबप्पीहके [7]क्षिपि च ॥ ३७ ॥
आकाश-दीप्ति-नक्षत्र-चार-दैवज्ञ-सिद्धमन्त्रे च ।
[8]अभिमतभावे भौमे **भ**ः शब्दः स्यादलङ्कारे ॥ ३८ ॥
म भवेदिह मेधायां निवारणे साक्षिसत्यवादे च ।
[9]हुतभुक्-सेनान्यङ्गज-पिङ्गलवर्णे-प्रकोष्ठेषु ॥ ३९ ॥

---

१ ङ. पङ्कजपये । २ क. ग. ०न-जल्प-वि० । ३ क. च मीते । ४ क. ग. स्यादपरे परि० । ५ घ. ङ. अवितततगतौ । ६ ङ. फो भवेत् प्राम्प्यां । ७ ग. क्षपे च । ८ घ. अभिनवभावे । ९ क. घ. हुतभुक्सेनान्यङ्गनपिङ्गलवर्णे प्रकोष्ठे च ।

शोभनअवयवनिर्माण-रूपबीभत्स[1]-अञ्जने पाके।
कल्पद्रुममञ्जर्यां भवति यकारोऽत्र पिण्डाक्षे[2] ॥ ४० ॥

लः स्याद् द्रुमशाखायां [3]ललितललितचाटुकारवचनेषु।
[4]षट्चरणे मकरेन्द्रे मधुमत्ते [5]मन्दगत्यां च ॥ ४१ ॥

वः शब्दस्तु विकल्पे स्यादिन्द्रियसंयमेषु पञ्चशरे।
तूर्ण-समुच्चय-जाग्रद-सृष्टादर-विनिर्गम-वटेषु ॥ ४२ ॥

इन्द्रधनौ वल्मीके कच्छप-नृपभक्ति-देवपूजासु।
[6]कुस्त्रीकृतेऽविदग्धे भवति शकारस्तु कमलायाम् ॥ ४३ ॥

स भवेदिह साकारे प्रभञ्जने अविचले च शकटपथे।
ध्याने सद्धर्मशून्ये देहकलायामुमातनये ॥ ४४ ॥

हः शब्दो हास्यरसे चतुर्मुखे चैव राजहंसे च।
वीणायाः क्वणितेऽपि च शोण[7]मणिरुचिषु रोमाञ्चे ॥ ४५ ॥

क्षः स्यात् क्षेपविशेषे दण्डधरे भार्गवे च भद्रायाम्।
दुःस्वप्नोपम-विग्रह[8]-निर्भय-तट-कालकूटेषु ॥ ४६ ॥

॥ इति मातृकाया उपरि एकाक्षरी नाममाला समाप्ता ॥

---

१ ग. ॰त्स. अर्जुनीपाके। २ घ. पिण्डोक्षे। ३ क. ललितश्चाटुकारवचनेषु। लालितरश्चाटुकारवचनेषु. ग. घ.। ४ क. षट्करणे। ५ च. क. घ. मण्डगत्यां च। ङ. मङ्गगत्यां च। ६ ग. कुश्रीकृतेऽपि। ङ. कुस्त्रीकृतेऽपि। ७ ग. शाके मणिरुचिषु। ८ क. ग. ॰ह-निर्भक-त॰।

[२२] नत्वादि-एकाक्षरी नाममाला

नत्वाऽब्जिनीधवं ध्यात्वा कमलाकरभारतीम् ।
अभिधानमनेकार्थमेकाक्षरमहं ब्रुवे ॥ १ ॥

ओमङ्गीकरणा-ऽऽह्वान-ब्रह्म-याचन-दीप्तिषु ।
अः सूर्या-ऽग्नीन्दु-पवन-विष्णु-नक्षत्र-शङ्करे ॥ २ ॥

आ ब्रह्मा-ऽब्ध्य-र्क-चापेषु इः कामेन्द्रा-ऽब्जसम्भवे ।
ईर्लक्ष्मी-मौलि-जिह्वासु उः शम्भू-ग्रा-ऽमरेश्वरे ॥ ३ ॥

ऊः सुधा-ऽनन्त-जलदे ऋर्देवाम्बा-रवा-ऽध्वनि ।
ॠः दैत्याम्बा-गान-दाने ऌः श्लेषा-ऽमरसू-शिवे ॥ ४ ॥

ॡः स्थिलाऽऽलिङ्गिन(नि) स्थाणावृएर्विष्णु-रवि-मारुते ।
ऐः शङ्करे ब्रह्म-भूपे ओ ब्रह्मेन्दु-सुधासु च ॥ ५ ॥

औः सुधा-ऽनन्त-जलदे अं भेदा-ऽऽत्मेश-मारुते ।
अः षडास्येन्दुचूडेन्द्रे को यमा-ऽग्नि-दिवाकरे ॥ ६ ॥

द्योता-ऽऽत्म-ब्रह्म-वातेषु शिरो-ऽम्बु-वदनेषु कम् ।
खः शून्य-खड्ग-नृपतौ शून्या-ऽऽकाशेन्द्रियेषु क(ख)म् ॥ ७ ॥

गो गातृ-गायनेभास्ये घो वाद्या-ऽम्बुधरा-ऽम्बुधौ ।
ङः पूजक-द्विज-काक्षे चः स्याद् भृत्येन्दु-तस्करे ॥ ८ ॥

छश्छन्दश्चन्द्र-तरले जो जेतृ-रवि-पन्नजे ।
झो नष्टा-ऽनिल-सङ्गेषु ञः प्राज्ञ-पट-गायने ॥ ९ ॥

टोऽर्द्धचन्द्र - रवेलासु ठः खेशेन्दुसुमण्डले ।
डः पक्षे सारवाक्षेपे ढः शब्द-गति-निर्गुणे ॥ १० ॥

णो गन्धेभा-ऽऽस्य-हर्षेषु तस्तापा-ऽमर्ष-दस्युषु ।
थो भीत्राण-गिरि-व्योम्नि दः सिंहा-ऽसि-त्रिलोचने ॥ ११ ॥

धो बाल-पितृ-वित्तेशे नो रक्षा-कवि-वारिदे ।
पः शैल-त्रन-वासेषु फः कला-ऽनिल-शाखिनि ॥ १२ ॥

बोऽम्बुभृद्-वायु-कुम्भेषु भः शुक्र-गिरि-भूपतौ ।
मः शिवा-ऽऽमा-ऽम्बु-भद्रेषु यो यान-यम-मारुते ॥ १३ ॥

रो वज्रा-ऽनल-कामेषु लो दीनेन्दु-विहङ्गमे ।
वः पाशि-रिण-वज्रेषु शोऽश्व-शूद्रा-ऽम्बु-भर्त्तरि ॥ १४ ॥

षः शून्या-ऽर्का-ऽग्नि-कीनाशौ(शे) सोऽस्त्रभुक्-सिंह-दुर्जने ।
हः कास-शूर-गमने क्षः क्षेत्रा-ऽनिल-तपासे ॥ १५ ॥

इति नत्वादि-एकाक्षरी नाममाला ॥

❀

[२३] अभिधानादि - एकाक्षरी नाममाला

अभिधानं प्रवक्ष्यामि नानाशब्दार्थविस्तरम् ।
साङ्ख्यं[1] चारु (?वार) रुचं यत्तदेकाक्षरमुदाहृतम् ॥ १ ॥

अकारो हरि-रुद्रौ च आकारश्च पितामहः ।
इकार उच्यते कामो लक्ष्मीरीकार ईष्यते[2] ॥ २ ॥

उकारः शङ्करे[3] प्रोक्त ऊकारो विष्णुरुच्यते ।
ऋकारो देवमाता स्याद् ॠकारो दनुजप्रसूः[4] ॥ ३ ॥

ऌकारो देवमाता स्यान्नागमाता तु ॡ स्मृता ।
एकार उच्यते विष्णुरैकारश्च महेश्वरः ॥ ४ ॥

ओकारस्तु भवेद् ब्रह्मा औकारोऽनन्त इष्यते ।
अं भवेत् परमं ब्रह्म अः स्याच्चैव महेश्वरः ॥ ५ ॥

कः प्रजापतिरुद्दिष्टो वायौ सूर्ये च कः स्मृतः ।
कश्चात्मनि सुखे ख्यातः कः प्रकाशमुदाहृतम् ॥ ६ ॥

कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखे परिकीर्त्तितम् ।
कुः पृथिव्यां समाख्याता कुशब्दः कुत्सितेऽपि च ॥ ७ ॥

खमिन्द्रियं समाख्यातं खमाकाशमुदाहृतम् ।
स्वर्गेऽपि खं च संप्रोक्तं शून्ये खड्गेऽपि खं स्मृतम् ॥ ८ ॥

गो गणेश्वर[6] उद्दिष्टो गन्धर्वो गः प्रकीर्त्तितः ।
गश्च गीते च गाथायां गौर्धेनुश्च सरस्वती ॥ ९ ॥

घो घण्टिका समाख्याता किङ्कणी घः प्रकीर्त्तितः ।
घश्च मेघः समाख्यातो घूर्ध्वनावपि कीर्त्तितः ॥ १० ॥

---

१ सङ्ख्या विचारणा तस्या योग्यं साङ्ख्यं । २ क. ख. उच्यते । ३ ख. ग. घ. शङ्करः ४ क. ख. ग. दनुजे स्मृतः । ५ ग. घ. स्वर्गेऽपि । ६ क. ख. गो गणे घ. स्वरि दिष्टो । ७ ग. घ. घूर्दितावपि ।

ङ्कारो भैरवे प्रोक्तो ङ्कारो [1]व्यसनेऽपि च ।
ङ्कारः स्वर आख्यातस्तस्करे चाऽप्युदाहृतः ॥ ११ ॥
चश्चन्द्रमसि आख्यातस्तस्करे चाऽप्युदाहृतः ।
च शोभायां समाख्यात[2]श्चः पक्षान्तरसूचने ॥ १२ ॥
निर्मले छं समाख्यातं [3]तडिच्छः सम्प्रकीर्तितः ।
छेदने छः समाख्यातः, छश्च संवरणेऽपि च ॥ १३ ॥
वेगे तेज[4]स्यपि स्याज्जो [5]जने जश्च प्रकीर्त्तितः ।
जेता च जिः प्रविख्यातो जयने जिः प्रकीर्त्तितः ॥ १४ ॥
भैरवे तु झकारः स्यान्नष्टे च समुदाहृतः ।
झकारो बन्धने प्रोक्तो झकारो [6]घर्घरस्वरे ॥ १५ ॥
ञकारो मूढरूपे च ञकारो विषयात्मनि ।
ञकारो गायने प्रोक्तो ञकारो जर्ज्जरे स्वरे ॥ १६ ॥
टा पृथिव्यां समाख्याता करटे टं प्रकीर्त्तितम् ।
ठो महेश्वर आख्यातः, ठश्च [7]शून्ये प्रकीर्त्तितः ॥ १७ ॥
[8]बृहद्ध्वनौ च ठः प्रोक्तस्तथा ठ[9]श्चन्द्रमण्डले ।
डकारः शङ्करे प्रोक्तो डकारो ध्वनिरुच्यते ॥ १८ ॥
[10]ढः कीर्त्तितश्च ढक्कायां निगूढेऽपि ध्वनावपि ।
णकारः कीर्त्तितो ज्ञाने [11]णूँ (णु) स्तुतेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥ १९ ॥
तकारः कथित[12]श्चौरः क्रोधे पुच्छे च कीर्त्तितः ।
शिलोच्चये थकारः स्यात् थकारो [13]भयरक्षणे ॥ २० ॥

---

१ घ. विसनेऽपि । २ घ. ंतः स्वपक्षेतरसूचकः । ३ घ. तटे छा. । ४ क. तेजसि चापि स्याज्जो जनके जः प्रकीर्त्तितः । ५ घ. जवने जः प्रकीर्त्तितः । ६ ख. ग. जर्ज्जरस्वरे । ७ क. ख. स्तने । ८ ग. घ. बृहद्ध्वने । ९ ग. चण्डमण्डले । १० ग. घ. ढकारः कीर्त्तितो ढक्का निमूढेऽपि । ११ ग. घ. ण[ः] । १२ ग. तश्चेतः क्रोधे । घ. तश्चेतः क्रोडे । १३ क. नयरक्षणे ।

दं कलत्रं बुधैः प्रोक्तं छेदे दाने च दातरि ।
बन्धने धः स्मृतौ [1]धौतौ धने धान्ये च धः स्मृतः ॥ २१ ॥
[2]धी गतिर्बुद्धिरित्याहुर्युद्धे च कम्पने तथा ।
धौते धूमे समाख्याता धूश्चैवं भार-वित्तयोः ॥ २२ ॥

नकारः कीर्त्तितो ज्ञाने निषेधेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
नेता[3] नि[ः] श्वसने ख्यातस्तै[4]रण्यां नौः प्रकीर्त्तितः ॥ २३ ॥
पकारः पवने प्रोक्तः पाँ[5]स्तु पाने च पातरि ।
फकारोऽरण्यसंसुप्तौ फकारः प्रकटे रणे ॥ २४ ॥

झञ्झावातः फकारः स्यात् फकारो भयरक्षणे ।
[6]वंःषट्कारे फकारश्च तथा स्थाँ[7]स्नौ प्रकीर्त्तितः ॥ २५ ॥
[8]र्फः फूत्कारे च फूः प्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे ।
प्रवेशे बः समाख्यातः कलहेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥ २६ ॥

नक्षत्रे भं बुधाः प्राहुर्भ्रमरे भः प्रकीर्त्तितः ।
दीप्तिर्भाऽपि च भूर्भूमिर्भीर्भयं कथितं बुधैः ॥ २७ ॥
मः [9]शिवश्चन्द्रमा वेधा मा च लक्ष्मीः प्रकीर्त्तिता ।
[10]माँ तु मातरि माने च बन्धने मूः प्रकीर्त्तितः ॥ २८ ॥
यमो यः कथितः श्रेष्ठो यो धातरि च शब्दितः ।
याने यातरि यस्त्यागे कथितः शब्दवेदिभिः ॥ २९ ॥
रश्च कामेऽनले वज्रे शब्दे रूपे च कीर्त्तितः ।
[11]राँ धने श्रवणे ख्यातो रो भये रक्षणे च रः ॥ ३० ॥

---

१ ग. धौता । घ. धाता । २ ग. घ. धा धा(धि)धी बुद्धिरित्याहुर्धूर्युगे कम्पने तथा । ३ क. ख. न च विश्वसने । ४ ख. ग. तरणे । घ. पूरणे । ५ क. ख. पस्तु । ६ क. ख. ग. फः षट्कारे फकारः स्यात् । ७ क. स्थाणौ । ८ ग. घ. फूत्कारे चापि फः । ९ ग. घ. शमश्चन्द्रमा । १० क. ख. माला । ११ क. नीराज्ञे । घ. धने रा वैश्रवे ख्यातो । ख. नारी विश्रबणे ख्यातो ।

ल इन्द्रे लवने व्याजे लश्च दाने प्रकीर्त्तितः ।
ली[१]ः श्लेषे वलये चैव लकारो नास्तिके भवेत् ॥ ३१ ॥

सान्त्वने वरुणे वा[२]ते वकारः संप्रकीर्त्तितः ।
गत्यर्थे नयने श्रेष्ठे विकारे वः प्रकीर्त्तितः ॥ ३२ ॥

पक्षिणि गगने चैव विशब्दस्तु प्रकीर्त्तितः ।
शः परोक्षे समाख्यातः शा[३]न्तौ शोभा-वरेण्ययोः ॥ ३३ ॥

ब्रुवन्ति शं[४] शिवे सुज्ञाः शं शोभायां निगद्यते ।
शीः श[५]याने च निन्दायां हिंसायां च निगद्यते ॥ ३४ ॥

षः परोक्षे समाख्यातः षा च लक्ष्मीर्निगद्यते ।
सकारः कीर्त्तितः श्रेष्ठे शूलिनि सः प्रकीर्तितः ॥ ३५ ॥

हो[६] हरे ही विचित्रे च हे च सम्बोधने तथा ।
क्षः क्षेत्रे[७] च समाख्यातः क्षः[८] क्षमायां क्षये तथा ॥ ३६ ॥

अकारादि-क्षकारान्तवर्णानां च पृथक् पृथक् ।
अभिधानं समासेन कथितं बुधसंस्तुतम् ॥ ३७ ॥

॥ अभिधानादि - एकाक्षरी नाममाला समाप्ता ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

*

---

१ ग. ली श्लेष्मा (श्लेष्मणि) लये । घ. ली श्लेष्मणि लये । २ क. ग. वाने । ३ ग. घ. शान्ते । ४ ग. घ. शं सिताषु ज्ञाः । ५ क. ख. शयने । घ. शपने । ६ ग. घ. हे है सम्बोधने प्रोक्तौ हे है श्चैव[वे] प्रकीर्त्तितः । ७ ख. ग. घ. क्षेमे । ८ क. क्षमायां क्षा क्षमे तथा । ख. क्षी क्षमायां क्षमे तथा ।

[२४] पण्डितमनोहरकृत एकाक्षरकोशः ।

वाङ्मयीं वरदां देवीं नत्वा च शिवमव्ययम् ।
लिखाम्येकाक्षरं कोशं दिव्यज्ञानविवृद्धये ॥ १ ॥
अकारो विष्णुरुद्दिष्ट आकारश्च महेश्वरः ।
इकारः कथ्यते कामो लक्ष्मीरीकार उच्यते ॥ २ ॥
उकारः शंकरः प्रोक्त ऊकारश्चापि रक्षणे ।
ऋकारो देवमाता स्याद् ॠकारः स्वर्ग उच्यते ॥ ३ ॥
ऌकारो दैत्यमाता स्याल्लॄकारो दनुजप्रसूः ।
एकार उच्यते विष्णुः, ऐकारः स्यान्महेश्वरः ॥ ४ ॥
ओकारस्तु भवेद् ब्रह्मा औकारोऽनन्त उच्यते ।
अमिति स्यात्परं ब्रह्म अः स्याच्चैव महेश्वरः ॥ ५ ॥
कः प्रजापतिरुद्दिष्ट को वायुरितिः शब्दितः ।
क आत्मा च समाख्यातः प्रकाशे क उदाहृतः ॥ ६ ॥
कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखं च प्रकीर्तितम् ।
पृथिवी कुः समाख्याता कुः कुत्सेति प्रकीर्तिता ॥ ७ ॥
खमिन्द्रियं समाख्यातं खमाकाशमुदाहृतम् ।
गुह्येति खं समाख्यातं खं सुखं च प्रकीर्तितम् ॥ ८ ॥
गो गणपतिरुद्दिष्टो गंधर्वे गः प्रकीर्तितः ।
गीतं गमुक्तं याता गो गौस्तु पश्वादिषु त्रिषु ॥ ९ ॥
घो घंटायां समाख्यातः किंकिण्यादौ प्रकीर्तितम् ।
हनने घा समाख्याता घुः कलौ च प्रकीर्तितः ॥ १० ॥
ङकारो भैरवे प्रोक्तो ङकारो विषयस्पृहा ।
चश्चन्द्रमा समाख्यातस्तारकाः च उदाहृताः ॥ ११ ॥
निर्मलं छं समाख्यातं तरलं छं प्रकीर्तितम् ।
छेदने छा समाख्याता विद्वद्भिः शब्दकोविदैः ॥ १२ ॥

वेगिनि जः समाख्यातो जवने जः प्रकीर्तितः ।
जेता च जः समाख्यातः सूरिभिः शब्दशासने ॥ १३ ॥

झंझावाते झकारः स्यान्नष्टे झः समुदाहृतः ।
ञकारो गायने प्रोक्तो ञकारो घर्घरध्वनौ ॥ १४ ॥

टंकारे टः पृथिव्यां टा टो ध्वनौ च प्रकीर्तितः ।
टो महेश्वर आख्यातः शून्येऽपि टः प्रकीर्तितः ॥ १५ ॥

बृहद्ध्वनौ च ठः प्रोक्तस्तथा चन्द्रस्य मण्डले ।
डकारः शंकरे जापे ध्वनौ त्राणे निगद्यते ॥ १६ ॥

ढकारः कीर्तिता ढक्का निर्णये च प्रकीर्तितः ।
णकारः कथितो ध्वाने निर्णये णः प्रकीर्तितः ॥ १७ ॥

तकारः सुगते बुद्धे क्रोडपुच्छे प्रकीर्तितः ।
शिलोच्चये थकारः स्यात् थकारो भयलक्षणे ॥ १८ ॥

दं कलत्रं बुधैः प्रोक्तं दा दाने छेदनेऽपि च ।
धं धने च धनेशेऽब्धौ धो धावति निदर्शितः ॥ १९ ॥

धिषणा धीः समाख्याता धूर्भार-चिन्तयोस्तथा ।
नकारः सुगते वृन्दे नः स्तुतौ च प्रकीर्तितः ॥ २० ॥

नीश्च नेता समाख्यातो नौकायां नौरुदाहृता ।
पूरणे पः समाख्यातः पा पाने पाश्च पातरि ॥ २१ ॥

झंझावाते फकारः स्यादक्षरेऽपि प्रकीर्तितः ।
कोपेऽपि फः समाख्यातस्तथा निष्फलभाषणे ॥ २२ ॥

प्रचेता वः समाख्यातः कलशो वः प्रकीर्तितः ।
पक्षी च विर्निगदितो गमने विः प्रकीर्तितः ॥ २३ ॥

नक्षत्रं भं बुधाः प्राहुर्भ्रमरो भः प्रकीर्तितः ।
भा दीप्तिरपि भूर्भूमिर्भीः भयं कथितो बुधैः ॥ २४ ॥

म: शिवश्चन्द्रमा वेधा मा लक्ष्मीः कथिता बुधैः ।
मा मातरि च माने च बन्धने मुः प्रकीर्तितः ॥ २५ ॥

यशो यः कथितः शिष्टैर्यो वायुरिति शब्दितः ।
याने यातरि त्यागे च यकारः कथितो बुधैः ॥ २६ ॥

रश्च कामेऽनिले वह्नौ शब्दे रुश्च प्रकीर्तितः ।
धने रा रिर्गतिः ख्याता रा दानेऽपि प्रकीर्तितः ॥ २७ ॥

ल इन्द्रे लवणे लूः स्याल्ला दाने श्लेषणेऽपि लोः ।
सांत्वने वरुणे वाते वकारश्च प्रकीर्तितः ॥ २८ ॥

वदन्ति शं बुधाः श्रेयः शं च शास्त्रं निगद्यते ।
शी शयनमिति प्राहुर्हिंसायां शूर्निगद्यते ॥ २९ ॥

षकारः कीर्तितः खड्गे षूश्च गर्भविमोचने ।
सः परोक्षे समाख्यातः सा च लक्ष्मीर्निगद्यते ॥ ३० ॥

सत्कारवारणे हुं स्यात् तथा शूलिनि कीर्तितः ।
क्षः क्षेत्रे वक्षसि प्रोक्तः क्षकारः स्याच्च शासने ॥
इत्येकाक्षरकोशश्चागात् समाप्तिं मनोहरः ॥ ३१ ॥

॥ पं. मनोहरकृत एकाक्षरकोशः समाप्तः ॥

*

[२५] कालिदासव्यासकृता एकाक्षरी नाममाला ।

नत्वा शङ्करपादपद्मयुगलं ज्ञानाय हेतोः सखे !,
नानाग्रन्थविलोकिता पुनरहं ज्ञात्वा मया लिख्यते ।
श्रीदामोदरजागरूकवसु[1]धान्तस्याऽऽत्मजो व्यासराट्,
तेनाऽयं वितनोदभूत सुवये(?)श्रीकालिदासाभिधः ॥ १ ॥

शब्दाब्धेरथ चन्द्रोऽभूत् सम्प्रकाशकरैर्नृणाम् ।
नानार्थकौमुदीं कुर्वे हृद्ध्वान्तध्वंसनाय वै ॥ २ ॥

कवीन्द्रकुमुदो गुच्छं शब्दवारिसदङ्कुरः ।
विरच्यतेऽत्र सत्काव्यं रम्यैकाक्षरसङ्ग्रहम् ॥ ३ ॥

विना लिङ्गविशेषेण नान्यत्र पुनरुक्तिता ।
नानार्थस्यार्थबाहुल्यात् स्थितिरेकत्र न क्वचित् ॥ ४ ॥

मुख्योऽत्र सङ्ग्रहः शब्दः प्रथमालङ्कृतः कृतः ।
परस्त्वर्थान्तरद्योतः सप्तम्यन्त इति स्थितः ॥ ५ ॥

अकाराद्यादिभिः शब्दैः क्रमादेकाक्षराभिधः ।
ग्रन्थेऽस्मिन् प्रथमोऽकारो विस्तरं रच्यते मया ॥ ६ ॥

अकारो ब्रह्म-विष्णवीश-कमठेष्वङ्गणे रणे ।
गोरथेऽन्तःपुरे हेतौ सूर्येऽद्रावम्बु-मान्ययोः ॥ ७ ॥

गरुडेऽवयवे चाथ पूजने प्रेरणेऽ[2]प्यजे ।
शब्देऽर्दनेऽदने चान्ने निषेधेऽनादरेऽव्यये ॥ ८ ॥

[3]सञ्जात्ये च निराकारे स्वल्पेऽर्थे ज्ञे तु पुंस्यपि ।
ब्राह्मणे शकले वायौ वह्नौ [4]वा शब्द-सोमयोः ॥ ९ ॥

विरञ्चावा पुल्लिङ्गे त्वा वाक्ये तु स्मरणेऽव्यये ।
बन्धुवर्गे तिरस्कारे क्रियायोगेषदर्थयोः ॥ १० ॥

---

१ क. धा. तस्याऽऽत्मजो । ख. ग. धान्तस्याऽऽत्मने । २ ख. ग. ऽप्यजि । ३ ख. ग. सज्ज्यात्यां । ४ ख. ग. वा सोमशब्दयोः ।

कोपे भावे पटे चित्रे दूराह्वाने पितामहे ।
मातामहे च सन्तापे मन्मथेऽथ वृथास्मृतौ ॥ ११ ॥
अभिव्यक्तावभिव्याप्तौ सीमायां दुःख-खेदयोः ।
इरहर्मणिरश्मौ तु संशये बाण-मान्ययोः ॥ १२ ॥
हारे करेणुकुक्ष्यन्ते निशाकरकरे स्मरे ।
कोपोक्तौ कामबाणे स्यात् पुंसि त्वाश्चर्य-खेदयोः ॥ १३ ॥
ईकारः कज्जले लक्ष्म्यां वाण्यां कमलकेसरे ।
रसनायां शक्रचापे बाणे बलिनि कन्धरे ॥ १४ ॥
पुल्लिङ्गेऽव्ययमीश्चैव प्रत्यक्षे दुःखभावके ।
प्रकोपे सन्निधौ चौरे नवोढायां भुवि स्वरे ॥ १५ ॥
उकारः क्षत्रिये नेत्रे हरमौलौ हरे हरौ ।
मात्रायां शेषफूत्कारे शोके सम्बुद्धिषु स्मृतः ॥ १६ ॥
रोषोक्त्या-ऽऽमन्त्रणार्थेषु मोक्ष-भावोर्द्धशक्तिषु ।
अप्रकाशे भवेत् पुंसि षण्ढेऽव्ययमुदाहृतम् ॥ १७ ॥
ऊकारः पुरुषे चन्द्रे राजपुत्रे गलेऽसुरे ।
[1]प्राङ्गणोपमयोर्नावकुम्भेऽवनिजरत्नके ॥ १८ ॥
ऊकारो बन्धने लोभे विभागे पुंसि चाव्ययम् ।
प्रश्ने चाङ्गीकृते पुंस्त्वे पुंसि रक्षण-सूर्ययोः ॥ १९ ॥
ऊमव्यये स्वरे क्लीबे रोषोक्ति-प्रश्नयोरपि ।
ऋकारः कुञ्जरे शैले धीभेदे देवमातरि ॥ २० ॥
स्वभावे देवनद्यां च सुरायां विवरे दिवि ।
अव्यये पुंसि कुत्सायां पालने रक्षणे गुरौ ॥ २१ ॥
ॠकारः कुत्सिते सर्पदृष्टौ विगतसम्पदि ।
हिम-पद्मा-ऽदिति-स्वर्ग-धन-भूषा-भुजा-ऽम्बुषु ॥ २२ ॥

---

१ क. ख. प्रकाणसमयो° ।

ॠरजे विकलाङ्गे स्याद् भगे पुंस्यवयवेऽपि च ।
ऌकारो दन्तिनां दन्ते करीर-कपिदन्तयोः ॥ २३ ॥
स्वर्गा-ऽदित्योर्लिप्तगात्रे गजे नप्तरि वक्षसि ।
ॡर्दर्पे योषिति द्रव्ये पुंसि स्यादव्ययेऽपि च ॥ २४ ॥
ॡकारः कृकलासे प्लवङ्गेऽक्षिण मकरे सुरे ।
लीलागतौ लोचनेऽस्थि नागमातरि मातरि ॥ २५ ॥
स्याद्धास्याक्ष्यां नवोढायाः कञ्चुके तु लतान्तरे ।
एकारस्तेजसि जले रात्रौ हर्म्योदरे हरौ ॥ २६ ॥
व्योम्न्येकादशसङ्ख्यायां दिनादौ मणिकुट्टिमे ।
महीन्द्रे धातरि ज्ञेये साक्षीत्वातीषयोर्हरे (?) ॥ २७ ॥
ऐकारो दिङ्मुखे पूरे हरे श्रीशिखरे त्वचि ।
ओकारः पद्म-कुट्य-ऽम्बु-श्रीद-मेघेन्दु-योनिषु ॥ २८ ॥
शक्तौ जने विरञ्चौ स्याद्वेदादौ प्रणवे द्विजे ।
अङ्गीकारे तथा[2] ॐ स्यादोँ माङ्गल्ये विशेषणे ॥ २९ ॥
ओरूर्द्ध्वलिङ्ग आहूते त्वव्ययं पुंसि कथ्यते ।
औकारस्त्वम्बिकागारे नृपाणां जय-शूरयोः ॥ ३० ॥
विशुद्धाङ्गेन्दुकलयोरनन्ते शुद्धपुष्पके ।
कुलीने यज्ञपात्रेशे स्यादौ सम्बोधनेऽव्यये ॥ ३१ ॥
अं शवे बकवाक्येऽतिदीर्घेऽञ्जलि-नियोगयोः ।
सप्तस्वरान्तमाने च परंज्योतिषि च स्मृतः ॥ ३२ ॥
अः शिवायां सिद्धमन्त्रे प्रग्रहेऽर्के रथार्वणि ।
चित्रे कुर्कुटमूर्द्धेन्दुबिम्बे ब्रह्मेश-विष्णुषु ॥ ३३ ॥

॥ इति स्वरवर्गः ॥

*

---

१ क. नान्ते नाग । २ क. तथौपम्यादौ माङ्गल्ये ।

को ब्रह्मा-ऽऽत्मा-ऽनिला-ऽर्कोऽग्नि-चित्रा-ऽरि-यम-केकिषु ।
विष्णुवाहनशब्देऽब्धौ सितकर्णे वसौ द्युतौ ॥ ३४ ॥
कलहे को विजानीयात् प्रश्नेऽर्थेऽपि कचिन्मतम् ।
स्वर्गे चक्रे तथा मित्रे शुद्धेऽर्थे स्मर-कालयोः ॥ ३५ ॥
कं शुक्रे रुधिरे मांसे फले प्रश्ने तु कन्दुके ।
कं शिरो-ऽम्बु-सुखे क्लीबे निन्दायामाननेऽव्ययम् ॥ ३६ ॥
कुर्धात्र्यां कुत्सिते शब्दे पापीयसि निवारणे ।
ईषदर्थे कलत्रे स्याद् हीनजातौ तु कुङ्कुमे ॥ ३७ ॥
किमभ्युपगमे प्रश्ने प्रस्तावा-ऽऽश्चर्ययोरपि ।
पुनरर्थे च निन्दायां रजस्याक्षेप-कुत्सयोः ॥ ३८ ॥
वितर्काश्चर्ययोः क्रोधे किलार्थेऽतिशयेऽव्ययम् ।
ईषदर्थे भवेद् व्योम्नि किः कीटे स्यात् कियानपि ॥ ३९ ॥
कि ब्रह्मण्यामपि प्रश्ने खड्गमुष्टि-कुचाग्रयोः ।
विधवाभगनिर्देशे दन्तिनां रेषणेऽपि च ॥ ४० ॥
केकिनां नर्त्तने शब्दे किं शब्देऽपि विधीयते ।
कु कुत्सिते च पीडायां कूर्म-कुत्सनयोरपि ॥ ४१ ॥
का शोभायां कुशब्दे स्यादामिषे शकलेऽपि च ।
काकानामेकदेशे स्याद् रजक्यामपि कथ्यते ॥ ४२ ॥
कां युगपदि[1] योगे च वारणेऽश्वगतावपि ।
कुं घटे कुङ्कुमे पाके सम्बोधने च को भवेत् ॥ ४३ ॥
पक्षिभेदे भवेत् कोपे कठोरे कोऽपि कथ्यते ।
कं स्तब्धनिर्जले जीवे जन्तूनां विपदि स्मृतः ॥ ४४ ॥
खमिन्द्रिये सुखे व्योम्नि नक्षत्रे क्षेत्रपालने ।
कृपा-फलकयोः शून्यबिन्दौ संवेश-रङ्कयोः ॥ ४५ ॥

---

१ ख. ग. पद्योगे ।

सूर्ये[1] वर्णे नृत्ये सत्ये वह्नौ सम्पदि संविदि ।
चन्द्रस्य मण्डले भूमौ बालायाः स्तनयोरपि ॥ ४६ ॥
गं गिरा-गात्र-गाथासु गीते स्याद् गश्च गातरि ।
गणेशेऽग्नौ च गन्धर्वे गीते स्याद् गमने तु गा ॥ ४७ ॥
गीस्तु वाण्यां सरस्वत्यां दुर्गायां ककुभौ स्मृता ।
गौर्नाके वृषभे चन्द्रे वाग्-भू-दिग्-धेनुषु स्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
द्वयोस्तु रश्मि-दृग्-बाण-स्वर्ग-वज्रा-ऽम्बु-लोमसु ।
गणेशे मूषके सौख्ये स्तुतेश्वर्यां मदे रवौ ॥ ४९ ॥
घो घने हनने रुद्रे घोषान्तर्भाव-कुम्भयोः ।
निदाघे घटने[2] मेघे घण्टायां सुस्वने च घः ॥ ५० ॥
घं घटा-ऽमृतयोर्ना भू-वार्त्ता-घोरेषु घस्त्रिषु ।
नूपुरे घं नटांह्रौ स्याद् घा किङ्किण्यां घनस्वने ॥ ५१ ॥
ङं क्लीबमञ्जने ना तु भैरवे विषये जने ।
चश्चकोरे समाख्यातश्चुल्ल्यां कोपे चतुष्पथे ॥ ५२ ॥
दन्तिनो दन्तवलये चकारः पुनरव्ययः ।
साकल्ये चान्तरे कोपे समाने कारणे वृतौ ॥ ५३ ॥
चः स्याद् वृक्षे स्वरे चौरे चकोरे चन्द्रमस्यपि ।
अन्योऽन्यार्थे विकल्पार्थे समासे पादपूरणे ॥ ५४ ॥
पक्षान्तरे समूहार्थे हेताववधृतावपि ।
अश्वालये तथा तुल्ययोगितायां च कीर्त्तितः ॥ ५५ ॥
चा स्त्री शोभा शोणिते तु चं जीवे विमले त्रिषु ।
छः सूर्ये छेदके चौरे तथा संवरणे भवेत् ॥ ५६ ॥
छं तु छन्दसि तडिति क्लीबे छन्दभृतौ पुमान् ।
त्रिष्वयं निर्मले मौने[3] मलिने भेदकेऽपि च ॥ ५७ ॥

---

१ क. मृष्यवर्णे । ख. ग. सूर्ये वर्ण्ये । २ ख. ग. घनने । ३ ख. ग. मीने ।

जो जवे विषमे मेरौ स्वर्गे पातरि मत्सरे ।
विष्णौ च विगते जीवे जं द्वीप-योषितोः कुचे ॥ ५८ ॥

जूर्विहायसि जवने पिशाच्यां विगतद्युतौ ।
जूः स्त्री वाण्यां समाख्याता स्यादम्बा-कीटयोर्भगे ॥ ५९ ॥

जीः कीर्त्यां सबले [1]तूर्णे यवे जेतरि जीर्वचि ।
जा नियोगे खले जारे योगे च जनवल्लभे ॥ ६० ॥

झः स्यादङ्गे झशब्दस्तु पुमान् दातरि हंसके ।
प्रतापे भ्रमरे नष्टे चौरे [2]रुचौ च मारुते ॥ ६१ ॥

झो [3]व्यूहे विषये गर्वे लेपे मूर्ध्नि खरध्वनौ ।
महेश्वरे च वाञ्छायां क्लीबे तु भय-पद्मयोः ॥ ६२ ॥

ञशब्दो गायने गूढरूपके घर्घरध्वनौ ।
ज्ञः प्राज्ञे त्रिषु ना चन्द्रसूनावात्मनि वेधसि ॥ ६३ ॥

टः पुमान् कटके भूपे तापेऽर्ककिरणे ध्वनौ ।
चापध्वनौ जले वायौ विषये करके कटे ॥ ६४ ॥

करङ्के टः कुलालास्त्रे प्रहारे टं पुनर्गवि ।
कपाटा-ऽऽवर्त्तयोः सूनौ भू-व्यावृत्त्योस्तु टा स्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

ठः शङ्करे बृहद्धासे बृहद्ध्वनौ जटा-ऽब्दयोः ।
बस्तौ स्वने घटे चित्रे वृषभध्वनि-मेघयोः ॥ ६६ ॥

ठः पुमान् वृषभे शून्ये हासे त्रासे क्षये ध्वनौ ।
शङ्खध्वनौ रौद्ररसे ठं क्लीबे चन्द्रमण्डले ॥ ६७ ॥

विधवायां च डाकिन्यां व्रीडावाचि तु ठा स्त्रियाम् ।
डो मेढ्रे वेगिते [4]झाँप्ये यामिनीपतिमण्डले ॥ ६८ ॥

---

१ क. चूर्णे । २ ख. ग. रुचावुमारुते । ३ क. वाहे । ४ क. ख. जाप्ये ।

डः पिशाचे भये काले रागे पान्थे ध्वनौ[1] च ना ।
डं क्लीबे डामरे दुर्गे पन्थे डमरुकेऽपि च ॥ ६९ ॥
आन्दोलने तु त्रिषु च डशब्दो गायने जडे ।
ढक्कायां ढा स्त्रियां क्लीबे ज्ञा[ने] तुर्यमुखेऽपि ढम् ॥ ७० ॥
त्रिष्वयं निर्गुणे रूढे सौम्ये सव्या-ऽपसव्ययोः ।
णशब्दस्तु पुमान् मारे भैरवे कङ्कटे ध्वनौ ॥ ७१ ॥
मोचने प्रकटे बन्धे प्रस्तुते निष्फले कणे ।
णा स्त्रियां रजनी-शय्या-धेनु-नाशा-कृपासु च ॥ ७२ ॥
णं सरोजदले ज्ञाने त्रिषु निस्तुषवस्तुनि ।
तशब्दः पुंसि संयोगे निश्चये कोल-पुच्छयोः ॥ ७३ ॥
धातुवादविधौ चौरे सत्सङ्ग्रामे तु ता स्त्रियाम् ।
करुणायां महालक्ष्म्यां पूजायां वारयोषिति ॥ ७४ ॥
नपुंसके तु तं तूणे कर्मार्थ-सूचकार्थयोः ।
तुशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ७५ ॥
तु स्यात् पूर्वनिवृत्तौ च पूर्वस्मादवधारणे ।
विलेखने विकल्पार्थे स्यात् पादपूरणेऽव्यये ॥ ७६ ॥
तत् शब्दः प्रकृतार्थोक्तौ[3] त्रिषु हेतौ तथाऽव्ययम् ।
तृट् पिपासेहयोः स्त्री स्यात् तृष्णायां कान्ति-लिप्सयोः ॥ ७७ ॥
त्विट् प्रभायां च कुत्सायां व्यवसाये महे गिरौ ।
तीस्तीव्रे विषमे शोके स्यात् प्राणिनां गतावपि ॥ ७८ ॥
थः पुंसि भूधरे भारे क्षुद्रे सत्वरवाचके ।
थोऽव्यये कुञ्जरे काले क्लीबे भयनिवारणे ॥ ७९ ॥
वाच्यलिङ्गस्तु विमले पृथुले श्यामले कचे ।
स्त्रीलिङ्गे चोपचारण्यां थीस्ताडवविकारके ॥ ८० ॥

---

१ क. ख. ग. ध्वनावने । २ ख. ग. वारयोषिताम् । ३ ख. ग. क्रीडनेऽर्थोक्तौ ।

निर्भर्त्सने भये पुं स्याद् दो वधे भव-वालयोः ।
दः पुंसि बन्धने छेदे दो दाने दायकेऽपि च ॥ ८१ ॥
दाने दातरि दा केचिद् दा स्त्रियां दन्ति-दानयोः ।
विखण्डने भवेद् दुस्तु दुस्तरा-ऽरण्ययोरपि ॥ ८२ ॥
दं क्लीबे पान-वैराग्य-कलत्रेष्ववलोकने ।
भेद्यमूलस्त्वयं मूके दुहिते द्रावके शुचौ ॥ ८३ ॥
दर्शन-ज्ञान-नेत्रेषु वस्त्रद्रष्टरि[1] च त्रिषु ।
द्यं खण्डने रिपौ त्यागे गमनस्यावभर्त्सने ॥ ८४ ॥
द्युर्वह्नौ दिवसे द्यो तु नाके नभसि बन्धने ।
स्याद् दः प्रथमयोगे स्त्री दृक् स्याद् दिन-नेत्रयोः ॥ ८५ ॥
धः पुंसि धर्मिके धीरे श्वित्रा-[2]ऽश्ववारयोर्वधे ।
धं क्लीबे धनदे धीरे ध्याने स्याद् धन-वेश्मयोः ॥ ८६ ॥
धीपुत्र्यामौषधीमात्रे धी बुद्धौ विबुधेऽपि च ।
स्यात् स्त्रियां धा ध्वनौ ध्याने यादे ध्वन्वन्तरौ घटे ॥ ८७ ॥
धा विरञ्चौ च बह्वर्थे गुह्यकेशे च मर्कटे ।
धूश्च धूल्यां धराकम्पे रथाख्ये भार-कम्पयोः ॥ ८८ ॥
हेरम्बे नः पुँमान्[4] स्त्री ना नाभौ कल्याण-भूषयोः ।
वध्य-सूक्ष्मा-ऽपरिक्लिष्ट-शून्या-ऽभीष्टे पुनस्त्रिषु ॥ ८९ ॥
अस्मानस्मभ्यमस्मा[5]कं स्थाने नः परिकीर्त्तितः ।
निषेधेऽर्थेऽव्यये बन्धौ[6] क्लीबे नं ज्ञान-वाद्ययोः ॥ ९० ॥

---

१ क. वस्त्रदष्टिषु च । २ ख. ग. स्विन्ना-ऽश्व । ३ क. ख. ग. विबुधावपि स्यात् । ४ क. ख. ग. पुनः स्त्री । ५ क. स्माकं मेकां स्थाने तु ससदि । निषेधे । ख. ग. स्माकं पेकां स्थाने तु कां तु सम्पदि । निषेधे । ६ क. ख. ग. बभ्रौ क्लीबे नद्या ।

ना निःश्रुते नरे नाभौ नेतरि ज्ञान-बन्धयोः ।
न्वव्यये प्रतिषेधे स्यात् स्त्री [1]नौ तरणि-शालयोः ॥ ९१ ॥
निः साक्षेपे तु नित्यार्थे भृशार्थाशयराशिषु ।
कौशले बन्धने मोक्षे संशये दानकर्मणि ॥ ९२ ॥
[2]अधोभवोपरमयोः क्रीताद्यर्थे नरे नृपे ।
सन्निधाने निषधे स्त्री निर्णये तु चये व्यये ॥ ९३ ॥
नी नीड-नीरयोर्नद्यां नो निषेधेऽव्यये हरौ ।
ननु प्रश्ने वितर्के च विकल्पेऽनुशये पुनः ॥ ९४ ॥
[3]नुगास्येरुहये स्त्रीणां(?) न्यङ् निम्ने नीच-कार्त्स्न्ययोः ।
पः पुमान् पवने शैले प्रकाशे कौस्तुभे क्षणे ॥ ९५ ॥
शुभे लग्ने पयःपाने प्रौढे च वर्णके पथि ।
पानमात्रेऽथ पं क्लीबे हेम्नि पा पान-पात्रयोः ॥ ९६ ॥
स्त्रीलिङ्गे त्वम्बुधारायां सुधायां सम्मतौ च पाः ।
स्त्रीपित्रोः सुनृपे पापे श्रुते पातरि पालके ॥ ९७ ॥
[4]वस्त्रे पार्थे प्रयत्ने च पुं च पुर-शरीरयोः ।
पूरणे चाथ पूः शब्दः पुरुषे परमात्मनि ॥ ९८ ॥
फो जल्पे निष्फले लोहे पुष्करे भयरक्षणे ।
झञ्झावाते फले फेने शस्त्राग्रे पुंसि फा स्त्रियाम् ॥ ९९ ॥
फालायां निष्ठुरोक्तौ च पिण्ड-केका-कुटीसु च ।
अनुस्वारे परोक्षे वा फशब्दो वाच्यलिङ्गकः ॥ १०० ॥
फूः रहे फूत्कृते शोके स्याद् वातूल[6]कपूरयोः ।
बः कुम्भे वरुणे बिन्दौ विकल्पे भे गुरौ मदे ॥ १०१ ॥

---

१ क. ख. ग. णौ । २ ख. ग. अथो नाथोपर सयोः । क्रीतावर्थे । ३ क. नुगास्सेरुहे स्त्रीणां । ४ ख. ग. वस्त्रे स्वार्थे प्रयत्ने च पुं स्त्री पुर । ५ क. पण्डारे काकुटासु । ६ ख. ग. लद्धछो ।

विभूतिकारे कलहे पक्षिगर्भे च पर्वणि ।
मूर्खे बाले कचे व्योम्नि पद्मे स्याद् विगतावपि ॥ १०२ ॥

बं शम्भौ च[1] सुवायौ च जले जगति रक्षके ।
शङ् वे(?)स्यादौषधीभेदे स्यादौपम्येऽव्यये पुनः ॥ १०३ ॥

भः शोभा भ्रमरे भावे शुक्रेऽशौ जलदे पुमान् ।
आकाशे च मयूरे च प्रभावे सूर्य-शब्दयोः ॥ १०४ ॥

भा स्त्रियां काहला[2]-वल्ली-शृङ्खलास्वमले त्रिषु ।
भा तु व्यलङ्कृते दीप्तौ स्त्रियां भाः किरणे द्युतौ ॥ १०५ ॥

क्लीबे भं गगने रात्रौ तारायां पुर-चक्रयोः ।
भी स्त्री भीत्यां खगे पुंसि स्थान-भूम्योस्तु भूः स्त्रियाम् ॥ १०६ ॥

मः पुंसि बन्धने पिङ्गे पिङ्गला-ऽऽभीरवर्णयोः ।
मौलौ विधौ मले मूले क्लीबे मं मूलके शुभे ॥ १०७ ॥

स्यान्मेढ्राग्रमणौ जीवे हरौ मासे च मा पुमान् ।
माऽव्ययं प्रतिषेधे स्त्री वारणे जभने रवौ ॥ १०८ ॥

मालायां देशभेदे च रमायां स्त्री जने तु मा ।
मा स्त्री माने कृतौ वेलान्ते[3] धी-स्त्री-व्यय-वस्तुषु ॥ १०९ ॥

अस्मच्छब्दे[4] द्वितीयायां धेनौ षष्ठ्यां च मे[5] पुनः ।
बन्धने मूः समाख्यातो मुकुन्दे मौन-मोक्षयोः ॥ ११० ॥

यं[6][:] रूयङ्गे निलये वायौ यमे धातरि पातरि ।
यशब्दः सर्वनामाख्यस्त्रिषु हेतौ यमव्ययम् ॥ १११ ॥

ग्रामे कुले वटे वाते यमम्भसि पशावपि ।
या स्त्रियां पान-मञ्जर्योः शोभा-लक्ष्म्योश्च प्रापणे ॥ ११२ ॥

---

१ क. चमुवायौ । ख. ग. वमुवायौ । २ ख. ग. काहली । ३ ख. ग. वैलाते धात्री । ४ अश्मच्छेदे क. ख. ग. ५ ख. ग. माषु नः । ६ क. ख. ग. योरुयङ्गे ।

या स्त्री ख्या तु प्रकथने ज्या मौर्वी-मातृ-भूमिषु ।
खट्वाङ्गे याज्ञिके यातौ यो यातरि श्रियि स्त्रियाम् ॥ ११३ ॥
द्युर्ना दिव्यह्नि वह्नौ च स्वर्व्योम्नोर्द्यौर्दिवि स्त्रियाम् ।
स्यः प्रहारे भवेत् काले स्यः स्पर्शे [1]त्ववखण्डने ॥ ११४ ॥
रः पुमान् पावके कामे क्षये वज्रे शरे व्यये ।
रा स्त्रियां हेम्नि शालायां [2]क्रोधे ना शुख-लीप्सयोः(?) ॥११५॥
राज्ये रागे नृपे रामे राढायां बलविक्रमे ।
रा पूर्णे रमणे क्रूरे रिः स्वसायां गिरावपि ॥ ११६ ॥
रा पुनर्विभवे मेघे स्थानके रस्तु रक्षणे ।
भीतौ रजसि रङ्के च भये च पुन री भ्रमे ॥ ११७ ॥
रं क्लीबे रुधिरे मूर्ध्नि ध्याने व्योमा-ऽण्ड-कुक्षिषु ।
वक्त्रे भये च त्रिषु तु [3]विरसे स्त्यान-तीक्ष्णयोः ॥ ११८ ॥
स्त्री रु जालेच्छयोः कान्तौ ऊर्णायुद्धे नयध्वनौ ।
स्त्री कामिनी-वम्रिकयोः रू स्वर्णे कामरूपिणि ॥ ११९ ॥
श्रीर्वेष-रचना-शोभा-संपत्-सरलशाखिषु ।
कन्यायां [4]चरुकामिन्यां सम्पत्सु सरलद्रवे ॥ १२० ॥
वाणी-लक्ष्मी-लवङ्गेषु विषे [5]बिल्वेऽथ च त्रिषु ।
[6]जटायां द्राक् पूरणे स्त्री व्योम्नि मन्दगतौ स्त्रियाम् ॥ १२१ ॥
क्रू क्रूरे त्वण्डजे व्याधे क्रीरम्नौ रोदने वधे ।
लः खण्डेऽलौ तृषादाने इन्द्रे तु [7]चलनेऽनिले ॥ १२२ ॥
लिर्लवे लीश्च विश्लेषे कङ्कणे दृढबन्धने ।
[8]लाश्चामृते दशायां लश्चाऽलौ च बिडौजसि ॥ १२३ ॥

---

१ ख. ग. त्वनखण्डने। २ क. क्रोधनाशु। ३ क. ख. ग. वीरसंस्थानमीक्ष्णयोः। ४ क. चारु। ५ क. ख. ग. विंशद्वीयेऽथ। ६ ख. जरायां वा पूरणे स्त्री व्योममन्द। ७ चलनेऽमृले (? ते)। ८ ख. ग. लाश्च मृत्ये दशायां च लश्च लौ च।

लाऽदने लूश्च लवने तृणेन्द्र-लवनेषु ला[1] ।
वं क्लीबे शत्रुहनने वंशे च गिरिभेदके ॥ १२४ ॥
वः पुमान् गत्वरे वायौ संयमे वरुणे स्मरे ।
कान्तारेऽग्नौ वधे रुद्रे सान्त्वने चाव्ययः पुनः ॥ १२५ ॥
[2]द्वितीयायाश्चतुर्थ्याश्च षष्ठ्याश्चापि बहुत्वके ।
विश्वासां विभक्तीनां च द्वित्वे वा[म्] कथितो बुधैः ॥१२६॥
पदार्थे उपमाने च विकल्पे च समुच्चये ।
वि श्रेष्ठा-ऽतीतयोर्हेतौ नानार्थे पादपूरणे ॥ १२७ ॥
विर्नेत्रे व्योम्नि वारे च परमात्मनि पक्षिणि ।
वी विवादे च विज्ञाने वाग् भारत्यां वचस्यपि ॥ १२८ ॥
वैश्ये जने पुरीषे विट् क्रमात् पुंसि द्वयोः स्त्रियाम् ।
परदाररते काके प्रदेशे कुण्डले कटौ ॥ १२९ ॥
शोके स्तब्धे स्वने पुंसि शुः शूद्रे वसुधारके ।
शा तु शाते च शास्तायां शाखा-मरणयोरपि ॥ १३० ॥
शा वाल्मिके शिवे कूर्मे भूपे शिश्च तनौ कुतौ[3] ।
शि स्त्रियां देवपूजायां शक्तौ शोभा-वरेण्ययोः ॥ १३१ ॥
बाणौघे हनने जीवे शी शोके च क्षये बुधे ।
रमायां चाथ शं क्लीबे शास्त्रे प्रेयसि मङ्गले ॥ १३२ ॥
कीर्त्तौ शक्रायुधे स्वर्गे शः परोक्षे त्रिलिङ्गकः ।
शं सत्ये शङ्करे शेषे कान्तावदनलोकने ॥ १३३ ॥
शमव्ययं सुखार्थे च शिः शम्भु-शिवकान्तयोः[4] ।
शिर्बाण-हिंसा-स्वापेषु शीः शये शुर्निशाकरे ॥ १३४ ॥

---

१ ख. ग. लम् । २ १२४–१२५ श्लोकौ त्रिष्वपि प्रतिषु व्यत्यासेन वर्त्तेते, तथाप्यर्थसङ्गत्यनुसारेणास्माभिः क्रमभेदेन स्थापितौ स्तः । ३ ग. बृतौ । ४ क. शम्भौ शबकान्तयोः ।

षः स्वर्गे विषये श्रेष्ठे पुंसि षूः प्रसुतावपि ।
षः पुनः सारसे इष्टे स्तम्भ-खर्जूरयोरपि ॥ १३५ ॥
षा स्त्री रमायां षं क्लीबे गर्भमोक्षा-ऽवसानयोः ।
मर्षणे च त्रिलिङ्गस्तु परोक्ष-श्रेष्ठयोरयम् ॥ १३६ ॥
सः पुंसि मदने वायौ परोक्ष-सूर्ययोरपि ।
सनातने [1]सत्यवति शङ्कायामव्ययस्तु सः ॥ १३७ ॥
सङ्गार्थे शोभनार्थे च प्रकृष्टार्थ-समर्थयोः ।
प्रथमे तदवस्थाने निवासे सफलेऽपि च ॥ १३८ ॥
स्यादलिनिकरे नीरे [2]क्रोधे गर्भोपभाषणे ।
स्मृतौ लक्ष्म्यां च रामायां देहकान्तौ तु सा स्त्रियाम् ॥१३९॥
सं क्लीबे स्यन्दने मार्गे ज्ञाने ध्याने [3]विचारणे ।
सं नक्षत्रे तु सूः शब्दे प्रेरणे गर्भमोक्षणे ॥ १४० ॥
सु शब्दः सेवने स्त्री स्यात् भृत्य-पूजनयोरपि ।
सत् सत्ये विदुषि श्रेष्ठे साधौ भवति च त्रिषु ॥ १४१ ॥
सन् नित्ये शोभने व्योम्नि विद्यमाने च सत्यपि ।
स्वादिपूजितयोश्चार्थे स्वः स्वर्ग-परलोकयोः ॥ १४२ ॥
स्वमात्मनि धने ज्ञातौ तद्ब्रह्मणि गुणत्रये ।
हः शङ्करे हरौ हारे हरणे पुलके भटे ॥ १४३ ॥
मानविशेषे मन्यौ च नदीतीरे भयङ्करे ।
हो हर्षे वायुपुत्रे स्यात् सम्बुद्धौ पादपूरणे ॥ १४४ ॥
गजे प्रचेतसि स्त्री तु हा त्यागे गीत-बाणयोः ।
हि हेतौ पादपूर्त्तौ तु विशेषेऽप्यवधारणे ॥ १४५ ॥
रोषोक्ति-स्फुटयोर्हो च हास्ये विषाद-विस्मयोः ।
ही हेतौ वह्नि-स्वल्पे च परप्रश्न-वितर्कयोः ॥ १४६ ॥

---

१ ख. ग. सत्यवन्ते । २ ख. ग. क्रोधगर्भापराशणे । ३ क. निवारणे ।

हे हेतावपि सम्बुद्धौ हं खेदे शेषभाषणे ।
हं क्लीबमस्त्र-मुखयोः कणिते मणिरोचिषि ॥ १४७ ॥

परब्रह्मा-ऽऽमन्त्रणयोर्ह्राश्च प्रोन्मत्त-हास्ययोः ।
हूमव्ययः परिप्रश्ने वितर्के[1] पवने तु हौ ॥ १४८ ॥

हे कुत्सायां तथा है तु ह्र तु सम्बोधने तु हौ ।
क्षो राक्षसे क्षमे क्षेत्रे क्षेत्रपाले नृपे नरे[2] ॥ १४९ ॥

क्षः संरोधे विषौ भक्ष्ये क्षेमे दुःखप्रिये घने ।
क्षमा स्त्री क्षमाऽथाप्यनिन्दायां प्रत्यवाये च पुस्तके ॥ १५० ॥
नवोढाया भगे शूचौ क्षं क्लीबे क्षिप्र-दक्षयोः ।
क्ष मसृणे त्रिलिङ्गस्तु परोक्ष-क्षेत्रयोरपि ॥ १५१ ॥

क्षिः क्षये च तथा क्षिप्रे शब्दा ये द्व्यक्षरादयः ।
स्वरान्ता व्यञ्जनान्ताश्च ज्ञेया ग्रन्थान्तराच्च ते ॥ १५२ ॥

प्रह्लादपुरसम्भूतो दामोदरोऽभवत् पुरा ।
ग्रन्थकर्त्ताऽभवत् तस्मात् कालिदासाभिधः कविः ॥ १५३ ॥

॥ इति कालिदासकृतौ एकाक्षरी नाममाला समाप्ता ॥

*

१ ख. ग. वचने । २ ख. ग. स्मरे ।

[२६] श्रीमहेश्वरकवि-प्रणीता-एकाक्षरी नाममाला

को ब्रह्मा-ऽऽत्मा-ऽनिला-र्केषु शमने सर्वनाम्नि च ।
पावके च मयूरे च, सुख-शीर्ष-जलेषु कम् ॥ १ ॥

कु पापे चेषदर्थे च कुत्सायां च निवारणे ।
मनागल्पे च मन्दे च धिग् निर्भर्त्सन-निन्दयोः ॥ २ ॥

कुं प्रश्नेऽपि रुषोक्तौ च प्राध्वं नम्रा-ऽनुकूलयोः ।
खमिन्द्रिये सुखे स्वर्गे शून्ये बिन्दौ विहायसि ॥ ३ ॥

पुरे संवेदने क्षेत्रे कुलाहलफले क्वचित् ।
गौः स्वर्गे वृषभे रश्मौ वज्रे चन्द्रमसि स्मृतः ॥ ४ ॥

अर्जुने नेत्र-दिग्-बाण-भू-वाग्-वारिषु गौर्मता ।
घो घर्घरे च घण्टायां काञ्चिका-घातयोरपि ॥ ५ ॥

चान्वाचये समाहारेऽप्यन्योऽन्यार्थे समुच्चये ।
पक्षान्तरे तथा पादपूरणेऽप्यवधारणे ॥ ६ ॥

जो जन्यां जातमात्रे च मृत्युञ्जये जनार्दने ।
जराकाशे सरस्वत्यां पिशाच्यां जवनेऽपि च ॥ ७ ॥

तु पादपूरणे भेदे समुच्चयेऽवधारणे ।
तुं प्रश्नेऽङ्गीकृतौ रोषे आस्मृतौ चावधारणे ॥ ८ ॥

नु स्यात् प्रश्ने विकल्पार्थेऽप्यतीता-ऽनुनयार्थयोः ।
नि निवेश-भृशार्था-ऽधोभाव-विन्यास-राशिषु ॥ ९ ॥

आश्रये बन्धने मोक्षे दारकर्मणि दर्शने ।
अन्तर्भावे च सामीप्य-कौशलोपरमेषु च ॥ १० ॥

नित्यार्थे संयमे चापि क्षेपार्थेऽपि च विश्रुतम् ।
बशब्द उपमायां स्याद् वरुणेऽनुनयेऽपि च ॥ ११ ॥

बा स्याद् विकल्पोपमयोरेवार्थेऽपि समुच्चये ।
बि श्रेष्ठा-ऽतीत-नानार्थे बिः स्याद् पक्षिष्वनव्ययम् ॥ १२ ॥

बै स्यात् सम्बोधने पादपूरणेऽनुनयेऽपि च ।
भः स्यान्मयूखे शुक्रे भं नक्षत्रे च प्रकीर्तितम् ॥ १३ ॥

भूः पृथिव्यां स्थानमात्रे कथितः शब्दवेदिभिः ।
मः शिवे मा रमायां च मा निषेधेऽव्ययं मतम् ॥ १४ ॥

स्म पादपूरणेऽतीते सामि (?) निन्दा-ऽर्द्धयोर्मतम् ।
यः सर्वनामाऽनिलयोर्ज्या मौर्वी-मातृ-भूमिषु ॥ १५ ॥

द्युरग्नौ दिवसेऽपि स्याद् द्यौः स्वर्ग-सुरवर्त्मनोः ।
रः पावके च तीक्ष्णे च राः स्मृतः स्वर्ण-वित्तयोः ॥ १६ ॥

प्र प्रकर्षे गताद्यर्थे दुः स्यात् कष्ट-निषेधयोः ।
स्रुः स्रवे निर्झरे चापि द्रूः स्वर्णे कामरूपिणि ॥ १७ ॥

श्रीर्वेश-रचना-शोभा-भारती-सरलद्रवे ।
लक्ष्म्यां त्रिवर्गसम्पत्तौ वेशोपकरणे मता ॥ १८ ॥

वं प्रचेतसि जानीयादिवार्थे च तदव्ययम् ।
स्वं ज्ञातावात्म-धनयोरात्मीयं च प्रचक्ष्यते ॥ १९ ॥

शं सुखे शर्मणि प्रोक्तं श्रेयसि शश्च शस्त्रके ।
सं सङ्गार्थे प्रकृत्यर्थे शोभनार्थ-समर्थयोः ॥ २० ॥

सु पूजायां भृशार्था-ऽनुमति-कृच्छ्र-समृद्धिषु ।
हः स्यात् सम्बोधने पादपूरणेऽनव्ययं शिवे ॥ २१ ॥

हा विषादे च शोके च दुःखार्थेऽपि च कथ्यते ।
हि पादपूरणे हेतौ विशेषेऽप्यवधारणे ॥ २२ ॥

ही दुःख-हेतावुद्दिष्टो ह्री विस्मय-विषादयोः ।
हुं वितर्के परिप्रश्ने हुं रुषोक्त्यनुनीतिषु ॥ २३ ॥

हाहा दुःखे हुहु हर्षे गन्धर्वेऽमू त्वनव्यये ।
हे है व्यस्तौ समस्तौ च हूति-सम्बोधनार्थयोः ॥ २४ ॥

होहौ चैवंविधौ ज्ञेयौ सम्बुद्ध्याह्वानयोरपि ।
अ स्यादभावे स्वल्पार्थे विष्णावीशे त्वनव्ययम् ॥ २५ ॥

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्ये आः स्यात् सन्ताप-कोपयोः ।
इ खेदे च रुषोक्तौ च कामदेवे त्वनव्ययम् ॥ २६ ॥

ई दुःखभावने कोपे लक्ष्म्यामीः स्यादनव्ययम् ।
उ सम्बुद्धौ रुषोक्तौ च शम्भुवाची त्वनव्ययम् ॥ २७ ॥

ऊ वाक्यारम्भेऽनुकम्पा-रक्षा-हूतिष्वनव्ययम् ।
ॠ वाक्ये चापि कुत्सायां देवाम्बायां त्वनव्ययम् ॥ २८ ॥

एऐ शब्दौ तु हे-हैवत् स्मृत्या-ऽऽमन्त्रण-हूतिषु ।
ओ-औ शब्दौ च हो-हौवत् सम्बुद्ध्याह्वानयोर्मतौ ॥ २९ ॥

[विश्वप्रकाशनामशब्दकोषान्तर्गतभागः ।]

[२७] एकादिसंख्यासंज्ञाकोशः ।

१. एकसंख्यावाचकाः शब्दाः–

आदित्य-मेरु-चन्द्र-प्रासादा दीप-दण्ड-कलशाश्च ।
खड्ग-हरनेत्र-शेष-स्वर्दण्डा-ङ्गुष्ठ-हस्तिकराः ॥ १ ॥
नासावंश-विनायकदन्त-पताका मनांसि शक्राश्च ।
अद्वैतवदेकैका एवामी सुकविभिर्वर्ण्याः ॥ २ ॥

२. द्विसंख्यावाचकाः शब्दाः–

भुज-दृष्टि-पाद-कर्ण-स्तनसंख्या रामलक्ष्मणौ शृङ्गम् ।
गजदन्तौ प्रीतिरती गङ्गागौर्यौ विनायकस्कन्दौ ॥ ३ ॥
पक्ष-नदीतट-रथधुर्य-खड्गधाराश्च भरतशत्रुघ्नौ ।
रामसुतौ रविचन्द्रावित्येते द्वन्द्वगा वाच्याः ॥ ४ ॥

३. त्रिसंख्यावाचकाः शब्दाः–

भुवन-वलि-वह्नि-विद्या-सन्ध्या-गजजाति-शम्भुनेत्राणि ।
त्रिशिरोमौलि-दशा-क्षेत्रपाल-फण-काल-मुनि-दण्डाः ॥ ५ ॥
त्रिफला त्रिशूल-पुरुषाः पलाशदल-कालिदासकाव्यानि ।
वेदावस्था कम्बु-ग्रीवारेखा त्रिकूटकूटानि ॥ ६ ॥
हरहतपुर-त्रियामायामा यज्ञोपवीतसूत्राणि ।
जैन(?ने)रत्न—च्छत्र-प्रदक्षिणा-गुप्ति-शल्यानि ॥ ७ ॥
मुद्रा-प्रमाण-गौरव-शिवभवमार्गाः शुभेतरा लेश्याः ।
सर्वेऽप्यमी त्रिसंख्योपेताः काव्ये निबद्धव्याः ॥ ८ ॥

४. चतुःसंख्यावाचकाः शब्दाः–

ब्रह्ममुख-वेद-हरिभुज-सुरगजरद-वर्ण-चतुरिकास्तम्भाः ।
सङ्घ-समुद्राशमघात(?)-गोस्तना-ऽऽश्रम-कषाय-दिशः ॥ ९ ॥
गजजाति-याम-सेनाङ्ग-दण्डहस्ता महाजने वणिजः ।
दशरथपुत्रोपाय-ध्यान-कथा-ऽभिनय-रीति-गोचरणाः ॥ १० ॥
माला-स्तबक-कराङ्गुलि-संज्ञा-सुरभेद-योजनक्रोशाः ।
एते सलोकपालाः काव्ये योज्याश्चतुःसङ्ख्याः ॥ ११ ॥

५. पञ्चसंख्यावाचकाः शब्दाः –

स्मरबाण-पाण्डवेन्द्रिय-कराङ्गुली-शम्भुमुख-महायज्ञाः ।
विषय-व्या[क]रणाङ्ग-व्रत-वह्नि-सुपार्श्वफणिफला(णा)श्चैव ॥ १२ ॥
परमेष्ठि-महाकाव्य-स्थानक-तनुवात-मृगशिरश्च तथा ।
पञ्चकुल-महाभूत-प्रणाम-पञ्चोत्तरविमानाः ॥ १३ ॥
महाव्रत-मरुद्वृक्ष-समिति-स्थानकानि च ।
शस्त्रश्रमस्य चैतानि बध्नीयात् पञ्चसंख्यया ॥ १४ ॥

६. षट्संख्यावाचकाः शब्दाः –

रस-राग-चक्रकोणास्त्रिशिरोनेत्रा-ऽन्तराणि गुण-तर्काः ।
दर्शन-गुहमुख-भूषण्ड-चक्रिणः स्युरिह षट् संख्याः ॥ १५ ॥

७. सप्तसंख्यावाचकाः शब्दाः –

द्वीप-रविवाह-पाताल-शक्रवाहमुख-दुर्गति-समुद्राः ।
श्रीपार्श्वचिह्नफणिफल(ण)-तत्त्व-क्षेत्रा-ऽनलज्वालाः ॥ १६ ॥
राज्याङ्ग-धान्य-भुवन-स्वर-कुलपर्वत-नयाः समं तानाः ।
भय-सप्तपर्णपर्णा गोदावर्यस्त्वमी सप्त ॥ १७ ॥

८. अष्टसंख्यावाचकाः शब्दाः –

दिग्-देश-कुम्भिपालाः कुलपर्वत-शम्भुमूर्त्ति-वसवश्च ।
योगाङ्ग-व्याकर[ण]-ब्रह्मश्रुत्यहिकुलान्यष्टौ ॥ १८ ॥

९. नवसंख्यावाचकाः शब्दाः –

भूखण्ड-कृत्तरावणमुण्ड-सुधाकुण्ड-जैनपद्मानि ।
ग्रैवेय-रस-व्याघ्रीस्तन-गुप्ति-निधि-ग्रहास्तु नवसंख्याः ॥ १९ ॥

१०. दशसंख्यावाचकाः शब्दाः –

रावणमुखा-ऽङ्गुली-चन्द्रवाह-यतिधर्म-शम्भुकर्ण-दिशः ।
अङ्गद्वारा-ऽवस्थाः दशाः पुनः संख्यया दशैव स्युः ॥ २० ॥

११. एकादशसंख्यावाचकाः शब्दाः –

रुद्राक्षास्तन्नेत्राण्यङ्गोपाङ्गानि जिनमतोक्तानि ।
एकादश ध्रुवं स्युस्तथा जिनोपासकप्रतिमाः ॥ २१ ॥

१२. **द्वादशसंख्यावाचकाः शब्दाः–**

गुहनेत्र-राशि-मासाः सङ्क्रान्त्यादित्य-चक्रिराजानः ।

चक्रि-बृहस्पतिहस्ताः सभासदो द्वादश भवन्ति ॥ २२ ॥

१३. **त्रयोदशसंख्यावाचकाः शब्दाः–**

प्रथमजिनभवा-ऽघोषा विश्वेदेवास्त्रयोदश भवन्ति ।

विद्यास्थान-स्वर-भुवन-रत्न-पुरुषान्वय-स्वप्नाः ॥ २३ ॥

१४. **चतुर्दशसंख्यावाचकाः शब्दाः–**

जीवा-ऽजीवोपकरण-गुणमार्गल(ण)-रज्जु-सूत्र-पूर्वभिदाम् ।

कुलकर-पिण्डप्रकृति-स्रोतस्विन्यश्चतुर्दश तु ॥ २४ ॥

१५. **पञ्चदश-षोडशसंख्यावाचकाः शब्दाः–**

परमाधार्मिक-तिथयश्चन्द्रकलाः पञ्चदश भवन्तीह ।

१६. शुक्रार्चिषः शशिकला विद्यादेव्यस्तु षोडश भवन्तीह ॥२५॥

१७. **सप्तदशादिसंख्यावाचकाः शब्दाः–**

१८. सप्तदश संयमाश्चाष्टादश विद्या-पुराणानि ।

१९. द्वीपाः स्मृतयो ज्ञाताध्ययनान्येकोनविंशतिगतानि ॥ २६ ॥

२०. **विंशतिसंख्यावाचकाः शब्दाः–**

करशाखा श्रीभर्तुर्विंशोपकाः सकलजननखा-ऽङ्गुल्यः ।

दशकन्धरनेत्र-भुजास्तु संख्यया विंशतिर्वाच्या ॥ २७ ॥

१००. **शतसंख्यावाचकाः शब्दाङ्काः–**

कमलदल-रावणाङ्गुलि-शतमखमख-जलधियोजनानि स्युः ।

शतपत्रीपत्राऽऽदिमजिनसुत-धृतराष्ट्रनृपतिसुताः ॥ २८ ॥

जपमाला-मणिहारस्रजो-ऽस्ररुक्-कीचकाः शतप्रमिताः ।

अहिपतिमुख-गङ्गामुख-पङ्कजदल-करेन्द्रनेत्राणि ॥ २९ ॥

१०००. विश्वामित्रश्रमवर्षा-ऽर्जुनभुज-सामवेदशाखाश्च ।

पुण्यनरदृष्ठ(?दृष्ट)चन्द्राः सहस्रसंख्या अमी ज्ञेयाः ॥ ३० ॥

॥ इत्येकादिसंख्यासंज्ञाकोशः समाप्तः ॥

*

[२८] कवि रतनू वीरभांण कृत
राजस्थानीभाषानिबद्ध एकाक्षरी नाममाला ।

॥ दोहा ॥

कहत अकार ज विष्नकूं, पुनि महेस मत मांन ।
आ ब्रह्माकूं कहत है, ई जुग मा रमा जांन ॥ १ ॥
लघु उकार संकर कह्यौ, दीरघ विष्णु स देष ।
देवमात लघु रि कहै, दीरघ दनुज विशेष ॥ २ ॥
लघु लृकार सुरमात पुनि नागमात गुरु होय ।
ए जु कहत है विष्णुकौ, ऐ जु महेसुर सोय ॥ ३ ॥
ओ ब्रह्मा जु अनंत औं परब्रह्म अभिमान ।
कविकुल सब ही कहत यूं, अः महेस उर आंन ॥ ४ ॥
क ब्रह्माकूं कहत कवि, वाय सूर पुनि लेष ।
कहत आतमा सुष कहूं, क प्रकास अरु लेष ॥ ५ ॥
कं सिर कं जल कं जु सुख, कु धरती धर चित्त ।
कूं कुसमितकूं जानियौ, बहु विवेक धरि चित्त ॥ ६ ॥
खं इंद्रिय नभ खं कह्यौ, खं जु सरग पुनि सोय ।
कहै सु सून्यसे खं सबै, खं खंडग पुनि हौय ॥ ७ ॥
घंटा किंकिनि मेघसूं, कहत घ कार सब कोय ।
पुनि धुनिहूंसूं घू कहै, दक्ष गुनीजन लोय ॥ ८ ॥
कहत ङकार जूं भैरवह, अरु जि विसन जिय जांन ।
पुनि ङकार स्वरसूं कहै, चतुर चोर कहु मांन ॥ ९ ॥
चंद हि कहत चकार सब, अरु जु चोर कह मांन ।
सोभासूं सब कहत है, पक्ष सबदसूं जांन ॥ १० ॥
छं निरमल सब ही कहै, बहुर बीजुरी देष ।
छेदनहूकूं कहत कवि, पुनि जु संबर लेष ॥ ११ ॥

कहत जकार जु वेगसूं, अरु जु तेजसूं कोय ।
पूजाहूंसूं सब कहै, जेता जय वह होय ॥ १२ ॥

कहत झकार जु भैरवह, बहुर नष्ट कहुँ सोय ।
पुनि झकार वंचक कह्यौ, घरघर स्वर ही होय ॥ १३ ॥

मूढ रूप विषयातमा, अरु जु गायन हि गाय ।
झरजर स्वरसूं कहत है, सबै ञकार बनाय ॥ १४ ॥

ट पृथिवीसूं कहत कवि, टं वायस बहु जांन ।
कहत टकार जु ईश्वरी, वरहु जु स्वस्तन मांनि ॥ १५ ॥

कहत ठकार विसालसूं, पुनि धनसूं सब कोय ।
चंदमंडल ठं कहत कवि, ड संकरधुनि होय ॥ १६ ॥

ढक्काकूं ढ कहत कवि, ध्वनि निगूढ कह जांन ।
पुनि णकार कहि जांनसूं, अरु जु स्तुति कहुँ आंन ॥ १७ ॥

चोर क्रोध पुनि पुछि कहुँ, कहुँ तकार दे चित्त ।
भयरक्षण जु थकार कहुँ, सिला समूही मित्त ॥ १८ ॥

वेद दांन दातारसूं, अरु कलित्र द मांनि ।
धांन धात धन बंधन हि, कहत धकार सु जांनि ॥ १९ ॥

कहत जांन विश्वास पुनि, अरु जु निषेद नकार ।
नौ नावकहू कहत है, पंडित समझ निहार ॥ २० ॥

पवन पातरि पावन कहुँ, कहुँ पकार नित मित्त ।
रण्य सुसुप्त फकार कहुँ, प्रगट जु तिन कहुं नित्त ॥ २१ ॥

झंझावाय फकार कहुँ, कहुँ फकार भयरक्ष ।
निष्टजला सु फकार कहुँ, अरु फकार ही दक्ष ॥ २२ ॥

फूंकारे फूं कहत कवि, अफळ वचन फू आहि ।
पुनि बकार संग्राम कहि, अरु प्रवेस कहुँ मांहि ॥ २३ ॥

भ नक्षत्र पुनि भ्रमर, भ दीपत भानू भूम ।
भयकारण भी कहत सब, ता कहुं चित्त न झूम ॥ २४ ॥
चंद्र रुद्र सिर मा कहत, मा लच्छी परमान ।
माल मात अष्णा....मी, मुनि बंधन मू जांनि ॥ २५ ॥
मं जम काल यकार कहि, सूर श्रेष्ठ मन मांन ।
जांन जात अरु त्याग कहुं, बुधजन कहत सुजांन ॥ २६ ॥
काम अनल अरु वज्र पुनि, शब्द रूप धर चित्त ।
कहुँ रकार जल स्रवनको, रट्टन भय कहुं नित्त ॥ २७ ॥
इंद्र लवन दत व्याज पुनि, कहि लकार परसिद्ध ।
ली श्लेषम लयसूं कहै, लः निस्तक कहुं व्रिद्ध ॥ २८ ॥
सांत्वन वरनु रवी त कहुं, कहुं वकार समरत्थ ।
गति नय नर अरु श्रेष्ठ पुनि, कहुं वकारके अर्थ ॥ २९ ॥
कहत सकार परोखकूं, पुनि सोभा अति श्रेष्ठ ।
शं कल्यानह कहत है, संजुक्त ति पुनि श्रेष्ठ ॥ ३० ॥
सयनकाज सी कहत कवि,....वीदो(?)हंसा मान ।
कहत षकार परोखकूं, झाल खरी कहुं ठान ॥ ३१ ॥
कहत षकार जु स्नेहकूं, अरु सूला कहुं मान ।
हरह हकार विचित्र है, हे संबोधन ठान ॥ ३२ ॥
कहत क्षकार जु क्षीमकूं, क्षमा क्षनेका जांन ।
आद अकार क्षकार लौं, यह विध बरनत भांन ॥ ३३ ॥
विदुषन मुख सुनि तरक षट, अष्टादस हि पुरांन ।
नाममाल एकाक्षरी, भाषी रतनूं भांन ॥ ३४ ॥

*

इति श्रीघडोईरा रतनूं वीरभांण कृत एकाक्षरी नाममाला सपूर्णा ॥ सं १९५६ ना वर्षे श्रावणवदि ३ रवौ लिषिता श्रीगोडीजी प्रशादात् ॥

*

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं नमः । ॐ ऐँ नमः ॥

वाचनाचार्यश्रीवल्लभगणिविरचितं

विद्वत्प्रबोधशास्त्रम् ।

[शौभरिकोशद्व्याश्रयकाव्यरूपम्]

(टिप्पणीयुतम् ।)

प्रथमः परिच्छेदः ।

सारदां शारदां देवीं श्रीगुरुं सुगुरुं पुनः ।
प्रणम्य क्रियते शास्त्रं विद्वत्प्रबोधनामकम् ॥ १ ॥
तत्र संयोगिवर्णौघैर्वर्ण्यते वस्तुवर्णना ।
सकर्णलब्धवर्णानां प्रबोधाय प्रबोधदा ॥ २ ॥
तत्राऽस्मिन् प्राक्परिच्छेदे वर्णनं क्रियतेऽधुना ।
गजा-ऽश्व-वृषभादीनां चतुश्चरणधारिणाम् ॥ ३ ॥

क्ष्णातले गजघटा प्रकटेष्टे, क्ष्णाऽऽवलीकृदिव सज्जलदाली ।
क्ष्णापतीन्द्र ! हृदयस्य मोददा, क्ष्णाऽरिराजिरनिशं मददीप्ता ॥ ४ ॥

टिप्पणी–क्ष्णा–भूः तस्याः पतयः, तेषां इन्द्रः तत्सम्बोधने हे 'क्ष्णापतीन्द्र !' नरनाथ ! । क्ष्णायाः–भुवस्तलं तत्र, प्रकटा गजघटा अनिशं ईष्टे । केव ? 'सज्जलदालीव' सन्मेघश्रेणिरिव । किम्भूता सज्जलदाली ? क्ष्णानां–धान्यकणानां आवली तां करोति इति क्विपि क्ष्णावलीकृत् । किम्भूता गजघटा ? हृदयस्य मोददा । पुनः किम्भूता गजघटा ? क्ष्णा–छिन्ना अरिराजिर्यया सा तथा । पुनः किम्भूता गजघटा ? मददीप्ता ॥ ४ ॥

क्तिप्रभेन्द्र-हरि-काल-नैर्ऋत-क्ता-ऽनिलैलविलकेशदिग्धवाः ।
क्ताबलेन रचयन्ति यत्स्तुतिं, क्तस्फुटा द्विपघटा विभाति सा ॥५॥
क्थालिहद् दशदिशो धृता यतः, क्थं हरन्त्यविकलं तया हि च ।
क्थो नृणां कथयतीत्ययं जनः, क्थेड् ! न किं भवति वै स्वकार्थिकः? ॥६
॥ युग्मम् ॥

टिप्पणी–क्था–मही तस्यां ईष्टे स्वामित्वेन क्थेड्–राजा तदामन्त्रणं 'हे क्थेट् !' राजन् ! सा द्विपघटा विभाति । किम्भूत हे क्थेट् ! ? क्तिः–सूर्यः, तद्वत् [प्रभा–]

प्रतापो यस्य स तदामन्त्रणम्। सा का? यस्याः—द्विपघटायाः स्तुतिः यत्स्तुतिः तां 'रचयन्ति' कुर्वन्ति। के? इन्द्रश्च हरिश्च कालश्च—यमः नैर्ऋतश्च क्तश्च—वरुणः अनिलश्च—वायुः ऐलविलकश्च—कुबेरः ईशश्च—ईशानः इन्द्र-हरि-काल-नैर्ऋत-क्ता-ऽनिलै-लविलकेशाः, ते च ते दिग्धवाश्च—दिक्पतय इन्द्र-हरि-काल-नैर्ऋत-क्ता-ऽनिलैलविल-केशदिग्धवाः। केन? क्ता—वाक् तस्या बलं तेन, वाक्पाटवेन इत्यर्थः। दिक्पतयः स्तुतिं रचयन्ति तत्र हेतुमाह—'यतः, यस्मात् कारणात् 'तया' द्विपघटया दशदिशो धृता अतः कारणादेव स्तुवन्तीति। को भावः? दिशां धारका गजाः, इन्द्राद्याश्च दिशां पतयः, गजाश्च दिशस्तदैव धरन्ति यदा सन्तोषिता भवन्ति, 'सन्तोषित एव कार्यं करोत्यन्योऽपि' इति लोकोक्तिः, अत एव इन्द्रादीनां स्वार्थः, तेन द्विपघटां तावकीं दृष्ट्वा दिग्गजभ्रान्त्या स्तुवन्तीति भावः। 'हि' यस्मात् कारणाद् 'नृणां क्थः' मनुष्याणां सङ्घ इति कथयति। इति इति किम्? अयं जनः 'वै' स्फुटार्थे, अयं जनः 'स्वकार्थिकः' स्वार्थी किं न भवति? अपि तु भवति इत्यर्थः। काकाऽत्र नञ्, यतो यस्य स्वार्थं भवति स तद्वर्णनं करोत्येव, अतो गजान् दिग्धर्तृत्वेनेन्द्राद्याः स्तुवन्तीति। किम्भूता द्विपघटा? क्तेन—ज्योतिषा बलकान्त्या स्फुटा क्तस्फुटा। पुनः किम्भूता द्विपघटा? क्थस्य—दुःखस्य आलिः क्थालिः, तां हरतीति क्थालिहृत्। किं कुर्वाणा द्विपघटा? 'अविकलं' सर्वं 'क्थं' दैन्यं हरन्ती ॥ ५ ॥ ६ ॥ युग्मम् ॥

क्थावलीहरणतत्परोद्धुरा, क्थावली ह्यलति मञ्जुलोद्बला।
क्थापते! तव घनार्जितश्रियः, क्थेन चैव तदवापनं यतः ॥ ७ ॥

टिप्पणी—क्थायाः—भुवः पतिः क्थापतिः, तत्सम्बुद्धौ 'हे क्थापते!' नृप! तव क्थानां—गजानां आवली क्थावली 'हि' निश्चितम् 'अलति' दीप्यते। किम्भूता क्थावली? 'क्थावलीहरणतत्परा' दुःखश्रेणिहरणप्रह्वा। 'उद्धुरा' उत्कटा। किम्भूता? ['मञ्जुलोद्बला'] मञ्जुलं उत्कृष्टं च बलं यस्याः सा तथा। किम्भूतस्य तव? घनार्जित-श्रियः। 'यतः' यस्मात् कारणात् 'क्थेन' धनेनैव 'तदवापनम्' गजघटाप्रापणं भवति, अत एव घनार्जितश्रीरिति विशेषणम् ॥ ७ ॥

क्नप्रदस्तव गजः स सङ्गरे, क्नाधिनाथ! हरति द्विषां बलम्।
क्नद्वयस्य सुखकारि यद्यशः, क्नुप्रसद्मविहितस्थितीन्दति ॥ ८ ॥

टिप्पणी—'हे क्नाधिनाथ!' हे नृपते! तव स गजः 'सङ्गरे' युद्धे द्विषां बलं हरति। स कः? 'यद्यशः' [यस्य] जयकीर्तिः इन्दति "इदु परमैश्वर्ये"। किम्भूतो गजः? 'क्नप्रदः' उत्सवदाता। किम्भूतं यद्यशः? 'क्नद्वयस्य' कर्णयुग्मस्य सुखकारि। पुनः किम्भूतं यद्यशः? क्नवः—समुद्रास्त एव प्रसद्म तत्र विहिता स्थितिर्येन तत् क्नुप्रसद्म-विहितस्थिति ॥ ८ ॥

क्मोज्झिता अपि यतीश्वरा यकं, क्मायुताः सततमर्कयन्त्यरम् ।
क्मूप्रभाप्रतिभदन्तसुन्दरः, क्मक्षम ! क्षितिप ! भाति स द्विपः ॥९॥

टिप्पणी–'हे क्षितिप !' भूप ! सः 'द्विपः' गजः भाति । स कः ? यकं यतीश्वरा अपि 'सततं' प्रत्यहं 'अर्कयन्ति' स्तुवन्ति । किम्भूता यतीश्वराः ? 'क्मोज्झिताः' कन्दर्परहिताः । पुनः किम्भूता यतीश्वराः ? क्मया–रत्या युताः क्मायुताः । किम्भूतो द्विपः ? क्मूः–शङ्खः तस्य प्रभा तया प्रतिभौ–सदृशौ यौ दन्तौ ताभ्यां सुन्दरो यः स तथा । किम्भूत हे क्षितिप ! ? क्मेषु कर्म[सु] क्षमः–समर्थो यः स तथा तत्सम्बोधनम् ॥ ९ ॥

क्यप्रताप ! नृपतीन्द्र ! तावकः, क्यप्रतप्तघनगोलबिन्दुयुक् ।
क्यब्विलोप इव पञ्चमीं गजः, क्यऽद्भुतेभसम आपताज्जयम् ॥ १० ॥

॥ इति गजवर्णनम् ॥

टिप्पणी–हे नृपतीन्द्र ! तावको गजो जयं 'आपतात्' प्राप्नुयात्, "आप्लृण् लम्भने" यौजादिकः । कां क इव ? पञ्चमीं विभक्तिं 'क्यब्विलोप इव' यथा क्यब्लोपः कर्मणोऽर्थे अधिकरणस्यार्थे च पञ्चमीं विभक्तिं प्राप्नोति तथा गजो जयं प्राप्नुयादित्यर्थः । किम्भूत हे नृपतीन्द्र ! ? क्यः–सूर्यः स इव प्रतापो यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । किम्भूतो गजः ? क्यः–अग्निः तेन प्रतप्तो यो घनगोलः–लोहगोलकः तद्वद् ये रक्ता बिन्दवः तैः युग्–युक्तो यः स तथा, रक्तबिन्दुमानित्यर्थः । पुनः किम्भूतो गजः ? किः–इन्द्रः तस्य यः अद्भुतेभः–सम्यग् हस्ती तेन समः–समानो यः स तथा ॥ १० ॥

॥ इति गजवर्णनम् ॥

क्रामति क्षितिपते ! तुरङ्गमः, कृष्टुमाश्वरिभुवं जयावहः ।
कृष्टृवच्चतुरताविराजित !, क्रान्तशक्रतुरगप्रभोदयः ॥ ११ ॥

टिप्पणी–'हे क्षितिपते !' नृप ! 'तुरङ्गमः' अश्वः 'क्रामति' पादविक्षेपं करोति । किं कर्तुम् ? 'आशु' शीघ्रम् 'अरिभुवं' रिपुपृथ्वीं 'कृष्टुं' विलिखितुम् । किंवत् ? 'कृष्टृवत्' कर्षुक इव, यथा कर्षुको भुवं कृष्टुं क्रामति तथा । किम्भूतस्तुरङ्गमः ? जयावहः । किम्भूत हे क्षितिपते ! ? चतुरताविराजित ! । पुनः किम्भूतस्तुरङ्गमः ? क्रान्तः शक्रतुरगस्य–उच्चैःश्रवसोऽश्वस्य प्रभोदयः–शोभोदयो येन स तथा ॥ ११ ॥

क्लेशितातुलबलावलोकनक्लेशकारकविपक्षपक्षकः ।
क्लीबतारहितचेतसां विशां, क्लान्तिकृज्जयति भूपते ! हयः ॥ १२ ॥

टिप्पणी–हे भूपते ! हयो जयति । किम्भूतो हयः ? "क्लेशि बाधने" क्लेशितः अतुलबलावलोकनेन क्लेशकारकविपक्षाणां पक्षो येन स तथा । पुनः किम्भूतो हयः ? क्लीबतारहितचेतसां 'विशां' नृणां क्षान्तिकृत् ॥ १२ ॥

क्वाप्यवस्थितिमसावनाप्नुवन्, काथहा हरिहयो हरिं श्रितः ।
क्वां हयोऽसति यदोजसा जितः, काण एष जगतीति वर्तते ॥ १३ ॥

टिप्पणी–'जगति' लोके 'एषः' प्रत्यक्षः 'काणः' शब्द इति वर्तते । इतीति किम् ? स हयः 'क्वां' पृथ्व्यां 'असति' दीप्यते । स कः ? यदोजसाऽसौ 'हरिहयः' उच्चैःश्रवाः जितः सन् क्वापि अवस्थितिमनाप्नुवन् 'हरिम्' इन्द्रं 'श्रितः' आश्रितः । किम्भूतो हयः ? 'काथहा' दुःखहा ॥ १३ ॥

ख्यातकीर्तिरसकौ हयो वरः, ख्याति खल्वविकलं जयं तव ।
ख्यातिमन् नृप! सुलालिकामिषैः, ख्यान्ति पण्डितजना इति स्फुटम् ॥१४॥

टिप्पणी–पण्डितजना इति स्फुटं 'ख्यान्ति' कथयन्ति । इतीति किम् ? हे नृप ! असकौ हयः तव 'खलु' निश्चितं अविकलं जयं 'ख्याति' आचष्टे । कैः ? 'सुलालिका-मिषैः' शोभनलालाव्याजैः । किम्भूतो हयः ? ख्यातकीर्तिः । पुनः किम्भूतो हयः ? वरः । किम्भूत हे नृप ! ? ख्यातिमन् ! ॥ १४ ॥

ख्रक्ष्मापतिततिप्रणाशक !, ख्राधिनाथ ! विचरंस्तुरङ्गमः ।
ख्रं प्रयच्छति तवारिसन्ततेः, ख्रं विनैव कुतुकं त्विदं महत् ॥ १५ ॥

टिप्पणी–'हे ख्राधिनाथ !' हे भूपाल ! तुरङ्गमः विचरन् सन् तवारिसन्ततेः 'ख्रं' खड्गं विनैव 'ख्रं' मरणं प्रयच्छति, इदं महत् कुतुकम् । किम्भूत हे ख्राधिनाथ ! ? ख्राः–दुष्टहृदयाः ये क्ष्मापतयस्तेषां ततिस्तस्याः प्रणाशकस्तदामन्त्रणम् ॥ १५ ॥

ख्लावली छलति तावदुद्बलं, ख्लावलीव सकलं प्रजाबलम् ।
ख्लाकुला खलु मिलत्यहो ! न भूख्लापते ! तव हयः पुमानिव ॥१६॥

टिप्पणी–भूरेव ख्ला–स्त्री तस्याः पतिस्तदामन्त्रणं हे भूख्लापते ! । 'ख्लावली' दुर्जनश्रेणिः 'उद्बलम्' उत्कृष्टबलं सकलं प्रजाबलं तावत् छलति, यावदिति पदमध्याहार्यम्, 'अहो !' इत्याश्चर्ये, 'खलु' निश्चितं तव हयः पुमानिव न मिलति ॥ १६ ॥

ग्याङ्गजावितवराः सुवागरा, ग्यं यदीयमनिशं स्तुवन्त्यरम् ।
ग्यद्भुतोदितजय! प्रदीप्यते, ग्यद्विषन् ! स तुरगो महीपते ! ॥ १७ ॥

ग्रस्तसङ्गररुजां सुभूभुजां, ग्रावराजसमधैर्यसंयुजाम् ।
ग्रासवन्मदकरोऽरिसम्पदा, ग्राममाशु हरतीश ! ते हयः ॥ १८ ॥

॥ इति अश्ववर्णनम् ॥

ग्लानतारहितपीनभूघनो, ग्लौलसत्किरणकोटितुल्यरुक् ।
ग्लायति प्रबलमाश्वशं यतो, ग्लौगुणेश ! नृप ! भाति गौः स ते ॥१९॥

ग्वः प्रदीप्यत इलापतेऽनिशं, ग्वावलीषु सबलोऽमलाङ्गरुक् ।
ग्वाधिनाथ ! वृषभप्रभोदयो, ग्वद्भुताङ्ग ! वसुधापते ! तव ॥ २० ॥

घ्नप्रदाभनिनदो नदन्नरं, घ्नातिदीसिततियुक् ककुद्युतः ।
घ्नोऽतिदुष्कृततर्तेर्विराजते, घ्नामणिप्रतिभ ! भूप ! ते वृषः ॥ २१ ॥

घ्याशयान्तरसिताङ्गदीधितिर्घ्यद्भुतेद्धजनचित्तहर्षदः ।
घ्यादिदेवविसराः स्तुवन्त्यरं, घ्यर्क्यरुग् यमसते वृषः सकः ॥ २२ ॥

घ्रप्रभो ! गुणसुमङ्गलश्रिया, घ्रं वरं प्रविदधान इन्दति ।
घ्राणभूषणयुतो महातनुर्घ्रानन ! क्षितिप ! तावको वृषः ॥ २३ ॥

घ्लारोहसन्दोहफलीकृताज्ञ !, घ्लौजोविराजी नृप ! राजते ते ।
घ्लोर्जस्व्यनड्वान् वृषभो वृषेभो,घ्लालीलसल्लक्षणलुब्धचेतः ॥ २४ ॥

घ्वेतिनिस्वनमिषेण मेघजं, घ्वं जयंश्च विदधाति ते स्तुतिम् ।
घ्वीश्वर ! त्वदतनुस्फुरद्गुणघ्वादनेन सुमना वृषोऽसकौ ॥ २५ ॥

ङ्गाधिनाथ ! जनयत्ययं वृषोऽङ्गप्रधानमुदमुत्तमां नृणाम् ।
ङ्गावलीं शरणदायकाग्रणीर्ङ्गोद्धुरो रथधुरन्धरोत्तरः ॥ २६ ॥

च्यावयन् धवलपद्ममण्डलीं, च्योतिताऽपरसितार्थकान्तिभिः ।
च्यावयत्यतनुभारमुद्धुरां, च्यातिसुन्दरगते ! महीपते ! ॥ २७ ॥

॥ इति वृषभवर्णनम् ॥

च्रावलीस्तुतगुणौघ ! भूपते ! च्रातिचञ्चुरमहौजसो हरिः ।
च्रापवर्जित उदारसारयुक्, च्रोदितस्य विश एति सम्मदम् ॥ २८ ॥

छ्योघं यथा चित्रक आशु तुष्यच्छ्यामाङ्गरोचिर्हरति प्रकामम् ।
छ्यारञ्जकोर्वीश!हरिस्तथाऽयं,छ्याढ्यस्त्वदीयो रिपुहस्तिवृन्दम्॥२९॥

छ्रू इव हन्ति तिरश्च इमां ततिं, छ्रूवियुतो नृपते ! नखरायुधः ।
छ्रूततिनाशविधिप्रवणक्रमः, छ्रूरहिताद्भुतवर्णमणीगण ! ॥ ३० ॥

छ्लोत्कटान् प्रकटकान् सदोल्लसच्छ्लक्ष्णलक्ष्मिकलितानरिद्विपान् ।
छ्लायुतो हरिरयं हिनस्त्यलच्छिष्टकीर्तिकमलाऽचलापते ! ॥ ३१ ॥

छ्वावन् ! महीपाल ! महाबलिष्ठ !, छ्वाद्यासुमत्पालनसावधान ! ।
छ्वज्ञप्ति-मूर्त्ते ! तव भाति भास्वच्छ्वासो हरिः प्राज्ञजनाऽर्कणीयः ॥३२॥

टिप्पणी—छ्वा—छविर्विद्यते यस्य स छ्वावान् तदामन्त्रणम् । छ्वः—छाग आद्यो येषां ते छ्वाद्याः, ते च ते असुमन्तश्च—प्राणिनः छ्वाद्यासुमन्तः, तेषां पालने सावधानो यः स तथा तदामन्त्रणम् । छ्वे—स्वच्छे ज्ञप्ति-मूर्ती यस्य स तथा तत्सम्बोधनम् । ज्ञप्तिः—बुद्धिः ॥३२॥

ज्यायानसौ भाति हरिस्त्वदीयो, ज्यायामतो नास्त्यपरो बलीयान् ।
ज्यानाथविख्यातयशः ! प्रधानेज्यः शोभमानौष्ठविशिष्टवक्त्रः ॥ ३३ ॥

टिप्पणी—'ज्यानाथविख्यातयशः !' भूनाथख्यातकीर्त्ते ! । 'प्रधानेज्यः' शोभनपूजः ॥ ३३ ॥

ज्र्ज्वालिकातापितहेम-विद्युज्ज्रोद्भासिनेत्रो वरपीवरोरुः ।
ज्रं राजते त्वद्धरिरेष दिव्यो, ज्रश्रीतिरस्कृत्कमलाऽचलेश ! ॥ ३४ ॥

टिप्पणी—ज्र्ज्वालिकाभिः—अग्निज्वालाभिस्तापितं यद् हेम ज्र्ज्वालिकातापितहेम, तच्च विद्युच्च ज्र्ज्वालिकातापितहेमविद्युतौ, तयोरिव ज्रोद्भासिनी—वृद्धदीप्यमाने नेत्रे यस्य स तथा, पीतनेत्रत्वात् सिंहस्य । 'ज्रम्' अजस्रम् । 'ज्रश्रीतिरस्कृत्कमल !' कृष्णश्रीतिरस्कृत्कमल ! । 'अचलेश !' हे महीश ! ॥ ३४ ॥

ज्वालावलीदुस्सहसत्प्रताप !, ज्वाक्रान्तभूपालकलाऽचलेश ! ।
ज्वालाऽऽभचक्षू रसनाऽतिरक्ता, ज्वा दीप्यते यस्य हरिः सकस्ते ॥ ३५ ॥

टिप्पणी—ज्वेन—वेगेन आक्रान्ता भूपालानां कला येन स तथा तदामन्त्रणम् । 'अचलेश' हे भूप ! । ज्वालाभे—ज्वालासदृक्षे चक्षुषी यस्य स तथा । किम्भूता रसना ? 'ज्वा' चञ्चला, लपलपायमानत्वात् । 'ते' तव ॥ ३५ ॥

झ्यानाथतीरे तव यस्य कीर्तिं, झ्यौघाकुले गायति देववृन्दः ।
झ्यैश्वर्यमेकाकिनमाप्नुवन्तं, झ्याढ्याऽवनीनाथ ! हरिं स पश्य ॥ ३६ ॥

टिप्पणी—हे 'अवनीनाथं !' भूपाल ! स त्वं 'हरिं' सिंहं 'पश्य' विलोकय । किं कुर्वन्तं हरिम् ? 'आप्नुवन्तं' प्राप्नुवन्तम् , किं तत् ? 'इयैश्वर्यं' हस्त्याधिपत्यम् । इशब्द ईबन्तो हस्तिवाचक एकाक्षरकोषे [सौ. ए. को. श्लो. ४१]। किंविशिष्टं हरिम् ? एकाकिनम् । स त्वं पश्य । स इति कः ? यस्य तव 'कीर्तिं' यशः देववृन्दो गायति । क ? इयानाथतीरे इयाः—नद्यः तासां नाथो इयानाथः—समुद्रः तस्य तीरे—तटे । किम्भूते ? 'इयौघाकुले' इयानां—द्रहाणाम् ओघः—वृन्दं तेनाऽऽकुलो यः स तथा तस्मिन् । किम्भूत हे अवनीनाथ ! ? 'इयाढ्य !' कलाढ्य ! । इदन्तो झिशब्दः कलावाचकः [सौ. ए. को. श्लो. ४०] ॥ ३६ ॥

झ्नां करोत्यरिमृगावलेर्नृप !, झ्नोर्जधार्यऽविरतं मृगाधिपः ।
झ्न-स्थिर-प्रवर-वृत्तदंष्ट्रिको, झ्नातिमुक्तवरकेसरच्छटः ॥ ३७ ॥

टिप्पणी—'झ्नां' हानिम् । 'मृगाधिपः' सिंहः । किम्भूतो मृगाधिपः ? 'झ्नोर्जधारी' कठोरबलधारी । ऊर्जशब्दो बलवाची अदन्तोऽप्यस्ति । पुनः किम्भूतो मृगाधिपः ? झ्नाश्च—पुष्टाः स्थिराश्च प्रवराश्च वृत्ताश्च दंष्ट्रा विद्यन्ते यस्य स तथा । पुनः किम्भूतो मृगाधिपः ? झ्ना—जरा तयाऽतिशयेन मुक्तः—रहितो य स झ्नातिमुक्तः, स चासौ वरकेसरच्छटश्च झ्नारहित(झ्नातिमुक्त)वरकेसरच्छटः ॥ ३७ ॥

झ्वाधवादिमुनिसङ्घसेवक !, झ्वौघचित्तमददायिकीर्तिसन् ! ।
झ्वाद्मरो नर इवाऽलते बली, झ्वङ्कहृन्नरपते ! हरिस्तव ॥ ३८ ॥

टिप्पणी—हे नरपते ! तव 'हरिः' सिंहः 'अलते' शोभते । किम्भूतः सन् ? 'बली' बलवान् । क इव ? 'झ्वाद्मरः' दधिभोक्ता नर इव, यथा दधिभोक्ता मर्त्यः बली शोभते तथा । किम्भूत हे नरपते ! ? झ्वा—अरुन्धती तस्या धवः—भर्ता झ्वाधवः—वसिष्ठः, स आदिर्येषां ते झ्वाधवादयः, ते च ते मुनयः तेषां सङ्घः तस्य सेवकः, तदामन्त्रणम् । झ्वुशब्देन देवाः, तेषां ओघस्तस्य चित्तमददायिनी या कीर्तिः तया सन्—प्रधानः, तदामन्त्रणम् । झ्वुश्च—शोकः अङ्कं च—दुःखं ते हरतीति किपि झ्वङ्कहृत्, तदामन्त्रणम् ॥ ३८ ॥

ञ्युत्तमोच्छ्वसितपुच्छशोभितो, ञ्यग्रणीड्य ! नरनाथ ! तावकः ।
ञ्यारहाश्च रमणीयवीक्ष्यकृद्, ञ्याभताप ! रमतेतरां हरिः ॥ ३९ ॥

टिप्पणी—हे नरनाथ ! तावको हरिः रमतेतराम् । किम्भूतो हरिः ? ञिशब्देन ज्ञानवृद्धाः [सौ. ए. को. श्लो. ४३], तेषूत्तमः तत्सम्बोधनम् । उच्छ्वसित—उदग्र । पुनः किम्भूतो हरिः ? ञिशब्देन सम्राजः [सौ. ए. को. श्लो. ४३], तेषु अग्रण्यः तेषां ईड्यः—स्तुत्यः, तदामन्त्रणम् । ञि—सम्राट्, तच्च तदारं च ञ्यारम्, तद् हन्तीति

ञ्यारह्वा, "क्विप्" [सि. ५।१।१४८] इत्यनेन क्विप् । वीक्ष्यम्—आश्चर्यं करोतीति वीक्ष्यकृद्, रमणीयश्चासौ वीक्ष्यकृच्च०, सिंहस्यैतद् विशेषणद्वयम् । ञिः—अग्निः तदाभः तापः—प्रतापो यस्य स तथा तदामन्त्रणम् ॥ ३९ ॥

ञ्रावलीक्षितिविधानतत्पर !, ञ्राऽभिरञ्जितमहाप्रजाऽरजः ! ।
ञ्राऽभिभूतगजराज ! राजते, ञ्राभियुक्त ! हरिरेष तावकः ॥ ४० ॥

टिप्पणी—ञ्रावली—चौरश्रेणिः । ञ्राभिरञ्जित—नीत्यभिरञ्जित । अरजः !—निष्पाप ! । ञ्राभिभूत—गतिजित । 'ञ्राभियुक्त !' हे नीतिसहित नृप ! ॥ ४० ॥

ट्यानाथ ! दंष्ट्रातिविडम्बितास्यं, ट्याघूर्मितं पश्य सुदृश्यशौर्यम् ।
ट्यालीबलं स्राक् खलु नाशयन्तं, ट्योघारिमेनं मृगराजमग्रम् ॥४१॥

टिप्पणी—ट्या—पृथ्वी तस्या नाथः—स्वामी ट्यानाथः, तत्सम्बुद्धौ 'हे ट्यानाथ !' भूपते ! एनं 'मृगराजं' सिंहं 'पश्य' विलोकय । किं कुर्वन्तम् ? 'खलु' निश्चितम्, टीनां—करेणूनां आली—राजी ट्याली, तस्या बलं—स्थाम तत् 'स्राक्' शीघ्रं नाशयन्तम् । किम्भूतम् ? दंष्ट्राभिरतिशयेन विडम्बितम्—अलङ्कृतं आस्यं—मुखं यस्य स तथा तम् । पुनः किम्भूतम् ? ट्या—सुरा तया घूर्मितो यः स तथा तम् । पुनः किम्भूतम् ? सुतरां दृश्यं—विलोकनीयं शौर्यं—पराक्रमो यस्य स तथा तम् । पुनः किम्भूतम् ? टीनां—गजानां ओघः तस्यारिर्यः स तथा तम् । 'अग्रम्' श्रेष्ठम् ॥ ४१ ॥

ट्रूस्थित ! क्षितिपते ! गजावलीट्रारवोत्करविराजि राज्यकम् ।
ट्रेतिशब्दवरटोत्करोत्करट्राग्रहस्ति तयुदेति तस्य ङोः ॥ ४२ ॥

टिप्पणी—'हे ट्रूस्थित !' सिंहासनस्थ ! 'हे क्षितिपते !' नृप ! तस्य 'ते' तव 'ङोः' सिंहः 'उदेति' उदयं प्राप्नोति । तस्य कस्य ? यत्तदोर्नित्याभिसम्बन्धाद् यस्य 'राज्यकं' राज्यं राजत इति शेषः । किम्भूतम् ? गजावल्या यः ट्र् ट्र् इति आरवः तस्य उत्करः—वृन्दं तेन विराजि यत् तत् तथा । पुनः किम्भूतम् ? 'ट्रेतिशब्द०' टं इति शब्दं उत्—प्राबल्येन करोतीति टोत्करः, लोके 'टोकरउ' इति प्रतीतिः, ट्रेतिशब्देन वरः—श्रेष्ठः ट्रेतिशब्दवरः, स चासौ टोत्करश्च ट्रेतिशब्दवरटोत्करः, तस्य उत्करः—वृन्दं तस्य यत् ट्रं—शब्दविशेषः तेन अग्राः—श्रेष्ठा हस्तिनो यत्र तत् तथा ॥ ४२ ॥

ट्वाक्षिजन्ममुख ! मुख्यसम्पद !, ट्वेन्द्रियायतन ! भूप ! तावकी ।
ट्वेव सुप्तिसमये रणे सुखं, ट्वं करोति हरिराजिरेषका ॥ ४३ ॥

टिप्पणी—हे भूप ! तावकी 'एषका' एषा 'हरिराजिः' सिंहावली 'रणे' सङ्ग्रामे सुखं करोति । किम्भूतं सुखम् ? 'ट्वम्' पुष्टं क्षयाभावात् । कस्मिन् केव ? 'सुप्तिसमये'

शयनकाले 'ट्वेव' खट्वेव, यथा खट्वा शयनकाले सुखं करोति तथैषाऽपि। किम्भूत हे भूप!? ट्वः—अत्रिः तस्य अक्षि—नेत्रं ततो जन्म—जननं यस्य सः ट्वाक्षिजन्मा—चन्द्रः, तद्वन्मुखं यस्य स तथा तदामन्त्रणम्। ट्वं—पुष्टं इन्द्रियायतनं—कायो यस्य स तथा तदामन्त्रणम्॥ ४३॥

ठ्यप्रताप! वसुधापते! क्षितौ, ठ्यो मनो हरति ते स्वकौजसा।
ठ्यं वदन्ति खलु कोविदा इति, ठ्यग्र! दर्शनभयङ्करानन:॥४४॥

टिप्पणी—'हे ठ्यप्रताप!' दुस्सहत्वाद् वह्निसमानप्रताप! 'हे वसुधापते!' भूप! 'ते' तव मनः 'ठ्यः' हरिः हरति। केन? 'स्वकौजसा' स्वीयबलेन। 'खलु' निश्चितम्। कोविदा इति 'ठ्यं' वाक्यं वदन्ति। ठीः—कुटुम्बवान् पुत्रवान् वा, स चासौ अग्रश्च तदामन्त्रणम्॥ ४४॥

ठ्स्वादवच्चित्तमदप्रदः श्रीठ्राविह्वलद्वेषिमृगप्रणाशी।
ठ्रालीद्धकुम्भस्थलदन्तिभेदी, ठ्रह्लादमीष्टे विदधत् सुसिंहः॥ ४५॥

टिप्पणी—हे नृप! सुसिंहः ईष्टे। किं कुर्वन्? 'ठ्रह्लादं' 'ठ्रम्' इति शब्दं 'विदधत्' कुर्वन्। किम्भूतः सुसिंहः? 'चित्तमदप्रदः' चेतोहर्षदाता। किंवत्? 'ठ्स्वादवत्' मिष्टान्नफलरसास्वादवत्। पुनः किम्भूतः सुसिंहः? श्रीः—लक्ष्मीः सैव ठ्रा—सुरा तया विह्वला ये द्वेषिणः त एव मृगाः तान् प्रणाशयतीत्येवंशीलो यः स तथा। पुनः किम्भूतः सुसिंहः? ठ्राणां—भ्रमरीणां आली—श्रेणिः तया इद्धः—समृद्धः कुम्भस्थलो येषां ते ठ्रालीद्धकुम्भस्थलाः, ते च ते दन्तिनश्च—गजाः तान् भिनत्तीत्येवंशीलो यः स तथा॥ ४५॥

ठ्वार्कणीयगुणगौरव! प्रभो!, ठ्वेज्यया विगतभूरिवैरिराट्!।
ठ्वग्रगीष्पतिमतिक्षितिप्रद!, ठ्वग्र! हर्षयति ते मनो हरिः॥४६॥

॥ सिंहवर्णनम्॥

टिप्पणी—'हे प्रभो!' स्वामिन्! 'ते' तव मनः हरिर्हर्षयति। किम्भूत हे प्रभो!? ठ्वस्य—वसिष्ठऋषेः अर्कणीयं—स्तवनीयं गुणगौरवं यस्य स तथा तदामन्त्रणम्। पुनः किम्भूत हे प्रभो!? 'ठ्वेज्यया' कृष्णपूजया विगतभूरिवैरिराट्!। पुनः किम्भूत हे प्रभो!? ठ्वः—प्रज्ञा तया अग्रः ठ्वग्रः, स चासौ गीष्पतिश्च—बृहस्पतिः तस्य मतिः तस्याः क्षितिं—क्षयं प्रददातीति तथा तदामन्त्रणम्। ठ्वः—धृतिः तया अग्रः ठ्वग्रः, तत्सम्बोधनम्॥ ४६॥

॥ इति सिंहवर्णनम्॥

ड्यप्रमुक्त! वृषरक्त! कोविदेड्यस्फुरद्गुणगण! क्रमेलकः।
ड्यं द्विषां गतिविलोकनात् क्षणात्, ड्यर्यभक्त! तनुते महातनुः॥४७॥

टिप्पणी—हे 'ड्यप्रमुक्त !' जाड्यरहित !, 'वृषरक्त !' धर्मनिरत !, कोविदानां ईड्यः—स्तवनीयः स्फुरद्गुणगणो यस्य स तथा तदामन्त्रणम्। 'क्रमेलकः' उष्ट्रः 'द्विषां' वैरिणां 'ड्यं' जाड्यं तनुते । कस्मात् ? 'क्षणात्' क्षणमात्रेण गतिविलोकनात् । डिः—गौरी तस्या अर्यः—स्वामी ड्यर्यः—शम्भुः, तस्य भक्तः तदामन्त्रणम् । किम्भूतः क्रमेलकः ? 'महातनुः' महाकायः ॥ ४७ ॥

डूदायकाऽनीतिमतां जनानां, डूमानवव्राजमतल्लिकस्य ।
डूनेत्र ! भूपेन्द्र ! तवावनीं स्राग्, डूमुख्य आक्रामति केलिकीर्णः ॥४८॥

टिप्पणी—हे भूपेन्द्र ! तव 'केलिकीर्णः' उष्ट्रः स्राग् अवनीं आक्रामति । किम्भूतः केलिकीर्णः ? 'डूमुख्यः' दूरगामिश्रेष्ठः । किम्भूत हे भूपेन्द्र ! ? अनीतिमतां जनानां 'डूदायक !' दण्डदातः ! । किम्भूतस्य तव ? 'डूमानवव्राजमतल्लिकस्य' दक्षमनुष्यनिकरश्रेष्ठस्य । डूं—कमलं तत्तुल्ये नेत्रे—लोचने यस्य स तथा तदामन्त्रणम् ॥ ४८ ॥

ड्वामण्डलीमण्डितवक्त्र उष्ट्रो, ड्वो दीप्यते भूप ! तवैष वृद्धः ।
ड्वाभाननाऽतुल्यशरीरदीप्तिड्वीशान-डिण्डीरविशुद्धकीर्ते ! ॥ ४९ ॥

टिप्पणी—हे भूप ! तव एष उष्ट्रः दीप्यते । किम्भूत उष्ट्रः ? ड्वामण्डल्या—दाढाश्रेण्या मण्डितं वक्त्रं यस्य स तथा । पुनः किम्भूत उष्ट्रः ? 'ड्वः' महोदरः । किम्भूत हे भूप ! ? ड्वः—चन्द्रः तदाभं—तत्सदृक्षं आननं यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । किम्भूत उष्ट्रः ? 'अतुल्यशरीरदीप्तिः' अतुल्या—उच्चनीचा शरीरदीप्तिः—कायशोभा यस्य स तथा । किम्भूत हे भूप ! ? ड्वश्च—चन्द्रः ईशानश्च—ईश्वरः डिण्डीराश्च—फेनाः ड्वीशानडिण्डीराः, त इव विशुद्धा कीर्तिर्यस्य स तथा तदामन्त्रणम् ॥ ४९ ॥

ढ्याधीश ! धीश ! विदधातु तव प्रमोदं,
ढ्यायुक्त एष करभः शुभलक्षणाढ्यः ।
ढ्याभृद् गुहस्य इव दिव्यकलाकलापा-
ढ्यस्य प्रशस्यबहलश्रिय ईड्यमूर्त्तेः ॥ ५० ॥

टिप्पणी—'हे ढ्याधीश !' महीश ! 'हे धीश !' धीनाथ ! एषः 'करभः' उष्ट्रः तव प्रमोदं विदधातु । कस्य क इव ? 'गुहस्य' स्कन्दस्य, ढ्यां—गङ्गां बिभर्तीति 'ढ्याभृद्' महेशः स इव, यथा महेशः गुहस्य प्रमोदं करोति तथा । किम्भूतः करभः ? ढ्या—रमा बलसम्पदित्यर्थः, तया युक्तः । महेशपक्षे—ढ्या—विभूतिश्रीः तया युक्तः । पुनः किम्भूतः करभः ? शुभलक्षणाढ्यः, पक्षे श्रेयोलक्षणसमृद्धः । किम्भूतस्य तव ? दिव्यकलाकलापाढ्यस्य, गुहपक्षेऽप्येवमेव । पुनः किम्भूतस्य ? प्रशस्यबहलश्रियः, पक्षेऽप्येवमेव । पुनः किम्भूतस्य ? ईड्यमूर्तेः, पक्षेऽपीत्थमेव ॥ ५० ॥

ढ्वारिः पथं लङ्घयति क्षणेनाऽढ्रो लम्भजङ्घश्च सुदुर्गलङ्घी ।
ढ्राधीश ! भूमीश ! तवैष उष्ट्रो, ढ्रापद्विनिर्मुक्त ! समस्तशत्रुः ॥५१॥

टिप्पणी–हे भूमीश ! तव एष उष्ट्रः क्षणेन 'पथं' मार्गं लङ्घयति, पथशब्दोऽकारान्तोऽपि । किम्भूत उष्ट्रः ? ढ्रः–भ्रष्टा नष्टा इति यावद् अरयो यस्मात् स तथा । तथा ढ्रं–फल्गु अभव्यमित्यर्थः, न ढ्रो 'अढ्रः' भव्यः सुखकारीत्यर्थः । 'ढ्राधीश ! विदुराधीश ! । 'ढ्रापद्विनिर्मुक्त !' मरणापद्रहित ! । 'समस्तशत्रुः' सम्यग्हृतरिपुः ॥५१॥

ढ्लिस्तुत्यलक्ष्मीर्बलवान् क्रमेलो, ढ्लानाथ ! ते चित्तमुदं दधाति ।
ढ्लः केशवस्येव विशालभाल ! ढ्लह्राद ! राजेन्द्र ! गिरीन्द्रधीर ! ॥ ५२ ॥

टिप्पणी–'हे ढ्लानाथ !' भूप ! 'क्रमेलः' उष्ट्रः 'ते' तव चित्तमुदं दधाति । कस्य क इव ? 'केशवस्य ढ्ल इव' यथा 'ढ्लः' गरुडः केशवस्य चित्तमुदं दधाति तथा । किम्भूत हे ढ्लानाथ ! ? ढ्लिः–देवेशः तस्य स्तुत्या लक्ष्मीर्यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । [पुनः किम्भूत हे ढ्लानाथ ! ?] 'ढ्लह्राद !' मधुरारव ! ॥ ५२ ॥

ढ्वाभसद्गुण ! गुडा-ऽऽज्यभोजनाद्, ढ्वोजहस्य बलमुष्ट्रकस्य ते ।
ढ्वाभपद् ! भवति भूपते ! महद्, ढ्वादनाद् विश इव प्रतिप्रगम् ॥५३॥

टिप्पणी–हे भूपते ! 'ते' तव उष्ट्रकस्य 'प्रतिप्रगं' प्रतिप्रभातं 'बलं' स्थाम महद् 'भवति' जायते । कस्मात् ? गुडा-ऽऽज्यभोजनात् । कस्य कस्मादिव ? 'विशः' मनुष्यस्य 'ढ्वादनादिव' दधिभोजनादिव, यथा मनुष्यस्य दधिभोजनाद् बलं महद् भवति तथा । किम्भूत हे भूपते ! ? ढ्वं–दुग्धं तदाभाः–तत्समाः सन्तो गुणा यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । किम्भूतस्य उष्ट्रकस्य ? ढ्वः–व्यालः तस्य ओजं–बलं हिनस्तीति ढ्वोजहः, डप्रत्ययः, तस्य, ओजशब्दोऽकारान्तोऽपि । किम्भूत हे भूपते ! ? ढ्वः–कूर्मः तदाभौ पादौ यस्य स तथा, तदामन्त्रणं हे ढ्वाभपत् ! ॥ ५३ ॥

ण्यानाथगम्भीर ! नराधिपाग्रण्यर्च्यांह्रियुग्मोष्ट्र उदाररावः ।
ण्यारञ्जितस्फारसभ ! प्रभाति, ण्यर्यार्क्यलक्ष्मी ! रिपुहृत्प्रभेदी ॥५४॥

टिप्पणी–ण्या–नदी तस्या नाथः–समुद्रः तद्वद् गम्भीरो यः स तथा तदामन्त्रणं हे ण्यानाथगम्भीर ! हे नृप ! उष्ट्रः प्रभाति । किम्भूत हे नृप ! ? नराधिपाग्रणीनां–भूपश्रेष्ठानाम् अर्च्यं–पूजनीयम् अंह्रियुग्मं यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । किम्भूत उष्ट्रः ? 'उदाररावः' उत्कटशब्दः । ण्या–वाणी तया रञ्जिता स्फारसभा येन स तथा तदा-

---

१ आदर्शे तु **ढ्लाराट् ! तव स्वान्तमुदं दधाति** इति पाठभेदोऽपि दृश्यते । तथा **'ढ्लाराट् !' भूनाथ !** इति शब्दार्थोऽप्यादर्शे निर्दिष्टो वर्तते ॥

मन्त्रणम् । णीः—स्वर्गः तस्या अर्यः—स्वामी ण्यर्यः—इन्द्रः तस्य अर्क्या—स्तुत्या लक्ष्मीर्यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । किम्भूत उष्ट्रः ? रिपुहृत्प्रभेदी ॥ ५४ ॥

णरापन्महीपाऽऽरटनेन दस्यून्, णराढ्यांश्च संज्ञापयतीति उष्ट्रः ।
णरौघप्रदेन प्रमदेन राज्ञाऽणरेनौजसा भोः ! विजिता भवन्तः ॥ ५५ ॥

टिप्पणी—'णरापत् !' नष्टापत् ! हे महीप ! उष्ट्रः 'आरटनेन' शब्दविशेषेण दस्यून् इति संज्ञापयति । किम्भूतान् दस्यून् ? 'णराढ्यान्' लक्ष्म्याढ्यान् । इतीति किम् ? 'भोः !' दस्यवः ! भवन्तो विजिताः । केन ? राज्ञा । केन ? 'ओजसा' बलेन । किम्भूतेन राज्ञा ? 'णरौघप्रदेन' उत्सववृन्ददात्रा । पुनः किम्भूतेन ? 'प्रमदेन' वरहर्षेण गताहङ्कारेण वा । पुनः किम्भूतेन ? 'अणरेन' अभीरुणा ॥ ५५ ॥

णवाभिभूतरतिनाथ ! मानवणव ! द्विषां बलमलं बलाद्धर ।
णवायुतेति रटति त्वदुष्ट्रको, णवर्य ! भास्वरचमूसमन्वितः ॥ ५६ ॥

॥ उष्ट्रवर्णनम् ॥

टिप्पणी—'णवाभिभूतरतिनाथ !' रूपजितकन्दर्प ! । मानवानां—नृणां णवः—स्वामी यः स तथा तदामन्त्रणं 'हे मानवणव !' हे राजन् ! त्वं द्विषां बलं 'अलम्' अत्यर्थं बलाद् हर, इति त्वदुष्ट्रको रटति । 'णवायुत !' प्रभासहित ! । 'णवर्य !' भूनाथ ! ॥ ५६ ॥

॥ इति प्रथमपरिच्छेदावचूर्णिः ॥ १ ॥

॥ इति श्रीखरतरगच्छीयश्रीज्ञानविमलोपाध्यायमिश्रशिष्य-
वाचनाचार्यश्रीवल्लभगणिकृते विद्वत्प्रबोधनाम्नि
शास्त्रे गजा-ऽश्व-वृष-सिंहोष्ट्रवर्णनो नाम
प्रथमः परिच्छेदः समाप्तः ॥

॥ द्वितीयः परिच्छेदः ॥

परिच्छेदे द्वितीयेऽथो शुकप्रभृतिपक्षिणाम् ।
वर्णनं क्रियते सम्यक् चरणद्वयधारिणाम् ॥ १ ॥

त्यापते ! तव विजोततेतरां, त्यार्चकप्रवर ! कीर एषकः ।
त्यार्चनोदितविभूतिसन्ततेऽन्त्येतरोत्तरसुनीलदीधितिः ॥ २ ॥

टिप्पणी—त्या—पृथ्वी तस्याः पतिः 'त्यापतिः' नृपः, तदामन्त्रणं हे त्यापते ! तव 'एषकः' एष कीरः 'विजोततेतराम्' अतिशयेन दीप्यते । किम्भूत हे त्यापते !? त्याः—गुरवः तेषामर्चकाः तेषु प्रवरः तदामन्त्रणम् । पुनः किम्भूत हे त्यापते !? त्यः—कृष्णः तस्य अर्चनेनोदिता विभूतिसन्ततिर्यस्य स तदामन्त्रणम् । पुनः किम्भूत हे त्यापते !? अन्त्याः—अधमाः तेभ्य इतरे अन्त्येतरे, तेषूत्तरो यः स तदामन्त्रणम् । किम्भूतः कीरः ? सुतरां नीला दीधितिर्यस्य स तथा ॥ २ ॥

त्रातवानशरणान् जनान् यकः, त्राणदस्य नृपतेश्च तस्य वै ।
त्रातनुः सुखयति प्रमोददः, त्रातरेष सवयः ! शुकोऽनकः ॥ ३ ॥

टिप्पणी—'हे सवयः !' मित्र ! 'तस्य' नृपतेः एष शुकः 'सुखयति' सुखं करोति । तस्य कस्य ? 'यकः' नृपोऽशरणान् जनान् 'त्रातवान्' रक्षितवान् । किम्भूतस्य तस्य ? त्राणदस्य । पुनः किम्भूतस्य तस्य ? 'त्रातनुः' कष्टाद् रक्षितनरस्य । किम्भूत हे सवयः !? 'त्रातः !' पालक ! । किम्भूतः शुकः ? प्रमोददः । पुनः किम्भूतः शुकः ? 'अनकः' दुःखरहितः ॥ ३ ॥

त्वेषते तव महीपते ! शुकः, त्वेष्टुमद्भुतमनोकहं परः ।
त्विट्पटुः पटुकटप्रमोददः, त्वष्टृसत्करततप्रतापभाक् ॥ ४ ॥

टिप्पणी—हे महीपते ! तव शुकः 'त्वेषते' शोभते । किम्भूतः शुकः ? अद्भुतं 'अनोकहं' वृक्षं 'त्वेष्टुं' शोभां कर्तुं 'परः' सावधानः । पुनः किम्भूतः शुकः ? त्विट्पटुः । किम्भूत हे महीपते !? पटूनां कटं—भृशं प्रमोदं ददाति तदामन्त्रणम् । पुनः किम्भूत हे महीपते !? त्वष्टृसत्करवत्—सूर्यकिरणवत् ततं प्रतापं भजते यः सः क्विपि तदामन्त्रणम् ॥४॥

थ्यर्य ! राजति शुकः सुखकारी, थ्यानिवेदनविशारदमुख्यः ।
थ्यो विशामिव वरो मददायी, थ्यर्कणीयकगभीरसुवर्णः ॥ ५ ॥

टिप्पणी—'हे थ्यर्य !' भूनाथ ! शुको राजति । किम्भूतः ? सुखकारी । क इव ? 'विशां' नृणां 'थ्य इव' स्वामीव, यथा नृस्वामी सुखकारी भवति तथा । किम्भूतः ? थ्या—कथा तस्या निवेदने विशारदाः तेषु मुख्यः, पक्षेऽप्येवमेव । पुनः किम्भूतः ?

वरः । पुनः किम्भूतः ? मददायी । पुनः किम्भूतः ? थीः—समुद्रः स इव अर्कणीयकः—गभीरसुवर्णो यस्य स तथा ॥ ५ ॥

आत्मा शुको रञ्जयति प्रधानं, आनाथ ! भूनाथ ! मनस्त्वदीयम् ।
आर्चाविधानोदितपापशुद्धे !, आ-ऽऽमोददाता विदुषां नराणाम् ॥६॥

टिप्पणी—हे भूनाथ ! शुकस्त्वदीयं मनो रञ्जयति । किंविशिष्टः शुकः ? अः—पवित्र आत्मा यस्य स तथा । किम्भूतं मनः ? प्रधानम् । किम्भूत हे भूनाथ ! ? आ—लक्ष्मीः राज्यसम्पत् तस्या नाथः तदामन्त्रणम् । पुनः किम्भूत हे भूनाथ ! ? आणां—तीर्थानाम् अर्चा—पूजा प्रस्तावाद् यात्रा तस्या विधानेन उदिता—आविर्भूता पापशुद्धिर्यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । पुनः किम्भूतः शुकः ? अं—सुखम् आमोदश्च—हर्षः तयोर्दाता । केषाम् ? विदुषां नराणाम् ॥ ६ ॥

थ्विन्द्रधीर ! नरवीर ! पीवरः, थ्वाऽयुतो जयति तावकः शुकः ।
थ्वीश्वरः प्रवरनीलवर्णरुक्, थ्वाकथाकथनसावधानधीः ॥ ७ ॥

टिप्पणी—थुः—पर्वतः तन्मध्ये इन्द्र इव महत्त्वात् थ्विन्द्रः, तद्वद् धीरः तदामन्त्रणं हे थ्विन्द्रधीर ! हे नरवीर ! तावकः शुको जयति । किम्भूतः शुकः ? पीवरः । पुनः किम्भूतः ? थ्वेन-मैथुनेन न युतः—न सहितः थ्वाऽयुतः, अतिकामुकत्वाभावात् । पुनः किम्भूतः शुकः ? थूनां—साक्षिणां ईश्वर इव थ्वीश्वरः, तिर्यक्त्वेऽप्यतिनिपुणत्वात् । पुनः किम्भूतः शुकः ? प्रवरनीलवर्णा रुक्—कान्तिर्यस्य स तथा । पुनः किम्भूतः शुकः ? थ्वानां—स्त्रीणां कथाकथने सावधाना प्रधानत्वाद् धीर्यस्य स तथा ॥ ७ ॥

द्योतमानकलकौशलशाली, द्योततेऽतिचतुरस्तव कीरः ।
द्यामते ! नरपते ! सुमुदोको !, द्योपतिस्तुतयशस्सुयशःपते ![1] ॥ ८ ॥

टिप्पणी—हे नरपते ! तव कीरः द्योतते । किम्भूतः कीरः ? द्योतमानं यत् कलं कौशलं तेन शालते इत्येवंशीलो यः स तथा । पुनः किम्भूतः कीरः ? अतिचतुरः । किम्भूत हे नरपते ! ? द्या—दया तत्र मतिर्यस्यासौ तथा तदामन्त्रणम् । पुनः किम्भूत० ? 'हे सुमुदोकः !' हर्षालय ! । द्योपतिः—इन्द्रः । 'हे सुयशःपते !' हे वरप्रतापपते ! ॥ ८ ॥

द्राणशौर्य-जयमञ्जुलश्रियो, द्रान्ति भूप ! तव दस्यवो भुवः ।
द्रव्यवन्निति निवेदयत्ययं, द्रष्ट्रिनो वरगिरा शुकोऽपशुक् ॥ ९ ॥

---

१ यद्यप्यत्र आदर्शे 'यशस्सुयशःपते ! इत्येव पाठस्तदनुसारिणी च व्याख्या वरीवृत्यते, तथापि छन्दोभङ्गभावाद् वास्तवरूपेण 'यशो ! यशःपते ! इत्यनेन पाठेन तद्व्याख्यया च भाव्यम् ।

टिप्पणी–अयं 'शुकः' कीर इति निवेदयति । कया ? वरगिरा । इतीति किम् ? हे भूप ! तव दस्यवो भुवः 'द्रान्ति' पलायन्ते । किम्भूताः सन्तः ? 'द्राणशौर्य-जयमञ्जुलश्रियः' पलायितप्राण-जयश्रेष्ठश्रियः । किम्भूत हे भूप ! ? द्रव्यवन् ! । किम्भूतः शुकः ? 'द्रष्टिनः' द्रष्टनाथः । पुनः किम्भूतः शुकः ? 'अपशुक्' गतशोकः ॥ ९ ॥

द्वारिकेव हरिणा त्वया पुरी, द्वेष-रोषरहिताऽसते सनत् ।
द्वन्द्वहीन ! सुमहीन ! निःस्पृहाऽद्विड् ! गिरेति निगृणाति कीरराट् ॥१०॥

टिप्पणी–'कीरराट्' शुकराजः 'गिरा' वाण्या इति 'निगृणाति' कथयति । [इतीति किम् ?] 'हे सुमहीन !' शोभनभूनाथ ! त्वया कृत्वा 'पुरी' नगरी 'सनत्' सदा 'असते' शोभते । केन केव ? 'हरिणा' कृष्णेन द्वारिका इव । कथम्भूता पुरी ? द्वेष-रोषरहिता, द्वारिकाऽपीदृगेव । किम्भूत हे सुमहीन ! ? 'द्वन्द्वहीन !' युद्धरहित !, निःस्पृह !, न द्वेष्टीति अद्विट् तदामन्त्रणम् ॥ १० ॥

ध्नेशजयोऽस्खलितांहतितोऽयं, ध्नाधिप ! भूपतिरापति कीर्त्तिम् ।
ध्नं विदधत् स्वकदेवचयस्य, ध्नाभयशा हि शुको वचतीति ॥ ११ ॥

टिप्पणी–'हि' निश्चितं शुक इति वचति । इतीति किम् ? ध्नानां–धनिनां अधिपः ध्नाधिपः तदामन्त्रणं हे ध्नाधिप ! । 'अयं' प्रत्यक्षः भूपतिः कीर्तिं 'आपति' प्राप्नोति । कुतः ? अस्खलितांहतितः । किम्भूतो भूपतिः ? 'ध्नेशजयः' ध्नं–धनं तस्य ईशः ध्नेशः, तं जयतीति ध्नेशजयः । किं कुर्वन् ? स्वकदेवचयस्य 'ध्नं' साधनं 'विदधत्' कुर्वन् । किम्भूतः शुकः ? ध्नः– ईशः तदाभं यशो यस्य स तथा ॥ ११ ॥

ध्यायतीत्ययकमर्क्यरुक् शुको, ध्यानधीर्जयतु भूपराडसौ ।
ध्याढ्य ! नीतिपरिरञ्जितप्रजो, ध्यातदेव-गुरुनामको यतः ॥ १२ ॥

टिप्पणी–'हे ध्याढ्य !' प्रज्ञाढ्य विद्वन् ! 'अयकम्' अयं शुक इति ध्यायति । इतीति किम् ? असौ भूपराड् जयतु । तत्र हेतुमाह–यतः कारणाद् नीतिपरिरञ्जितप्रजः ध्यातदेव-गुरुनामकश्च । किम्भूतः शुकः ? 'अर्क्यरुक्' स्तवनीयकान्तिः । किम्भूतः भूपराड् ? ध्यानधीः ॥ १२ ॥

ध्रायत्यपायैर्विधुरस्त्वदीयो, ध्राताऽतिचित्तस्तव सौम्यदृष्ट्या ।
ध्राणातिचेतांसि महांसि कुर्वन्, ध्रानाथसार्थस्य महीप ! कीरः ॥१३॥

टिप्पणी–हे महीप ! त्वदीयः कीरः 'ध्रायति' तृप्तिं प्राप्नोति । 'अपायैः' कष्टैः 'विधुरः' रहितः । कया ध्रायति ? तव सौम्यदृष्ट्या । पुनः किम्भूतः कीरः ? ध्रातं–तृप्तं

अतिशयेन चित्तं यस्य स तथा । किं कुर्वन् ? 'ध्राणाथसार्थस्य' राजवृन्दस्य 'महांसि' उत्सवान् कुर्वन् । किम्भूतानि ? ध्राणं–तृप्तिं प्राप्तं अतिशयेन चेतो येभ्यस्तानि तथा तानि ॥ १३ ॥

ध्वस्त्वाऽरिसैन्यं विजयी जयत्ययं, ध्वस्ताऽप्रशस्तो नृपतिर्मदीयः ।
ध्वानं करोति प्रमना इतीमं, ध्वाङ्क्षः सुखानामसकौ शुकोऽग्रः ॥१४॥

टिप्पणी–असकौ शुकः इति इमं ध्वानं करोति । इतीति किम् ? अयं मदीयो नृपतिर्विजयी सन् जयति । किं कृत्वा ? अरिसैन्यं ध्वस्त्वा । किम्भूतो नृपतिः ? ध्वस्ताऽप्रशस्तः । किम्भूतः शुकः ? प्रमनाः । पुनः किम्भूतः शुकः ? सुखानां 'ध्वाङ्क्षः' याचकः । पुनः किम्भूतः ? अग्रः ॥ १४ ॥

न्यग्भावमाप्तं वदनं रिपूणां, न्युज्झत्प्रतापं सवितेव सायें ।
न्यायैकमाणिक्यनिधे ! तवेश !, न्यस्यन्नशस्तं वदतीति कीरः ॥ १५ ॥

॥ **शुकवर्णनम्** ॥

टिप्पणी–हे न्यायैकमाणिक्यनिधे ! हे ईश ! तव रिपूणां वदनं 'न्यग्भावं' नीचैस्त्वं 'आप्तं' प्राप्तम्, इति कीरो वदति । किं कुर्वन् ? 'अशस्तं' अमङ्गलं 'न्यस्यन्' निक्षिपन् । किम्भूतं वदनम् ? 'न्युज्झत्प्रतापम्' त्यजत्प्रतापम् । कस्मिन् क इव ? 'सायें' सन्ध्यायां 'सविता इव' सूर्य इव, यथा सायें सूर्यो न्युज्झत्प्रतापो भवति तथेदमपीति ॥ १५ ॥

॥ **शुकवर्णनम्** ॥

त्रेश्वर ! स्फुरति सद्यशस्त्विति, त्रावलीति निगृणाति सुन्दरम् ।
त्राऽमुना जयिजिघांसवो हता, त्रोत्तमा वदति तित्तिरिस्त्विदम् ॥१६॥

टिप्पणी–'हे त्रेश्वर !' नृप ! त्रावली इति सुन्दरं निगृणाति । इतीति किम् ? तित्तिरिरिदं 'वदति' शब्दायते । तदेवाह–अमुना 'त्रा' नृपलक्षणेन पुंसा जयिजिघांसवो हताः, इति सद्यशः स्फुरति । किम्भूता जयिजिघांसवः ? 'त्रोत्तमाः' मनुष्योत्तमाः । तुशब्दौ पादपूरणार्थौ ॥ १६ ॥

न्वाभाभिभूतस्मररूप ! भूपते !, न्वां चञ्चुरां वाचमसौ समुच्चरन् ।
न्वग्रो जयस्तित्तिरिराहवे तव, न्वालीवियुक्तो वचतीति भावी ॥ १७ ॥

टिप्पणी–हे भूपते ! असौ तित्तिरिरिति वचति । इतीति किम् ? 'आहवे' सङ्ग्रामे तव जयो 'भावी' भविता । तित्तिरिः किं कुर्वन् ? 'न्वां' नव्यां 'चञ्चुरां' सुन्दरां वाचं समुच्चरन् । किम्भूत हे भूपते ! ? न्वा–नवा या आभा–शोभा तया अभिभूतं स्मररूपं येन स तथा तदामन्त्रणम् । किम्भूतो जयः ? 'न्वग्रः' स्तुतिश्रेष्ठः । किम्भूतः तित्तिरिः ?

'न्वालीवियुक्तः' पातकालीरहितः "नूशब्दः पातके पुंसि" [विश्वशम्भुएका० ७९] इत्युक्तेः ॥ १७ ॥

प्याढ्यगभीर ! सुतित्तिरिरेष, प्याधिषणाऽतनुराज्यश्रीति ।
प्यात्मगुण ! क्षितिपैतु सुवृद्धिं, प्यग्र ! सुवाक् शुभभाग् महिमाढ्यः॥१८॥

टिप्पणी—हे क्षितिप ! एष सुतित्तिरिः इति अवति—वक्ति—कथयतीत्यध्याहार्यम् । इतीति किम् ? अतनुराज्यश्रीः सुवृद्धिं 'एतु' प्राप्नोतु । किम्भूत हे क्षितिप ! ? प्यः—पयः तेनाढ्यः प्याढ्यः—समुद्रः, तद्वद् गभीरः [तदामन्त्रणम्] । 'प्याधिषण !' कृपाबुद्धे ! । पयः—पवित्रा आत्मगुणा यस्य स तथा तदामन्त्रणम् । 'प्यग्र !' लक्ष्मीश्रेष्ठ ! । किम्भूतः तित्तिरिः ? सुवाक् शुभभाग् महिमाढ्यः, शकुनेषु प्रतीतत्वात् ॥ १८ ॥

प्रष्ठतित्तिरिरयं पुनः पुनः, प्राक्कपिञ्जल इति स्वकाभिधाम् ।
प्रीतिदाय्यनुकरोति यो वदन्, प्राति सोऽभिमतमर्थमीश्वर ! ॥ १९ ॥

प्लक्षो यथा नियतदुस्सहरक्तपित्त-
प्लोषाय मानवचयस्य रुजाजितस्य ।
प्लुष्टामयः खलु तथा खरकोणपक्षी,
प्लुष्णन् जनान् भवतु सन्ततसम्मदाय ॥ २० ॥

॥ तित्तिरिवर्णनम् ॥

[1]प्वो यथा झटिति हन्ति निस्तुषां, [2]प्वां तथा दुरितसन्ततिं नृणाम् ।
[3]प्वात्मभूप ! तव राजहंसकः, [4]प्वाः प्रपालक ! शरीरलोकनात् ॥ २१ ॥

टिप्पणी—१ वायुः । २ धूलिम् । ३ हे पुण्यात्मराजन् ! । ४ भुवः ॥ २१ ॥

[1]फ्यश्वेतशम्भुसमनिर्मलदेहदीप्तिः,
[2]फ्याऽयुक्त एष विदधाति मुदं मरालः ।
[3]फ्यालीद्धतुल्यरमणीयगभीरताग्रः,
[4]फ्याऽतङ्कदोषरहित ! क्षितिप ! त्वदीयः ॥ २२ ॥

टिप्पणी—१ फेन । २ रजरहितः । ३ पयःश्रेणीद्धः, समुद्र इत्यर्थः । ४ मरण ॥ २२ ॥

[1]फ्राकर्णनाद् यस्य भवन्ति सिद्धयः,
[2]फ्राऽऽरिष्टकोटिः स्फुटवेकटोऽकद्रुः[3] [4] ।

क्ष्मादातरुर्वीश्वर ! सत्सितच्छदः,
क्ष्माऽमुद् भृशं भाति सकः सनत् तव ॥ २३ ॥

टिप्पणी– १ शब्दश्रवणात् । २ स्फेटित । ३ जाततारुण्यः । ४ अमत्सरी । ५ लक्ष्मीदातः ! । ६ राजहंसः । ७ ध्वस्ताऽहर्षः ॥ २३ ॥

क्लमिव हन्त्वरिवृन्दममङ्गलं, क्लविशदद्युतिरेष मरालराट् ।
क्लकलहंसकुलस्य विभूषकः, क्लकलभाजितचन्द्र ! महीपते ! ॥ २४ ॥

टिप्पणी– १ वाणपूरम् । २ वपुः । ३ समस्त । ४ वदन ॥ २४ ॥

फ्वुपम ! भूप ! विभात्यतिभासुरः, फ्ववनकृत् तव दिव्यसितच्छदः ।
फ्ववसितौ सुविचक्षण ! सक्षणः, फ्वितरराडभिधानसुखप्रदः ॥ २५ ॥

टिप्पणी–१ इन्द्रोपम ! । २ हे शरणागतत्राणकारिन् ! । ३ मन्त्रावसाने । ४ सफलजल्पनेन राजते ॥ २५ ॥

॥ हंसवर्णनम् ॥

ब्ययुक्त ! वक्ति क्षितिपाऽसकौ बको,
ब्यदीधिते ! वामपदास्थितः सन् ।
ब्यलार्थपत्नीविषयास्तिमीप्सितां,
ब्यनुत्तमः पापविपाकनाशकृत् ! ॥ २६ ॥

टिप्पणी–१ हे सुखयुक्त ! । २ सूर्य । ३ हे पूजनश्रेष्ठ ! । ४ कान्तिश्रेष्ठः ॥ २६ ॥

ब्र-षोडशार्चिःस्तवनीय ! सन्मते !,
ब्रयुक् ! चतस्रः ककुभो विलोकयन् ।
ब्रभा ! बकस्त्वस्त ऋधग् ब्रवीत्यरं,
ब्रचोरभीतिं नृपते ! सुखच्छिदम् ॥ २७ ॥

टिप्पणी–१ बृहस्पति शुक्र । २ हे बलयुक् ! । ३ ब्रह्मदीप्त ! । ४ बहुल० ॥ २७ ॥

ब्लतुल्यतेजो ! वसुधां च पान्थकं,
ब्लयुग् बकः पश्यति यः पुनः पुनः ।

[3]ँलकोपटोप ! क्षितिपाल ! विघ्नकान्,
[4]ँलरूप ! सर्वानुपहन्ति स क्षणात् ॥ २८ ॥

टिप्पणी–१ हे अग्निसमतेजः !। २ बलयुक्। ३ यम । ४ कामरूप !॥ २८॥

[1]ँवबुद्धिजिद्धीः ! स्ववपुर्निरूपयन्,
[2]ँव्रभक्त ! सम्यग् महिलाप्तये भवेत् ।
[3]ँवमानकोर्वीश ! बको विसंशयो,
[4]ँवया प्रदत्तेन्दिरवित्तसद्यशः ॥ २९ ॥

टिप्पणी–१ गीष्पति । २ ब्रह्मा । ३ कृष्णवाक्यमानक !। ४ अम्बया ॥ २९॥

॥ बकवर्णनम् ॥

[1]भ्यक्षित्! समृद्धयै वरकोकयुग्मं, [2]भ्यंस् शस्त्रधारिन्! रव-वीक्षणाभ्याम्।
[3]भ्षानुज्ञ! विज्ञेश! सिमास्पदेषु, [4]भ्युद्धं मुदर्द्धं वदतीति विद्वान् ॥३०॥

टिप्पणी–१ भयहृत् !। २ भयकारि । ३ रौद्राज्ञ !। ४ भीहरम् ॥ ३० ॥

भ्रष्टकष्टशकुनज्ञजना इति, भ्रान्तिहारिण ऋतं निगृणन्त्यरम् ।
[1]भ्राःप्रताप! सविषाददुरारवं, [2]भ्राग् रथाङ्गयुगलं विपदे भवेत् ॥ ३१ ॥

टिप्पणी–१ दीप्तप्रताप !। २ दीप्तम् ॥ ३१ ॥

[1]भ्लासते नरपतेऽतिमनोहरं, [1]भ्लासथूद्धतरथाङ्गयुगं तव ।
भ्लासमानतनुकं हृदयावनं, [2]भ्लांगभस्तिकृतहृत्प्रमदोदयम् ॥ ३२ ॥

टिप्पणी–१ दीप्तिः, प्रताप इति यावत् । २ दीप्त ॥ ३२ ॥

॥ चक्रवाकवर्णनम् ॥

[1]भ्वानाथसेवाविधिसावधान !, [2]भ्वीशोल्लसत्सारसयुग्मदर्शः ।
[3]भ्वानन्ददायी भवतीष्टसौख्य-[3]भ्वैश्वर्यभोक्तः! पथि गच्छतो नुः ॥३३॥

टिप्पणी–१ गौरीनाथ । २ हे भूनाथ !। ३ धन ॥ ३३ ॥

[1]म्यांवर्णिनीलाभविधायकं भवेन्[2]म्यांयुक्तवामं यदि सारसद्वयम् ।
[3]म्यांऽहींरिराजीहर! भूप! सारवं, [4]म्यां-ऽश्वेभमुख्याधिपते! महौजः॥३४॥

टिप्पणी–१ रमा । २ क्षमा । ३ हिंसा । ४ उष्ट्र ॥ ३४ ॥

[1]म्रस्तुल्यकीर्ते ! नृप ! सारसद्वयं, [2]म्रेणायुतैकं सुकृता[3]रवं वरम् ।
[4]म्रक्षेण हीनं किल पार्श्वयाम[5]ले, [6]म्रभ्रष्ट ! वक्त्युत्तमकन्यकापनम् ॥३५॥

टिप्पणी—१ देव । २ हे मैथुनरहित ! । ३ हसत् । ४ रोषेण । ५ द्वये । ६ मृत्युरहित ! ॥ ३५ ॥

म्लानाङ्गभासां मनुजाधिनाथ !, म्लानिं गता वक्त्ररमा रिपूणाम् ।
म्लेयादथाशेषविपक्षचयश्चाऽम्लानेति ते वक्ति [1]सरोजयुग्मम् ॥ ३६ ॥

टिप्पणी—१ सारस ॥ ३६ ॥

॥ सारसवर्णनम् ॥

[1]म्वापतेऽध्वनि विशां हि गच्छतां, [2]म्वस्थितस्य खलु [3]वामनिस्वनः ।
[4]म्वाय टिट्टिभपतत्रिणोऽ[5]गेसे, [6]म्वा-ऽऽमयादिरहितेश्वरश्रियः ॥ ३७ ॥

टिप्पणी—१ धरापते ! । २ वृक्ष । ३ वामशब्दः । ४ उत्तमाय । ५ क्षेमाय । ६ बन्धन ॥ ३७ ॥

ख्यालीकृतस्तोत्रपवित्रचेतोऽख्योर्वीपते ! वै टिटिटीति दीप्तम् ।
ख्याक्षेट्ट टिटीति प्रवरं च शान्तं, ख्योऽस्याऽऽरवद्वन्द्वमुदाहरन्ति ॥३८॥

[1]यॄाधिनाथविधिपूजनकर्त्री, [2]यॄाऽयुतोत्तमतनुर्विबुधाली ।
यॄ[3]व्रजप्रथितमुद् वदतीति, [4]यॄप्रभ ! क्षितिप ! टिट्टिभवर्णम् ॥ ३९ ॥

टिप्पणी—१ यादवपति । २ जरा । ३ स्त्री । ४ जायमान ॥ ३९ ॥

॥ टिट्टिभवर्णनम् ॥

[1]य्वस्थितिस्थिरमनः ! शृणु वर्णान्, [2]य्वाकृतप्रमद ! मोररवस्य ।
[3]य्वप्रधान ! निनदे प्रथमेऽरि[4]य्वप्रकृद् ! द्रविणलाभ ऋधक् स्यात् ॥४०॥

टिप्पणी—१ यज्ञकरणलक्षणा । २ स्त्री । ३ जगत् । ४ मर्दनकारिन् ! ॥ ४० ॥

[1]ल्योल्लसद्गुणगणप्रमणीनां, [2]ल्यारिहार ! लभते सुकलत्रम् ।
[3]ल्यालिबान्धवयशोऽ[4]परावे, [5]ल्यंग्रबर्हिण इलाप्रतिपाल ! ॥ ४१ ॥

टिप्पणी—१ निलय । २ उद्धत । ३ नलिन्यालि । ४ द्वितीय । ५ शब्दाग्र ॥ ४१ ॥

[1]ल्रस्थिताम्बुदविलोकनहर्षाऽल्रावरञ्जितजनस्य तृतीये ।
[2]ल्रप्रमोदद ! शिखण्डिन ऋद्ध्यऽल्रोचिरारव इलापतिभीतिः ॥ ४२ ॥

टिप्पणी—१ ख । २ ललनानन ॥ ४२ ॥

[1]ह्लानाथतुग्वाहनकस्य रङ्गह्लष्टाचलनायक ! चोरभीत्यै ।
[2]ह्लाऽऽह्लाददातुः शिखिनः क्षणात् स्याह्लक्ष्मप्रतिज्ञेद्धतुरीयरावः ॥ ४३ ॥

टिप्पणी—१ गौरी । २ लोक ॥ ४३ ॥

[1]ल्वतातनामस्मृतिकान्तचेता, [2]ल्वैनाहिभुक् पञ्चमनिस्वनः स्यात् ।
[3]ल्वभीतये चान्यजनाज्जनानां, [4]ल्वैपूजकानेकजनप्रमोदिन् ! ॥ ४४ ॥

टिप्पणी—१ लव । २ हे भूनाथ ! । ३ सूदन । ४ रुद्रकृष्ण ॥ ४४ ॥

व्यपोहतीलाप्रतिपाल ! दुष्टां, व्यथां च सत्कर्म करोति शीघ्रम् ।
व्ययेन हीनस्य रवश्च षष्ठो, व्युपाधिराट् सर्पभुजो [1]व्रिराजः ॥ ४५ ॥

टिप्पणी—१ पक्षिराजस्य ॥ ४५ ॥

व्रतीश्वराः शास्त्रविदो वदन्ति, व्रतावना मोररवस्य वर्णान् ।
व्रजद्रुजैतादृशकान् महीप !, व्रजोत्तमाङ्गप्रवरावतंस ! ॥ ४६ ॥

श्यत्याशु दुःखं मनसो जनानां, [1]श्याख्यां प्रभाते कथयन् मयूरः ।
श्यामादिवर्णैः शुभपिच्छदीप्तिः, श्यग्रो महीपाल ! सुनीलकण्ठः ॥४७॥

टिप्पणी—१ आशीर्वचः ॥ ४७ ॥

॥ मयूरवर्णनम् ॥

[1]श्रानाथडिण्डीरहिमांशुवर्ण !, श्रश्रेष्ठ ! चाषः पथि गच्छतो नुः ।
[2]श्रामङ्गलेभ्यः खलु दक्षिणः श्र्याश्रय्यग्र ! भूपाल ! कलानिधान ! ॥४८॥

टिप्पणी—१ गौरी । २ रमा ॥ ४८ ॥

श्लोकशौक्ल्यविजिताऽमृतप्रसूः, श्लाघनीयकिकिदीविमर्क्यभम् ।
श्लाघयन्ति विबुधाः प्रबोधयः, श्लाघ्यपक्षिनिकरेषु सुन्दरम् ॥ ४९ ॥

[1]श्वस्वस्तिकान्तर्गमनेन चाषकोऽ[2]श्वौपात्तभक्षः करति प्रदक्षिणाम् ।
[3]श्वश्रीप्रदाऽभीष्टसुखार्थलब्धयेऽ[4]श्वोर्वीपते ! स्याद्धि यदा तदा मुदा ॥५०॥

टिप्पणी—१ यत्र । २ अशयन । ३ शरण । ४ अमैथुन ॥ ५० ॥

[1]ष्यौघार्घिताङ्घ्रे ! यदि दक्षिणेन, [2]ष्याऽऽभात्म यान्तं किकिदीविमृश्यम् ।
[3]ष्यानन्द ! काकश्च जयेत्तदा स्यात्, [4]ष्यग्राग्रणीः पान्थपराजयाय ॥५१॥

टिप्पणी—१ प्रेष्य । २ शङ्काभात्म । ३ पुत्रानानन्दयतीति । ४ सुख्यग्राग्रणीः ५१

[1]ष्ठः स्तौति वाचेति मुदा प्रवक्ति, [2]ष्ठेन्दत्प्रतापं नृपतिं विलोक्य ।
[3]ष्ठाऽस्पृग् ! भवन्तं पथि चाष एष, [4]ष्ठोद्दामगाम्भीर्ययुजं व्रजन्तम् ॥५२॥

टिप्पणी—१ इन्द्रः । २ सूर्य । ३ कष्टास्पृग् । ४ अर्णव ॥ ५२ ॥

[1]ष्ट्राऽरिष्ट ! शिष्ट ! प्रतिशिष्टदौष्ट्याऽ[2]ष्ट्राऽर्च्योऽथ चाषो जयति प्रकाकम् ।
[3]ष्ट्राग्र्यैः सुधीभिर्विजयो विदेशे, [4]ष्ट्राद्यासनानां कथितोऽध्वगानाम् ॥५३॥

टिप्पणी—१ भ्रष्ट । २ अब्रात्य । ३ विप्रा० । ४ शकटाद्या० ॥ ५३ ॥

[1]ष्टिदार्ढ्य ! शस्त्राहतवैरिवार !, [2]ष्टुदोषरोषेश्वर ! चाषकस्य ।
[3]ष्टुदानबुद्धे ! रुतमीक्षणं च, ष्टु चोपदिष्टं सकलास्पदेषु ॥ ५४ ॥

टिप्पणी—१ यष्टि । २ भ्रष्ट । ३ शरण ॥ ५४ ॥

[1]ष्ठोऽरण्यमध्ये व्रजतः पुरश्चेत्, [2]ष्ठं[3] चाषको यो विदधाति दीप्तम् ।
[4]ष्ठाऽऽभाजिताब्जेट् ! कलहावहः [5]सं, [6]ष्ठाः पण्डिता इत्थमुदाहरन्ति ॥५५॥

टिप्पणी—१ श्रेष्ठः । २ यदि । ३ शब्दम् । ४ वदना० । ५ चाषः । ६ मुखराः ॥ ५५ ॥

स्कन्ताऽऽपदां क्र क्र इति प्रदीप्तः, स्कन्नापदर्केऽर्क इति प्रशान्तः ।
स्कन्धस्थिरोर्वीश ! किकीदिवेश्च, स्कन्दा इति ध्वानयुगं वदन्ति ॥५६॥

॥ चाषवर्णनम् ॥

स्खलितदुष्कृत ! खञ्जनकं बुधाः, स्खलदलीक ! वदन्ति अमूदृशम् ।
स्खलनहीनकयोगयुतं सदाऽस्खलितधीर्मुनिसूनुमिलापते ! ॥ ५७ ॥

स्तु[1]त्योदितेऽगस्त्यमुनौ सुदेशेऽस्ति[2]मंश्च दृष्ट्वा वरखञ्जरीटम् ।
स्तब्धार ! कुर्याद् वरमन्त्रपूजास्तत्सूचिताभीष्टफलस्य सिद्ध्यै ॥ ५८ ॥

टिप्पणी—१ हे । २ हे ॥ ५८ ॥

स्थान ! श्रियां यः कुवपुः कुचेष्टः, स्थास्नो कुदेशे हि निरीक्ष्यतेऽह्नि ।
स्थायिन् ! रणे खञ्जनकः कदाचित्, स्थाण्वर्च ! दृष्ट्वा परिशोषयेत्तम् ॥५९॥

स्थान ! श्रीसुखपेटकस्य कुवपुः सत्खञ्जरीटः खगः,
स्थास्नो भूप ! कुचेष्टितः खलु कुदेशे दृश्यते जातु यः ।
स्थाण्वर्चाविधितत्परामलमते ! दृष्ट्वा विशेषाद् ऋधक्,
स्थायिँस्तं परिशोषयेत् तदुदिताऽसौख्यव्रजध्वस्तये ॥ ६० ॥

॥ खञ्जरीटवर्णनम् ॥

इति श्रीखरतरगच्छीयश्रीजयसागरमहोपाध्यायसन्तानीय-
श्रीज्ञानविमलोपाध्यायमिश्रशिष्यवाचनाचार्य-
श्रीवल्लभगणिकृते विद्वत्प्रबोधनाम्नि शास्त्रे
शुकादि-खञ्जरीटान्तचरणद्वयधारि-
पक्षिवर्णनो नाम द्वितीयः
परिच्छेदः ॥ २ ॥

॥ तृतीयः परिच्छेदः ॥

परिच्छेदे तृतीयेऽथ यत्यादिजनवर्णनम् ।
क्रियते बुधलोकानां कुतुकानन्दहेतवे ॥ १ ॥

स्नेहो गेहे च गेहिन्यमितधनचये नास्ति येषां कदापि,
स्नेहिन्नुर्वीश ! शश्वद्रुचिरचरितसत्पालनप्रह्वचित्ताः ।
स्विद्यन्तस्ते तपस्सु प्रवरमुनिजनाः साधयन्तीष्टमार्गं,
स्नानश्वेताङ्गदीप्ते नृपजनजनितानन्दभन्दा अमन्दाः ॥ २ ॥

स्पन्दं कुर्वन्त्य उर्व्यां प्रचुरवरनरोदारसारप्रबोधं,
स्पष्टं यच्छन्त्य इष्टं रविरुचय इवाम्भोजवृन्दप्रबोधम् ।
स्पर्शेनाऽऽनन्ददायिंच्छ्रमणजनघटा भान्ति दुर्भ्रान्तिमुक्ताः,
स्पष्टा दुष्टेष्टचित्तप्रमदविधिपरज्ञानलक्ष्मीशरीराः ॥ ३ ॥

स्फूर्जत्तेजस्विभास्वन्नविरतमतनुश्रेयसां दायकास्ते,
स्फूर्त्तानन्दाः प्रमोदं विदधतु भवतां साधुलोकाः सुलोकाः ।
स्फूर्जन्ति प्राज्ञवर्य्याः प्रगुणगुणगणा भूतले भूप ! येषां,
स्फूर्त्त्यां चारित्रलक्ष्म्याः प्रविदितयशसः सेवनीया जनानाम् ॥४॥

स्मरन्त इन्दन्त इमे मुनीन्द्राः, स्मार्यां शुभां पञ्चनमस्कृतिं ते ।
स्मयन्त ईशानसुतारमुख्यान्, स्मेराब्जचक्षुः स्वगुणैर्जयन्ति ॥ ५ ॥

॥ साधुवर्णनम् ॥

स्यमीकदातार इव ध्वनन्तः, स्यदेन वादावसरे प्रबुद्धाः ।
स्यान्तार्थसार्थास्तव भान्त्यनेके, स्यमन्त उद्दामसुतर्कशास्त्रम् ॥ ६ ॥

स्त्यायन्तोऽस्ति च नास्ति वस्त्विदमिति प्रत्यक्षमानादिषट्-
स्त्यानोद्दामलसत्प्रमाणकथनप्रह्वाः प्रबुद्धा अमी ।
स्त्यातारो विविधप्रधर्मसुविधेर्धात्रीधवौघाग्रणीः,
स्त्यायन्ति प्रमदोदयादतनुसत्तर्कप्रयुक्तीर्हठात् ॥ ७ ॥

स्रष्टेव सृष्टिं विदधाति दिव्यां, स्राक् शास्त्रराजीं मतिमत्समूहः ।
स्रक्शोभमानाङ्गरुचिर्वचस्वी, स्रस्ताऽतनुस्वीयदुरन्तदुःखः ॥ ८ ॥

[1]स्लश्लाघ्या अघसङ्घसंहतिकृतः शास्त्रेषु लीना भृशं,
[2]स्लः पद्मेष्विव भूपते ! तव पुरे राजन्त्यरं पण्डिताः ।
[3]स्लावल्यर्चितपत्प्रहर्षुलसुराचार्योशनोजिष्णवो-
ऽ[4]स्लाऽमौढ्याढ्यविरूढविश्वमहिमाः संरूढराढावृढाः ॥ ९ ॥

टिप्पणी–१ नर । २ भ्रमरः । ३ अमरालि । ४ सुखि ॥ ९ ॥

स्वीयस्वीयसुदर्शनेष्वविरतं चञ्चत्प्रतिज्ञाभृतः,
स्वच्छातुच्छगुणावसाननिपुणप्रज्ञा गुणिज्ञानिनः ।
स्वर्वास्याश्रयसन्निभे तव महीनाथाग्रणीः ! पत्तने,
स्वाढ्यादूढ्यजनप्रियाः शुभचया बौद्धादयो भान्त्यरम् ॥ १० ॥

॥ पण्डितवर्णनम् ॥

ह्नोतार आस्कन्दनशुष्मणा स्राक्, ह्नोतव्यदैत्यप्रततेः सुशूराः ।
ह्नव्यं वचो नैव निवेदयन्तो, ह्नुत्युन्मनस्त्वां नृप ! रञ्जयन्ति ॥ ११ ॥

[1]ह्यङ्कप्रभास्पर्द्धियशोनिधाना, ह्यो[2]घार्थितेशार्चनसावधानाः ।
[3]ह्याह्लाददातार उदारसाराऽ[4]ह्यालीपते ! भूप ! विभान्ति वीराः ॥ १२ ॥

टिप्पणी–१ मृगाङ्कः । २ नरौघ । ३ हर्षवदाह्लाददाः । ४ दुर्ग ॥ १२ ॥

ह्रीणाः सन्तो वनान्तः सतत[–]वसतिं यत्सुशौर्याभिभूत्या,
ह्रीमन्तश्चक्रिरेऽरं प्रचुरतरतरःसंयुता एणराजाः ।
[1]ह्रौघस्तम्बेरमोक्षव्रजन ! जययुतास्ते त्वदीया महीश !,
[2]ह्रौऽब्रह्माऽनीतिकार्युद्धतमदमथना एत आभान्ति वीराः ॥१३॥

टिप्पणी–१ हंस । २ चौर्यम् ॥ १३ ॥

[1]ह्लादन्ते नृपते ! भवन्तमनिशं दुर्दान्तवीरास्तव,
ह्लत्तिव्रातयुता अकान्तसमिति स्तोतव्यसत्कीर्त्तयः ।
[2]ह्लन्नाऽ[3]ऽमिन्नमनोजनस्तुतलसद्गाम्भीर्यशौर्यादिकान्,
[4]ह्लादन्ते प्रगुणान् गुणान् गुणविदो येषां मुदा बन्दिनः ॥ १४ ॥

टिप्पणी–१ सुखं कुर्वन्ति । २ सुखित । ३ समन्तात् स्नेहवत् । ४ कथयन्ति ॥ १४ ॥

[1]ह्वयन्ति वीरा इति यात कुत्र भो !,
[2]ह्वयन्त ऋद्धानहितान् मिथो युधि ।
[3]ह्वयाऽन्यया सार्द्धमसङ्गकारिणो,
[4]ह्ववैरिवारप्रह्वतौ महीपते ! ॥ १५ ॥

टिप्पणी–१ कथयन्ति । २ स्पर्धमाना । ३ स्त्रिया । ४ प्रह्व ॥ १५ ॥

[1]क्ष्णुतोत्तमास्त्राभ्यसना बलान्यमी,
[2]क्ष्णुदुत्तमाः क्ष्माप ! तवोल्लसद्भटाः ।
[3]क्ष्णवप्रकर्मप्रवणा नरा इव,
[4]क्ष्णुवन्ति शस्त्राणि हि दीपयन्त्यरम् ॥ १६ ॥

टिप्पणी–१ तेजित । २ निशानकृद्वराः । ३ निशान । ४ तेजयन्ति ॥ १६ ॥

क्ष्मापाल ! वीरास्तव चङ्गभोगान्,
क्ष्मायां प्रभुञ्जन्ति गतापवादाः ।
क्ष्माधृत्समानाः सुकुले कुलीनाः,
क्ष्मावर्णिनीभालसुवर्णकाभाः ॥ १७ ॥

[1]क्ष्यानाथ ! युष्मत्पदपद्मसेवां,
[2]क्ष्येग्राङ्ग ! कुर्वन्ति भटाः पटिष्ठाः ।
[3]क्ष्येश्वेतचित्तेन दृढप्रतिज्ञाः,
[4]क्ष्या-ऽऽदित्यदुःसह्यतपत्प्रतापाः ॥ १८ ॥

टिप्पणी–१ भू । भूप ! । २ ज्योतिरग्राङ्ग ! । ३ क्षारोज्वल । ४ अग्नि ॥ १८ ॥

[1]क्ष्रुं विद्विषां द्वेषजुषां नृपाणां,
[2]क्ष्रोज्ज्ञाप्रतिज्ञेश्वर ! कुर्वतेऽमी ।
[3]क्ष्राढ्या भटा नष्टनिघृष्टदुष्टाः,
[4]क्ष्रुं पाथसां जीवनदा इवेभ्याः ॥ १९ ॥

टिप्पणी–१ क्षोदनम् । २ खर । ३ लक्ष्मी । ४ क्षरणे ॥ १९ ॥

[1]क्ष्वेडन्त एते त्वयि भूप ! वीराः,
[2]क्ष्वेडोपमा वैरिकरिप्रणाशे ।

[3]क्ष्विट्टोत्कटश्रेष्ठसुकृष्टिलोकाः,
क्ष्वेंद्यत्सदोभन्दविधानदक्षाः ॥ २० ॥

टिप्पणी–१ स्निह्यन्ति । २ सिंहनाद । ३ स्निग्ध । ४ स्निह्यत् ॥ २० ॥

॥ वीरवर्णनम् ॥

ईदृग् विभो ! प्राणिगणस्त्वदीयो,
वर्ण्यो बुधानामिह वर्णितोऽयम् ।
संयुक्तवर्णैः कविकौतुकाय,
स्वबोधवृद्ध्यै च विशुद्धबुद्ध्या ॥ २१ ॥

॥ इति श्रीखरतरगच्छीयश्रीजयसागरमहोपाध्यायसन्तानीय-
श्रीज्ञानविमलोपाध्यायमिश्रशिष्यवाचनाचार्य-
श्रीवल्लभगणिकृते विद्वत्प्रबोधनाम्नि शास्त्रे
यत्यादि-वीरान्तजनवर्णनो नाम
तृतीयः परिच्छेदः
समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ तत्समाप्तौ च समाप्तोऽयं श्रीविद्वत्प्रबोधनामा ग्रन्थः ॥

॥ ग्रन्थप्रशस्तिः ॥

श्रीज्ञानविमलोपाध्यायानां शिष्यैर्विनिर्ममे ।
वाचनाचार्यधुर्यश्रीश्रीवल्लभगणीश्वरैः ॥ १ ॥
विद्वत्प्रबोधनामाऽयं ग्रन्थो विद्वत्प्रबोधकृत् ।
स्फूर्जच्छ्रीबलभद्रे श्रीबलभद्रपुरे वरे ॥ २ ॥ युग्मम् ॥
विद्वद्गोष्ठ्यां विशिष्टायां सञ्जातायां प्रयोजनम् ।
एतद्ग्रन्थस्य मेधाव्यभिमानोन्मथनाय वै ॥ ३ ॥
संयोगिवर्णं निगृणाति विद्वान्, यो यं तमादौ च विधाय विद्वान् ।
दिव्येषु पादेषु चतुर्ष्वशङ्कः, सद्यः सुपद्यं विदधातु हृद्यम् ॥ ४ ॥
यस्यायमेति सुमुखे सुखेन लभतां स सत्वरं सभ्यः ।
विद्वज्जनेषु विद्वान् सौभाग्यौघं कवित्वं च ॥ ५ ॥
यस्मिन् काव्येऽस्ति यन्नामव्यत्ययात्तस्य सत्वरम् ।
यथोक्तवर्ण्यसद्याख्या तदा जायेत भो बुधाः ! ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीविद्वत्प्रबोधग्रन्थः समाप्तः ॥

॥ श्रीरस्तु सर्वदा कारक-वाचक-लेखकादीनाम् ॥ शम् ॥

परिशिष्ट

एकाक्षर - शब्दकोश - संग्रह

शब्दानुक्रमः

कोषांक	श्लोकांक	
		'अ' अक्षरवाचक शब्द
१	५	शिव, केशव, वायु, ब्रह्मन्, चन्द्र, अग्नि, भानु, पा० ५. सानु।
२	६	ब्रह्मन्, विष्णु, ईश, कूर्म, अङ्कण, रण, गौरव, अन्तः-पुर, हेतु, भूषण, अङ्घ्रि, उमा, ईज्या।
३	२	कृष्ण, शङ्कर, ब्रह्मन्, शक्र, सोम, अनिल, अनल, सूर्य, प्राण, जन, काल, वसन्त, प्रणत, सुखिन्।
५	१, २	वेद, विष्णु. महेशान, कमल, अम्बिका, ईज्या, अन्तः-पुरी, भूषण, चरण, कारण, रण, अङ्कित, गौरव, असवर्ण, अभिव्याप्ति, अपरि-ताप, विदाहिन्।
६	३	ब्रह्मन्, विष्णु ईश, कमठ, अङ्कण, रण, गौरव, अन्तः-पुर, हेतु, भूषण, अङ्घ्रि, उमा, ईज्या।
८	२	शार्ङ्गधारिन्, स्वल्प (अ०)।
९	३७	वासुदेव।
१०	४	कृष्ण, गरुड।
११	२	वासुदेव।
१२	१	वासुदेव।
१३	२	कृष्ण।
१४	२६	श्रीकण्ठ, तुल्य (अ०), अभाव (अ०)।
१५	६	कृष्ण, विनतासूनु।
१६	२५	केशव, निषेध (अ०)।
१८	१	ब्रह्मदैवत्व, श्वेत, सर्वशङ्कर सर्वज्ञत्व, मनोज्ञत्व, कामरूपत्व।
१९	४५	अभाव (अ०), स्वल्प (अ०), प्रतिषेध (अ०), अनुकम्पा (अ०), वासुदेव।
२०	३	श्रीकण्ठ, केशव, निवृत्ति, स्वरादिक, मातृकाद्य, वात।
२१	१	अजिर, हरि, हर, कमठ, प्रजापति, ईज्या, गौरी, गौरव, कारण, चरण, रण, नूपुर, आभरण।
२२	२	सूर्य, अग्नि, इन्दु, पवन, विष्णु, नक्षत्र, शङ्कर।
२३	२	हरि, रुद्र।
२४	२	विष्णु।
		अ
२५	७, ८, ९	ब्रह्मन्, विष्णु, ईश, कमठ, अङ्कण, रण, गोरथ अन्तः-पुर, हेतु, सूर्य, अद्रि अम्बु, मान्य, गरुड, अवयव पूजन, प्रेरण, अन्न, शब्द, अर्दन, अदन, अन्न. निषेध (अ०), अनादर(अ०) सज्जात्य(अ०) निराकर(अ०), स्वल्प(अ०)

	श्लोकांक	
		क्ष, ब्राह्मण, शकल, वायु, वह्नि, शब्द, सोम।
२६	२५	अभाव (अ०), स्वल्प (अ०), विष्णु, ईश।
		अस
१४	८	मूढ, जड।
		अंश
१४	२७	स्कन्ध, विभूषा।
		आ
१	५, ६	स्वयम्भू, कोप (अ०), पीडा (अ०)।
२	७	प्रगृह्य, स्मृति, वाक्य परिताप, पितामह, घट, भाव, कोप (अ०), पीडा (अ०)।
३	३	स्वयम्भू, इभ, वाजिन्, खेद, शङ्कर, वासव, पारिजात, सम, प्राज्ञ, निवास, चणक, सुत।
६	४	घट, भाव, परिताप, पितामह।
८	२, ३	विरञ्चि, वाक्य (अ०), स्मरण (अ०), सन्ताप (अ०), क्रुध् (अ०)।
९	३७	पितामह, प्रलय, वातमण्डली।
१०	४	द्रुहिण, पुष्पकेतन, स्मृति (अ०), वाक्य (अ०), कोप (अ०) सन्ताप (अ०)।
११	२	पितामह।
१२	१	पितामह, पूजा (अ०), माङ्गल्य (अ०)।
१३	२	स्वयम्भू।
१४	२९	पितामह, सन्ताप (अ०), प्रकोप
१५	६	(अ०), विधातृ, मन्मथ, स्मृति (अ०), वाक्य (अ०),

कोषांक	श्लोकांक	
		सन्ताप (अ०), कोप (अ०)।
१६	२५, २६	पितामह, अत्यर्थं (अ०), मण्डनी (अ०)।
१८	२	परा, शक्ति, श्वेत, आकर्षसिद्धिद, इच्छासिद्धि, स्वात्मसिद्धि, रससिद्धि।
१९	४६	प्रगृह्य (अ०), स्मृति (अ०), वाक्य (अ०), अनुकम्पा (अ०), समुच्चय (अ०)।
२०	४	नारायण, अनन्त, मुरवृत्त, गुरु, विष्णुशय्या, शेष।
२१	२	सुखवितति (अ०), परिताप (अ०), आपकुम्भ, चिरविस्मृतसंस्मरण (अ०), लघुसम्मतसर्वगभाव, (?) (अ०),
२२	३	ब्रह्मन्, अब्धि, अर्क, चाप,
२३	२	पितामह।
२४	२	महेश्वर।
२५	१०,११,१२	विरञ्चि, वाक्य (अ०), स्मरण (अ०)। बन्धुवर्ग, तिरस्कार (अ०), क्रियायोग (अ०), ईषद् (अ०), कोप (अ०), भाव (अ०), पट, चित्र (अ०), दूराह्वान, (अ०), पितामह, मातामह, सन्ताप (अ०), मन्मथ, वृथास्मृति (अ०), अभिव्यक्ति (अ०), अभिव्याप्ति (अ०), सीमा (अ०), दुःख (अ०), खेद (अ०)।
२६	२६	प्रगृह्य (अ०), स्मृत (अ०), वाक्य (अ०), सन्ताप (अ०), कोष (अ०)।
		आङ् अ०
२	८	ईषत्, अभिव्याप्ति, सीमा, धातुयोग।

कोषांक	श्लोकांक	
५	३, ४	ईषत्, विस्मय, सन्तोष, अमर्ष, सुख, सीमन्, चिरविस्मृतिसंस्मृति, अल्पवस्तु, सलीलाक्षेप।
१०	५	ईषत्. क्रियायोग, सीमा, अभिव्याप्ति।
१५	७	सीमा, अभिव्याप्ति, क्रियायोग, ईषत्।

आम् (अ०)

८	३	अवधृति, स्मृति।

इ (पुं०)

१	६	कुत्सार्थ (अ०), पाप (अ०), निषेध (अ०), नयनभ्रम, (अ०), सम्बोधन (अ०), कोप (अ०), अपत्य (?), काम।
२	८, ९	वितर्क, स्मर, हार, फणरत्नद्युति, अग्र, करेणुकुक्ष्यन्त, गुहा, शशितेजस्।
३	४	काम, स्थाणु, इन्द्र, अर्क, वरुण, पादप, द्विप, शुचि, श्रीमत्, अज, बाल, विरञ्चि, कृत्तिकासुत।
५	४, ५	कुसुमास्त्र, हार, चन्द्रकिरण, करेणुकटचन्त, महीभृत्कुहर, भुजङ्गमफणाङ्क, मृग, धेनु रूप्यक।
६	४, ५	फणरत्नार्चिष्, अग्रतः, गुहा, हार, करेणुकुक्ष्यन्त, निशाकरकर, स्मर।
८	३	काम, कोपोक्ति (अ०), खेद (अ०)।
९	३८	काम।
१०	५	काम, कल्मष, खेद (अ०), कुत्सा (अ०)।

कोषांक	श्लोकांक	
११	२	काम।
१२	२	काम।
१३	२	काम।
१४	३०	काम, खेद (अ०), रुषोक्ति (अ०)।
१५	७	स्मर, अघ, खेद (अ०), कोपोक्ति (अ०)।
१६	२६	काम।
१८	३	विष्णुदैवत्व, शाम, रक्षाकर रूपकर, कान्तिकर, श्रेष्ठ, वरेण्य, मोहसिद्धिद।
१९	४६	खेद (अ०), रुषोक्ति (अ०) अपाकरण (अ०), अनुकम्पा (अ०)।
२०	५	माधव, सूक्ष्मसंज्ञ, विद्या, दक्षिणलोचन, गन्धर्व, पाञ्चजन्य, चमुकाङ्कुर।
२१	३	कुसुमशर, गिरिकुहर, शशधरकिरण, करेणुकुक्ष्यन्त, भुजगफणामणिरोचिष्, ही (अ०)।
२२	३	काम, इन्द्र, अब्जसम्भव,
२३	२	काम।

इ

२४	२	काम।
२५	१२, १३	अहर्मणिरश्मि, संशय (अ०), बाण, मान्य (अ०), हार, करेणुकुक्ष्यन्त, निशाकरकर, स्मर, कोपोक्ति (अ०), कामबाण, पुमान्, आश्चर्य (अ०), खेद (अ०)।
२६	२६	खेद (अ०), रुषोक्ति (अ०), कामदेव।

ई (स्त्री०),

कोषांक	श्लोकांक	
१	७, ८	रमा, मदिरा, मोह, महानन्द, शिरोभ्रम, द्रव्यपर्याय (अ०) ।
२	९	वारिजदल, लक्ष्मी, वाणी, कमलकेसर ।
३	५	ईश्वर (?पुं०), शत्रु (?पुं०), पुरुष(?पुं०), करुण (?पुं०), अरुण(?पुं०),अप्रजा(?पुं०), सुप्रजा(?पुं०),शङ्कु (?पुं०), मुकुर(?पुं०),नकुल (?पुं०), अकुल(?पुं०)।
६	५, ६	अब्जदल, लक्ष्मी, वाणी, कमलकेसर, रचना, शक्रचाप, बाण, फणिन (?पुं०), कन्दर ।
८	४	पद्मा, प्रत्यक्ष (अ०), दुःखभावन (अ०), प्रकोप (अ०), सन्निधि (अ०)।
९	३८	लक्ष्मी ।
१०	६	लक्ष्मी, धरा।
११	२	लक्ष्मी ।
१२	२	लक्ष्मी ।
१३	२	श्री ।
१४	३०	लक्ष्मी, दुखःभावन (अ०), कोप (अ०) ।
१५	७	भू, श्री ।
१६	२६	लक्ष्मी ।
१८	४	दैवत. माया, शाममोहकर, पर, वीरवशीकार, वनितावशीकार ।
१९	४७	विषाद (अ०), अनुकम्पा (अ०), लक्ष्मी ।
२०	६	गोविन्द (पुं०?), त्रिमूर्तीश (? पुं०), शान्ति, वामलोचन, नृसिंहास्त्र (?पुं०), माया, सुरेश्वर (? पुं) ।
२१	४	कमला, कमलदल, कमलकेसर, भुजग, गिरिशिखर, गिरिवारुणि, सुरपतिचाप, रचना ।
२२	३	लक्ष्मी, मौलि, जिह्वा ।
२३	२	लक्ष्मी ।
२४	२	लक्ष्मी ।
२५	१४, १५	कज्जल पुं०), लक्ष्मी (पुं०) वाणी (पुं०), कमलकेसर (पुं०), रसना (पुं०), शक्रचाप (पुं०), बाण (पुं०), बलिन् (पुं०),कन्धर (पुं०), प्रत्यक्ष (अ०), दुःखभावक (अ०), प्रकोप (अ०), सन्निधि (अ०), चौर (अ०), नवोढा (अ०), भू (अ०,) स्वर (अ०) ।
२६	२७	दुखःभावन (अ०), कोप (अ०), लक्ष्मी ।

उ (पुं०)

कोषांक	श्लोकांक	
१	९	शङ्कर, तोय, तोयधि पा० १, तोयद, धरणीधर, अवसान (अ०), वितर्क (अ०) वचनावसर (अ०) ।
२	१०	शम्भु, क्षत्रिय, नेत्र, हरमौलि, हरि ।
३	६	गौरीपति, काल, सेतुनाथ, परायण, नारद, अर्क, अनिल, पाशिन् मार्कण्डेय, रावण ।
५	६, ७	शायक शर्व, वर, नीरजकेसर, शक्रचाप, हरि, पाणि, कमलारचना (?), क्षोणीभृत्कुहर, पद्मदल ।

कोषांक	श्लोकांक	
६	६	क्षत्रिय, नेत्र, हरमौलि, हर, हरि ।
८	४, ५	वृषभध्वज, रोषोक्ति अ०, मन्त्रण (अ०) ।
६	३८	शङ्कर, विष्णु ।
१०	६	शम्भु, मोक्ष, ऊर्द्ध्व, शक्ति
११	३	शङ्कर ।
१२	२	शङ्कर, लक्षण पा०१ रक्षण,
१३	२	ईश्वर ।
१४	३१	शिव, सम्बुद्धि (सम्बोधन) (अ०), रोषभाषण (अ०) ।
१५	८	शम्भु, क्रोध (अ०), बन्धन (अ०), लोभ (अ०) विभाग (अ०) ।
१६	२७	शङ्कर ।
१८	५	कालदैवत्व, शामलोकव-शङ्कर, मातृकोत्थापन, पुण्य, क्रूररोगविनाशन ।
१९	४७, ४८	सम्बोधन (अ०), रोषोक्ति अ०, अनुकम्पा अ०, नियोग (अ०), पदपूरण (अ०), पादपूरण (अ०) ।
२०	७	अमरेश, विष्णु, इन्धिका, गजाङ्कुश, दक्षकर्ण, विजयिन्, मन्मथाधिप ।
२१	५	तरुशिखर, गिरिमौलि, पा. ३. गिरिमूल, ३. पा. हरमौलि, गौरीहृदय, शशधररोचिस्, शुचि, शुक्लपक्ष, अत्रप, नेत्र ।
२२	३	शम्भु, उग्र, अमरेश्वर ।
२३	३	शङ्कर ।
२४	३	शङ्कर ।
		ऊ
२५	१६, १७	क्षत्रिय, नेत्र, हरमौलि, हर, हरि, मात्रा (अ०), शेष-फूत्कार (अ०), शोक, सम्बुद्धि (अ०), रोषोक्ति (अ०), आमन्त्रण (अ०), मोक्ष (अ०), भाव (अ०) ऊर्द्ध्व (अ०), शक्ति (अ०), अप्रकाश (अ०), षण्ढ ।
२६	२७	सम्बुद्धि (अ०), रुषोक्ति (अ०), शम्भु ।
		उत् (स०)
१०	६, ७	भाव, प्रकाश, क्रोध, लोभ, विभाग, बन्धन ।
१५	८	प्रकाश, मोक्ष, भाव, उर्द्धव्, शक्ति ।
		उं (अ०)
१	११	रक्षा ।
८	५	प्रश्न, अङ्गीकृति, रोष ।
		ऊ (पुं०)
१	१०	शङ्कर, तोय, तोयधि, पा. १ तोयद धरणीधर, अवसान (अ०) वितर्क (अ०,) वचनावसर (अ०), निषेध (अ०) ।
२	१०, ११	शुचि, इन्दु, पुरुष, राजपुत्र, गल, सुर, प्राङ्गण, उपमा, पूर्णकुम्भ, वणिज्, रक्षण ।
३	७	परेत, जड, त्वष्टृ, विवस्वत्, अग्निसारथि (वायु), वह्नि, निशाकर, पूर्ण, दरिद्रिन्, सरमाधिप, (शूली) ।
५	७, ८, ९	क्षत्रिय, शम्भु, हरमौलि, हरि, शनि, तपस्, द्रुमाग्र, चन्द्रार्ध, गौर, भू, विलोचन, रजनीनाथ, पुरुष, राजपुत्रक, गल, मङ्गल-कुम्भ, देव, तक्षकफणिन्,

कोषांक	श्लोकांक	
		उपमान (अ०), प्राङ्गण, क्वचित् (अ०), प्रवर्द्धक ।
६	७	पुरुष, चन्द्र, राजपुत्र, गल, सुर, प्राङ्गण, उपमा (अ०), पूर्णकुम्भ, वणिज्, रक्षक ।
८	५	रक्षण ।
९	३८	ब्रह्मन्, पा ३. रक्षण ।
१०	७	गुरु, पालन, वन ।
११	३	रक्षण, पा. ४. लक्षण ।
१२	३	रक्षण, ब्रह्मन् ।
१३	२	रक्षण ।
१४	३१	इक्षा, आरक्ष, सूत्रि, रक्षक ।
१५	८	गुरु ।
१६	२७	रक्षण ।
१८	६	पृथिवीबीज, ग्रामरक्षाकर, पर, भूतनाशन, प्रेतनाशन, पिशाचनाशन, रिपुनाशन ।
१९	४८	वाक्यारम्भ (अ०), रक्षा (अ०), अनुकम्पा (अ०) ।
२०	८	अर्वाश, (उर्वीश), दीपिका, वामश्रवण, मधुसूदन, इन्द्रचाप, षण्मुख, रक्षणाधिप ।
२१	६	रजनीकृत्, पुरुष, राजन्यगवलमङ्गिन् (?) प्राङ्गण, मङ्गलकलश, देव, क्वचित्, उन्माद (अ०) ।
२२	४	सुधा, अनन्त, जलद ।
२३	३	विष्णु ।
		ऊ
२४	३	रक्षण ।
२५	१८, १९	पुरुष, चन्द्र, राजपुत्र, गल, असुर, प्राङ्गण, उपमा, कुम्भ, अवनिज, रत्नक, बन्धन, लोभ विभाग, प्रश्न (अ०), अङ्गीकृत, रक्षण, सूर्य ।

कोषांक	श्लोकांक	
२६	२८	वाक्यारम्भ (अ०), अनुकम्पा, रक्षा, हूति ।
		ऊं (अ०)
१	१०, ११	कोप, स्वार्थ, रक्षार्थ ।
८	६	प्रकोपोक्ति, पा. ५ प्रकर्षोक्ति, प्रश्न ।
२५	२०	स्वर, रोषोक्ति (न०), प्रश्न (न०)
		ऋ (पुं०)
१	११	पावक, सूर्य, धर्म, दान, धन ।
२	११, १२	कुञ्जर, शिखरिन्, विभेद, देवमातृ, भाव, देवरिपु, नदी, सुरा, विवर, द्यौ ।
३	८	निर्ऋति, नल, नाक खगराट्, वासुकि, शाल, पितृष्वसृ, पुत्र, अदिति, दिति, उमा, रमा ।
५	१०, ११	रिपु, बुद्धिविशेष, कुञ्जर, शव, देवतटिनी, सुरा, देवमातृ, विधुर, महत्, चिकुर, सर्पमणि, विगतसम्पत्, भूत, भुजङ्ग, दनुजमातृ, तर्पण, सलिल, पद्म, तुहिन, तरल, धन ।
६	८	कुञ्जर, शैल, धीभेद, देवमातृ, भाव, भाव, देव, रिपु नदी, सुरा, विवर. दिव् ।
८	६	देवमातृ, कुत्सा (अ०,) वचन (अ०) ।
९	३९	देवमातृ ।
१०	७	देवमात, क्ष्मा ।
११	३	देवमातृ ।
१२	३	देवमातृ ।

कोषांक	श्लोकांक	
१३	२	देवमातृ ।
१४	३२	देवमातृ, वाक्य, कुत्सा ।
१५	६	पृथिवी, रक्षण, देवमातृ, पालन ।
१६	२७	देवमातृ ।
१८	७	विधिदैवत्व, पीत, सर्वार्थसिद्धिद, चिरायुष्य, तपःसिद्धि, पराभोग ।
१९	४६	गर्हण (अ०), वाक्य (अ०), देवाम्बा ।
२०	६	देविका, दक्षनाशा, भारभूति, त्रिविक्रम, देवमातृ, रिपुघ्न, तापन ।
२१	७	विभव, महत्, रिपुसूदनी, गज, गिरि, विवर, ऋद्धिविशेष, देव, विनय, सुरयोनि, अम्बु, चिहुर, फणिदृग् ।
२२	४	देवाम्बा, रव, अध्वन् ।
२३	३	देवमातृ ।
२४	३	देवमातृ ।
२५	२०, २१	कुञ्जर, शैल, धीभेद, देवमातृ, स्वभाव, देवनदी, सुरा, विवर, दिव्, कुत्सा, पालन, रक्षण, गुरु ।
२६	२८	वाक्य (अ०), कुत्सा (अ०), देवाम्बा ।
		ॠ (पुं०)
१	१२, १३	देवमातृ (पुं०), ऋभु (पुं०), सुर (पुं०), धन (स्त्री०), वन्हि (स्त्री०), वासव (स्त्री०), वरुणालय (स्त्री०) ।
२	१२, १३	दृष्टि, चिकुर, वाताशन, विगतसम्पद्, हिम पद्म, दिति, स्वर्ग, धन, भूषा, भुजा, अम्बु ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	६	निषेध, भव, पूषन्, वरुण, अमरराट्, अज, करिन्, तरु, नर, पाप्मन्, विद्वस्, रमापति ।
५	११, १२	रिपु, बुद्धिविशेष, कुञ्जर, शव, देवतटिनी, सुरा, देवमातृ, विधुर, महत्, चिकुर, सर्पमणि, विगतसम्पद्, भूत, भुजङ्ग, दनुजमातृ तर्पण, सलिल, पद्म, तुहिन, तरल, धन ।
६	६	चिकुर, सर्पदृष्टि, विगतसम्पद्, हिम, पद्म, दिति, स्वर्ग, धन, भूषा, भुज, अम्बु ।
८	७	अज, दानवाञ्छा, देवमातृ, वाराही ।
९	३९	स्वर्ग ।
१०	७	दैत्यमातृ ।
११	३	धातृ, पा० ५. दनुजप्रसू ।
१२	३	दनुजप्रसू ।
१३	२	दानवमातृ ।
१४	३२	देवताम्बा. (स्त्री०) ।
१५	६	दैत्यमातृ ।
१६	२७	दनुजप्रसू ।
१८	८	शिवदैवत्व, रक्त, सर्वशङ्कर, जन्मवर्जित, मृत्युवर्जित, जरावर्जित, व्याधिवर्जित, श्रीप्रद, जयप्रद ।
१७	४७, ५०	वाक्यारम्भ (अ०), रक्षा (अ०), वसस्, स्मृति, देवाम्बा, दनु, भैरव, दनुज, गति ।
२०	१०	अतिथी, वामन, मोचिका, वामनासिका, दैत्यमातृ, दैवज्ञ, त्रिपुरान्तक ।
२१	८	युक्त, तुहिन, कमल,

कोषांक	श्लोकांक	
		करुणा, त्रिदश, फणिपति, अलङ्कार, बाह्यारलङ्कार।
२२	४	दैत्याम्बा, गान, दान।
२३	३	दनुजप्रसू।
२४	३	स्वर्ग।
		ॠ
२५	२२, २३	कुत्सित, सर्पदृष्टि, विगतसम्पद्, हिम, पद्म, अदिति, स्वर्ग, धन, भूषा, भुजा, अम्बु, अज, (पुं०), विकलाङ्ग, भग।
		लृ
१	१४, १५	लघुसंवाद, शक्ति, सर्वर्षिमातृ, लघ्वक्षर, क्लीब, सौदामिनी, सर्प, मन्त्र, तन्त्र, लुकित, तत।
२	१३, १४	कुलीर, कपिदन्त, हस्तिदंष्ट्रक, स्वर्ग, अदिति, लिप्तगात्र, गतनप्तृ, रक्षस्।
३	१०	म्लेच्छ, अरुणवर्ण, क्लीब, पापिन्, पराजित, वीतराग, पाषण्डिन्, कमल, मरण।
५	१३, १४	लिप्तगात्र, त्रिदिवेश, किटिदन्त, हस्तिदन्त, कुलीरदन्त, कपिदन्त, सुपर्णमातृ, रजस्।
६	१०	दन्तिदन्त, कुलीरदन्त, कपिदन्त, स्वर्ग, अदिति, लिप्तगात्र, गतनप्तृ, रक्षस्।
९	३९	देवयोनि, मातृ, दनुजप्रसू।
१०	८	देवी।
११	४	देवयोनि[मातृ]।
१२	४	देवजातीमातृ।

कोषांक	श्लोकांक	
१३	३	देवसू।
१५	६	देवी।
१६	२८	देवयोनिमातृ।
१८	६	अश्विनी, रक्त, रोगविनाशन, तीव्रसिद्धि, भिषक्सिद्धि, औषधीसिद्धिद।
१९	५०	देवताम्बा, भू, कुध्र।
२०	११	श्रीधर, परास्थाणु, दक्षगण्ड, त्रिवेदक, एकाङ्घ्रि, वज्रदण्ड, व्योर्मधि, स्वर।
२१	६	मरुदशन, करिदशन, दानवदशन, कुलीरदशन, लिप्ताङ्ग, हृदय, देहलिप्त।
२२	४	श्लेष, अमरसू, शिव।
२३	४	देवमातृ।
२४	४	दैत्यमातृ।
२५	२३, २४	दन्तिदन्त, करीरदन्त, (? कुलीरदन्त) कपिदन्त, स्वर्ग, अदिति, लिप्तगात्र, गज, नप्तृ, वक्षस्, दर्प, योषित्, द्रव्य।
		लॄ
१	१४, १५	देवमातृ, वाराही, सौदामिनी, सर्प, मन्त्र, तन्त्र, लुकित, तत।
२	१४, १५	कृकलास, अद्रि, अङ्क, अक्षिन्, मकर, सुर, लीलागत, लोचनास्थि, नागमातृ, मातृ।
३	११	महात्मन्, सुर, बाल, भूप, स्तोम, कथानक, मूर्ख, शिश्न, गुद, कक्षा, केश, पापरतो, नर।
५	१५, १६	गिरि, देव, कृकलास, अङ्ग, बाण, मकरीवदन, अगार,

कोषांक	श्लोकांक	
५	१५, १६	जननी, नागमातृ, लीलागमन, नेत्र, रोचनाङ्ग (?) स्मृति ।
६	११	कृकलास, अद्रि, अङ्ग, अक्षिन्, मकर, सुर, लीलागति, लोचनास्थि, नागमातृ, मातृ ।
९	४०	जननी ।
१०	८	वाराही, लताभेद ।
११	४	धातृ ।
१२	४	जननी ।
१३	३	वाराही ।
१५	९	लतान्तर ।
१८	९	अश्वनी, दुक्त, रोगविनाशन, तीव्रसिद्धि, भिषक्सिद्धि, ओषधीसिद्धिद ।
१९	५१	देवनारी, नारी, आत्मन्, मातृ ।
२०	१२	हृषीकेश, हर, सूक्ष्म, वामगण्ड, कुवेरदृक्, अर्द्धचं, नीलचरणी, त्रिकूटक ।
२१	१०	शक्रशर, कृकलास, नीलींजाति, पा० २ लीलाजाति, स्वर, मकर, शितमकरेन्द्र, नयनच्छवि. लोचनापाङ्ग ।
२२	५	स्थिल, आलिङ्गिन्, स्थाणु ।
२३	४	नागमातृ ।
२४	४	दनुजप्रसू ।
२५	२४. २५	कृकलास, प्लवङ्ग, अक्षिन्, मकर, सुर, लीलागति, लोचनागति, लोचनास्थि, नागमातृ, मातृ, हास्याक्षी, नवोढाकञ्चुक, लतान्तर ।

ए

कोषांक	श्लोकांक	
१	१६, १७	कामसम्बोधन, ब्रह्मकेवल, चण्डी, गोचर, गोपति ।
२	१५, १६	तेजस्, जल, रात्रि, हर्म्य, उदर, हरि, व्योमन्, एकादशसंख्या, दिनादि, मणिकुट्टिम ।
३	११	कुमार, असुर, अराति, ज्ञातीय, अहित, उद्धत, आत्मन्, शेष, विवस्वत्, कृतार्थ, मध्वरि, शर ।
५	१६, १७	विष्टि, रजनीश विधान, हर्म्योदर, दीनमृग, गगन, मणिकुट्टिम, तेजस्, त्रैकालिका, संख्या ।
६	१२	तेजस्, जल, रात्रि, हर्म्योदर, हरि, व्योमन्, एकादशसंख्या, दिनादि, मणिकुट्टिम ।
८	७	विष्णु ।
९	४०	विष्णु ।
१०	८	विष्णु, शैल ।
११	४	विष्णु ।
१२	५	विष्णु ।
१३	३	विष्णु ।
१४	३२, ३३	चतुर्भुज, स्मृति, सम्बोधन, आह्वान ।
१५	१०	वाराही, महीध्र, विष्णु ।
१६	२८	विष्णु ।
१८	१०	वीरभद्र, पीत, सर्वार्थसिद्धिद, निग्रहकर, अनुग्रहकर, भीषण, जयवर्धन ।
१९	५१	स्मृति, असूया, अनुकम्पा, आमन्त्रण, हूति ।
२०	१३	झण्टीश, पद्मनाभ, शक्ति,

कोषांक	श्लोकांक	
		सूक्ष्मामृत, भग, ऊर्द्धोष्ठग, कामरूप, त्रिकोणक।
२१	११	मणिकुट्टिम, हर्म्योदर, वासरमुख, गगन, नीरधारा, निशा, एकादशम, पशु।
२२	५	विष्णु, रवि, मारुत।
२३	४	विष्णु।
२४	४	विष्णु।
२५	२६, २७	तेजस्, जल, रात्रि, हर्म्योदर, हरि, व्योमन्, एकादशसङ्ख्या, दिनादि, मणिकुट्टिम, महीन्द्र, धातृ, साक्षीत्व, आतोष (?), हर।
२६	२९	स्मृति, आमन्त्रण, हूति।

ऐ

१	१७, १८	स्वर्ण, शम्भु, श्रीपति, वायु, शारदा, स्वर, मूर्च्छा, सूर्य।
२	१६	हस्त, दिङ्मुख, वात, हर, अद्रिशिखर, त्वक्।
३	१३	क्रूर, धरणीनाथ, पूर, मार, अमर, असुर, कुलाल, नृ, धर, प्राज्ञ, मन्द, पुत्र, वानर।
५	१८	सङ्कर, हस्त, दन्त, अग, इन्दु, इन्द्रवारण, त्वक्, शिखर, गिरि।
६	१३	दिग्मुख, हस्त, हर, अद्रिशिशर, त्वक्।
८	७	वृषध्वज।
९	४०	महेश्वर।
१०	८	शम्भु।
११	४	महेश्वर।

कोषांक	श्लोकांक	
१२	५	महेश्वर।
१३	३	शिव।
१४	३३	शिव, स्मृति, आमन्त्रण, आहूति।
१५	१०	अद्रिजापति।
१६	२८	महेश्वर।
१९	५२	हूति, स्मृति, आमन्त्रण।
२०	१४	ज्ञानामृत, भौतिक, आधार, दामोदर, वागीश, वर्मन, भयद, त्रिपुर।
२१	१२	दिग्दन्तिन्, सुरपतिदन्तावल, सितपिच्छ, ऐरावत, इभभेद, पा० ६ ईरापति-इभदेव, पर्वतशिखर, चारु।
२२	५	शङ्कर, ब्रह्मन्, भूप।
२३	४	महेश्वर।
२४	४	महेश्वर।
२५	२८	दिङ्मुख, पूर, हर, श्रीशिखर, त्वग्।
२६	२९	स्मृति, आमन्त्रण, हूति।

ऐं

१८	११	भारती, विद्या, स्फटिक ज्ञानसिद्धिद, चतुःषष्ठिकलासिद्धिदायक, परम, शिव।

ओ

१	१८	रक्षण, शेष, सूत्र, पा० ४ मन्त्र, श्रुति।
२	१७	वारिज, जल, कुडच, श्रीद, मेघ, इन्दु, योनि, शक्र, जीव, विरिञ्च।
३	१४	वेधस्, ज्ञ, ध्रुव, अगस्त्य, गरुड, अग, अक्षय, असुर, आखु, काण, मार्जार, साधु, सङ्ग, परासर।

कोषांक	श्लोकांक	
५	१९, २०	वर्ण, शीतांशु, पङ्क, दाया, अद्मक, अब्जक, त्रिदिवेश, पयोवाह, जीव, स्वसदन, योनि, सरोज, तोय, कुड्य ।
६	१३, १४	पद्म, कुल्या, अम्बु, श्रीद, मेघ, इन्दु, योनि, शक्र, जव, विरञ्चि ।
८	८	उर्ध्वलिङ्ग, आहूति, अनन्त, सम्बोधन ।
९	४१	ब्रह्मन्, पा० ४ भैरव, देव ।
१०	८	धातृ ।
११	५	ब्रह्मन् ।
१२	५	ब्रह्मन् ।
१३	३	वेधस् ।
१४	३४	ब्रह्मन्, आमन्त्रण, आह्व ।
१५	१०	धातृ ।
१६	२९	ब्रह्मन्, ।
१८	१२	शिवदैवत्व, ज्योतिर्मय, अनुग्रह, मनोवेगप्रद, श्रेष्ठ, शान्त, सर्वफलद ।
२९	५२	सम्बोधन, आह्वान, स्मरण, अनुकम्पन ।
२०	१५	सद्योजात, वासुदेव, उर्द्धदन्त, त्रिमात्रक, आप्यायनी, मन्त्रनाथ, नागसंज्ञक ।
२१	१३	ओतु, केतु, धनद, शर, असि, जम्बाल, सरसिज, जल, कुड्या, अम्बुनामदेव, खट्वा ।
२२	५	ब्रह्मन्, इन्दु, सुधा ।
२३	५	ब्रह्मन् ।
२४	५	ब्रह्मन् ।
२५	२८, २९, ३०	पद्म, कुटी, अम्बु, श्रीद, मेघ, इन्दु, योनि, शक्ति,

कोषांक	श्लोकांक	
		जन, विरञ्चि, वेदादि, प्रवण, द्विज, अङ्गीकार, ऊर्द्धव्लिग, आहूत ।
२६	२९	सम्बुद्धि, आह्वान ।

ओँ

कोषांक	श्लोकांक	
२	५	प्रश्न, अङ्गीकृत, रोष, प्रौढ, ब्रह्मन् ।
२२	२	अङ्गीकरण, आह्वान, ब्रह्मन्, याचन, दीप्ति ।

ऊँ

कोषांक	श्लोकांक	
२०	२	ध्रुव, तार, त्रिवृद्, ब्रह्म-वेदादि, तारक, प्रणव, त्रिमात्र, ज्योतिस्, आदित ।
२५	२९	माङ्गल्य, ऊर्द्धव्लिङ्ग, आहूत ।

औ

कोषांक	श्लोकांक	
१	१९	समुद्र, जल, अनन्त, पीडन, भाषण ।
२	१७, १८	स्कन्द, गणनायक, विशुद्धाङ्ग, इन्दुकला, अनन्त, सिद्धपुष्पक ।
	३, १५	श्वन्, युवन्, नर, नारी, भाव, सूक्ष्म, प्रजापति, स्थूल, जार, कलावत्, सुखिन्, दुर्गा, रति, कवि, पा० १ वायु, वानर ।
५	२०, २१, २२	पर्वत, पुत्र, प्रश्न, औषधि, मान, विशुद्धकाय, अनन्त, कला, रजनीपति, सिद्धविमान, कार्य, वज्रकवच, मुनि, कम्पयुत, जय, सप्तस्वरान्तमान ।
६	१४	अम्बिकासुत, विशुद्धाङ्ग, इन्दुकला, अनन्त, सिद्धपुष्पक ।

कोषांक	श्लोकांक	
८	८	परब्रह्मन् ।
९	४१	अनन्त ।
११	५	अनन्त ।
१२	५	अनन्त, पा० ३ रुद्र ।
१३	३	अनन्त ।
१४	३४	नभस्, सम्बुद्धि, आह्वान ।
१५	१०	अनन्त ।
१६	२९	अनन्त ।
१८	१३	शाङ्करी, विद्या, स्फटिक, सर्वसिद्धिद, सारस्वत, शत्रुकोपनाशन ।
१९	५३	हूति, सम्बोधन, विश्वम्भरा, निःस्वन ।
२०	१६	सङ्कर्षणी, ग्रहेश, मुरारि, व्यापिनी, मायिन्, नृसिंहाङ्ग, पा० २ रस ।
२१	१४	परमार्थ, सिद्धविमान, विशुद्धकार्य, औषधपान, नेमि (?) चन्द्रकला, उमातनय ।
२२	६	सुधा, अनन्त, जलद ।
२३	५	अनन्त ।
२४	५	अनन्त ।
२५	३०, ३१	अम्बिका, नृपजय, नृपशूर, विशुद्धाङ्ग, इन्दुकला, अनन्त, शुद्धपुष्पक, कुलीन, यज्ञपात्रेश, सम्बोधन ।
		अं
१	१९, २०	ब्रह्मसंवाद, परब्रह्मप्रवाचक, व्यसन, व्याधित, व्याधि, ज्ञान, विज्ञान, वन्दन, पा० ५ परब्रह्मन् ।
२	१८, १९	वक्रवाक्य, अतिदीर्घ, अञ्जलि, नियोग, सप्तस्वरादिमान, परज्योतिस् ।
३	१६	सुख, कश्मल, दुःख, पूर्ण, दूर, गत, वर ।
५	२३	अञ्जलिपर्याय, पर, तेजस् ।
६	१५	चक्रवाक, अतिदीर्घ, अञ्जलि, नियोग, सप्तस्वरान्तमान, परज्योतिस् ।
८	८	शिव ।
९	४१	परमब्रह्मन् ।
१०	९	वेधस् ।
११	५	परमब्रह्मन् ।
१२	६	परमं ब्रह्मन् ।
१३	३	ब्रह्मन् ।
१४	३५	परब्रह्मन्, अनुमति ।
१५	१०	ब्रह्मन् ।
१६	२९	परंब्रह्मन् ।
१८	१४	बीजरुद्र, रक्त, देववशङ्कर, सर्वलोकजय, कार्यसिद्धिद, चित्तशुद्धिद ।
२०	१७	अक्रूर, व्योमरूप, प्रद्युम्न, चन्द्रसंज्ञक, अनुस्वार, बिन्दु, शिर ।
२१	१५	सुखवपन, मन्त्र, द्राघीयस्, सुनिष्कम्प, अञ्जन, योग, नियोग, सप्तस्वरस[ग] सुगान ।
२२	६	भेद, आत्मन्, ईश, मारुत ।
२३	५	परमं ब्रह्मन् ।
२४	५	परं ब्रह्मन् ।
२५	३२	शव, बकवाक्य, अतिदीर्घ, अञ्जलि, नियोग, सप्तस्वरान्तमान, परंज्योतिस् ।
		अः
१	२०, २१	शङ्कर, सूर्य, दान, आदान, प्रदीप्ति, सत्ता, क्षेपण,

कोषांक	श्लोकांक	
		खेद, आश्चर्य, निन्दक, स्वर्ग पा० १ ।
२	१९, २०	शिखा, सिद्धमन्त्र, प्रगाह, अर्क, रथार्वन, चक्र, कुक्कुटमूर्ध्नि, इन्दुबिम्ब, ब्रह्मन्, ईश, विष्णु ।
३	१६	जिनादि, विष्णुभृत्य, नय, स्तुत, पा० २ सुत, कृष्ण, शङ्कर, ब्रह्मन्, शक्र, सोम, अनिल, अनल, सूर्य, प्राण, जन, काल, वसन्त, प्रणत, सुखिन् ।
५	२३, २४	गिरिजानाथ, सिद्धमन्त्र, रमापति, दिनेश, गृहोपद्रवसम्भव, निशेशगृहोपद्रवसम्भव, शिखा, चन्द्रबिम्ब, चरण, मस्तक ।
६	१६	शिखा, सिद्धमन्त्र, प्रग्रह, अर्क, रथाअर्वन्, वक्त्र, कुर्कुटमूर्ध्नी, इन्दुबिम्ब, पा० १ कुक्कुटमूर्द्धेन्दु, ब्रह्मन्, ईश, विष्णु ।
८	८	शिव ।
९	४१	महेश्वर ।
१०	९	रुद्र ।
११	५	महेश्वर ।
१२	६	महेश्वर
१३	३	शिव ।
१४	३५	अनुमति, शङ्कर ।
१५	१०	कपालिन् ।
१६	२९	महेश्वर ।
१८	१५	कालरुद्र, रक्त, पापनिकृन्तन, स्वप्रपञ्चोपसंहार, परमात्मप्रबोधक ।
२०	१८	अनन्त, महासेन, अनिरुद्ध, रसवर्णक, कन्यास्तननिभ, सर्ग ।

कोषांक	श्लोकांक	
२१	१९	रविरथतुरङ्गरश्मि, सिद्धमन्त्र, शशिमण्डल, चक्र, शुक्र, कर्कुटशिरशिखा ।
२२	६	षडास्य, इन्दु, चूडेन्द्र।
२३	५	महेश्वर ।
२४	५	महेश्वर ।
२५	३३	शिवा, सिद्धमन्त्र, प्रग्रह, अर्क. रथार्वन्, चित्र, कुर्कुटमूर्द्धेन्दुबिम्ब, ब्रह्मन्, ईश, विष्णु ।
		क
१	२१	ब्रह्मन्, आत्मन्, प्रकाश, अर्क, केकिन्, वायु, यम, अग्नि ।
२	२०, २१	ब्रह्मन्, अर्क, वायु, अग्नि, शमन, स्वर्ग, केकिन्, विष्णु, आहतशब्द, अब्धि, धी, शुक्ल, वसु, द्युति ।
३	१७	ब्रह्मन् ।
५	२५,२६,३२	रुत, मह, बुध्न, मारुत, शमन, वन, सितवर्ण, मयूर, हठ, चाटु, वारिद, वश, हरिशबर, प्रकाश, तादर्थ्य ।
६	१७	ब्रह्मन्, अनिल, अर्क, अग्नि, चित्र, धी, यम, केकिन्, विष्णु, आवाहनशब्द, पा० २ वीणावाह(द)नशब्द, अब्धि, सितवर्ण, वसु, द्युति ।
७	५	ब्रह्मन्, आत्मन्, रवि, मयूर, अग्नि, यम, अनिल ।
८	९	सूर्य, मित्र, वायु, अग्नि, ब्रह्मन्, आत्मन्, यम, केकिन्, प्रकाश, वक्त्र ।

कोषांक	श्लोकांक	
९	२	प्रजापति, वायु, आत्मन्, प्रकाश।
१०	९, १०	स्वर्ग, स्मर, सूर्य, ब्रह्मन्, वायु, सुहृत्, केकिन्, वह्नि उद्द्योत, यम, आत्मन्।
११	६, ७	प्रजापति, वायु, आत्मन्, प्रकाश, सखिन्, पा० ८ शिखिन्, मुख, पा० ९ सूर्ख, सूर्य।
१२	६, ७	प्रजापति, अर्क, वायु, अनल, आत्मन्, मयूर, प्रकाश।
१३	४	ब्रह्मन्, आत्मन्, प्रकाश, अर्क, केकिन्, वायु, यम, अग्नि।
१४	१	ब्रह्मन् अनिल, सूर्य, अग्नि, यम, आत्मन्, द्योत, बर्हिन्।
१५	११	स्वर्ग, स्मर, वह्नि, सुहृत् सूर्य, यम, उद्योत, केकिन्, ब्रह्मन्, आत्मन्, वायु।
१६	१	प्रजापति, वायु, आत्मन्, प्रकाश।
१७	१	वायु, शमन, अर्क, ब्रह्मन्, आत्मन्, पावक, सर्वनाम, मयूर।
१८	१६	ब्रह्मबीज, पीत, वृष्टिकर, पर, सञ्जीवन, अशेष-वृद्धिदायक, लोकवृद्धि-दायक।
१९	१	ब्रह्मन्, समीर, आत्मन्, यम, दक्ष, भास्कर, काम-ग्रन्थि, चक्रिन्, पतत्त्रिन्, पार्थिव, मयूर, अग्नि।
२०	१९	क्रोधीश, धातृ, चक्रिन्, सृष्टि, करादिग, वर्गादिग, पादवेष, कामग।
२१	१७	ब्रह्मन्, शिरस्, सलिल, अनाहतशब्द, पा० ११अन-हतशब्द, चामीकर, उदात्त, यज्ञ-विधि, शुक्लवर्ण।
२२	६, ७	यम, अग्नि, दिवाकर, द्योत, आत्मन्, ब्रह्मन्, वात।
२३	६	प्रजापति, वायु, सुर्य, पा० ५ स्वर्ग, आत्मन्, सुख, प्रकाश।
२४	६	प्रजापति, वायु, आत्मन्, प्रकाश।
२५	३४, ३५	ब्रह्मन्, आत्मन्, अनिल, अर्क, अग्नि, चित्र, अरि, यम, केकिन्. विष्णुवाहन-शब्द, अब्धि, सितकर्ण, वसु, द्युति, कलह, प्रश्न, अर्थ, स्वर्ग, चक्र, मित्र, शुद्ध, अर्थ, स्मर, काल।
२६	१	ब्रह्मन्, आत्मन्, अनिल, अर्क, शमन, सर्वनामन्, पावक, मयूर।
		का
३	१७	मही, दुर्गा।
५	२६, ३०	सुरा, शिखिस्वन।
२५	४२	शोभा, कुशब्द, आमिष, शकल, काकेकदेश, रजकी।
		कां
२५	४३	युगपद्, योग, वारण, अश्वगति।
		काकु
४	३०	ध्वनिवैरूप्यसम्भव, गायक-कण्ठदोष।
		कि
३	१७	सुग्रीव, रमापति, आख-

कोषांक	श्लोकांक	
३	१७	ण्डल, सूर्य, अग्नि, व्याघ्र, कर्षुक ।
२५	३९,४०,४१	वितर्क, आश्चर्य, क्रोध, किल, अतिशय, ईषत्, व्योमन्, कीट, कियान्, ब्रह्मन्, प्रश्न, खड्गमुष्टि, कुचाग्र, विधवाभगनिर्देश, दन्तिरेषण केकिनर्त्तन, शब्द ।

किं

कोषांक	श्लोकांक	
२	२२	प्रश्न, आक्षेप, कुत्सा, वितर्क ।
५	२७	अध्याय, निरुक्त ।
६	१८, १९	प्रश्न, आक्षेप, कुत्सा, वितर्क, विकल्प, कुत्सा ।
७	१०	क्षेप, निन्दा, प्रश्न, वितर्क ।
८	१०, ११	कुत्सन, क्षेप, प्रश्न, वितर्क आश्चर्य, निन्दा, कियान् ।
१०	११	आश्चर्य वितर्क, प्रश्न, क्षेप, जुगुप्सा, कियत् ।
१३	४, ५	क्षेप, निन्दा, प्रश्न, वितर्क ।
१५	१२, १३	प्रश्न, वितर्क, आश्चर्य, कुत्सना, आक्षेप, निन्दा, कियत् ।
२५	३८, ४१	अभ्युपगम, प्रश्न, प्रस्ताव, आश्चर्य, पुनर्, निन्दा, रजस्, आक्षेप, कुत्सा, केकिनर्त्तन, शब्द ।

की

कोषांक	श्लोकांक	
३	१८	गज, तुरग, व्याल, जार, जीव, पिपीलिका, धरा, उमा, पा० ३ रमा, द्विट्, पुरुष, पाटल, गो (गौः) ।

कु

कोषांक	श्लोकांक	
१	२३	भू, कुत्सा, काक, शब्द ।
२	२२	भूमि, पाप, अल्प, कुत्सा, वारण ।
३	१९	पृथ्वी, कुच, कूल ।
५	२८, २९	प्रश्न, अर्थ, उपसर्ग, उर्वी, विसहित, चक्र, कैतव, हार, ध्वांक्ष, कोप, शिखन् ।
६	१९	भू, पाप, अल्प, कुत्सा, वारण ।
८	१०	भू, कुत्सित, पापीयस्, निवारण, ईषद् ।
९	३	पृथ्वी, शब्द, कुत्सित ।
१०	१०	पापीयस्, मही, निवारण, कुशब्द ।
११	८	पृथिवी, कुत्सित ।
१२	८	पृथिवी, शब्द पा० ५ कुत्सा ।
१३	४	भूमि, शब्द ।
१४	१, २	शब्द, भू, निन्दा, ईषत्, किल्बिष, वारण ।
१५	१२	भूमि, कुत्सित, शब्द, पापीयस्, निवारण, ईषत् ।
१६	२	पृथिवी, कुत्सित ।
२३	७	पृथिवी, कुत्सित ।
२४	७	प्रथिवी, कुत्सा ।
२५	३७, ४१	धात्री, कुत्सित, शब्द, पापीयस्, निवारण, ईषद्, कलत्र, हीनजाति, कुङ्कुम, पीड़ा, कूर्म, कुत्सन ।
२६	२	पाप, ईषद्, कुत्सा, निवारण, मनाग्, अल्प, मन्द, धिग्, निर्भर्त्सन, निन्दा ।

कोषांक	श्लोकांक	
		कुं
२५	४३	घट, कुङ्कुम, पाक, सम्बोधन ·
२६	३	प्रश्न रुषोक्ति, प्राध्व, नम्र, अनुकूल ।
		कू
३	१६	कुत्या, भू ।
		के
३	१६	प्राण. अर्क, मद, सार, क्लीब ।
		कै
३	१६	प्रणत, शुचि ।
५	३०	शिखिस्वन ।
		को
३	२०	कुर्कुर, पा० ४ कुक्कुर, जन, श्याव, श्यान, शोक ।
		कौ
३	२०	वृष ।
		कं
१	२२, २३	मौलि, सुख, तोय, कान्ति, कामवाचक ।
२	२१	शिर, अम्बु, सुख ।
३	२०	शिर, सुख, तोय, पयस्, दुःख, विष, भय ।
५	२७,२६,३०	सलिल, जलज, ब्रह्मन्, मस्तक, शर्व, काम, पक्ष, विशेष, गुप्तकार्य, युधिष्ठिर, शिखिस्वन ।
६	१८	शिरस्, अम्बु, सुख, पा० ३ मुख ।
७	५	शीर्ष, अप्, सुख ।
८	६	नीर, सुख, मूर्धन् ।
६	३	सिरस्, जल, सुख ।
१०	६	जल, मस्तक, शौख्य ।

कोषांक	श्लोकांक	
११	७	शिरस्, जल सुख ।
१२	७	शिरस्, जल, सुख ।
१३	४	शीर्ष, अप्, सुख ।
१४	१	सुख, वारि, शीर्ष ।
१५	११	सुख, सलिल, शीर्ष ।
१६	२	शिर, जल, सुख ।
१७	१	सुख, शीर्ष, जल ।
१६	२	सुख, शीर्ष, जल ।
२२	७	शिरस्, अम्बु, वदन ।
२३	७	शिर, जल, सुख ।
२४	७	शिरस्, जल, सुख ।
२५	३६, ४४	शुक्र, रुधिर, मांस, फल, प्रश्न, कन्दुक, शिरस्, अम्बु, सुख, निन्दा, आनन, स्तब्धनिर्जल, जीव, जन्तूविपत् ।
२६	१	सुख, शीर्ष. जल ।
		कः
३	२१	ब्रह्मन् ।
२५	४४	पक्षिभेद, कोप, कठोर ।
		क्ण
४	२	कण ।
		क्णा
४	२	धरा ।
		क्णि
४	२	धी ।
		क्णु
४	२	पुत्र ।
		क्णू
४	२	हुताशन ।
		क्णौ
४	२	कलापिन्, स्मृति ।
		क्णं
४	२	वृक्ण, साधुसमीरित ।

कोषांक	श्लोकांक	
		क्त
४	३	सिक्त, वरुण।
		क्ता
४	३	दुर्गा, मातृका, गिरा।
		क्ति
४	३	सूर्य।
		क्ती
४	३	स्मृत, वह्नि।
		क्तु
४	३	सूनु, सोम।
		क्तौ
४	४	लक्ष्मी।
		क्तं
४	४	वर, ज्योतिस्।
		क्थ
४	४	सङ्ख, हरिण, गज।
		क्था
४	४	मही, सरमा, दुर्गा।
		क्थि
४	४	कृष्ण, वरुण, वर।
		क्थी
४	५	शिव।
		क्थु
४	५	सुत, तात।
		क्थू
४	५	शङ्ख, गरुड, नर।
		क्थे
४	५	सुत, पा० ५ सुत, वरुण, मार, रव।
		क्थौ
४	५	सरमासुत।
		क्थं
४	६	रिक्थ, क्वथन, दुःख, दैन्य,

कोषांक	श्लोकांक	
४	६	पा० ६ कथन।
		क्न
४	६	कर्ण, उत्सव।
		क्ना
४	६	रमा, उमा, मही, भित्ति।
		क्नि
४	६	सूकर, उरुक्रम।
		क्नु
४	७	शिव, अर्क, अम्बुधि, शूद्र, अमर।
		क्नू
४	७	पति, आत्महन्।
		क्नं
४	७	श्रोत्र, करण, भीम।
		क्म
४	७	काम, कमलाहित।
		क्मा
४	८	रति, कामपत्नी।
		क्मि
४	८	कामिन्।
		क्मी
४	८	रतीशवत्।
		क्मु
४	८	बभ्रु।
		क्मू
४	८	स्वभू, शङ्ख, शूकर।
		क्मौ
४	८	कजालया।
		क्मं
४	९	कर्म।
		क्य
४	९	पलाश, अग्नि, अर्क।

कोषांक	श्लोकांक	
		क्या
४	६	रेणु ।
		क्यं
४	२०	कार्य ।
		क्र
४	५६	कर, शरभ, व्याघ्र, नाथ ।
		क्रा
४	५६	सुरभि, मही ।
		क्री
१४	२०	क्रेतृ, क्रय ।
२५	१२२	अग्नि, रोधन, वध ।
		क्रं
४	५६	ख, इन्द्रिय ।
		क्रू
२५	१२२	क्रूर, अण्डज, व्याध ।
		क्रें
५	३०	शिखिस्वन ।
		क्ल
४	४५	कल ।
		क्ला
४	४५	कला ।
		क्लं
४	४५	कलन, उत्तम ।
		क्व
४	२६	कवि, काव्य, तात ।
		क्वा
४	२६	भू ।
		क्वं
४	२६	काव्य, कमल ।
		क्ष
१	११५	क्षेत्र, क्षय, गृह ।
२	८४	संरोध, विरोध, क्षेम, दुःस्वप्न ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	६८	क्षान्त ।
५	१२०,१२१	दुःस्वप्न, क्षेत्र, राक्षस्, क्षेम विरह, रोध, विशेष, मञ्जु
	१२२,१३०	अनुसम्बोधन, धीर, जित ।
६	७५	संरोध, विशेष, क्षेम, दुःस्वप्न ।
८	४६	राक्षस, क्षेत्र ।
६	३६	क्षेत्र, स्थल, क्षेत्रपाल ।
१०	४३	क्षेत्र, रक्षस्, क्षम ।
११	४६	क्षेत्र, राक्षस ।
१२	३७	क्षेत्र, वक्षस्, पा० ३ रक्षस्,
१३	२०	क्षेत्र, रक्षस् ।
१४	२८	राक्षस्, क्षेत्रमात्र ।
१५	४५	क्षेत्र, रक्षस्, क्षम, पा० २ सम, पा० १ क्ष्मा, भू, ज्या ।
१६	२५	क्षेत्र, वपुस् ।
१८	५०	श्रीनृसिंह, स्फटिक, मोक्ष-सिद्धिद, रिपुगर्वहर, सर्व-लोकक्षोभकर, पर ।
१६	३८	संवर्त्त, राक्षस, नरसिंह, विद्युत्, क्षेत्र, नाश, क्षेत्र-पाल ।
२०	५३	संवर्त्तक, नृसिंह, हृदयान्सु-खसंस्थित, अनन्त, परमा-त्मन्, वज्रकाय ।
२१	४६	क्षेपविशेष, दण्डधर, भार्गव, भद्रा, दुःस्वप्नोपम, विग्रह, निर्भय, तट, कालकूट, पा० ८ निर्भक ।
२२	१५	क्षेत्र, अनिल, तापस ।
२३	३६	क्षेत्र, क्षमा, क्षय, पा० ७ क्षेम ।
२४	३१	क्षेत्र, वक्षस् ।
२५	१४६,१५०	राक्षस, क्षम, क्षेत्र, क्षेत्र-

कोषांक	श्लोकांक	
	१५१	पाल, नृप, नर, संरोध, विषु, भक्ष्य, क्षेम, दुःखप्रिय, धन, मसृण, परोक्ष ।
		क्षा
२	८४	क्षमा, निद्रा ।
३	९८	मही, सीता ।
५	१२१,१३०	क्षमा, निन्दा, भूमि ।
६	७६	क्षमा, निद्रा ।
२३	३६	क्षमा, पा० ८ क्षम ।
		क्षि
३	९८	ज्योतिस् ।
९	३६	क्षेत्र, क्षण, नृसिंह ।
११	४६	क्षय ।
१२	३७	क्षेत्र, क्षत्ररक्ष, नृसिंह ।
१९	३८	निवास, गति, क्षय ।
२५	१५२	क्षय, क्षिप्र ।
		क्षी
३	९८	हुताशन ।
२३	३६	पा० ८ क्षमा, क्षम ।
		क्षु
३	९८	क्षुद्र, वासव, अर्क ।
		क्षू
३	९८	पापिष्ठ, प्रणाशन ।
		क्षे
३	९९	कर्षुक ।
		क्षै
३	९९	मूर्ख, जार ।
		क्षो
३	९९	क्षुरक, व्रण ।
		क्षौ
३	९९	खञ्ज, धरणी, धर्तृ ।
		क्षं
१	११५	क्षेत्र, क्षय, गृह ।
२	८४	क्षेत्र, रक्षस् ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	९९	क्षेत्र, पयस्, मधु ।
५	१२२	क्षेत्र, निर्भर्त्सन ।
६	७६	क्षेत्र, रक्षस् ।
२५	१५१	क्षिप्र, दक्ष ।
		क्षः
३	१००	क्षान्त ।
		क्ष्मा
७	११	मोर्वी ।
२५	१५०	क्ष्मा, अनिन्दा, प्रत्यवाय, पुस्तक, नवोढा, भग, शुचि ।
		क्ष्या
४	२५	पृथ्वी, जगदीश्वरी ।
		क्ष्यं
४	२५	क्षीर, क्षेत्र, उत्क्षार ।
		क्ष्र
४	१०४	क्षर, क्षरण, क्षार, अक्षोट, अक्षराक्षर ।
		क्ष्रा
४	१०४	लक्ष्मी ।
		क्ष्रं
४	१०४	क्षयि, क्षय, पा० १ क्षार, क्षोदन, क्षरण, क्षारण, पा० २ खर ।
		क्ष्ल
४	४९	श्लोक, क्षुद्रवदन, पा० ५ शोक ।
		क्ष्ला
४	४९	क्षोणी, अक्षौहिणी ।
		क्ष्लं
४	४९	क्षुद्र, वस्तु, मरण, भवन, शरण, वन ।
		क्ष्व
४	४३	क्षोद ।

कोषांक श्लोकांक

क्ष्वा

४ ४३ सरिद्वरा ।

क्ष्वं

४ ४३ क्षीव, क्षरण, क्षीर, पालन, पितृतारण ।

ख

१ २४,२५ अर्क, वितर्क, व्योमन्, वेदन, प्रश्न, निन्दा, नृप, क्षेप, सुख, शून्य, इन्द्रिय, द्यौ, अवसान, अपवर्ग, परब्रह्मन् ।

२ २३ काम, जल ।

३ २१ सूर्य ।

५ ३२,३३, ३४,१२२ कृश, स्वर्ग, शून्य, दर, अग्नि, कृपण, निश्चय, शान्त, रथ, विहगनायक, कर्म, इन्द्रिय, सुख, क्षेत्र, विहायस्, दन्तधावन, संवेद, पुण्यादिफलद, क्षुरलि(?), प्रश्नवाचक ।

६ २० गरुड, खड्ग, स्वर्ग, शान्तरस, कुणि ।

७ ६ सूर्य ।

८ १२ भास्कर ।

१० १२ रवि ।

११ ६,१० खग, स्वर्ग, सूर्य ।

१२ ८,६ स्वर्ग, सामान्य, शून्य ।

१३ ५ रवि ।

१५ १४ रवि ।

१८ १७ जाह्नवीबीज, स्फटिक, पापनाशन, भोगप्रद, मोक्षप्रद, पुण्य, भुक्तिप्रदायक, मुक्तिप्रदायक ।

२० २० क्षुधर्द्धि, गदि, चण्डीश, खेट, दक्षिणकूर्पर, कैटभारि, मातङ्ग, संहार, खार्णक ।

२१ १८ खगराज, नभोगति, निश्चय, दीन, पा० १२ नागराज, पा० १३ क्षम, कृत, दन्तिपावन, शान्तरस, उदराग्नि ।

२२ ७ शून्य, खड्ग, नृपति ।

खा

१२ २३ नखर, तीक्ष्ण ।

३ २१ मा, क्षमा, कमला, गिर ।

खि

३ २१ काम ।

खी

३ २१ गुद, धातृ ।

खु

३ २२ वह्नि ।

खू

३ २१ बृहस्पति ।

खे

३ २२ प्राण ।

खै

३ २२ भव, भातृ, पुत्र ।

खो

३ २२ खञ्ज ।

खौ

३ २२ सुरेश, अग्नि, ईश, अर्क ।

खं

२ २३ इन्द्रिय, सुख, स्वर्ग, शून्य, बिन्दु, विहायस् ।

३ २२ व्योमन्, इन्द्रिय ।

५ ३३ विहायस्, दन्तधावन, संवेद, पुण्यादिफलद ।

कोषांक	श्लोकांक	
६	२०,२१	इन्द्रिय, सुख, व्योमन्, नक्षत्र, क्षेत्र, पट्टण, कृपा, फलक, शून्य, बिन्दु, संवेश, पा० ४ रन्ध्र ।
७	५,६	स्वर, संविद्, व्योमन्, इन्द्रिय, शून्य, बिन्दु, सुख ।
८	११,१२	इन्द्रिय स्वर्ग, शून्य, भूप, आकाश, सुख, संविद्, शून्य, खण्ड ।
९	४	इन्द्रिय, आकाश, स्वर्लोक, पा० २ शून्य ।
१०	११,१२	इन्द्रिय, आकाश, नृप, चन्द्रबिम्ब, वर्ण, खण्ड, संविद्, स्वर्ग, सुख ।
११	८,९,१०	इन्द्रिय, आकाश, स्वर्ग, शून्य, खड्ग, शून्यार्द्ध, बिन्दु, सुख, स्रोतस् ।
१२	८	इन्द्रिय, आकाश, पा० ६ सर्प, श्वभ्र ।
१३	५	इन्द्रिय, स्वर्ग, व्योमन्, नृप, शून्य, सुख, संविद् ।
१४	२,३	आकाश, द्यु, सुख, बुद्धि, संवेदन, पुर, शून्य, इन्द्रिय, क्षेत्र, कृशा, हलफल ।
१५	१३,१४	सैन्य, पा० १ नृप, गगन, बिन्दु, इन्द्रिय, चन्द्रमण्डल, वर्ण, खण्ड, सुख स्वर्ग, शून्य, संविद् ।
१६	३	इन्द्रिय, आकाश सुख, शून्य ।
१७	२	इन्द्रिय, व्योमन्, पुर, शर्मन्, त्रिदशालय, क्षेत्र, संवेदन, बिन्दु, शून्य ।
१९	२,३	इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्य, बिन्दु, विहायस्, संवेदन,

कोषांक	श्लोकांक	
		देवलोक, कर्मन्, शून्य, आकाश, इन्द्रिय ।
२२	७	शून्य, आकाश, इन्द्रिय ।
२३	८	इन्द्रिय, आकाश, स्वर्ग, शून्य, खड्ग ।
२४	८	इन्द्रिय, आकाश, गुह्य, सुख ।
२५	४५,४६	इन्द्रिय, सुख, व्योमन्, नक्षत्र, क्षेत्रपालन, कृपा, फलक, शून्य, बिन्दु, संवेश, रङ्क, सूर्य, वर्ण, नृत्य, सत्य, वह्नि, सम्पत्, संविद, चन्द्रमण्डल, भूमि, बाला-स्तन ।
२६	३,४	इन्द्रिय, सुख, स्वर्ग, शून्य, बिन्दु, विहायस्, पुर, संवे-दन, क्षेत्र, कुहाहलफल ।
		ख:
३	२३	सूर्य ।
		ख्य
४	९	खर, अग्नि ।
		ख्या
२	६४	ख्याति, प्रकथन ।
४	९	खरी ।
५	१२३	ख्याति ।
६	५७	ख्याति, प्रकथन ।
२५	११३	प्रकथन ।
		ख्यं
४	२०	आकाश, सख्य ।
		खू
४	५६	रवि, रासभ, खल ।
		खा
४	५७	पूतना, सूर्पनखा, पा० १ सूर्पणखिन्, ताडका, कैकयी, क्षिति ।

कोषांक	श्लोकांक	
		खूं
४	५७	खड्ग, दुष्टहृदय, मैथुन, मरण ।
		ख्ल
४	५०	खल ।
		ख्ला
४	५०	सुरा, क्षुद्रा, योषित्, कमललोचना ।
		ग
१	२५	गातृ, गन्धर्व, शब्द, सङ्गीत ।
२	२७	गन्धर्व, गणेश ।
३	२३	प्रीत, भव, श्रीपति, उत्तम ।
५	३४,३५	गान्धार, गन्धर्व, गणनायक, उपमा, महीपुत्र, छन्दस्, गुरु ।
८	१२	गन्धर्व, गणेश, गातृ, पा० १ मातृ ।
९	५	गणेश, पा०३ गणपति, गन्धर्व ।
१०	१२,१३	गणनायक, गातृ ।
११	११	गणपति, गन्धर्व, गातृ, पा० १ गाथा ।
१२	६	गणेश, गन्धर्व ।
१३	६	गातृ, गन्धर्व ।
१४	३	गन्धर्व, गणेश, अर्क ।
१५	१४	गन्धर्व, गणनायक, गीत ।
१६	४	गणपति, गन्धर्व ।
१८	१८	गणेश, पीताभ, विघ्ननाशन, पूर्वस्थितिज्ञान, अपरस्थितिज्ञान, भूलोकविजय, शुभ ।
२०	२१	स्मृति पञ्चान्तक, शार्ङ्गिन्, गणेश, मणिबन्धग, गोमुख, गजकुम्भ, सिंहसंज्ञक ।
२१	१९	क्षितिनयन, परमार्थ, सुरसिद्धि, गति, आक्षेप, वस्तु, गान्धार, वाचा ।
२२	८	गातृ, गायन, इभास्य ।
२३	६	गणेश्वर, पा० ६ गण, स्वर, गन्धर्व, गीत, गाथा ।
२४	९	गणपति, गन्धर्व, यातृ ।
२५	४७	गातृ, गणेश, अग्नि, गन्धर्व, गीत ।
		गा
१	२७	अवनी, गाथक, पा० ३ गायक ।
२	२७	गाथा ।
३	२३	क्षमा, उमा, पा० १ मा, रमा ।
५	३५	सुख शै···ग, गति ।
६	२१	गाथा ।
९	५	गाथा, पा० ४ धेनु, सरस्वती ।
११	११	पा० १ मातृ ।
१२	१०	गाथा ।
२५	४७	गमन ।
		गि
३	२३	धी ।
		गी
१	२७	गिरि, वाणी ।
३	२३,२४	श्रीमत्, बुद्धिमत्, वाणी, सुरा, पत्नी, सुधा ।
१०	१४	वाणी, दिशा, ब्राह्मी, दुर्गा,
१५	१६	वाग्, सरस्वती, दुर्गा, ककुभ् ।
२५	४८	वाणी, सरस्वती, दुर्गा, ककुभ् ।
		गु
३	२४	प्राण, आसव, कान्ति,

कोषांक	श्लोकांक	
		मदन, भीरु ।
		गू
३	२४,२५	सेतु, सखिन्, रवि, गुरु, पुरीष, स्वाद ।
		गे
३	२५	पापिन्, जनवञ्चक ।
		गै
१	२७	शब्द, गीत ।
३	२५	पलाश, अशोक, अग्नि, सूर्य ।
		गो
३	२५	द्विपद, करिन् ।
५	३८	इष्टि, दीधिति, रागि, व्योमन्, स्वर्ग, खग, दण्ड ।
६	२१	गन्धर्व, गणेश ।
१६	४	मात्य, (मातृ) ।
२४	४	पश्वादिषु, यातृ ।
		गौ
१	२६	गणेश, पशु, स्वर्ग, व्रज, आशा, भूदक, अक्षिन्, पा० २ क्षण, वाणी, किरण, बाण, अस्त्र ,
२	२४,२५,२६	कृपा, नक्षत्र, संवेश, तन्द्री, शान्तरस, कुणि, सम्भेद, गरुड, क्षेत्र, खड्ग, पुरी, स्वर्ग, दृग्, बाण, वज्र, अम्बु, दिग्, वाग्, भू, धेनु, लोम, चन्द्र, अर्क, वृष, नाग, पशु, करण, वस्त्र, कृत्वाजुंनीय (?), अर्वार्थ, मृग, स्त्री, श्रवण, लक्ष्य, दृष्टि ।
३	२६,२७	वज्र, प्रभा, भूमि, वाणी, तोय, त्रिविष्टप, धेनु,

कोषांक	श्लोकांक	
		वस्त, वृष, दिग्, नेत्र, लज्जा, गुरु, रमा, इन्द्रिय, श्री, उमा ।
५	३६,३७	निशानाथ, ऋतुभेद, प्रभाकर, वृषभ, मुनिभेद, धरणी, विभु, आशा, सरस्वती, सुरभि ।
६	२२	नाक, वृषभ, चन्द्र, वाग्, भू, दिग्, धेनु, रश्मि, दृक्, बाण, स्वर्ग, वज्र, अम्बु, लोम ।
९	६	उदक, दृक्, स्वर्ग, दिक्, पशु, रश्मि, वज्र, भूमि, इषु, गिर ।
८	१३	वाणी, बाण, भू, रश्मि, वज्र, स्वर्ग, अक्षिन्, वारि, दिक् धेनु, श्रुत, ईश्वरी, गणेश ।
९	५	धेनु, सरस्वती ।
१०	१३,१४	जल, वज्र, बाण, वृष, धेनु, गिरि, वाक्, नेत्र, दिग्, भू, मुख, रश्मि, वह्नि, सत्य, अक्षिन्, स्वर्ग, मातृ ।
११	११,१२	धेनु, सरस्वती, वाणी, बाण, दिक्, भू, रश्मि, अक्षिन्, स्वर्ग, चारिन् ।
१२	१०	धेनु, सरस्वती ।
१३	६,७	विनायक, स्वर्ग, दिक्,पशु, रश्मि, वज्र, भूमि. इषु, गिर्, जल, अक्षिन् ।
१४	४	वृषभ, स्वर्ग, खण्ड, वज्र, हिमांशु, गो, भूमि, दिग्, नेत्र, वाग्, बाण, सलिल ।
		गौ

कोषांक	श्लोकांक	
१३	७	किङ्किणी, वध, ध्वनि ।
१४	५	घात, किङ्किणी ।
१५	१६	किङ्किणी, घनस्वन ।
१६	५	किङ्कणी ।
२४	१०	हनन ।
२५	५१	किङ्किणी, घनस्वन ।
		घि
१	२६	घृत, दीप्ति ।
३	२८	घृतधर्मक ।
		घी
३	२८	कुमार, अमराचार्य ।
		घु
३	२८	मूढ, अकरुण, फणिन् ।
१२	११	घोणा ।
१७	५	दानव ।
२४	१०	कलि ।
		घू
३	२६	भूमि, सुराधीश, गुद, सङ्कर्षण, अमल ।
६	६, ७	घन, घोणा ।
१२	११	ध्वनि ।
२३	१०	ध्वनि, पा० ७ दिति ।
		घे
३	२६	शङ्ख, कुर्कुर, कील ।
		घै
३	२६	सूर्य, सरमासुत ।
		घो
३	३०	घोष ।
		घौ
३	३०	सुरावास, पाप्मन् ।
		घं
१	२६	पुण्य, प्रवाह, पाषण्ड, घोर, घुर, रव पा० ५ घोरी, पा० ६ घूरि, पा० ७ रवि ।
२	२८	वाद्य, अमृत ।
३	३०	पाप ।
५	४०	नाद, अमृत ।
६	२३	वाद्य, अमृत ।
२५	५१	घट, अमृत, नूपुर, नटांह्रि ।
		घः
३	३०	सूनु, वह्नि, पूषन्, नृप, गज ।
		घ्न
४	४४	घन, नाशक ।
		घ्ना
४	४४	घौ ।
		घ्नं
४	४४	जल, निबिड, पतत् ।
		घ्य
४	१०	स्वन, घूक, पा० ८ मूक ।
		घ्या
४	१०	पत्नी, धरणी, स्मृता ।
		घ्यं
४	२०	तोय ।
		घ्र
४	५६	घोष, मदन, चूत, भग, अज्ञ, यामिनीपति ।
		घ्रा
४	५६	घृणा, सरमापुत्री ।
१४	२०	घ्राण, घ्रातृ ।
		घ्रं
४	५६	गृह, वदन, निज ।
		घ्ल
४	५१	अश्व ।
		घ्ला
४	५१	जघना ।

कोषांक	श्लोकांक	
		घ्लं
४	५१	वृषण, सारथिपातन् ।
		घ्व
४	२७	घोष ।
		घ्वा
४	२७	अरणि ।
		घ्वं
४	२७	घुष्ट, घर्षण, घास ।
		ङ
१	३०	शून्य, दानवाञ्छा, निन्दा, आधि, शावर, सौदामिनी, नव, सर्व, सिद्धि, पा० ८ सिद्ध ।
२	२८	भैरव, विषय, जन ।
३	३०	प्राण, तुरग ।
५	४०, ४१, ४२	निनद, सुरभि, शर, पौर, भैरव, देशयोजन, अनुबन्ध, व्यसन, शायिन्, केतु, अञ्जन, भयङ्कर, शब्दज्ञ ।
६	२४	अञ्जन, भैरव, विषय, जन ।
८	१४	विषय, भैरव ।
९	७	भैरव, विषय ।
१०	१५	विषय, भीम ।
११	१४	भैरव, विषय, पा० ५ चौर ।
१२	११	भैरव, विषयस्पृहा ।
१३	७	भैरव, विषयेच्छा ।
१४	५	भैरव, चन्द्र ।
१५	१७	विषय, भीम ।
१६	६	भैरव, विषय ।
१८	२०	कालबीज, कृष्णजीवजय, पर, महाभीमजगत्क्षोभ,

कोषांक	श्लोकांक	
		मरणापत्तिभञ्जन ।
१९	५	विषय, विषयस्पृहा ।
२०	२३	शङ्खाङ्क, पा० १ संज्ञक, रुद्रकान्ति, दक्षाङ्गुल्यग्रसंस्थित, क्लीबवक्त्र, भद्रेश, अनुनासिक ।
२२	८	पूजक, द्विज, काक्ष ।
२३	११	भैरव, व्यसन, पा० १ विसन, स्वर, तस्कर ।
२४	११	भैरव, विषयस्पृहा ।
२५	५२	भैरव, विषय, जन ।
		ङा
३	३०	धरा, रमा ।
		ङि
३	३१	बीभत्सु, नग, सूक्ष्म ।
		ङी
३	३१	भूप, कृकलासप।
		ङु
३	३१	सूकर ।
		ङू
३	३१	व्याघ्र ।
		ङे
३	३१	सूत ।
		ङै
३	३१	परासर ।
		ङो
३	३२	सिंह ।
		ङौ
३	३२	सूर्य, अरुण, वह्नि, कलानिधि ।
		ङं
२	२८	अञ्जन ।
३	३२	वितान, सुख, ब्रह्मन्, सर्प,

कोषांक	श्लोकांक	
		तोय, विष, पय ।
६	२४	अञ्जन ।
२५	५२	अञ्जन, विषय, भैरव, जन ।
		ङः
३	३३	प्राण, तुरग ।
		ङ्
४	६०	नर, अशरण, अशूर ।
		ङा
४	६०	मारिणि ।
		ङं
४	६०	गृह, रुदंन, पा० ४ रोदन, नाशा, प्रभा, हानि ।
		च
१	३१,३२	चेतन, चन्द्र, चौर, अहि, चारुदर्शन, अन्वाचय, समाहार, इतरेतर, समुच्चय, समासार्थं ।
२	२९,३०	तुलुष्क, ईश्वर, चाप, चन्द्रमस्, अन्वाचय, समाहार, इतरेतर, समुच्चय ।
३	३३	चञ्चु, चारण, अर्चिस्, मुख, रवि ।
५	४३,४४,४५	निशानाथ, तुरुष्क, तस्कर, खर, व्यय, समुच्चय, अपचय, पक्षान्तर, समासक, समाहार, मिथोयोग, रुधिर ।
६	२४	तुरुष्क, स्वर, चौर, चकोर, चन्द्रमस् ।
८	१४,१५,१६	तरु, चन्द्र, चौर, अन्योन्य, विकल्प, समास, पादपूरण, पक्षान्तर, समूह, हेतु, अवधृति, अन्वाचय, तुल्ययोगिता ।

कोषांक	श्लोकांक	
९	८	चन्द्रमस्, तस्कर ।
१०	१५,१६	सूरि, चन्द्र, चोर, समाहार पक्षान्तर, समान, कारण, पादपूर्ति, विनियोग, समस्त ।
११	१४	चन्द्रमस्, पक्षान्तर, समुच्चय ।
१२	१२	चन्द्रमस् भास्कर, तस्कर ।
१३	७	चन्द्र, चौर ।
१४	५	तस्कर, चन्द्र ।
१५	१७,१८	चन्द्र, तस्कर, तरु, समाहार, पादपूर्त्ति, समुच्चय, परस्पर, साकल्य, कारण, अवधृति, पक्षान्तर, समान ।
१६	६	चन्द्र, तस्कर ।
१७	५,६,७	अथ, वाक्यविस्तार, प्रसङ्ग, पादपूरण, सव्या(स्य)न, बल, शेष, चन्द्रमा, तरणि, चौर, समर, परि-(परु) ।
१८	२१	भद्रकालीय, रक्ताभ, शोभन, स्वेच्छाकर्षणसिद्धि, स्वस्थावेश, अयत्नत ।
१९	५,	चण्डेश, कच्छप, चन्द्र, चौर, अन्वाचय, समाहार, अन्योन्य, समुच्चय, पक्षान्तर, पादपूरण, अवधारण ।
२०	२४	हलिन्, कूर्मेश्वर, लक्ष्मी, वामबाह्वादिग, चित्रधारी, चञ्चल ।
२१	२१	नित्यविशेष, विरस, दिव्य, केपय (?), पराभाग, पा०२ पराभोग, विप्रकनिष्ठाङ्गुलि, भरहररेखा ।
२२	८	भृत्य, इन्दु, तस्कर ।
२३	१२	चन्द्रमस्, तस्कर, शोभा,

कोषांक	श्लोकांक	
		पक्षान्तरसूचन ।
२४	११	चन्द्रमस्, तारका ।
२५	५२,५३, ५४,५५	चकोर, चूल्ली, कोप, चतुष्पथ, दन्तिदन्तवलय, साकल्य, अन्तर, समान, कारण, वृत्ति, वृक्ष, स्वर, चौर, चकोर, चन्द्रमस्, अन्योन्य, विकल्प, समास, पादपूरण, पक्षान्तर, समूह, हेतु, अवधृति, अश्वालय, तुल्ययोगिता ।
२६	६	अन्वाचय, समाहार, अन्योन्य, समुच्चय, पक्षान्तर, पादपूरण, अवधारण ।
		चञ्चु
५	४५,४६	पक्षिमुख, प्रत्यय ।
		चा
१	३२	द्यौ ।
२	२९	शोभा, शोणित ।
३	३३	कद्रू, पा० ४ कड्रू, अदिति, कन्या ।
५	४३	शोभा ।
६	२५	शोभा, शोणित ।
११	१४	तरु ।
१७	६	तरणि ।
२५	५६	शोभा, शोणित ।
		चि
१	३१	बुद्धि, ज्ञान, चार, पावक, पा० १ ज्ञानाचार ।
३	३३	पूषन्, माष ।
		चिञ्चा
५	४५	तिन्तिणीफल ।
		ची
३	३४	मषि, दन्तिपत्नी ।

कोषांक	श्लोकांक	
		चु
३	३४	काल, पवि, शर, भीरु ।
८	१५	चकोर ।
१०	१७	कोक, संस्थान ।
११	१५	चकोर, पा० ६ चौर ।
१५	१८	चकोर, चतुष्पथ ।
		चू
३	३४	मार्गण, पक्षिन्, भूमिजराट्, रवि, पा० १, मल ।
		चे
३	३५	कृष्ण, अर्क, तुरासाह ।
५	४६	नदीतोय ।
		चै
३	३५	सोम, विनतासुत ।
		चो
३	३५	पाषण्डिन् ।
		चौ
३	३५	धेनु, अनडुह्, अग्नि, उद्धत ।
		चं
२	२९	विमल ।
३	३६	चरित्र, सुख, कश्मल, भ्रमण, पयस् ।
५	४३	रुधिर ।
६	२५	विमल ।
२५	५६	विमल ।
		चः
३	३६	चञ्चु, चारण, अर्चिस्, मुख, रवि ।
		च्य
४	१०	चय ।
		च्या
४	१०	चातुरी ।

कोषांक	श्लोकांक	
		च्यं
४	२०	स्मृत, याच्य, शोच्य, पैशाच्य।
		चृ
४	६१	चर, चरम, श्लोक, चूत, चारण।
		चृा
४	६१	चञ्चू, चमू, चाटु।
		च्वं
४	६१	मैथुनक, अप्रज, पा० ५ अवज्र।
		छ
१	३३	सूर्य, सोमनैर्मल्य, छेद, स्वच्छ, ज्ञातृ, छन्दानुवर्त्तिन्।
२	३०	आच्छादन, अब्ज।
३	३६	सोम।
५	४६,४७,४८	छाग, शक्तिघन, छग, श्रुत, प्रलाप, मन्त्रविभाग, अक्षरविभाग, आदान, चरित्र, सर्ज, निर्मल।
६	२५	भानु, आच्छादन, अब्ज, पा० २ छलित्वा, निर्मल, नित्य, मलिन, भेदक।
८	१७	सूर्य, छेदक, संवरण।
९	९	शिरस्, पा० ५ म्लेच्छ।
११	१५,१६	तडित्, पा० ७ तरणि, छेदन, सूक्ष्म, संवरण।
१२	१२,१३	तरल, पा० १ तरणी, छेदक।
१३	८	सूर्य, छेदक।
१४	६	छेदक, अर्क।
१५	१९	सूर्य, छेदक, चार।
१६	७	छेदन।

कोषांक	श्लोकांक	
१७	७	निर्मल, सरणि।
१८	२२	भीमकालीय, रक्ताभ, वैरिनाशन, सङ्क्रम, त्रिलोकघ्न, समरविजयप्रद।
२०	२५	एकनेत्र, मुशलिन्, मुशली, वामकूर्परगोद्युति, त्रिबिन्दुक, चारिन्, चारी, श्लेष्मक।
२१	२२	प्रलापनित्य, शक्तिपर, अम्बुद, फणिपति, त्र्यक्षरमन्त्रविभाग, पारद, दान।
२२	९	छन्दस्, चन्द्र, तरल।
२३	१३	तडित्, छेदन, संवरण, पा० ३ तट।
२५	५६	सूर्य, छेदक, चौर, संवरण।
		छा
१	३३	निम्नगा, गिरि।
३	३६	रुट्।
१४	६	छिद्।
१९	७	छादन, निर्मल।
२३	१२	तट पा० ३।
२४	१२	छेदन।
		छि
१	३४	छल।
३	३६	कुलालक।
		छी
३	३७	छवि।
		छु
३	३७	शुक।
१६	७	तरल।
		छू
३	३७	भू।
		छे
३	३७	पाशिन्।

कोषांक	श्लोकांक	
		छै
३	३७	सुरालय ।
		छो
३	३७	पूर्ण, अलङ्कृत, वायु ।
		छौ
१	३४	लोहधारा, परश्वध, वानर, हरिण, छाग, पा० २ छाय ।
३	३७	समीर, तरु, नग ।
		छं
२	३०,३१	संवृति, निर्मल, नित्य, मलिन, भेदक ।
३	३८	अर्चिस्, भूतल, स्व, कूट, कूल, मुख, कुल ।
६	२५,२६	संवृति, निर्मल, नित्य, मलिन, भेदक ।
८	१७	छन्दस्, तडित्, निर्मल ।
९	८,९	निर्मल, तरल, छेदन ।
११	१५,१६	निर्मल, छन्दस् ।
१२	१२	निर्मल ।
१३	८	निर्मल ।
१४	६	लाञ्छन, अच्छ ।
१५	१९	छन्दस्, निर्मल ।
१६	७	निर्मल ।
२३	१३	निर्मल ।
२४	१२	निर्मल, तरल ।
२५	५७	छन्दस्, तडित्, छन्दभृति, निर्मल, मान, मलिन, भेदक ।
		छः
३	३८	सोम ।
		छ्च
४	१०	छाग ।
		छ्चा
४	१०	भारती ।
		छ्चं
४	२१	छेव ।
		छ्र
४	६२	द्वेषिन्, छुरक, खड्ग, त्सरु, अङ्गणमार्गग ।
		छ्रा
४	६२	विष्टा, शुनकी, वेश्या ।
		छ्रं
४	६२	छल, गमन, गृह ।
		छ्ल
४	५२	छल, छलकृत् ।
		छ्ला
४	५२	ऊर्द्धा, पुरी ।
		छ्लं
४	५२	शिवालय ।
		छ्व
४	२७	छाग ।
		छ्वा
४	२७	छवि ।
		छ्वं
४	२८	स्वच्छ, उच्छ, गोमूत्र, पा० ४ स्वच्छमुख ।
		ज
१	३५,३७	जेतृ, अपत्य ।
२	३१	जय, विजय, मेरु, शब्द, जेतृ, मत्सर ।
३	३८	जार ।
५	४८,४९,५०	विजल, मुक्ताविस्तार, मत्सरीजन, जनन, जैन, अम्बुद, कटीविभूषण, पत्नी ।
६	२६,२८	जव, विषय, मेरु, शब्द, जेतृ, मत्सर, वाणी, पा० ३ निशाकर, वेला ।

कोषांक	श्लोकांक	
८	१८	जेतृ, जनन, विगत ।
९	९,१०	वेगित, जनन, जेतृ, पा० ६ जयन ।
१०	१७	चार, छेदक, रवि, केशव, जीव ।
११	१७	वेगित, पा० ९ विगत, जनन, तेजस्, जेतृ ।
१२	१३,१४	गायन, पा० २ वेगित, जयन, जेतृ ।
१३	८	जेतृ, विगत ।
१४	६	जयिन्, पा० २ जीवन् ।
१९	७	जिष्णु, पा० ३ विष्णु, विगत, जीव ।
१६	८	वेगित, जेतृ ।
१८	२३	जातवेदस्, सूर्यप्रभ, सौदामिनीप्रभ, अभिचार, महाघोर, अपमृत्युभयापह ।
१९	७	मृत्युञ्जय, जनी, तातमात्र, जनार्दन ।
२०	२६	स्थिराजपन्नोजपज, शूलिन्, चतुरानन, मणिबन्धगत, वाम, पा० ३ अञ्जनकोत्तम, जनकोत्तम ।
२१	२३	योनि अधरितशब्द, पा० ३ अधिरितशब्द, नीरद, असम्बध्य, पा० ४ असन्धन्य, असन्धत्या, कार्य, अधरण, महोत्सव, विस्तार, समुद्रवेला ।
२२	९	जेतृ, रवि, पद्मज ।
२३	१४	वेग, तेजस्, जन, पा० ४ जनक, पा० ५ जवन ।
२४	१३	वेगित्, जवन, जेतृ ।
२५	५८	जव, विषम, मेरु, स्वर्ग, पातु, मत्सर, विष्णु,

कोषांक	श्लोकांक	
		विगत, जीव ।
२६	७	जनी, जातमात्र, मृत्युञ्जय, जनार्दन ।
		जा
१	३५	शय्या, जारज, जारक, पा० ३ नीरज, जीरक ।
२	३२	देववाहिनी, योनि, सागरवेला ।
३	३८	योनि ।
५	४९,५०	देहविद्, आहिनी, (देववाहिनी) वाहिनी, योनि, समुद्रवेला, अम्बुद, कटीविभूषण, पत्नी ।
६	२७	देववाहिनी, योनि, सागरवेला ।
१४	६	उद्भूति, जीवित, नृ ।
२५	६०	नियोग, खल, जार, योग, जनवल्लभ ।
		जि
१	३६	जाप, पा० ४ जप, शाप ।
३	३८	सदाशिव ।
६	१८	जेतृ ।
८	१८	जेतृ ।
९	१०	जेतृ पा० १० ।
११	१७	तेजस् पा० १० ।
१४	६	भुक्, पा० ३ जयन ।
१६	८	जनन ।
२३	१४	जेतृ, जयन ।
		जी
१	३७	जाप, पा० ४ जप, शाप ।
३	३९	जिष्णु, करुण, यूका ।
६	२८	कीर्ति, संवर ।
२५	६०	कीर्त्ति, सबल, तूर्ण, यव, जेतृ, वाक् ।

कोषांक	श्लोकांक	
		जु
१	३५	वेग, नभस्, स्वक, जाया, जननी।
२	३३	कीर्त्ति सङ्कर, व्योमन्, जव, पैशाच।
३	३९	विष्णु।
		जू
१	३६,३७	गति, प्रादुर्भाव, नव, पा० ५ जव।
२	३४	आकाश, बृहद्ध्वान, भारती, जीवन।
३	३९	कुलालज।
६	२८	जव, व्योमन्, पिशाच।
७	८	आकाश, सरस्वती, पिशाची, जवन।
८	१८	विहायस्, जवन, पा० ४ वाणी, पिशाची,
१०	१८	विगत। व्योमन्, जवन, पिशाची, कीटक।
१३	८	नभस्, पिशाची, जवन, पा० १ जनन।
१४	७	आकाश, सरस्वती, पिशाची, जयन, पा० ४ जविन।
१५	१९,२०	अम्बर, पिशाची, जवन, पा० ५ वदन, कीट।
१७	८	आकाश, सरस्वती, जवन।
१९	८	स्वरागमन, सामान्यगमन, आकाश, सरस्वती, पिशाची, जवन।
२५	५९	विहायस् जवन, पिशाची, विगतद्युति, वाणी, अम्बा, कीट, भग।
२६	७	आकाश, सरस्वती, पिशाची, जवन।

कोषांक	श्लोकांक	
		जृ
१	३६	जरा, दुर्गति।
		जॄ
१	३६	जरा, दुर्गति।
		जे
३	३९	गुनोज।
		जै
३	३९	पूषन्, वह्नि।
		जो
३	३९	कमलासन।
		जौ
३	४०	जार, अज, युवन्।
		जं
१	३५,३७	जीव, जन्मन्।
२	३३	कटीभूषण, पत्नि, तेजस्, अम्बु, जन्मन्।
३	४०	जात, रजत।
५	४९	वर।
६	२७	कटीभूषण, पत्नी, तेजस्, अम्बु, जन्मन्।
१०	१७	वृत्त, निर्मल।
		जः
३	४०	जार।
		ज्ञ
२	३५,३६	प्राज्ञ, चन्द्रतनय, विषय, आत्मन्, गर्व, व्यूह, लेप, मूर्धन्, खरध्वान, भय, पद्म, उत्तान, मूढरूप।
५	१२३	सौम्यविद्वस्।
६	३०	प्राज्ञ, चन्द्रसूनु, आत्मन्, वेधस्।
७	८	विचक्षण, पद्मासन, चान्द्रमासायन।

कोषांक	श्लोकांक	
१४	८	पण्डित, बुध, वेधस् ।
१५	२०	विचक्षण, चन्द्रपुत्र, मुनि, विरिञ्चि, पा० ६ विरञ्च ।
१७	८	ब्रह्मन्, बुध, विद्वस् ।
१९	१०	ब्रह्मन्, बुध, विद्वस् ।
२४	६३	प्राज्ञ, चन्द्रसूनु, आत्मन्, वेधस् ।
		ज्ञा
५	१२३	अवबोधन ।
		ज्य
४	४१	जय, यजमान ।
		ज्या
२	३२,३४	भूमि, मौर्वी, शम्या, वाहिनीपृष्ठभागक, मातृ ।
४	११	जया, विजया, रमा, पा० १ सिञ्जिनी ।
५	१२४	कार्मुकगुण ।
६	५७	मौर्वी, मातृ, भूमि ।
७	१०	मातृ ।
१७	१७,१८	मातृ, मौर्वी, धरणी ।
१९	२८	मातृ, वसुधा, मौर्वी ।
२५	११३	मौर्वी, मातृ, भूमि ।
२६	१५	मौर्वी, मातृ, भूमि ।
		ज्यं
४	२१	स्मृत, याज्य, जात ।
		ज्र
४	६३	वृद्ध, गगन, अट, अग्नि, ब्रह्मन्, उमेश, रमाधिप, पा० ६ रमापति, जटायुस्, जरायुस्, जमदग्नि, जनीपति, पा० ७ जुनीपति ।
		ज्रा
४	६४	जरा, जरठा, जारवत्सला, षट्पदी, घृणि, ।
		ज्रं
४	६४	यज्ञोत, अजस्र, रजस्वला-मुख, रजस् ।
		ज्व
४	२८	जव ।
		ज्वा
४	२८	चञ्चला ।
		ज्वं
४	२८	जुष्ट ।
		झ
१	३८	स्वपन, पा० ६ स्वपत, शून्य, ऊद्ध्र्वपेक्षण, विनष्ट, विवर, भङ्ग ।
२	३४,३५	भ्रमण, नष्ट, प्रताप, हंस, चोर, धातृ ।
३	४०	हस्त ।
५	५०	जव, व्योमन्, विचार ।
६	२८	धातृ; हंसक, प्रताप, भ्रमर, नष्ट, पा० ४ अनिष्ट, चोर, झञ्झानिल, मद, पा० ५ गद ।
८	१९	नक्त, गायन, नष्ट, घर्घर-ध्वनि, चारुवाक्, चार, व्यूहन, गूढरूपक ।
९	१०,११	रवि, विषय, पा० ८ भैरव, अपथ्य, झञ्झावायु, नष्ट ।
१०	१८	मञ्जुलसमीर, नष्ट ।
११	१८	चारुचार, नक्त, झञ्झा-वायु, झष ।
१२	१४,१५	रव, नष्ट, पा० ३ झञ्झा-वात, वायु, नेपथ्य ।
१३	९	नष्ट, चारुवायु ।

कोषांक	श्लोकांक	
१४	७	चारुवायु, नष्ट।
१५	२०	नष्ट, चारुमारुत।
१६	६	चारुवाद्य, नष्ट, झञ्झावायु।
१८	२४	अर्द्धनारीश, शाम, रक्तसमाकुल, सर्वसौख्यकर, श्रेष्ठ, भोगफलप्रद, मोक्षफलप्रद।
१६	६	झण्टीश, सुरगुरु, दैत्यराज, ध्वनि।
२०	२७	स्थिति, पाशिन्, अजेश, वामाङ्गुलितलस्थिति, स्वस्तिक, स्थाणुसंज्ञक।
२१	२४	पक्कौषध्यापान, पात्रविशेष, पा० ५ पानविशेष, पद्मासन, दर्प, भद्र, उपाय, प्रताप, भद्रोपायप्रताप।
२२	६	नष्ट, अनिल, सङ्ग।
२३	१५	भैरव, नष्ट, बन्धन, घर्घरस्वर, पा० ६ जर्ज्जरस्वर।
२४	१४	झञ्झावात, नष्ट।
२५	६१,६२	अङ्ग, दात्, हंसक, प्रताप, भ्रमर, नष्ट, चौर, रुचि, मारुत, व्यूह, विषय, गर्व, लेप, मूर्धन्, खरध्वनि, महेश्वर, वाञ्छा, भय, पद्म।
		झा
१	३८,३६	तडित्, स्रवद्द्रव्य, भग, भोग, सविलासा, सुन्दरी।
२	३५	मद, वारि।
३	४०	योनि।
५	५१	सरस्वती, तरुसम्भव।
		झि
१	४०	सर्वधातुध्वनि।

कोषांक	श्लोकांक	
३	४०	कला, कपि।
५	५१	तरुसम्भव।
		झी
१	४१	हानि, जरा।
३	४१	करिन्।
		झु
१	४०	अकस्माद्दर्शन, शोक, मूढास्त्रमोचन, पा० ८ गूढास्त्रमोचन।
३	४१	भृगु।
		झू
१	४०	अकस्माद्दर्शन, शोक, मूढास्त्रमोचन, पा० ८ गूढास्त्रमोचन।
३	४१	ध्रुव, सङ्घ, अमर, अरुण।
		झे
३	४१	चर्मकृद्, भव, सोम, रोम, राम।
		झै
३	४१	गुरु।
		झो
३	४२	कर्ण।
		झौ
३	४२	स्मृत, नाक।
		झं
१	३६	वन, पा० ७ घन, भुवन, एकान्त, सङ्गत, स्रवद्द्रव्य, भग, भोग।
३	४२	मैथुन।
		झः
३	४२	हस्त।
		झ्य
४	११	नद।

कोषांक	श्लोकांक	
		ञ्या
४	११	नदी।
		ञ्यं
४	२१	ऋणनाशन।
		ञ्र
४	६५	नद, पा० ८ नाद, जरठ, दार।
		ञ्रा
४	६५	जरा, हानि, ईश्वरी।
		ञ्रं
४	६५	जुष्ट, भ्रमर, घुष्ट, पुष्ट, सृष्ट, पा० ६ सुष्ठु, गृह, कज, कघ पा० ६।
		ञ्व
४	२८	समुद्र।
		ञ्वा
४	२८	वशिष्ठवधू।
		ञ्वं
४	२६	दुग्ध, दधि।
		ञ
१	४१,४२	ज्ञान, गायन, दान, अर्द्धेन्दुमण्डल, मन्त्र, पा० १ चावी, ज्ञाविद्, मुनि, इन्दुज।
३	४२	श्वन्, अग्नि।
५	५१,५२,५३	ससी···सम्भव, निधान, अनष्ट।
६	२६,३०	व्यूह, विषय, गर्व, लेप, मूर्धन्, खरध्वनि, उत्तान, मूढरूप, भय, पद्म।
६	११	गायन, घर्घरध्वनि।
१०	१६	मुनि, चतुर, चन्द्रपुत्र, ब्रह्मन्, गायन, घर्घरध्वान, गूढ, रूपक।

कोषांक	श्लोकांक	
११	१६	गूढरूप, व्यूहित, पा० ११ गूहित, गायन, घर्घर, ध्वनि।
१२	१५	गायन, झर्झरध्वनि।
१३	६	गायन, घर्घरध्वनि।
१४	८	गायन, घर्घरध्वनि।
१५	२१	गायन, गूढरूपक, घर्घरध्वनि।
१६	६	घर्घरस्वन।
१८	२५	परमात्मीय, अवाङ्मनसगोचर, सर्वज्ञानप्रद, ब्रह्मज्ञानप्रद, श्रीप्रद, जयप्रद।
१६	६	बलीवर्द, शुक, वाममति।
२०	२८	वामाङ्गुल्यग्रग, सिद्धि, अङ्कुशी, सर्वसंज्ञक, पा० ५ मातङ्ग, अनुगान, निरञ्जन।
२१	२५	तीव्रनिनादोत्तान पा० ६ तीव्र, निनाद, उत्तान, अल, पा० ७ डल, विपत्ति, दावाग्नि, गत, उपलेप, कलाप, सीमन्।
२२	६	प्राज्ञ, पट, गायन।
२३	१५	मूढरूप, विषय, आत्मन्, गायन, जर्जर, स्वर।
२४	१४	गायन, घर्घरध्वनि।
२५	६३	गायन, गूढरूपक, घर्घरध्वनि।
		ञा
१	४२	वापी।
३	४२	जरा, राशि।
		ञि
१	४२	पर्वत, निषेध, चञ्चल, पा० २ नाथ।
३	४३	सम्राट्, ज्ञानवृद्ध, अग्नि।

कोषांक	श्लोकांक	
		ञी
१	४२	ध्वनि ।
३	४३	पाषण्डिन्, सुराप्रिय ।
		ञु
१	४२	निर्माण, पा० २ निर्म्माप्य, निर्माय, निर्माथ ।
३	४३	सुनेत्रा ।
		ञू
३	४३	सुवासा ।
५	५२	निति, रिति, प्रताप, हंसक, भ्रमर, मद, उपाय ।
		ञे
३	४३	कार्त्तस्वरसन्निभ ।
		ञै
३	४४	कृष्णा ।
		ञो
३	४४	पलाश ।
		ञौ
३	४४	गो, पाषण्डवाक्, करिन् पूर्वा, ध्रुवा ।
		ञं
१	४१	घुर्घुरध्वनित, पा० ९ घर्घरध्वनित ।
३	४४	सर्पि, परंब्रह्मन् ।
५	५२	नि(रि)ति, प्रताप, हंसक, भ्रमर, मद, उपाय, द्युति, पद्म, भयङ्कर ।
		ञः
३	४५	श्वन्, अग्नि ।
		ञंञा
५	५३	तीव्रसमीरण ।
		ञ्र
४	६६	चौर ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ञ्रा
४	६६	नीति, गति ।
		ञ्रं
४	६६	भगवन्मुख ।
		ट
१	४३	स्थिर, ताडन, त्रास, विश्वास, अश्व ।
२	३७	करट, धूम, चाप, अर्क-किरण, ध्वनि, कवाट, आवर्त, सूनु ।
३	४५	प्लीहा, मूत्रकृच्छ्र, विप्पल ।
५	५४,५५	विषय, विरुद्ध, गर्दभस्वन, उत्तान, मूढरूपक, अध्वग, सूनु, करट, धूम, ताप, आवर्त्त, भानुरद्धा ?
६	२१	करट, धूम, ताप, अर्क-विवर, ध्वनि, कवाट, आवर्त्त, सूनु ।
८	२०	पृथिवी, ध्वनि, वायु, करङ्क ।
९	१२	पृथिवी, ध्वनि, पा० १ जनतृ (जननी), जतक, पा० २, कण्टक, पा० ३ टङ्कार ।
१०	२२	भूमि, वायु, शब्द ।
११	२०	पृथिवी, वायु, चकोर, अब्द ।
१२	१६	धरित्री, करक, ध्वनि ।
१३	९	ध्वनि ।
१४	९	ध्वनि ।
१५	२१	शब्द, पवन, भूमि, करङ्क ।
१६	१०	करङ्क, ध्वान ।
१८	२६	पृथिवीबीज, श्वेत, संहार-कारक, क्रव्यादि, ओषधी-

कोषांक	श्लोकांक	
		वृद्धि, पातालनिधिदर्शन ।
१६	१०	वामन, पाद, निःस्वन ।
२०	२६	जरा, मुकुन्द, सोमेश, दक्षपादादिगोमुख, गजाङ्कुश, बालेन्दु, अमृताद्यष्टक ।
२२	१०	अर्द्धचन्द्र, रव, इला ।
२४	१५	पृथिवी, ध्वनि, महेश्वर, शून्य ।
२५	६४,६५	कटक, भूप, ताप, अर्ककिरण, ध्वनि, चापध्वनि, जल, वायु, विषय, करक, कट, करङ्क ।
		टा
१	४३,४४	घटिका, फटा, जटा, पृथ्वी ।
२	३७	भू, आवृत्ति ।
३	४५	सूपा ।
५	५६	सृज्या, व्याहृति ।
६	३१	भू, आवृत्ति ।
१४	९	पृथिवी ।
१६	१०	पृथिवी ।
२३	१७	पृथिवी ।
२४	१५	पृथिवी ।
२५	६५	गो, कपाट, आवृत्ति, सूनु, भू, व्यावृत्ति ।
		टि
१	४४	पक्षिन्, पारस्त्रैण, अष्ट ।
३	४५	करेणु, भू, सरमा ।
		टी
१	४५	मुद्रा, ऊर्मि, महिला ।
३	४५	धराधर ।
		टु
१	४४	भूषा, मणि, मेण्ढ्र, पा० ३ मेन्द्र, अष्ट ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	४६	कङ्कण, चूड ।
५	५५	कराट ।
		टू
३	४६	ननन्दृ, स्वसृ, भी ।
१५	२१	जल भू ।
		टे
३	४६	काण ।
		टै
३	४६	द्विट्, अन्ध, प्रोत, पा० १ प्रेत, नभसी (?), हय ।
		टो
३	४७	परेत, गुरु, शिष्य ।
		टौ
३	४७	विनीत, दव, वृष ।
		टं
१	४३,४५	करङ्कक, पटह, पृथिवी ।
३	४७	नेत्र, श्रवण, पात्र, भ्रमण, मरण ।
८	२०	भू, चकोर, अब्द ।
१०	२०	शरीरास्थिन्, गो ।
११	२०	चकोर, वायु, अब्द ।
१३	९	पृथिवी, करङ्क ।
१४	९	करङ्क ।
१४	२१	गो पा० २ ।
२३	१७	करट ।
२४	१५	पृथिवी ।
२५	६५	कुलालास्त्र, प्रहार, गो ।
		टः
३	४८	प्लीहा, मूत्रकृच्छ्र, पिप्पल ।
		टच
४	११	कूट ।
		टचा
४	११	धरा, सुरा ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ट्चं
४	२१	स्फेट्च ।
		ट्र
४	६६	पीठ ।
		ट्रा
४	६६	पूपा, अपूपा ।
		ट्रं
४	६६	घोटकमुख, सरस् ।
		ट्व
४	२६	अत्री, रामपितृ, मनु ।
		ट्वा
४	२६	खद्वा ।
		ट्वं
४	२६	पुष्ट ।
		ठ
१	४५,४६	महेश, महामन्त्र, भूप, आधि, मन्त्रिन्, ताण्डव, पा० ४ वाडव, आसन, शयन, शून्य, आकाश, जलाशय, घट, चक्र, मुद्रा, कुण्डल, भाग्यवत्, पा० ५ भागवत्, कच ।
२	३८	शङ्कर, बृहद्ध्वान, वृत्त, वर्ण, स्तम्भन, साहस, चन्द्रमण्डल, कर्णवेष्टन ।
३	४८	सूनु, ज्ञानिन्, मध्वरि, वाचाल, शून्य, आसार ।
५	५६,५७	बृहद्ध्वान, महीप, साहस, सम्भव, चन्द्रमण्डल, शठ, शून्य, मनोज, कठिन ।
६	३२	शङ्कर, बहुध्वान ।
८	२०,२१	घट, शून्य, बृहद्ध्वनि, चन्द्रमण्डल, रुद्र ।
९	१२,१३	महेश, शून्य, बृहद्ध्वनि, शशिमण्डल, पा० ४ मठ ।
१०	२०	सुस्वन, रुद्र, चन्द्रमण्डल, शून्य ।
११	२०	महेश, शून्य ।
१२	१६,१७	जनता, ध्वनि, शठ, महेश, शून्य, बृहद्ध्वनि, चन्द्रमण्डल ।
१३	९,१०	महेश्वर, शून्य, बृहद्ध्वनि, चन्द्रमण्डल ।
१४	९	चन्द्र, मण्डल, शून्य, अज, करेणूच्चशब्दित ।
१५	२२	घट, सुस्वन, रुद्र, चन्द्रमण्डल, शून्य ।
१६	१०,११	महेश्वर, शून्य, बृहद्ध्वनि, चन्द्रमण्डल ।
१७	१०	शून्य ।
१८	२७	चन्द्रबीज, स्फटिक, शत्रुनाशन, रोगहर, क्ष्वेडहर, दिव्य, महाज्वरहर, पर ।
१९	११	मण्डल, चन्द्रबिम्ब, शून्य, लोकगोचर ।
२०	३०	लाङ्गुलीश, नन्दज, पालिनी, कमण्डलु, दक्षजानुगत, स्थायिन्, स्थविर ।
२१	२६	रक्षोदर, सव्याकृति, धूमदास्येतन, रथावर्त्त पा० ९ सिद्धयाकृति, रक्ष्योदर, दिनकरकिरण, परिताप ।
२२	१०	खेश, इन्दुसुमण्डल ।
२३	१७,१८	महेश्वर, शून्य, बृहद्ध्वनि, पा० ८ वृहद्धन, पा० ७स्तन, पा० ९ चण्डमण्डल, चन्द्रमण्डल ।
२४	१६	महेश्वर, चन्द्रमण्डल ।

कोषांक	श्लोकांक	
२५	६६,६७	शङ्कर, बृहद्धास, बृहद्ध्वनि, जटा, अब्द, बस्ति, स्वन, घट, चित्र, वृषभध्वनि, मेघ, वृषभ, शून्य, हास, त्रास, क्षय, ध्वनि, शङ्खध्वनि, रौद्ररस।
		ठा
१	४७	कर्णकोटर।
३	४८	शून्या, नासिका।
५	५९	वाजिशिक्षा, पीड़ा, दुर्गपथ, समरुगः।
२५	६८	विधवा, डाकिनी, व्रीडा।
		ठि
३	४९	कुमार, अमराराति।
		ठी.
१	४७	मत्स्यसङ्घात।
३	४९	कुटुम्बिन्, पुत्रवान्।
		ठु
१	४७,४८,४९	विलय, पा० ६ वलय, विजय, देवसेवन, प्रिया, अर्जित, पा० ७ जित, नखोच्छूनकुच, पा० ८ नवोत्थानकुच, काञ्ची, कृत्रिमरोदन, वञ्चक, वेषकार।
३	४९	कदम्ब, यम, त्वष्टृ।
५	५८	विषय, शङ्कर, अधर, हस्तिनिनाद, अश्वनिनाद, क्षय, क्षौद्ररस, धन।
		ठू
३	४९	प्रज्ञा, पा० २ प्रजा, धृति।
		ठे
३	५०	समास।
		ठै
१	४८	वृथाहास्य, सूर्य।
३	५०	व्यास।
		ठो
३	५०	सम।
		ठौ
१	४८	तारा।
३	५०	गौतम।
		ठं
१	४९	बिन्दु, जलबुदबुद।
३	५०	ज्ञान, विवर, शून्य, अमृत, शारद, पयस्।
६	३२	चन्द्रमण्डल, स्तम्भन, साहस, शून्य, शठ, दृढ।
२५	६७	शङ्खध्वनि, रौद्ररस, चन्द्रमण्डल।
		ठः
३	५१	सूनु, ज्ञानिन्, मध्वरि।
		ठ्च
४	१२	नादद, अनल।
		ठ्चा
४	१२	द्यौ।
		ठ्चं
४	२१	शाठ्च।
		ठ्र
४	६७	मिष्टान्न, फलस्राव, पा० १ मिष्टान्नफलस्राव।
		ठ्रा
४	६७	टिट्टी, भ्रमरी, सुरा।
		ठ्व
४	२९	वशिष्ठ, विट्ठल, पीठ, पा० ५ वसिष्ठ।
		ठ्वा
४	३०	मधुरा, पा० ५ मथुरा।

कोषांक	श्लोकांक	
		ठ्वं
४	३०	पुष्कर, अक्ष ।
		ड
१	५०	भयङ्करनाद, चन्द्र, चञ्चलयोषित् ।
२	३९,४०	विषय, शम्भु, हास, त्रास, जय, ध्वनि, शङ्खस्वन, रौद्ररस, दृढ, शठ, शून्य, केलि, आन्दोलिका ।
३	५१	सार्थ ।
५	६०	डिण्डीर, हस्त, भगन्दर, पिशाच, पथिक, काल, राग ।
६	३३,३४	विषय, शम्भु, हास, त्रास, क्षय, ध्वनि, शङ्खध्वनि, रौद्ररस, व्रीडा, वाक्, गायन, जड ।
८	२१	वृषाङ्क, ध्वनि, वन्दिवृन्द, यामिनीपतिमण्डल ।
९	१३	शङ्कर, त्रास, ध्वनि, पा० ५ गर्भ ।
१०	२१	शब्द, भर्ग, ध्वान ।
११	२१	बन्दिवृन्द, चन्द्रमण्डल, शङ्कर, त्रास, ध्वनि ।
१२	१८	शङ्कर, त्रास, ध्वनि, भीम ।
१३	१०	शिव, ध्वनि, जाप ।
१४	१०	पार्वतीनाथ, त्रास, शब्द ।
१५	२२	ध्वनि, गिरीश, जाप ।
१६	११	सङ्कर, त्रास, ध्वनि ।
१७	११	वाडवाग्नि, डाकिनी ।
१८	२८	शत्रुबीज, पीताभ, विजय, मृतसञ्जीवन, महामायावश, शिव ।

कोषांक	श्लोकांक	
१९	११	वाडवाग्नि, डाकिनी ।
२०	३१	नन्दी, क्षान्ति, वारक, डामर, दक्षगुल्फग, व्याघ्रपाद, शुभाङ्घ्रि, तोमर ।
२१	२७	अतिशय, रतदुररसा-विस्मय, दुर्गपथ, आन्दोलन, नारी, इक्षुरस, वाम, दक्षिण ।
२२	१०	पक्ष, सारि, आक्षेप ।
२३	१८	शङ्कर, ध्वनि ।
२४	१६	शङ्कर, जाप, ध्वनि, त्राण ।
२५	६८,६९,७०	मेढ्र, वेगित, ज्ञाप्य, यामिनीपतिमण्डल, पिशाच, भय, काल, राग, पान्थ, ध्वनि, आन्दोलन, गायन, जड ।
		डा
१	५०	जिह्वा, कुण्डलिनी, चण्डिका, पा० ९ चन्द्रिका, भूतभाषा ।
२	३९	वृथावाक् ।
३	५१	क्षमा, सरमा, रमा ।
		डि
३	५१	गौरी ।
		डी
१	५३,५४	कालक्षेप, दण्ड, पा० ३ दम्भ, पा० ३ दन्त, व्योमगामिन्, मुस्तापत्र, कर ।
३	५१	शिवा, धात्री ।
		डु
१	५१,५२,५३	हिंसा, भ्रान्त, सर्ववध, पा० १ सर्वायुध, बाल,

कोषांक	श्लोकांक	
		बलहीन, वृथाकुल, पा० २ वृषाकुल, उत्पात, जरत्काय, पा ४ रजकीय, फेन,दान, अल्परोदन, व्रण, पा० ५ प्राण ।
३	५१	चन्द्र ।
५	६१	गूढ, सौम्य, अपसव्य ।
		डू
१	५२	व्यर्थवाचाल, सर्प, शाप ।
३	५१	कलापवत् ।
		डे
३	५२	धर्म ।
		डै
३	५२	वृष, अकर्ण ।
		डो
१	५४	अन्त्यज, नृ ।
३	५२	पापिन्, पुरुषाधम ।
		डौ
१	५१,५४	वध, क्षेप, पा० १० बन्ध, पा० ७ अन्त्यज, पा० ७ नृ ।
३	५२	धेनु, कर, जार ।
		डं
१	५४	क्षुद्रजन्तु, वृथोदित, पा० ६ प्रियोदित ।
२	४०	डामर, दुर्ग, वध, डमरुक ।
३	५२	नेत्र, पयस् ।
६	३४	डामर, दुर्गपथ, डमरुक, अन्दोलन, गायन, जड ।
२५	६९,७०	डामर, दुर्ग, पन्थ, डमरुक, आन्दोलन, गायन, जड ।
		डः
३	५३	सार्थ ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ड्य
४	१२	दाडिमतरु, कर ।
		ड्या
४	१२	रमा, नर्मदा, गङ्गा ।
		ड्यं
४	२१	जाड्य ।
		ड्र
४	६७	दण्ड, डमरु, दक्ष, दूरग ।
		ड्रा
४	६८	टिट्टी, मत्स्यगन्धा, ऋषपत्नी, महोदरी ।
		ड्रं
४	६७,६८	सुरोदक, मद्य, मधुर, पुष्प, नर्मदाजल, अम्बुज ।
		ड्व
४	३०	भरद्वाजपुत्र ।
		ड्वा
४	३०	दाढा पा० ६ डाढा ।
		ड्वं
४	३०	महोदर ।
		ढ
१	५५, ६,५७	ढक्का, निर्गुण, लास्य, प्रहार, आयुध, पात, श्वापद, दुर्जन, मूढ, पा० ९ मुण्ड, वाद्यभेद, स्वभाव, विमत्सर ।
१	४१,४२	पिशाच, भय काल, जड, गायक, राग, ध्वनि, पान्थ, तूर्य, अवज्ञान, मूर्ख, ढक्का, गुण, सर्प, गूढ, सौम्य ।
३	५३	श्वाद, श्वन्, मार्जार, खर ।

कोषांक	श्लोकांक	
६	३५,३६	पिशाच, भय, काल, राग, पान्थ, ध्वनि, ढक्का, निर्गुण, गूढ, सौम्य, सव्य, अपसव्य ।
८	२२	ढक्का।
९	१४	ध्वान, विश्वेश्वर, पा० ६ ढक्का, निर्गुण, निर्धन, ध्वनि ।
१०	२१	ढक्का, अध्वविशेष ।
११	२२	ढक्का, निर्गुण, ध्वनि ।
१२	१८	ढक्का, निर्गुण, निर्धन ।
१३	१०	निर्गुण, ढक्का, शब्द ।
१४	१०	ढक्का, निर्गुण, विषम-ध्वनि ।
१५	२२	अगुण, ध्वनि, ढक्का ।
१६	१२	ढक्का, निगुण, ध्वनि ।
१९	१२	ढक्का, श्वन्, लाङ्गूल ।
२०	३२	ऐश्वरी, अर्द्धनारीश, नर, शाखान्तराकृति, दक्षपादाङ्गुलीमूल, ढल, ढक्क ।
२१	२८	पिशाच, मूक, अलस. मूर्ख, मुग्ध, रोग, सव्य, अपसव्य, सुभग, अधिक, भग ।
२२	१०	शब्द, गति, निर्गुण ।
२३	१९	ढक्का, निगूढ, ध्वनि, पा० १० निमूढ ।
२४	१७	निर्णय, ढक्का ।
		ढा
१	५७	प्राभृत, वन्दना ।
३	५३	नाभि ।
८	२२	निर्गुण, ध्वनि ।
२५	७०	ढक्का ।
		ढि
१	५५	पक्षिभेद, पा० ८ पक्षभेद ।
३	५३	गुद, मेढ्र ।
		ढी
१	५५	नृ, शुनी ।
३	५३	धूम, वन्हि, उत्कट ।
		ढु
१	५७	कर्णरोग, अतिस्थूल, गुदवात, ध्वनि ।
३	५४	कूर्म, शूकर, व्याल ।
		ढू
३	५४	कुच ।
		ढे
३	५४	कुरङ्गज ।
		ढै
३	५४	मार ।
		ढो
३	५४	सुखिन्, वर्य ।
		ढौ
३	५४	भूमि ।
		ढं
१	५५	गोमुख ।
३	५४	पयस्, वर ।
६	३५	ज्ञान, तूर्यमुख, निर्गुण, गूढ, सौम्य, सव्य, अपसव्य ।
१८	२९	वैष्णव, जलस्तम्भ, पातालदर्शन, पीत, सर्वार्थसिद्धिद, बलभद्र ।
२५	७०,७१	ज्ञान, तुर्यमुख, निर्गुण, रूढ, सौम्य, सव्य, अपसव्य ।
		ढः
३	५५	श्वाद, श्वन्, मार्जार, खर ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ढ्य
४	१२	आढ्य, शिशु, उत्कर ।
		ढ्या
४	१३	मही ।
		ढ्यं
४	२१	धन, वन ।
		ढ्र
४	६९	धृष्ट, द्युम्न, तात, विदुर, नर्मदाभ्रूष ।
		ढ्रा
४	६९	गान्धारी, सती, स्वाहा, स्वधा, आज्ञा, सरयू ।
		ढ्रं
४	७०	फल्गु, मरण, भ्रष्ट, सुभ्रू, आस्य, स्पन्दनाक्षम ।
		ढ्ल
४	५५	कल्प, कमलानाथ, गरुड, हंससारथि ।
		ढ्ला
४	५५	क्षमा ।
		ढ्लि
४	५५	देवेश, अमरावती ।
		ढ्लं
४	५५	माल्य, मधुर ।
		ढ्व
४	३१	ढेढ़ ।
		ढ्वा
४	३१	अशन, अग्र्या ।
		ढ्वं
४	३१	पयोदधि, चोदन ।
		ण
१	५८,५९	निर्गुण, जप, पा० १० जय, योग्य, दुष्ट, पा० ११ पृष्ठ,

कोषांक	श्लोकांक	
		क्रोड, तस्कर, कोण, एकचक्षुस् ।
२	४२	जार, भैरव, कण्टक, ध्वनि ।
३	५५	नक्र ।
५	६१,६३	कण्ठक, जार, भैरव, भगन्दर, निश्चलवस्तु ।
६	३६	जार, भैरव, कङ्कट, ध्वनि ।
८	२२	प्रकट, निष्फल, प्रस्तुत, ज्ञान, बन्ध ।
९	१४	ज्ञान, निर्णय, निश्चय ।
१०	२१	निश्रेयस्, स्पष्ट, निष्फल ।
११	२२,२३	ज्ञान, निर्गुण, प्रकट, बन्ध ।
१२	१९	सूकर, ज्ञान, निश्चय, निर्णय ।
१३	१०,११	निष्फल, ज्ञान ।
१४	११	निर्णय, ज्ञान, शूकर ।
१५	२३	मोक्ष, निष्फल, स्पष्ट ।
१६	१२	निर्णय, ज्ञान, शूकर ।
१९	१२,१३	बिन्दुदेव, भूषण, गुणवर्जित, पानीयनिलय ।
२०	३३	उमाकान्त, नरकजित्, रति, दक्षपदाग्र, निर्वाण, त्रिगुणाकार, त्रिरेख ।
२१	२९	नाशाग्नि, परिवर्त्तन, जात्यन्ध, कुर्कटिका, पङ्कजपत्र, पा० १ पङ्कजपय, वेदनिनाद, विप्रसङ्गति ।
२२	११	गन्धेभ, आस्य, हर्ष ।
२३	१९	ज्ञान ।
२४	१७	ध्वान, निर्णय ।
२४	७१	मार, भैरव, कङ्कट, ध्वनि, मोचन, प्रकट, बन्ध, प्रस्तुत, निष्फल, रण ।

कोषांक	श्लोकांक	
		णा
१	५८	पशुपुच्छ, पा० १२ पशु पुच्छ, बृहन्मान ।
२	४३	ध्वजिनी, शय्या, धेनु, नासा, कृपा ।
३	५५	नाभि ।
५	६२	रजनी, जाया, वेदना ।
६	३७	रजनी, शय्या, धेनु, नासा, कृपा ।
२५	७२	रजनी, शय्या, धेनु, नासा, कृपा ।
		णि
१	६०	सम, स्वर, चय, चार, चरण ।
३	५५	वृक, अजर, पा० ३ वृकोद्‌गर ।
		णी
१	५९,६०	क्षीर, पा० १३ क्षीण, रण, धन, धान्य, सम, स्वर, चय, चार, चरण ।
३	५५	स्वर्ग ।
		णु
१	५९	संप्रत्यय, स्वार्थ, बृहन्मान ।
३	५५	करेणु, भू ।
११	२३	स्तुति ।
२३	१९	स्तुत ।
		णू
३	५५	कालिन्दी, सटा, पा० ४ जटा, जरा ।
२३	१९	स्तुत ।
		णे
३	५६	मार्जार, विडङ्ग ।
		णै
३	५६	शृगाली, हरीतकी ।

कोषांक	श्लोकांक	
		णो
३	५६	सर्षप ।
		णौ
३	५६	माया ।
		णं
२	४३	सरोजदल, ज्ञान, निस्तुष-वस्तु ।
३	५६	दर्शन ।
५	६२	संशोध्यजल, ज्ञान, गमन ।
६	३७	सरोजदल, ज्ञान, निस्तुष-वस्तु ।
१८	३०	बलभद्रीय, श्वेत, बलविवर्धन, नित्यत्व, युद्धवीर्यत्व, रिपुदर्पविनाशन ।
२५	७३	सरोजदल, ज्ञान, निस्तुष-वस्तु ।
		ण्य
४	१३	स्मृत, अग्रण्य, शरण्य ।
		ण्या
४	१३	नदी, गिरा ।
		ण्यं
४	२२	न्याय्य ।
		णृ
४	७०	नष्ट्र, अम्बरग, भीरु, कर्ण, बीभत्सु उद्धव ।
		णृा
४	७१	नर्मदा, गो, गोदा, गङ्गा, द्रुपदजा, अम्बुजा ।
		णृं
४	७१	नामसयुध (?), पात्र, वाक्य, नारदभाषित ।
		ण्व
४	३१	नाथ, जमदग्नि ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ण्वा
४	३१	वाणी, उज्जयिनी, प्रभा ।
		ण्वं
४	३२	रूप, अणु ।
		त
१	६०,६२	प्रेत, निष्फल, शात, पा० १४ शान्त, अविलम्ब, जल ।
२	४४	कोप, पुच्छ, सम्भोग, निश्चय, धातुवादविधि, चोर, प्रकृतार्थं ।
३	५७	सुवेष ।
५	६४	संयोग, निश्चय, विस्तर, सम ।
६	३८	सम्भोग, निश्चय, कोप, पुच्छ, धातुवादविधि, चोर ।
८	२३	तस्कर, युद्ध, क्रोड, पा० १ क्रोध, पुच्छ ।
९	१५	चार, चौर, क्रोडपुच्छ, पा० ७ तच्छ(क्ष)क ।
१०	२२	तस्कर, पुच्छ, क्रोड, युद्ध ।
११	२३	चौर, क्रोड, युद्ध, पा० १ पक्ष ।
१२	१९	चौर, क्रोडपुच्छ ।
१३	११	तस्कर, क्रोडपुच्छ ।
१४	११	पालन, पालक ।
१५	२३	क्रोड, चौर, पुच्छ, युद्ध ।
१६	१३	चौर, क्रोडपुच्छ ।
१७	११	महाबुद्ध ।
१८	३१	धनद, पीत, ऐश्वर्यवर्धन, यक्षवशीकार, किन्नरवशीकार, सिद्धवशीकार, जगद्वश ।
१९	१३,१४	चौर अमृत, पुच्छ, क्रोड, म्लेच्छ, कुत्रचित्, तरण, पुण्य ।
२०	३४	वामोरूमूलनिलय, आषाढी, कामिका, हरि, तीव्र, तरल, नील ।
२१	३०	पश्चादर्थं, परिश्रम, वियोग, सम्भोग, तत्त्व, करुणा, धातुवादविधि, वीणादिक, वाद्य ।
२२	११	ताप, आमर्ष, दस्यु ।
२३	२०	चौर, क्रोध पुच्छ, पा० ४ चेतस्, क्रोड ।
२४	१८	सुगत, बुद्ध, क्रोडपुच्छ ।
२५	७३,७४	संयोग, निश्चय, कोल, पुच्छ, धातुवादविधि, चौर, सत्सङ्ग्राम ।
		तत्
२	४५	धातुवाद ।
५	६४,६५	पश्चाद्, विवक्षा, समुच्चय, हेतु, निश्चय, अवधारण ।
६	३९	प्रकृत, हेतु ।
२५	७७	प्रकृतार्थ, हेतु ।
		तत
५	६५	अनन्तर ।
		ततं
५	६७	विस्तृत ।
		तति
५	६६	तन्तुवाद्य, वीणादि, स्तोम ।
		तन्तु
५	६६	गण, स्तोम ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ता
१	६१	रङ्ग, राग, तुलादण्ड, भानु, भात, तात, पा० १५ तान, तूर्यध्वनि।
२	४५	करुणा।
३	५७	नारी।
५	६४	कृपा।
६	३८	करुणा।
८	२३	श्री।
१०	२२	श्री, धरणी।
१३	११	श्री।
१५	२३	मही, लक्ष्मी।
१७	१२	सटा, योगिवरः, गोविदां वरः।
२५	७४	करुणा, महालक्ष्मी, पूजा, वारयोषित्।
		तात
५	६५	जनक।
		ति
१	६१	पूजा, तोक, मनोमान, महाधन, पा० १६ महाधन, पा० १६ महामघ।
३	५७	मूषक, उमेश्वर।
		ती
३	५७	नदी, जलधि।
२५	७८	तीव्र, विषम, शोक, प्राणिगति।
		तु
१	६०,६३	पौनःपुन्य, भेद, प्रश्न, ध्यान।
२	४६	प्रश्न, वितर्क, भेद, अवधारण, स्वित्।
३	५७	सारङ्ग, रमेश्वर।
५	६५	वादविधि, क्रोध।
८	२३,२४	पूर्वनिवृत्ति, पूर्वस्मात्, अवधारण, विलक्षण, विकल्प।
१०	२३,२४	स्मृति, समाहार, साकल्य, करण।
११	२४	पूर्वनिवृत्ति, पूर्वस्मात्, विलक्षण, अवधारण, पा० २ सर्वनिवृत्ति।
१४	१४	चौर, क्रोडपुच्छ।
१५	२५	स्मृति, समाहर, साकल्य, कारण।
१७	११	विकल्प, अवधारण।
१९	१४,१५	पादपूरण, भेद, समुच्चय, अवधारण, पक्षान्तर, नियोग, प्रशंसा, विनिग्रह।
२५	७५,७६	क्रीडन, क्रीडक, पूर्वनिवृत्ति, पूर्वस्मात्, अवधारण, विलेखन, विकल्प, पादपूरण।
२६	८	पादपूरण, भेद, समुच्चय, अवधारण।
		तुं
२६	८	प्रश्न, अङ्गीकृति, रोष, आस्मृति, अवधारण।
		तू
१	६३	भेद, प्रश्न, ध्यान।
३	५८	म्लेच्छ।
		ते
२	४५	क्रीडन, अभिधेय।
३	५८	करिन्, नक्र।
६	३९	क्रीडन, क्रीडक।
		तै
१	६२	वसान, वयत पा० १ वपन्।
३	५८	कलापिन्, दितिप्रसू।

कोषांक	श्लोकांक	
		तो
१	६२	तन्तु, तन्तुवायक ।
३	५८	सूर्य, विघ्नकृत्, स्वामिन् ।
		तौ
१	६२	तन्तु, तन्तुवायक ।
३	५८,५६	स्वर्ग, भू, गर, आचार्य । यजमान ।
		तं
३	५६	तृण, जल ।
२५	७५	तृण, कर्म, अर्थ, सूचक, कर्मसूचक, अर्थसूचक ।
		तः
३	५६	सुवेष ।
		त्य
४	१३	अन्त्यज, कमलानाथ, गुरु ।
		त्या
४	१३	धरणी, नदी ।
		त्यं
४	२२	स्मृत, अन्त्य ।
		त्र
४	७२	त्रिनेज, अब्जज, पातृ, गरुत्मन्, मघवन् ।
		त्रा
४	७२	गौरी, गरदा, पात्री, तारणी, सरमा, तरी ।
५	१२४	त्राण ।
		त्रं
४	७३	त्रुटित, घुष्ट, जुष्ट, पुष्ट, पर, पद, गान्धारी, वदन, कर्ण, वचन, द्रौपदी ।
		त्रि
५	१२५	सङ्ख्याभेद ।

कोषांक	श्लोकांक	
१७	२०	सङ्ख्याविशेष ।
		तृट्
२	४५	पिपासा, ईहा ।
६	४०	पिपासा, ईहा ।
७	१५	लिप्सा, पिपासा ।
१०	२३	लोभ, तृष्णा ।
१५	२४	तृष्णा, पिपासा, लिप्सा ।
२५	७७	पिपासा, ईहा, तृष्णा, कान्ति, लिप्सा ।
		त्व
४	३२	तुरङ्ग, महेश्वर ।
		त्वा
४	३२	अश्वपत्नी गौरी ।
		त्वं
४	३२	तुल्य, तरण ।
		त्वग्
२	७५	वल्क, लवङ्गवल्क ।
६	६६	वल्क, लवङ्गवल्क ।
७	७	वल्कल, चर्मन् ।
१०	२२	वल्कल, चर्मन् ।
१५	२३	चर्मन्, वल्कल ।
		त्विट्
२	७४,७८	कान्ति, ज्वाला, दीप्ति, व्यवसाय, जिगीषा, धन्वन् ।
६	६६	कान्ति, ज्वाला ।
७	१६	शोभा, जिगीषा, व्यवसाय, रुचि, गिर् ।
१०	२३	वाणी, प्रभा, जिगीषा, व्यवसाय, रुचि ।
१५	२४	प्रभा, कुत्सा, पा० ३ जिगीषा, व्यवसाय, रुचि, गिर् ।
२५	७८	प्रभा, कुत्सा, व्यवसाय, मह, गिरि ।

कोषांक	श्लोकांक	
		थ
१	६४	मिथ्यावाचक, श्रान्त, शोक।
२	४६,४७	भङ्ग, शैल, इन्दु, तरङ्गिणी, भयहर, शुक्ल, श्यामल, पृथुल।
३	५६	सूर्य, गणेश, विनतासुत।
५	६७	सिंह, कल्लोल, विराम, महीधर, सित, असित, पृथु।
६	४०,४१	ऊर्मि, गिरि, इन्दु, तरङ्गिणी, भयनिवारण, धवल, श्यामल, पृथुल।
८	२४	भयरक्षण, भूधर, भार।
९	१५	शिलोच्चय, लक्षण, पा० ८ भयरक्षण।
१०	२४	भयरक्षण, भूध्र।
११	२५	शिलोच्चय, भार।
१२	२०	शिलोच्चय, भयरक्षण, पा० ४ नयरक्षण।
१३	११	भीत्राण, महीध्र।
१४	१२	शिलोच्चय, भीतत्राण।
१५	२५	भीत्राण, भर, अद्रि।
१६	१६	शिलोच्चय, भयरक्षण।
२०	३५	दण्डीश, वरद, कृष्ण, वामजानुगत, स्मर, शौरी, विशालाक्ष।
२१	३१	ग्रहकल्लोल, सितासित, धुताधुत, आरनाल, शब्द, सन्निषा, परिमार्जन, कल्प, विराम, पा० २ जल्प।
२२	११	भीत्राण, गिरी, व्योमन्।
२३	२०	शिल्लोच्चय, भयरक्षण, पा० १३ नयरक्षण।
२४	१८	शिल्लोच्चय, भयलक्षण।
२५	७९,८०	भुधर, भार, क्षुद्र, सत्वर-

कोषांक	श्लोकांक	
२५	७९,८०	वाचक, कुञ्जर, काल, भयनिवारण, विमल, पृथुल, श्यामल, कच, उपचारणी।
		था
१	६४,६५	आरब्धवस्तु, निमग्न, अतिगम्भीर, स्थूलयोषित्, देवकूट, कषाय, दृढ, परिवृढ, पा० २ वारिगम्भीर।
३	६०	धरित्री, प्रभा, गङ्गा।
५	६८	आस्फालन, जाल, धातु।
		थि
३	६०	गोदा, यमुना।
		थी
१	६६	भाजन, भू।
३	६०	समुद्र, व्रण, रेवा।
२५	८०	ताडवविकारक।
		थु
१	६६	पर्वत, द्रोण, व्रण, निन्दित, निष्ठीवन, बल, पा० ३ वन, भूत, पा० ३ पूत।
३	६०	साक्षिन्।
		थू
३	६०	परासर।
		थे
३	६१	व्यास।
		थै
३	६१	शुक।
		थो
३	६१	धर्म, गाधिपुत्र।
		थौ
३	६१	शस्त्र।

कोषांक	श्लोकांक	
		थं
१	६४,६५	स्तोक, मरुदेशप्रदेश ।
३	६१	विष, कर्मन्, बहुल, सूक्ष्म ।
५	६८	भयनिवारण ।
१४	१२	मङ्ग्ुल, पा० १ मङ्गल, भयत्राण ।
१७	१२,१३	रक्षण, मङ्गल, साध्वस, शिलोच्चय, भयरक्षण ।
१८	३२	परा शक्ति, रक्त, कालजय, शान्तिद, पौष्टिक, भाग्यवर्धन, आयुष्यवर्धन ।
१९	१४	रक्षण, मङ्गल, साध्वस ।
		थः
३	६२	सूर्य, गणेश, विनतासुत ।
		थ्य
४	१४	नाथ ।
		थ्या
४	१४	कथा ।
		थ्यं
४	२२	पथ्य ।
		थृ
४	७४	तीर्थवासकृत्; पूत, जार, पुष्ट, अम्बिकात्मज ।
		थॄ
४	७४	स्थिता, रमा, राज्ञी, रजनी, रजकात्मजा ।
		थृं
४	७५	तीर्थ, सुख, आयुक्त, मरण, मध्वरिमुख ।
		थ्व
४	३३	अर्थ, अक्षर, अरुण ।
		थ्वा
४	३३	स्त्री ।
		थ्वं
४	३३	मैथुन ।
		द
१	६७,६८, ६९	दान, पूजन, क्षीण, दानशौण्ड, पालक, पा० ५ पालन, देव, दीप्ति, दुराधर्ष, दया, दमन, दीन, बन्दशूक, बन्ध, बन्धन, बोध, बाल, बीज, बल, विदोष, चालन, चीवर, वर, पा० ६ दुराध्यार्थ पा० ६ दुराधर्थं ।
२	४७	दातृ, छेद ।
३	६२	दातृ ।
५	६९	धातृ ।
६	४१	दातृ, छेद ।
८	२४	दान, दायक ।
९	१६	कलत्र, दोहन, छेद, दान, दातृ ।
११	२५	दान, दातृ ।
१२	२०	अभ्र, कलत्र, छेद, दान, दातृ ।
१४	१२	शुद्धि, देवन ।
१८	३३	दुर्गाबीज, शम, सवार्थसिद्धिद, निग्रहकर, अनुग्रहकर, भोगैकसाधन, मोक्षैकसाधन ।
१९	१६	अचल, दत्त, शोधन, दान, छेद, उपताप, रक्षा, दातृ ।
२०	३६	सत्य, अत्रीस, ह्लादिनी, वामगुल्फगत, शूलिन्, कुबेर, दातृ ।
२१	३२	दान, भाव, सम्बोधन, वैराग्य, द्रावकवस्तुविशेष, गृहितमुक्त, विशुद्धि ।

कोषांक	श्लोकांक	
२२	११	सिंह, असि, त्रिलोचन ।
२५	८१	निर्भर्त्सन, भय, वध, भव, बाल, बन्धन, छेद, दान, दायक ।
		दा
१	६९,७०	द्यौ, गङ्गा, कुल, कालकृत, उपदा, पा० ८ उपमा, नैवेद्य, निर्नाथा, वनिता ।
२	४७	क्षान्ति, दान ।
३	६२	दात्री, धरणी, शुभा ।
५	६९	क्षोणि, दान ।
६	४१	क्षान्ति, दान ।
८	२५	दान, दातृ, छेद, पा० २ वेद, बन्ध ।
१०	२४,२५	दम्पती, प्रदेशन, दाष्णु (?) बन्धन ।
१३	११,१२	दातृ, दान, छेद, बन्ध ।
१४	१२	दातृ, छेद, दान ।
१५	२५,२६	दातृ, दान, बन्धन, विखण्डन ।
२४	१९	दान, छेदन ।
२५	८२	दान, दातृ, दन्तिन् ।
		दि
२	४८	क्षय ।
३	६२	दानिन् ।
		दिवि
६	५८	स्वर्, व्योमन् ।
		दी
१	७०	देवतर्पण, देवतार्पण, पा० ९ देवतापगा ।
३	६२	सुधानाथ ।
		दु
३	६२	दरिद्रिन्, कर, अवर ।
५	७२	कृच्छ्र, ख, निन्दित, दुःख, उपसर्ग ।
१७	१३	दुष्टवचन, तरु ।
२५	८२	विखण्डन, दुस्तरा, अरण्य ।
२६	१७	कष्ट, निषेध ।
		दू
२	४८	शुद्धि, परिताप, दुष्ट ।
३	६३	दुःखिन् ।
		दृक्
२	४९,७१	दर्शन, ज्ञान, नेत्र, द्रष्टृ ।
६	४३	दर्शन, ज्ञान, नेत्र, द्रष्टृ ।
७	१५	द्रष्टृ, दर्शन, धी, अक्षिन् ।
१०	२५	नेत्र, दर्शन ।
१५	२६	दर्शन, नेत्र ।
२५	८४,८५	दर्शन, ज्ञान, नेत्र, द्रष्टृ, दिन ।
		दे
३	६३	स्मृता, जाया ।
		दै
१	७०	देवकन्या ।
३	६३	मत्स्य, वामन, ऋषभ ।
		दोस्
१	६७	भुज, दीर्घदेशक, दीर्घकेशक पा० ७ ।
३	६३	हस्त, चरण, शिश्न ।
५	७१	बाहु, स(ष)ण्ढ ।
		दौ
३	६३	स्वर्ग, प्राण, आत्मज ।
		दं
४	४८,४९	दान, वैराग्य, कलत्र, अवलोकन, मूढ, प्रहान्तर, द्रावक, शुचि ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	६४	दान, शरण, कर्मन्, भव्य, न्यून, अकिल्बिष ।
५	७०,७१	पुत्र, कलत्र, दान, सम्बोधन, प्रान्त, वैराग्य, अवलोकन, मुषित, मूल, गृहीत, द्रावक, शुचि ।
६	४२	दान, वैराग्य, कलत्र, अवलोकन, मूक, गृहीत, द्रावक, शुचि ।
८	२५	कलत्र ।
९	१६	कलत्र, दोहन, छेद, दान, दातृ, छेदन ।
११	२५	कलत्र ।
१३	११	पत्नी ।
१५	२५	पत्नी ।
१६	१४	कलत्र, दान, छेदन, दातृ ।
२३	२१	कलत्र, छेद, दान, दातृ ।
२४	१९	कलत्र ।
२५	८३,८४	पान, वैराग्य, कलत्र, अवलोकन, भेद्यमूल, मूक, दुहित, द्रावक, शुचि, दर्शन, ज्ञान, नेत्र, वस्त्र, द्रष्टृ ।
		दः
३	६४	दात् ।
		द्य
४	१४	अब्धि ।
		द्या
४	१४	दया ।
		द्यु
६	५८	दिवि, अहन्, वह्नि ।
७	११	दिन, वह्नि ।
१०	२५	वह्नि, वासर ।

कोषांक	श्लोकांक	
१५	२६	वह्नि, दिवस ।
१७	१८	गगन, नाक ।
१९	२८	अहन्, गगन, ज्वलन ।
२५	८५	वह्नि, दिवस ।
२५	११४	द्यो(द्यौ), अहन्, वह्नि ।
२६	१६	अग्नि, दिवस ।
		द्यौ
२	६५	दिवि, अहन्, वह्नि, स्वर्, व्योमन् ।
४	१४	त्रिविष्टप ।
५	१२६	अम्बर, स्वर्ग, धन, कान्ति ।
६	५८	स्वर, व्योमन् ।
७	११,१४	स्वर्ग, विहायस्, स्वर्ग, नभस् ।
१०	२५	स्वर्ग, नभस् ।
१५	२६	नाक, नभस् ।
१७	१८	व्योमन्, स्वर्ग ।
१९	२८	त्रिदशालय, त्रिदशवर्त्मन्, योषित् ।
२५	८५	नाक, नभस्, बन्धन ।
२५	११३	द्यौ, दिवि, द्यु ।
२६	१६	स्वर्ग, स्वर्ण, वित्त ।
		द्यं
४	२२	सुख, पा० १ मुख, चिर, निन्द्य ।
२५	८४	खण्डन, रिपु, त्याग, गमनस्यावभर्त्सन ।
		द्र
४	७५,७६	द्रोण, द्रोणसूनु, काक, काकसम, नर, भयकृत्, भरत, राजन्, रतिदेव, रमापति ।
		द्रा
४	७६	दरी, सरमा, क्षुद्रा, द्रोण-

कोषांक	श्लोकांक	
		मूर्त्ति, दुरात्मजा ।
		द्रु
२	६८	स्वर्ण, पादप ।
५	१२५	वृक्ष ।
७	१२	कामरूपिन्, स्वर्ण ।
१४	२१	वृक्ष, द्रुम, स्वर्ण, कामरूपिन् ।
१७	१९,२१	तरु, स्वर्ण, कामरूपिन् ।
२६	१७	स्वर्ण, कामरूपिन् ।
		द्रं
४	७७	भय, पा० ३ भद्र, गमन, क्षुद्र, क्षोदन, सरमामुख, सुतट, सुखद, सामस्मरण, श्रयण, गुरु ।
		द्व
४	३३	दाव ।
		द्वा
४	३३	पुरी, गङ्गा ।
		द्वार्
२	७५	द्वार, उपाय, रमा, देवपूजा, शक्ति, शोभा, वरेण्य ।
५	१२४	द्वार ।
६	६६	द्वार, उपाय ।
		द्वं
४	३३	दूर, वरद, युत्, पा० १ नूर, पा० २ यत् ।
		द्वि
५	१२५	संख्याभेद ।
		ध
१	७१,७२	विधातृ, धन, धर्म, गुह्य, गुह्यकेश्वर, अश्वाधारभूत, वह्नि, वाद, अवधायक, देशभेद, भूत, भीत ।
२	५०	शिलीन्ध्र, इन्दु, ध्यान,

कोषांक	श्लोकांक	
		श्रीद, धन्वन्तर, घट ।
३	६४	धातृ, विष्णु, गिरिजात्मन ।
५	७२,७३	सन्निभ, सानु, मानविशेषक, भय, धूप ।
६	४३	इन्द्र, ध्वनि, ध्यान, श्रीद, धन्वन्तर, धन ।
८	२६	चित्र, अश्ववार ।
९	१६	धर्म, धनाध्यक्ष, पा० १० धनेश, धातृ, धर्मवान् ।
१०	२६	धनद, अश्ववार, चित्र ।
११	२६	अश्ववार, चित्र ।
१२	२१	विधातृ, मनु ।
१४	१३	धन, धनेश ।
१५	२७	धीर, धनद, अश्ववारक, चित्र ।
१६	१५	यक्ष, चन्द्र ।
१८	३४	धर्मबीज, श्वेत, पुण्यविवर्धन, सर्वदेवमय, दिव्य, सर्वदर्शनदर्शक ।
१९	१७	धर्म, कुबेर, वसु, ब्रह्मन् ।
२०	३७	मीनेश, सात्वतप्रीति, वामपादाङ्गुलीगत, धनेश, धरणीश ।
२१	३३	ऐरावतकुम्भ, आश्लेष, पावन, सामर्थ्य, धन्वन्तर, बिभीत, कलत्र पा० ३ भीत ।
२२	१२	बाल, पितृ, वित्तेश ।
२३	२१,२२	बन्धन, धातु, पा० १ धातृ, धौतृ, धन, धान्य ।
२४	१९	धावन् (धावत्) ।
२५	८६	धार्मिक, धीर, श्वित्र, अश्ववार, वध ।
		धा
१	७४	तत्सेना, अधिक ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	६५	धरित्री, रमा, गौरी ।
५	७३	धन, धान्य ।
६	४४	बुद्धि ।
८	२६	गुह्यकेश, विरिञ्चि, पा० ४ विरञ्चि ।
९	१७	ध्वनि ।
१०	२६,२७	धातृ, गुह्यकेश ।
१३	१२	गुह्यकेश, पा० १ गुह्य, केश, धातृ ।
१४	१३	धातृ ।
१५	२७	गुह्यकेश, धातृ, पा० ४ स्वयम्भू ।
१६	१४,१५	धर्मरति, सम्पत्ति ।
१९	१७	ब्रह्मन्, धारक ।
२३	२२	पा० २ बुद्धि ।
२५	८७,८८	ध्वनि, ध्यान, याव, ध्वन्वन्तरि, घट, विरञ्चि, बह्वर्थ, गुह्यकेश, मर्कट ।
		धि
१	७५	समग्र, सुधावार्धि, लोह, पा० ३ समय ।
३	६५	धर्म ।
६	४	बुद्धि ।
९	१७	मणि ।
२३	२२	पा० २ बुद्धि ।
		धिक्
२	५१	निर्भत्सन, निन्दा ।
		धी
१	७३	बुद्धि ।
२	५०	धी ।
३	६५	वृक, असुर ।
६	४४	बुद्धि ।
८	२६	बुद्धि, इषुधि ।
९	१७	धिषणा ।
१०	२६	आश्ववारक, सुचित्र, बुद्धि, निषङ्ग ।
११	२६	धी, इषुधि ।
१२	२१	धिषणा ।
१३	१२	मति ।
१४	१३	मति ।
१५	२७	धी, इषुधि ।
१९	१८	ज्ञान, ज्ञानभेद ।
२३	२२	गति, बुद्धि, युद्ध ।
२४	२०	धिषणा ।
२५	८७	पुत्री, औषधीमात्र, बुद्धि, विबुध ।
		धु
१	७४	अतिधृष्टक, पा० २ धूर्त ।
३	६५	तनु ।
८	२७	धूत, आकम्प ।
९	१७	भाव, चिन्ता ।
		धू
१	७४	अतिधृष्टक ।
२	५१	धूप, कम्प, वित्त, भार, युग, अभ्र, शम्भु, जटा, हेरम्ब ।
३	६५	कर, भार ।
६	४४	धूप, कम्प, वित्त, भार, युग, अग्र ।
७	१२	यानमुख, भार ।
८	२६	भार, कम्प ।
९	१८	भार, भय, वेतन ।
१०	२७	धूत, भर, कम्प, रथास्य ।
११	२६,२७	धुरा, कम्पन, धूत, पा० ४ धूम, रथाङ्ग, चिन्ता ।
१२	२१	भार, वित्त ।
१३	१२	भार, कम्प, चिन्ता ।
१५	२८	धूत, भर, कम्प, रथास्य ।
१९	१८	धूनन ।

कोषांक	श्लोकांक	
२३	२२	कम्पन, धौत, धूम, भार, वित्त, पा० ३ युग ।
२४	२०	भार, चिन्ता ।
२५	८८	धूली, धराकम्प, रथ, भार, कम्प ।
		धृ
१	७४	पति ।
		धे
३	६५	वृष ।
		धै
१	७३	ध्यान, धेनु, धरा, धान पा० १ ।
३	६५	रावण ।
		धो
१	७५	क, निपातेषु ।
३	६६	पाविन्, वृषण, पूषन् ।
		धौ
१	७३,७५	भार, समग्र, सुधावाधि, लोह ।
३	६६	धर्म, पृथिवी, गिरा ।
		धं
१	७२,७४	षण्ढ, पा० ११ खण्ड, वञ्चन, दारुण्य ।
२	५०	वेश्मन्, धन, धान्य, बुध ।
३	६६	धन, धूनन, दान, धारण, करण, सुख ।
५	७२	मृदुरेणु, केशर ।
६	४४	वेश्मन्, धन, ध्यान ।
८	२५	धीर, धनद, धन, पा० ३ ध्वन ।
९	१७	धन, बन्धन, बोध ।
१०	२६	वृकण ।
११	२६	धन, धनद, धीर ।
१२	२१	धन, सधन ।

कोषांक	श्लोकांक	
१५	२६	धन ।
१६	१४	धन, धनेश ।
२४	१९	धन, धनेश, अब्धि ।
२५	८६	धनद, धीर, ध्यान, धन, वेश्मन् ।
		धः
३	६७	धातृ विष्णु, गिरिजात्मन् ।
		ध्न
४	३४	अहि, बुध्न, धनिन् ।
		ध्ना
४	३५	धन्या, मातुली, साला, माला पा० ४ ।
		ध्नं
४	३५	धन, साधन, वन ।
		ध्य
४	१४	अन्ध ।
		ध्या
४	१४	अन्धा, क्षुधा, शुद्धा ।
		ध्यं
४	२२	अन्ध्य ।
		ध्र
४	७८	भूध्र, धारक, साक्षिन्, धृष्टद्युम्न, धरात्मज, वृकोदर, गदापाणि, गरुत्मत्, भ्रातृवल्लभ ।
		ध्रा
४	७९	धरा, कुध्रजा, कूलगा, खगा, पथिगा, अम्बुगा ।
		ध्रू
२	७०	यानमुख, मार, कम्पन ।
		ध्रं
४	७९	ध्रुव, धरण, धारा, धरस्थान, कूबर ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ध्व
४	३४	धव, अग्नि, वध, अध्वन् ।
		ध्वा
४	३४	धरा, धारा, वधूत्तमा, पा० ३ क्षमा, वधू, उत्तमा ।
		ध्वं
४	३४	धन्य, धूनन, ध्वस्त ।
		न
१	७६,७७	नर, सनाथ, अनर्थ, पा० ५ अनाथ, पृच्छा, निषेध ।
२	५२	नाभि, हेरम्ब ।
३	६७	अभाव ।
५	७४,७५,७७	हेरम्ब, नृ, पुरुष, नाद, संवाह्यज्ञान······, दन्त, अभिन्न, सूक्ष्म, प्रस्तुत, अपरिश्लेष, शून्य, रिक्त, रिक्त, प्रतिषेध, स्थिर, निश्चय ।
६	४५	हेरम्ब, वर्ष्मन्, सूक्ष्म, अपरिक्लिष्ट, शून्य, अभिन्न ।
८	२७,२८	बुद्धि, ज्ञान, बन्ध, पा० ५ मन्द, निषेध ।
९	१८,१९	स्वागत, बन्धु, सौगत, पा १३ बुद्धि, नेतृ, तरणि ।
१०	२७,२९	ज्ञान, स्थान, बुद्ध, निर्बन्ध, निषेध, प्रतिषेध ।
११	२७	ज्ञान ।
१२	२२,२३	नेतृ, तरणि, सौगत, बुद्धि, स्तुति, स्वागत, बन्धु, वृक्ष, सूर्य ।
१३	१२	पुनर्बन्ध, बुद्ध, पा० २ बन्धु ।

कोषांक	श्लोकांक	
१४	१३	जिन, पूज्य ।
१५	२८,३०	संविद्, स्थान, बुद्ध, निबन्ध, निषेध ।
१६	१५	सुगत, बन्ध, अनुगति ।
१७	१४	निषेध ।
१८	३५	निर्विकल्प, अप्रमेयाभ, अक्षर, वायुवेग, मनोवेग, इच्छारूप, ध्रुव ।
१९	१८,१९	सुगत, बन्ध, द्विरण्ड, प्रस्तुत, निषेध, उपमा ।
२०	३८	शौरी, मेषेश्वरी, दीर्घा, वामपादाग्रसंस्थित, नर, नदीन, नादी, अनुनासिक ।
२१	३४	प्रतिषेध, स्थिर, निश्चय, शुष्कवाद, शून्य, अपर-परिश्लिष्ट, अपर, पा० ४ परिश्लिष्ट, चर्वित, छिन्न, अतिभिन्न ।
२२	१२	रक्षा, कवि, वारिद ।
२३	२३	ज्ञान, निषेध, नेतृ ।
२४	२०	सुगत, वृन्द, स्तुति ।
२५	८९	हेरम्ब, वध्य, सूक्ष्म, अपरि-क्लिष्ट, शून्य, अभीष्ट ।
२४	९४	प्रश्न, वितर्क, विकल्प, अनुशय, नुगास्य (?) रुहय (?) ।
		ना
३	६७,७७	पुमान्, गरिमा, निषेधार्थे ।
५	७६,७७	संस्तुति, प्रतिषेध ।
६	४५	नाभि ।
८	२८	नर ।
१०	२९	निषेध, प्रतिषेध ।
११	२८	मनुष्य ।
१५	३०	निषेध ।
१७	१४	नर ।

कोषांक	श्लोकांक	
२५	९१	निःश्रुत, नर, नाभि, नेतृ, ज्ञान; बन्ध ।

नि

कोषांक	श्लोकांक	
१	७७	निषेधार्थे ।
२	५३	निश्चय, निषेध ।
३	६७	दुर्गति ।
५	७७	उपसर्ग ।
८	२८,२९,३०	श्रुत, नेतृ, क्षेप, पा० ७ क्षय, नित्य, भृश, अर्थ, आश्रय, राशि, कौशल, बन्धन, मोक्ष, संशय, दारुकर्मन्, पा० ८ दानकर्मन्, अधोभाव, उपरम, सन्निधान ।
१०	२९	क्रीत, निश्चय, व्यूह, निषेध ।
१३	१३	नेत्र ।
१५	२९	नर, भूप ।
१९	१९,२०	विवेश, भृश, नित्य, संशय, क्षेप, कौशल, उपरम, सामीप्य, आश्रय, दान, मोक्ष, अन्तर्भाव-बन्धन, राशि, अधोभाव, विन्यास ।
२३	२३	श्वसन ।
२५	९२,९३	सापेक्ष, नित्य, भृश, अर्थ, आशय, राशि, कौशल, बन्धन, मोक्ष, संशय, दानकर्मन्, अधोभव, उपरम, क्रीताद्यर्थ, नर, नृप, सन्निधान, निषेध, निर्णय, चय, व्यय ।
२६	९,१०,११	निवेश, भृश, अधोभाव, विन्यास, राशि, आश्रय, बन्धन, मोक्ष, दारकर्मन्, दर्शन, अन्तर्भाव, सामीप्य, कौशल, उपरम, नित्य, संयम, क्षेप ।

निर्

कोषांक	श्लोकांक	
१	७७	निषेधार्थे ।
१५	२९	निश्चय, निषेध, क्रीताद्यर्थ, चय ।

नी

कोषांक	श्लोकांक	
१	७८	लक्ष्मी, नेतृ ।
३	६७	राग ।
१०	२९	धुनी ।
११	२८	नेतृ ।
१२	२२	नेतृ पा० १ ।
१५	३०	नदी ।
२४	२१	नेतृ ।
२५	९४	नीड, नीर, नदी ।

नु

कोषांक	श्लोकांक	
१	७७,७८,७९	वितर्क, स्तुति, वारि, पृच्छा ।
२	५३	शब्द, स्तुति, पृच्छा, विकल्प ।
३	६७	देह ।
५	७८,७९	नानाप्रकार, भेद, अवधारण ।
६	४६	स्तुति ।
८	२८,३०	स्तुति, प्रश्न, वितर्क, विकल्प, अनुशय ।
९	१८	स्तुति, वृद्धि, वृक्ष ।
१०	२८	स्तव, विकल्प, प्रश्न, तर्क, निर्भर, अनुशय, नृप ।
११	२७	स्तुति ।
१३	१३	स्तुति ।
१४	१४	स्तोतृ, नुति ।
१५	२९	स्तोत्र, पा० ६ स्तोति,

कोषांक	श्लोकांक	
१५	२९	वितर्क, विकल्प, अनुशय, प्रश्न ।
१९	२०,२१	वितर्क, अपमान, विकल्प, अनुनय, अतीत, प्रश्न, हेतु, अपदेश ।
२५	६१	निषेध ।
		नुन्न
५	७६	प्रेरित ।
		नू
१	७८,७९	स्तुति, पातक, वायु, पृच्छा ।
३	६७	कलत्रवत् ।
		नूनं
५	७८	निश्चय, निषेध, तर्क, निश्चय ।
		नृ
१	७४	नर, नाथ ।
		ने
३	६८	सम ।
		नै
१	७८	तरणि ।
३	६८	कुरङ्ग, अग्नि ।
		नो
१	७६,७७	अनर्थ, पृच्छा ।
८	२८	निषेध ।
१०	२९	निषेध, प्रतिषेध ।
११	२९	निषेध, नकार, निःश्रुत ।
१५	३०	निषेध ।
१७	१४	निषेध ।
२५	६४	निषेध, हरि ।
		नौ
१	७८	तरणि ।
२	५३	काल, तरणी ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	६८	तरि, पुरुष, अमर ।
५	७६	नो ।
६	४६	तरणि, काल ।
८	३१	तरणी ।
१०	२९	तरी ।
११	२८,२९	तरणी, निषेध, नकार, आवयोः ।
१२	२२	तरणि ।
१३	१३	तरी ।
१४	१३	नेतृ, नो ।
१५	३०	तरणी ।
२३	२३	तरणी, पा० ४ तरण, पूरण ।
२४	२१	नौका ।
२५	६१	तरणि, शाल ।
		नं
१	७९	ब्रह्मन्, अनन्त, आनन्द, नन्दन ।
२	५२	ज्ञान, वाद्य, सूक्ष्म, पद्य, अपरिक्लिष्ट, शून्य, भिन्न ।
३	६८	नेत्र, अञ्जन, श्रोत्र, करण, कारण, सुख ।
६	४५	ज्ञान, संज्ञा ।
१४	१४	नेत्र, अञ्जन ।
२५	६०	निषेध, बन्धु, ज्ञान, वाद्य ।
		नः
३	६९	अभाव ।
८	२७	अस्मान्, अस्मभ्यम्, अस्माकम् ।
१०	२७,२८	अस्माकम्, अस्मान्, अस्मभ्यम् ।
११	२९	अस्मान्, अस्माकम्, अस्मभ्यम्, अस्मिन् ।
१५	२८	अस्मान्, अस्माकम्, अस्मभ्यम् ।

कोषांक	श्लोकांक	
२५	६०	अस्मान्, अस्माकम्, अस्मभ्यम्, निषेध ।
		न्यग्
७	७	निमन्, नीच, कात्स्न्र्य ।
१०	३७	नीच, कात्स्न्र्य, निमन् ।
१५	३०	निमन्, नीच, कात्स्न्र्य ।
२५	६५	निमन्, नीच, कात्स्न्र्य ।
		न्य
४	१४	नय, अर्णव, उज्ज्वल ।
		न्या
४	१५	नीति, नति, उग्राणी ।
		न्यं
४	२२	न्याय्य, नयन, वर ।
		नृ
४	८१	नर, नरक, अङ्गार, नामद, नार्मद, ह्लद ।
		नृा
४	८२	नारी, नर्मदा, दुष्टा, नरवाग्, नरकोद्भवा, पृथा, पुष्टा, परेशानी, परमानन्ददायिनी ।
		नृं
४	८२	गृह, नरक, अगार, गरुडाङ्ग, गरोद्भव ।
		न्व
४	३५	नव ।
		न्वा
४	३५	नवा, तन्वी ।
		न्वं
४	३५	नव, वस्तु ।
		प
१	८०	सूर्य, शोषण, वह्नि, पाताल, वरुण, अनिल, परित्राण, क्षेम, क्षेत्र, पा० ७ क्षत्र, पा० ७ नेत्र, निपात, पङ्कसङ्कुल ।
२	५४	पचन, शैल, प्रकाश, कौस्तुभ, क्षण, शुभलग्न ।
३	६९	पापिन्, पूषन्, वृषण, आत्मज ।
५	७९,८१	उपकार, वपन, पर्वत, क्षण, लग्न, पत्र, शास्त्र, अर्चा, आप्य, चाप, दैव ।
६	४६,४७,४८	पवन, शैल, प्रकाश, कौस्तुभ, क्षण, शुभलग्न, हेमन्, आप्ति, प्रपन्न ।
८	३१	पान, पवन, पथिन्, प्रौढ, वर्णक ।
९	१९,२०	पवन, पान, कुबेर, पश्चिम, पा० १ पार्श्वक, पृष्ठ ।
१०	३०	अम्भस्, पान, पातृ, समीर, मार्ग, प्रौढ ।
११	३०	पवन, पा० ५ पवमान, पावन, पातृ, वर्णक, प्रौढ, प्रकट, पथिन् ।
१२	२३,२४	कुबेर, पश्चिम, पवन, पान, पातृ ।
१३	१३	पातृ, पवन, जलपान ।
१४	१४	वात ।
१५	३१	पातृ, पयःमान, प्रौढ, पवन, मार्ग ।
१६	१६	कुबेर, पश्चिम, पवन ।
१७	१४	वायु, पान ।
१८	३६	अग्निबीज, रक्त, सर्वहरक्षण, स्त्रीआकर्षण, पुमानाकर्षण, नपुंसकाकर्षण, शिव ।

कोषांक	श्लोकांक	
१९	२१,२२	वात, अण्ड, पूत, पान, पातृ, रक्षण, पूत, पूरितक ।
२०	३९	तीक्ष्ण, लोहित, शूर, दक्ष-पार्श्व, पार्थिव, पद्मेश ।
२१	३५	अमृत, प्रसन्न, करभोरु, वारिधारा, कौस्तुभमणि-प्रकाश, सन्ततिशुभ-लक्षणोपेत ।
२२	१२	शैल, वन, वास ।
२३	२४	पवन ।
२४	२१	पूरण ।
२५	९५,९६	पवन, शैल, प्रकाश, कौस्तुभ, क्षण, शुभ, लग्न, पयःपान, प्रौढ, वर्णक, पथिन् ।
		पा
१	८२	लक्ष्मी ।
२	५४,५५	पातृ, पान, अम्बुधारा, सुधा, समिति ।
३	६९	अपर्णा ।
५	८०	सङ्गत, वारिधार, पान, सुधा ।
६	४७	यातृ, पान, अम्बुधारा, सुधा, सम्मति ।
८	३१	पातृ, श्रुत ।
९	१९	पान, पातृ पा० १४ ।
११	३०	स्तुति, पातृ ।
१४	१४	पान, पातृ ।
१६	१६	पान, पातृ ।
१९	२२	रक्षण, पान, पूत, पूरितक ।
२३	२४	पान, पातृ ।
२४	२१	पान, पातृ ।
२५	९६,९७,९८	पान, पात्र, अम्बुधारा, सुधा, सम्मति, स्त्रीपितृ, सुनृप, पाप, श्रुत, पातृ,

कोषांक	श्लोकांक	
२५	९८	पालक, वस्त्र, पार्थ, प्रयत्न ।
		पाप
५	८२	पुण्येतर ।
		पी
१	८२	लक्ष्मी ।
३	६९	पिपीलिका ।
		पु
१	८३	पटह, पा० ९ पोरह, पुरुषोत्तम ।
२	५५	आर्त्त, प्रपन्न ।
३	७०	पुत्र ।
		पुं
६	४८	पुरुष, परमात्मन् ।
२५	९८	पुरुष, परमात्मन् ।
		पू
१	८१	पवित्र, पृथिवी ।
२	५५	पुर, शरीर ।
३	७०	पुर, देह ।
५	८१	नगरी ।
६	४८	पुर, शरीर, पूरग ।
७	१२	शरीर, नगर ।
१०	३०	देह, पुर ।
१५	३१	शरीर, पुर ।
२५	९८	पुर, शरीर, पूरण ।
		पि
१	८३	पीडिताराव, सागर, साबर, वर ।
३	६९	पवित्र, अग्नि ।
		पे
३	७०	पेशी ।
		पै
३	७०	गालव ।

कोषांक	श्लोकांक	
		पो
३	७०	पौत्र ।
		पौ
१	८१	पृथिवी ।
३	७०	पुंस्, भूमि ।
		पः
३	७१	पापिन्, पूषन्, वृषण, आत्मज ।
		पं
१	८१	उच्चदेश, स्थल ।
२	५४	हेमन् ।
३	७०	प्रीणन, ऋण, पयस् ।
५	८०,८१	कनक, विपन्न, आप्य, चाप, दैव ।
२५	६६	पानमात्र, हेमन् ।
		पंपा
५	८२	सरोविशेष ।
		प्य
४	१५	पयस् ।
		प्या
४	१५	कृपा, रुचि ।
		प्यं
४	२३	कुप्य, पात्र ।
		प्र
४	८३	प्रकृष्ट, अन्धकाराति, मुराराति, कजोद्भव, काम, अराति, ध्रुव, अगस्त्य, अरुण, अरुणपितृ, भ्रमर ।
५	१२६	उपसर्ग, प्रकृष्ट ।
२६	१७	प्रकर्ष, गतादि ।
		प्रप
४	८१	तपुरार्थं ।
		प्रा
४	८२	प्रकृष्टा, महादेवी, महा-

कोषांक	श्लोकांक	
४	८२	लक्ष्मी, रजोद्भवा, मथुरा, मधुरा पा० १, मर्म-मार, अम्बा, क्षमा, क्षमा, क्षामनासिका ।
		प्रं
४	८४	ब्रह्मन्, गगन, भूरि, भ्रम-राङ्ग, धरान्तर, गङ्गातीर, पयस्, पेय, पाथस्, पारपर, परपर, सर ।
		प्ल
४	५२	प्लवङ्ग, प्लव, शूर ।
		प्ला
४	५२	पाटी, परमेश्वरी ।
		प्लं
४	५३	मांस, प्लवन, मद्य, पूरण, धरणीतल ।
		प्व
४	३६	वायु ।
		प्वा
४	३६	धूलि ।
		प्वं
४	३६	पुण्य, गिरिपतन ।
		फ
१	८४	अपारदर्शन, देव, न्याय, ज्ञान, नीरधि ।
२	५७	स्फार, परोक्ष ।
३	७१	माथ ।
५	८३,८४	झञ्झावर्त्त, प्रासाद, प्राङ्गण, रण, गो, पूत्कार, दिक्, कला, केश, कुटी, धनुः, विशेष्यनिघ्न, परोक्ष, हित ।
६	४६,५०	झञ्झानिल, आस्वाद, फूत्कार, पा० १ पूत्कार,

कोषांक	श्लोकांक	
६	४९,५०	वारण, रण, स्फार, परोक्ष ।
८	३२	निष्फल, जल्प, पुष्कर, भयरक्षण ।
९	२०	आह्वान, वात, वासन ।
१०	३१	डण्डापवन, फेन ।
११	३१	फम्फावात, निष्फलभाषण, पुष्कर, भयरक्षण ।
१२	२४,२५	कफ, वात, आह्वान, फूत्कार, निष्फलभाषण ।
१३	१३	झञ्झानिल, फेन ।
१४	१५	झञ्झानिल ।
१५	३१	झञ्झानिल, फेन ।
१६	१७	फूत्कार, निष्फलभाषण ।
१७	१४,१५	स्थूल, यज्ञसाधन, प्रकट, रण, झञ्झावात ।
१९	२२	यज्ञसाधन, स्फान, झञ्झा-वात ।
२०	४०	जनार्दनी, शिखिन्, रौद्री, वामपार्श्वकृतालय, फट-कार ।
२१	३६	अविहतगति, परोक्ष, चन्द्र-कला, कलेवर, कुटी, केका, शुचिभक्त, प्रभव, अपाची, प्रतिकार, पा० ५ अविततगति ।
२२	१२	कला, अनिल, शाखिन् ।
२३	२४,२५	अरण्यसंसुप्ति, प्रकट, रण, झञ्झावात, भयरक्षण, षषट्कार, पा० ६ षट्कार, फट्कार, स्थास्नु, पा० ७ स्थाणु, फूत्कार ।
२४	२२	कोप, निष्फलभाषण ।
२५	९९	जल्प, निष्फल, लोह, पुष्कर, भयरक्षण, झञ्झा-

कोषांक	श्लोकांक	
२५	९९	वात, फल, फेन, शस्त्राग्र ।
		फा
१	८५	मृग, मारीच, फणा, फण, पा० ३ भेषज ।
२	५६	निष्ठुरोक्ति, काल, केलि, कुटी ।
३	७१	फूत्कारवती, विषा ।
६	४९	निष्ठुरोक्ति, कला, केका, कुटी ।
८	३२	वात, फल, फेन ।
२५	१००	फाला, निष्ठुरोक्ति, पिण्ड, केका, कुटी ।
		फी
१	८६	सगर्भा, योषिता ।
		फु
३	७१	कार्तिक ।
१४	१५	मन्त्र ।
		फू
१	८६	रुषाकुल ।
३	७१	सर्प, वासव, शरणागत ।
८	३२	फूत्कार, पा० ११ पूत्कार ।
९	२१	फूत्कार, फूवक, निष्फल-भाषण ।
१०	३१	वातूल, कर्पूर ।
१३	१४	फूत्कार, निष्फलभाषण ।
१५	३२	फूत्कृति, वातूल, पा० १ फूत्कार ।
२३	२६	फूत्कार, निष्फलभाषण ।
२५	१०१	रह, फूत्कार, शोक, वातूल, कर्पूर ।
		फे
३	७२	फाल्गुन ।
१४	१५	रत, सङ्ख्य

कोपांक	लोकांक	
		फै
३	७२	शङ्ख ।
		फो
३	७२	काल ।
		फौ
३	७२	फणीश्वर, गर्ग, द्रोण, रण, बाण ।
		फः
३	७३	नाथ ।
		फं
१	८४,८५,८६	आयतन, बीज, फल, निष्फल, ध्वनि, फण, चक्रवर्तिन्, लाभ, लोभ, पा० ४ चक्रवर्त्मन्, विपर्यय, मूर्त्ति, डयन, अर्क, माहेन्द्र, जालक ।
३	७२	फल्गु, चारु ।
८	३२	वात, फल, फेन ।
१८	३८	भैरव, रक्ताभ, विजयप्रद, महाग्रहहर, सर्वज्वररोगविनाशन ।
१९	२३	रूक्ष, फूत्कार, निष्फलभाषण ।
२५	१००	अनुस्वार, परोक्ष ।
		फ्य
४	१५	फेन ।
		फ्या
४	१५	फणा ।
		फ्यं
४	२३	पयस्, मरण, रजस् ।
		फ्र
४	८५	फूत्कार, स्वन, फेन, स्फूरन्, स्पष्ट, अम्बर, चर ।

कोषांक	श्लोकांक	
		फ्रा
४	८५	अलीरपत्नी, कमला, खरी, क्षारनदी, सुरा ।
		फ्रूं
४	८६	स्फुरन्, वसन, जुष्ट, यन्त्र, स्फेटित, उद्धृत, प्राकृत, गगन, ध्वस्त, धृत, धरण ।
		फ्लं
४	५३	फल, बाणपूर, वदन, सकल, वपुस् ।
		ब
१	८७	वरुण, वारुण, वर, शोषण, पवन, गन्ध, वास, वृन्द, वारिधि ।
२	५७,५८	कुम्भ, वरुण, बिन्दु, विकल, गुरु, मद, विभूतिकार, कलह, पक्ष, गर्भ, पर्वन् ।
३	७३	बिम्ब ।
५	८५,८६	पुरुष, कुम्भ, विकल्प, गगन, गुरु, कलह, खगभेद, भेद, अल्प, पर्वन्, विभूत्तिकार (?), बिन्दु, हलाकृष्टविसर्जन ।
६	५०,५१	कुम्भ, वरुण, विन्दु, विकल्प, ख, गुरु, नद, विभूतिकार, कलह, पक्षिगर्भ, पर्वन् ।
८	३३	कुम्भ, वरुण, पद्म, कलह, विगति ।
९	२१,२२	प्रचेतस्, फल, कलश, वक्षःस्थल, गदा ।
१०	३१,३२	पद्म, घट, प्रचेतस्, शङ्कर, औपम्य ।
११	३२	प्रचेतस्, कलह ।

कोषांक	श्लोकांक	
१२	२५,२६	वरुण, कलश, फल, वक्षःस्थल, गदा ।
१३	१४	प्रचेतस्, कलश ।
१५	३२,३३	पद्म, वरुण, घट, शम्भु, वरुण ।
१६	१७	वरुण, कलश ।
१८	३८	अश्विनीबीज, पीत, रोगहर, पर, औषधमहावीर्यवृद्धिद, जयवर्धन ।
१९	२३,२४	वरुण, सिन्धु, भग, तोय, गत, गन्धन, तन्तुसन्तान, वपन ।
२०	४१	छलगण्ड, भूधर, भयापृष्ठगत, सुरस, वज्रमुष्टि ।
२१	३७	विमल, बिन्दु, विसर्ग, कुवलय, बलभद्राकर्षण-निभविकल्पबप्पीहक क्षिप, पा० ७ क्षेप ।
२३	२६	अम्बुभृद्, वायु, कुम्भ ।
२३	२६	प्रवेश, कलह ।
२४	२३	प्रचेतस्, कलश ।
२५	१०१,१०२	कुम्भ, वरुण, बिन्दु, विकल्प, भ, गुरु, मद, विभूतिकार, कलह, पक्षिगर्भ, पर्वन्, मूर्ख, बाल, कच, व्योमन्, पद्म, विगति ।
२६	११	उपमा, वरुण, अनुनय ।
		बा
१	८८,९०	वन्दन, वदन, वाद, वेदना, झञ्झावात, मन्त्र, सर्वमन्त्र, अमृतात्मक, पा० ६ मृगात्मक, वासन ।
२	५८	काहली, वल्ली, शृङ्खला, अमल, बल ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	७३	नर्मदासरित् ।
५	८६	वल्ली, काहली, शृङ्खला, बल, अमल ।
६	५१	काहली, वल्ली, शृङ्खला, अमल ।
१५	३३	औपम्य, गण ।
२६	१२	विकल्प, उपमा, एव, समुच्चय ।
		बाग्
१०	३२	वचस्, श्रुतदेवी ।
१५	३२	भारती, वचस् ।
		बि
३	७३	पूर्ण, पूषन् ।
५	८७,८८	अण्डज, व्योमन्, बिम्बत्व, पलिभेद, पुष्पभेद, मण्डल ।
९	२२	पक्षिन्, गगन ।
१०	३१,३२	नर, अवस्कर, वैश्य, पक्षिन्, नभस् ।
११	३२	पक्षिन्, गगन ।
१३	१४	ख, अण्डज ।
१५	३३	खग, ख ।
१६	१८	पक्षिचञ्चू, गगन ।
२४	२३	पक्षिन्, गमन, (गगन) ।
२६	१२	श्रेष्ठ, अतीत, नाना, पक्षिन् ।
		बिट्
१४	३२	प्रवेश, नर, वैश्य ।
		बी
१	८९,९०	गतार्थ, विशेषार्थ, वचन पा० ७, विनिपातित, खादन, जनन, प्रजन, कान्ति, गति पा० ७, नदीनाथ, नदी, पा० ८ वारि ।
३	७३	बटु, पाद ।

कोषांक	श्लोकांक	
		बे
३	७३	साक्षिन् ।
		बै
३	७३	कण, रण ।
२६	१३	सम्बोधन, पादपूरण, अनुनय ।
		बो
३	७४	प्राण ।
		बौ
३	७४	सरिद्गङ्गा ।
		बं
३	७४	बल, बहुल ।
१४	१६	प्रचेतस्, उपमान ।
२५	१०३	शम्भु, सुवायु, जल, जगत्, रक्षक, औषधीभेद, औपम्य ।
		बः
३	७४	बिम्ब ।
		ब्य
४	१५	अर्क ।
		ब्या
४	१५	अम्बा ।
		ब्यं
४	२३	सुख ।
		ब्र
४	८७,८८	बृहस्पति, आचार्य, बटु बुद्ध, अम्बरावृत, बाष्कल, पा० ३ बाकल, बहुद, अम्बाज; बहुव्रीहि, बुद्बुद, बाल, बाण, अबल, बद्ध, अम्बष्ठ, अब्द, बधिर ।
		ब्रा
४	८८	बाला, बधिरा, अम्बष्ठी, बट्वी, बद्धा, अमरेश्वरी ।
		ब्रं
४	८९	ब्रह्मन्, बल, उच्छ्रेष्ठ, बधिराङ्ग, अम्बर, बहुल, बाहुसार, बधिरास्य, बट, मुख ।
		ब्ल
४	५४	बाल, अघासुर, कंस, अज्ञ, अध्वन्, मार, अनल, यम ।
		ब्ला
४	५४	रक्ता, वरटी, पा० ६ बरटी, क्वङ्कुर, पा० ७ कङ्कुर, पा० ७ वराटी ।
		ब्लं
४	५४	बल ।
		ब्व
४	३६	ब्रह्मन्, गीष्पति ।
		ब्वा
४	३६	अम्बा ।
		ब्वं
४	३६	वाक्य, मधु, विद्विष ।
		भ
१	११	आकुल, अतिभीत, अमाकुल, पा० ११ भयाकुल ।
२	५९	शम्भु, अमर, भाव, शुक्र, अंश, जलद ।
३	७४	सोम ।
५	८८,८९,९१	जलभ(द), छाद, शम्भु, शिलीमुख, सुधी, श्रीकण्ठ, चन्द्र, वह्नि, विभावसु, सत्यवाद, प्रकोष्ठ, तन्वक्ष, संयुत ।

कोषांक	श्लोकांक	
६	५२,५३	शम्भु, भ्रमर, भाव, शुक्र, अंशु, जलद, गगन, राशि, तारा, पुण्ड्र, वक्त्र ।
७	६	शुक्र ।
८	३३	अलि, शुक्र, भाव ।
९	२३	भ्रमर, वन ।
१०	३३	काव्य, भ्रमर ।
११	३३	भ्रमर ।
१२	२६	भवन, पा० २ भ्रमर ।
१३	१४	अलि, शुक्र ।
१४	१६	पुष्पन्धय ।
१५	३३	अलि, शुक्र ।
१६	१८	भ्रमर ।
१८	३९	भार्गव, ज्ञेय, ज्योतिषाभ, अनामय, आयुर्द, आरोग्यद, श्रेष्ठ, अशेषश्रीविवर्द्धन ।
२०	४२	विश्वमूर्त्तिर्द्धि, अण्डेश, निद्रा, नाभिगत, भ्रुकुटी, भरद्वाज, जयावह, पा० ४ जयापह ।
२१	३८	आकाश, दीप्ति, नक्षत्रचार, दैवज्ञ, सिद्धमन्त्र, अभिमतभाव, पा० ८ अभिनवभाव, भौम, अलङ्कार ।
२२	१३	शुक्ल, गिरि, भूपति ।
२३	२७	भ्रमर ।
२४	२५	भ्रमर, भय ।
२५	१०४	शोभा, भ्रमर, भाव, शुक्र, अंशु, जलद, आकाश, मयूर, प्रभाव, सूर्य, शब्द ।
२६	१३	मयूर, शुक्र ।
		भा
१	९१,९३	भास्कर, भास्वर, भा, पा० १० भार्या, भोगयोषित्, पितृ, भ्रातृ, पितृव्य, भव, आशा, भूमि ।
२	५९	भू, अलङ्कृति, दीप्ति, किरण, द्युति ।
३	७४	कान्ति, मदिरा, इन्दिरा ।
५	८९,९०	दीप्ति, दारालङ्कृति, रश्मि ।
६	५२	व्यलङ्कृति, पा० २ अलङ्कृति, दीप्ति, किरण, द्युति ।
७	९,१६	अंशु, प्रभाव, मयूख ।
८	३३	दीप्ति ।
९	२३	दीप्ति ।
१०	३३	कर, प्रभाव ।
११	३३	दीप्ति ।
१२	२७	दीप्ति ।
१३	१५	कान्ति ।
१४	१६,१७	मयूख, शुक्र, दीप्ति, स्थानमात्र ।
१५	३४	प्रभाव, मयूख ।
१६	१९	दीप्ति ।
२३	२७	दीप्ति ।
२४	२४	दीप्ति ।
२५	१०४	काहला, वल्ली, शृङ्खला, अमल, व्यलङ्कृत, दीप्ति, किरण, द्युति ।
		भास्
७	१४	प्रभाव, मयूख ।
		भि
३	७५	पत्नी ।
		भी
१	९२	भीति ।
२	६०	भीति, खग ।
३	७५	भीति ।
५	९०	साध्वस ।

कोषांक	श्लोकांक	
६	५३	भीति, खग।
८	३३	भय।
९	२३	भीति।
१०	३३	साध्वस।
११	३३	भय।
१२	२७	भय।
१३	१५	भय।
१४	१७	भय।
१५	३४	भय।
१६	१९	भय।
२३	२७	भय।
२५	१०६	भीति, खग।
		भु
३	७५	भुजङ्ग।
५	९२	कपिल, पिङ्गल, वर्ण, बिम्बक।
		भू
१	९२,९३	वेदनायुक्त, भूमि, धन, सत्ता।
२	६०	स्थान, भूमि।
३	७५	मही, जाता, जात।
५	९०	भू।
६	५३	स्थान, भूमि।
७	९,१०	भूमि, क्षिति, स्थान।
८	३४	भू, स्थान।
९	२३	भूमि।
१०	३३	स्थिति, उत्पत्ति, मही।
११	३३	भूमि।
१२	२७	भूमि।
१३	१५	भू, स्थान।
१५	३४	उत्पत्ति, स्थिति, भूमि।
१६	१९	भमि।
१७	१६	स्थानमात्र, धरणी, योषित्।
१९	२५	स्थानमात्र, धरणी, योषित।

कोषांक	श्लोकांक	
२३	२७	भूमि।
२४	२४	भूमि।
२५	१०६	स्थान, भूमि।
२६	१४	पृथिवी, स्थानमात्र।
		भे
३	७५	कान्ति।
		भै
३	७५,७६	ब्रह्मन्, वरुण, यम, प्रहार, भीरु।
		भो
३	७६	कंस।
५	९०	सम्बोधन, माधव, मनीषिन्।
२४	२४	भय।
		भो भो
५	९०	सम्बोधन, माधव, मनीषिन्।
		भौ
३	७६	रमापति।
		भं
१	९२	नक्षत्र, भग, भोग।
२	६०	गगन, राशि, नक्षत्र, सुदर्शन।
३	७६	नक्षत्र, भय, ब्रह्मन्, भरण, धरण, पयस्।
५	८९	नक्षत्र, गगन, मन्त्र, चन्द्र।
७	९	उडु।
८	३४	धिष्ण्य।
९	२३	नक्षत्र।
१०	३३	धिष्ण्य, राशि।
११	३३	नक्षत्र।
१२	२६	नक्षत्र।
१३	१४	उडु।
१४	१७	नक्षत्र।

कोषांक	श्लोकांक	
१५	३३	धिष्ण्य, मेषादि ।
१६	१८	नक्षत्र ।
१७	१५	नक्षत्र, गभस्ति, भृगुनन्दन ।
१९	२४	नक्षत्र, गभस्ति, भृगुनन्दन ।
२३	२७	नक्षत्र ।
२४	२४	नक्षत्र ।
२५	१०६	गगन, रात्रि, तारा, पुर, चक्र ।
२६	१३	नक्षत्र ।
		भः
३	७७	सोम ।
		भ्य
४	१५	इभ्य, अभय, पुंस् ।
		भ्या
४	१५	अभय, पुंस् ।
		भ्यं
४	२३	भय, रौद्र ।
		भ्र
४	९०	ब्रह्मन्, प्रकर, पा० १ प्रकार, भार, भ्रमर, धूसर, अधर, भासुर, भ्रामक, भ्रष्ट, भीमसेन, अभय ।
		भ्रा
४	९१	भ्रष्टा, ब्राह्मणी, भा, हिडम्बा, धरणी ।
		भ्रं
४	९१	भासुर, अभ्र, भ्रामक, भ्रमण, पा० २ भरण, भय ।
		भ्व
४	३७	भव, भरत, ब्रह्मन् ।
		भ्वा
४	३७	गौरी ।
		भ्वं
४	३७	निवेशन ।
		म
१	९४	मन्त्र, मन्दिर, मान, सूर्य, चन्द्र, शिव, विधि, मायाविन्, वृथामन्त्र, मारण, प्रतिदान ।
२	६१	शम्भु, धातृ, इन्द्र, चन्द्र, मास ।
३	७७	स्तोम, सोम, राम, रण, गज ।
५	९२,९३	मञ्जुका, लक्ष्मी, मान, मातृ, मदिरा, मद, स्तेन, चेल, जन ।
६	५४	शम्भु, धातृ, इन्दु ।
७	१०	शम्भु ।
८	३४	चन्द्र, विधि, शिव ।
९	२४	शिव, चन्द्रमस्, वेधस्, बन्धन ।
१०	३४	शिव, चन्द्र, विधि ।
११	३४	शिव, चन्द्रमस्, वेधस् ।
१२	२७,२८	शिव, चन्द्रमा, वेधस्, बन्धन ।
१३	१५	शिव, विधि, चन्द्र, शिरस् ।
१४	१७	शिव, चन्द्र, विधि ।
१५	३४	विधि, चन्द्र, शिव, शिरस्, पा० २ विभु ।
१६	१९	शिव, चन्द्रमा, वेधस् ।
१७	१६,१७	यम, समय, चन्द्र, विष, शङ्कर ।
१८	४०	ईश्वर, ज्योतिरक्त, सुखावह, वश्य, आकर्षण, सन्तान, सिद्धदा, एकतत्पर ।

काषांक	श्लोकांक	
१९	२५	यम, समय, विष, मधुसूदन ।
२०	४३	वैकुण्ठ, महाकाळ, तन्द्री, जठरसंस्थित, मन्त्रेश, मण्डल, मानिन्, विष, सूर्य ।
२१	३९	मेधा, निवारण, साक्षिन्, सत्यवाद, हुतभुक्, सेनान्यङ्गज, पिङ्गलवर्ण, प्रकोष्ठ, पा० ९ सेनान्यञ्जन ।
२२	१३	शिव, ग्राम, अम्बु, भद्र ।
२३	२८	शिव, चन्द्रमा, वेधस् ।
२४	२५	शिव, चन्द्रमस्, वेधस् ।
२५	१०७	बन्धन, पिङ्ग, पिङ्गलवर्ण, आभीरवर्ण, मौलि, विधु, मल, मूल ।
२६	१४	शिव ।

मा

१	९५,९७	रमा, अर्चा, भू, मान, मात्रा, निषेधक्, धन, मान ।
२	६१,६२	मान, मृति, वेला, मेधा, पद्मा, प्रतिषेध, जन ।
३	७७	जालन्ध्री, व्यथा, लक्ष्मी, मातृ, मास, ईरित ।
५	९३	निवारण ।
६	५४,५५	चन्द्र, मास, मान, मृति, वेला, मेधा, श्री, मद्य, मातृ, प्रतिषेध, जन ।
७	१०	लक्ष्मी, वारण ।
८	३४,३५	मान, वारण, अस्मच्छब्दे द्वितीया, मातृ, लक्ष्मी, पा० २ मारण ।
९	२४	लक्ष्मी, मातृ, मान ।

कोषांक	श्लोकांक	
१०	३४	लक्ष्मी, मातृ, मान, निषेध, निशाकर, मास ।
११	३४,३५	लक्ष्मी, मातृ, मान, निषेध, माम् ।
१२	२७,२८	लक्ष्मी, मातृ, मान ।
१३	१५	मान, श्री, मातृ, वारण ।
१४	१७,१८	मातृ, रमा, आक्षेप, मान, बन्ध, निषेध ।
१५	३४,३५	श्री, मान, मातृ, निषेध, स्मृति ।
१६	१९,२०	लक्ष्मी, मार्ग, मातृ, अभिमान ।
१७	१६,१७	श्री, निषेध ।
१९	२६	पद्मालया, चन्द्रशेखर, वारण, विकल्प ।
२३	२८	लक्ष्मी, मातृ, मान ।
२४	२५	लक्ष्मी, मातृ, मान ।
२५	१०८,१०९	मेढ्राग्रमणि, जीव, हरि, मास, प्रतिषेध, वारण, जभन, रवि, माला, देशभेद, रमा, जन, मान, कृति, वेलान्त, धी, स्त्री, व्यय, वस्तु ।
२६	२४	रमा निषेध ।

मास्

१४	३५	मास, निशाकर ।

मि

१	९७	प्रेरणा ।
३	७८	कर्ण ।

मी

१	९६	हिंसा ।
३	७८	महाबाहु ।

मु

१	९६	बन्धन ।

कोषांक	श्लोकांक	
२	६२	बन्धन, पिङ्गलाभिधवर्ण ।
३	७८	मातृ ।
६	५५	बन्धन, पिङ्ग, पिङ्गलाभिधवर्ण, पिङ्गल अभिधवर्ण ।
११	३४	बन्धन ।
२४	२५	बन्धन ।
		मू
१	६६	बन्धन ।
३	७८	महाबल ।
८	३४	मौलि, बन्धन ।
१०	३५	बन्ध, वेश्मन् ।
१२	२८	बन्धन पा० ३ ।
१३	१६	पुनर्बन्धन ।
१५	३५	ग्रह, बन्ध, पा० ३ गृह ।
१६	२०	बन्धन ।
२३	२८	बन्धन ।
२५	११०	बन्धन, मुकुन्द, मौन, मोक्ष ।
		मे
१	६६	प्रतिदान ।
३	७८	सारङ्ग ।
८	३५	अस्मच्छब्दे षष्ठी ।
११	३५	मम ।
१४	१८	मम ।
२५	११०	अस्मच्छब्दे द्वितीया, षष्ठी, धेनु ।
		मै
१	६७	रण ।
३	७८	पूषन्, सारथि, प्रणत, वर ।
		मो
३	७९	पत्नी ।
		मौ
१	६७	बन्धन ।

कोषांक	श्लोकांक	
३	७९	सुरावास ।
		मं
१	६५	मौलि, मोघवृत्ति ।
३	७९	गल, मलिन, पल ।
२५	१०७	मूलक, शुभ ।
		मः
३	७९	स्तोम, सोम, राम, रण, गज ।
		म्न
४	४५	मान ।
		म्ना
४	४५	अमरोत्तरा ।
४	४५	मनस्, मरण, मधु ।
		म्य
४	१६	मय, यम, ईशान ।
		म्या
४	१६	रमा, सरमा, क्षमा ।
		म्यं
४	२३	अमाय, उत्कर ।
		म्र
४	९२	अमर, मृत्यु, अमर्त्य, मैथुनी, माधव, बल ।
		म्रा
४	९२	अमरी, मानवी, सारमानिनी, यामिनी, शुनी ।
		म्रं
४	९३	मैथुन, मृताङ्ग, मरण, मस्तक, मधु ।
		म्व
४	३७	वृक्ष ।
		म्वा
४	३७	धरा ।

कोषांक	श्लोकांक	
		स्वं
४	३७	ख, ब्रह्मन्, पुस्तक, उत्तम।
		य
१	९८,९९	सूर्य, तारक, चन्द्र, याचक, अतिकुत्सन, पा० १ अतिकुत्सित, यातृ, रुग्, लग्न, शयन, यान, वाहन, ।
२	६३	त्याग, निलय, वायु, याम, दातृ, यातृ ।
३	७९	पुञ्ज, असु, देवी, सूनु, ईश्वर।
५	९४,९५	पवन, यम, धातृ, यातृ, त्याग, भाव, चय, लिप्य, विनय, कल्पपादप, यशस्, रूपक ।
६	५६	त्याग, निलय, वायु, यम, दातृ, पातृ ।
८	३५,३६	वात, यम, धातृ, पशु, पा० ३ सूर्य ।
९	२५	वायु, यान, यातृ, छाग पा० ४ पान, पातृ, त्याग, दान।
१०	३५	ब्रह्मन्, वात, यम ।
११	३५	यम, पा० २ यशस्, धातृ, पा० ३ वायु।
१२	२८,२९	यशस्, वायु, यान, यातृ, त्याग ।
१३	१६	मातरिश्वन् ।
१४	१९	वात, यशस् ।
१५	३६	वेधस्, यम, वात ।
१७	१७	सर्वनाम, अनिल ।
१८	४१	वायुबीज, कृष्ण, बलविवर्धन, सर्वोच्चाटकर, क्रूर, सङ्ग्रामजयवर्धन ।
१९	२७	वायु, यमन ।

कोषांक	श्लोकांक	
२०	४४	क्षुधा, बाला, वायु, त्वग् पा० १, धृत, हृद्गतः, पुरुषोत्तम, यमुन, यामुनेय।
२१	४०	शोभनअवयवनिर्माण, रूपबीभत्स, अञ्जन, पाक, कल्पद्रुममञ्जरी, पिण्डाक्ष, पा० १ अर्जुनीपाक, पा० २ पिण्डोक्ष ।
२२	१३	यान, यम, मारुत ।
२३	२९	यम, श्रेष्ठ, यातृ, धातृ, यान, त्याग ।
२४	२६	यशस्, वायु, यान, यातृ, त्याग ।
२५	१११,११२, ११३	अङ्ग, निलय, वायु, यम, धातृ, पातृ, हेतु, ग्राम, कुल, वट, वात, यातृ, श्री ।
२६	१५	सर्वनामन्, अनिल ।
		यत्
६	५७	सर्वनाम, हेतु ।
		यदु
५	९६	पूर्वभव, अश्वमेघ, तुरङ्गम ।
		या
१	९८,९९, १००	रमा, मातृ, यातृ, युक्ति, यात्रा, गमन, निर्धन, अशन ।
२	६३,६४	यान, मञ्जरि, शोभा, लक्ष्मी, निर्मिति, सर्वनाम, व्यय, हेतु ।
३	८०	योनि ।
५	९५	यान, मञ्जरी, शोभा, लक्ष्मी, निर्मिति ।

कोषांक	श्लोकांक	
६	५६	यान, मञ्जरी, शोभा, लक्ष्मी, निर्मिति।
८	३६	यान, यातृ, श्री, खट्वाङ्ग।
१०	३५	रमा, यातृ, खट्वाङ्ग, रथ।
११	३६	नियन्तृ, लक्ष्मी।
१३	१६	यातृ, खट्वाङ्ग, यान, लक्ष्मी।
१४	१९	यान, त्याग, यातृ।
१५	३६	यातृ, खट्वाङ्ग, लक्ष्मी, यान।
१७	१७	श्री।
१९	२७	यात्रा, प्राप्ति, धूमित, त्याग, वारण, योग, समज्ञा, यान, गन्तृ।
२५	११२,११३	पान, मञ्जरी, शोभा, लक्ष्मी, प्रापण, खट्वाङ्ग, याज्ञिक, यातु।
		यायी
५	९६	गमनशील, रूढ, मन्त्रिन्।
		यि
३	८०	सङ्ग्राम।
		यी
३	८०	गज, सारथि, द्रुम।
		यु
३	८०	सर्प।
		यू
३	८०	यूका।
		ये
३	८०	सार्थ।
		यै
३	८०	वासव।
		यो
३	८१	पाद।

कोषांक	श्लोकांक	
		यौ
३	८१	कण, स्वर्ग।
		यं
१	९८,१००	वायुवेग, जल, संसार, सरित्पति, योग, योगाढच।
३	८१	यन्त्र, करण, करुण, मधु।
९	२५	यशस्।
१०	३५	जल।
१३	१६	पशु।
१५	३६	अम्भस्, पशु।
२५	११२	अम्भस्, पशु।
		य्य
४	१६	ज्य्य, विबुधाधीश।
		य्या
४	१६	शय्या।
		य्यं
४	२४	कृत, न्याय्य, आधार।
		यृ
४	९३	यादव, अर्जुन, जार।
		यॄ
४	९३	जरा, जरठा, अजरा।
		यृं
४	९४	जुष्ट, भोजन, आजन्, जायमान, जरोद्भव, पा० ३ नरोद्भव।
		यॄ
४	९४	कामिनी, प्रिया, पुष्टा, परमा, अम्बुधिपारगा।
		य्व
४	३८	यव, जवन, यक्ष।
		य्वा
४	३८	योषिज्जघनोत्तमा, यतन, यमन।

कोषांक	श्लोकांक	
		य्वं
४	३८	रुदन, मर्दन, जगत् ।
		र
१	१०१,१०२, १०३	सूर्य, अग्नि, धन, काम, नाद, वेदन, छेद, शम्भु, पा० २ शत्रु ।
२	६५	पावक, काम, क्षय, वज्र, शय अरि ।
३	८१	काम, वह्नि, सूर्य, तोयधि ।
५	९७,९८, १००	शिव, वह्नि, वज्र, काम, रवि, गुरु, अनाथ, कपिल, पिण्ड, वीर, पाक, तरीश्वर (तरि-ईश्वर), धान्य, रोमाञ्च, कुक्षि, नय, बुद्ध, भय, विशेष्यनिघ्न, वीरशक्त्यादि, तीक्ष्ण ।
६	५	पावक, काम, क्षय, वज्र, शब, ऋतु, पा० १ याचक ।
७	११	तीक्ष्ण, दहन ।
८	३६,३७	काम, तीक्ष्ण, वैश्वानर, नर, राम, वज्र, शब्द ।
९	२६,२७	काम, सूर्य, शब्द, इन्द्रिय, घनरोध, भय, ईश्वर, चालिन, वह्नि, पा० ६ गत ।
१०	३६	काम, वह्नि, शब्द, तीव्र, राम, नर, पवि ।
११	३६	राम, अनल, वज्र, शब्द ।
१२	२९,३०	राम, पा० ४ काम, अनिल, वह्नि, भूमि, धन, इन्द्रिय, इन्धन, रोध, पा० ५ रोग ।
१३	१६,१७	ध्वनि, तीक्ष्ण, वैश्वानर, काम ।
१४	१९	कामानल, वह्नि, तीक्ष्ण ।

कोषांक	श्लोकांक	
१५	३७,३८	स्मर, तीव्र, वैश्वानर, शब्द, राम, वज्र, नर ।
१७	१९	स्मय, जलद, तीक्ष्ण, वह्नि ।
१८	४२	कृशानुबीज, रक्ताभ, सर्वनाशन, जङ्गमाकर्षण, युद्ध, दिष्टसेनाबल ।
१९	२९	पावक, तीक्ष्ण ।
२०	४५	क्रोधिनी, भुजङ्गेशी, ज्वालिन्, रुधिर, पावक, रोचिष्मान्, दक्षिणांश, रुचिर ।
२२	१४	वज्र, अनल, काम ।
२३	३०	काम; अनल, वज्र, शब्द, रूप, भय, रक्षण, नीरद, पा० ११ श्रवण, नारी, विश्रवण ।
२४	२७	काम, अनिल, वह्नि ।
२५	११५	पावक, काम, क्षय, वज्र, शर, व्यय, रक्षण, भीति, रजस्, रङ्क, भय ।
२६	१६	पावक, तीक्ष्ण ।
		रा
१	१०१,१०२	रमा, रमणी, बाला, दान ।
२	६६,६७	हेमन्, शाला, आशंसा, गति, ध्वनि, स्वर्ण ।
३	८२	लक्ष्मी, समृद्धि ।
५	९९	आशा, धन, व्योमन्, शाला, गति, उत्तमाङ्ग, वदन, रुधिर ।
६	५९,६०	हेमन्, शाला, आशंसा, गति, धन, स्वर्ण ।
७	११	सुवर्ण, जलद, धन ।
८	३७	द्रव्य, कनक, आश्रय, नीरद ।

कोषांक	श्लोकांक	
१०	३६	स्वर्ण, धन, मेघ, स्थान ।
११	३७	धन, आश्रय ।
१३	१७	स्वर्ण, जलद, धन ।
१४	१६	अर्थ, रुक्म ।
१५	३७	कनक, विभव, मेष, स्थानक ।
१७	१६	स्वर्ण, वित्त ।
१६	२६	स्वर्ण, वित्त ।
२३	३०	धन, वैश्रव ।
२४	२७	दान, धन ।
२५	११५,११६, ११७	हेमन्, शाला, क्रोध, शु(सु)ख लीप्सा, राज्य, राग, नृप, राम, राढा, बलविक्रम, पूर्ण, रमण, क्रूर, विभव, मेघ, स्थानक ।
२६	१६	स्वर्ण, वित्त ।
		रि
२	६७	स्रव, क्षय ।
३	८२	कर्पूर, महेश्वर ।
२४	२७	गति ।
२५	११६	स्वसृ, गिरि ।
		री
१	१०३,१०४	श्रवण, नारी, पतिव्रता, मेरुपरिभ्रम, भानु ।
३	८२	कामिन्, मृगपत्नी, पा० १ नृपपत्नी, अग्नि ।
६	६०	स्रव, क्षय, पा० २ श्रव ।
८	३८	भ्रान्ति ।
१०	३७	भ्रम ।
१३	१७	भ्रम ।
१४	२०	श्रोतृ, भू ।
१५	३८	भ्रम, पा० ५ गत ।
१७	१६	भूमि ।
२५	११७	भ्रम ।

कोषांक	श्लोकांक	
		रु
१	१०३,१०४	शम्भु, भय, रशन, पा० २ शत्रु, मेरुपरिभ्रम, भानु ।
२	६८	युद्ध, भय, ध्वनि ।
३	८२	मृग ।
६	६१	युद्ध, भव, ध्वनि ।
८	३७,३८	सूर्य, रक्षण, भय, शब्द ।
६	२७	भूमि, रि(ऋ)चि ।
१०	३६,३७	भय, ध्वनि, रक्षण, आदित्य ।
११	३७	भय, रक्षण, पा० ४ वह्नि, शठ ।
१२	३०	भय ।
१३	१७	भय, सूर्य ।
१४	२०	शब्द, भय, भाग ।
१५	३७	रक्षण, भय, दिनाधिप, शब्द, पा ४ भीति ।
१७	१६	भय, सूर्य ।
२४	२७	शब्द ।
२५	११६	जाल, इच्छा, कान्ति, ऊर्णायुद्ध, नयध्वनि, कामिनी, वस्त्रिक ।
		रुग्
२	६८	ज्वाला, इच्छा, कान्ति ।
६	६१	ज्वाला, इच्छा, कान्ति ।
७	७	शोभा, किरण, इच्छा ।
१०	३७	छवि, वाञ्छा, घृणि, रुग्व्यथा ।
१५	३८	प्रभा, इच्छा, मयूख व्यथा, पा० ६ किरण ।
		रुरु
५	१०१	मुनिभेद, मृगभेद ।
		रू
३	८२	प्रजापति ।

कोषांक	श्लोकांक	
६	६१	स्वर्ण, कामरूपिन् ।
२५	११९	स्वर्ण, कामरूपिन् ।
		रे
३	८३	खेद, सम्बुद्धि, वापि ।
५	१००	नीचसम्बोधन ।
१५	३८	हूति ।
		रै
१	१०२	जल, स्वर्ण ।
३	८३	कृष्ण, वर्ण ।
१०	३७	हूति ।
		रो
३	८३	रोष।
		रौ
३	८३	भव, स्वर्ग ।
१	१०३	शम्भु ।
		रं
१	१०१,१०२	जल, रङ्ग, वेग, तीक्ष्ण, कर्कट, दृढ़, राध्य, रन्ध्र ।
२	६६,६७	रुधिर, मूर्धन्, ध्यान, व्योमन्, अण्ड, कुक्षि, वक्तृ, भय, विरस, त्याग, तीक्ष्ण ।
३	८३	रत्न, रोदन, धन ।
६	५९,६०	रुधिर, मूर्धन्, ध्यान, व्योमन्, अण्ड, कुक्षि, चक्र, भय, विरस, स्त्यान, तीक्ष्ण ।
२५	११८	रुधिर, मूर्धन्, ध्यान, व्योमन, अण्ड, कुक्षि, वक्त्र, भय, विरस, स्त्यान, तीक्ष्ण ।
		रः
३	८४	काम, सूर्य, वह्नि, तोयधि ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ल
१	१०४,१०६	महेन्द्र, मृत, गति, आलय ।
२	७१	खण्डन, आधान, इन्द्र ।
३	८४	चोर, लक्ष्मण ।
५	१०२	लवन, लून ।
६	६३	खण्डल, आदान, इन्द्र ।
८	३८,३९	चलन, बिडौजस्, अमृत, दिशा, पा० ६ क्षया ।
९	२७	इन्द्र, लवण ।
१०	३८	अमृत, चलन, शक्र ।
११	३८	अमृत ।
१२	३०,३१	दीप्ति, द्यु, भूमि, भय, आल्हादन, लवण, वात, दान, श्लेष, आशय, प्रलय, साधन ।
१३	१७	इन्द्र, चलन ।
१४	२३	इन्द्र ।
१५	३९	इन्द्र, चलन, अमृत ।
१७	२२	इन्द्र, लवण, व्याज ।
१८	४३	शक्रबीज, पीत, सर्वफलप्रद, अग्निस्तम्भ, जलस्तम्भ स्वेच्छास्तम्भ ।
१९	३१	शक्र ।
२०	४६	क्रिया, ककुद्गत, मांस, पिनाकिन्, भू, बलानुज, लम्पट, शक्र, वाद्य ।
२१	४१	द्रुमशाखा, ललितललितचाटुकारवचन, पा० ३ ललितश्चाटुकारवचन, लालितश्चाटुकारवचन, षट्चरण, पा० ४ षट्करण, मकरेन्द्र, मधुमत्त, मन्दगति, पा० ५ मण्डगति, मङ्गगति ।

कोषांक	श्लोकांक	
२२	२४	दीन, इन्दु, विहङ्गम।
२३	३१	इन्द्र, लवन, व्याज, दान, नास्तिक।
२४	२८	इन्द्र।
२५	१२२,१२३	खण्ड, अलि, तृषादान, इन्द्र, चलन, अनिल, बिडौजस्।
		लव
११	३८	दिक्।
		ला
१	१०४,१०६, १०७	लक्ष्मी, दान, लीला, विलास, उपालम्भ, लाभ, लोभ।
३	८४	ललना।
८	३८	आदान।
९	२७,२८	आदान, दीप्ति।
१०	३८	आदान।
११	३७	आदान।
१४	२३	दान, आश्लेष, लय।
१५	३९	दान।
१७	२२	दान।
१९	३१	दान, ग्रहण।
२४	२८	दान, श्लेषण।
२५	१२३,१२४	अमृत, दशा, अवन, तृण, इन्द्र, लवन।
५	१०३	उत्कृष्ट, चल।
		लाल
५	१०२	मुखनिःसृतनिष्ठचूत।
		लि
१	१०५	लाव, शब्द।
३	८४	सर्प।
१५	३९	लाव।
२५	१२३	लाव।

कोषांक	श्लोकांक	
		ली
१	१०५	लवन।
३	८४	धरा।
८	३९	श्लेष, वलय।
९	२८	भय, श्लेष, वलय, साधन, पा० ७ श्लेषण।
१०	३८	कङ्कण, श्लेष, बन्धन।
१३	१८	श्लेष, वलय।
१५	३९	द्रव, श्लेष, कङ्कण, दृढबन्धन।
१७	२२	श्लेष, चपल।
१९	३१	श्लेषण, चपल।
२३	३१	श्लेष, वलय, पा० १ श्लेष्मन्, ग्रीष्मन्।
२५	१२३	विश्लेष, कङ्कण, दृढबन्धन।
		लीला
५	१०२	विभ्रम।
		लु
३	८४	भू।
		लू
१	१०७	छेदन।
३	८४	रुद्र, गरुड, अरुण।
८	३८	लवन।
९	२७,२८	लवण, भूमि।
११	३७	इन्द्र, लवन।
१३	१७	लाव।
१४	२३	छेदक, लवण।
१५	३९	लवन।
२४	२८	लवण।
२५	१२४	लवन, तृण, इन्द्र।
		लै
३	८५	लव।
११	३८	श्लेष।

कोषांक	श्लोकांक	
		लं
१	१०७	बया, आदर।
३	८५	कुश, राम।
		लो
३	८५	मत्स्य।
२४	२८	श्लेषण।
		लौ
१	१०६,१०७	सुख, वाद, दृश्य, छेदन; पा० १ आश्लेष, सुख-संवाद।
३	८५	प्रजापति।
८	३८	बिडौजस्।
		लं
१	१०४,१०५, १०६	अम्बर, लोपन, अपूर्ण, दान, आदान, आश्लेष।
२	७१	लवण।
३	८५	लक्षण, सुख, नामन्, रक्षस्, श्रोत्र, वचस्, विष।
६	६३	लवण।
		लः
३	८६	चोर, लक्ष्मण।
		ल्य
४	१६	अयस्, उद्धत।
		ल्या
४	१७	अल्या, नलिनी।
		ल्यं
४	२४	निलय।
		लृ
४	९५	लण्ड, लालित, अल्क, अङ्क।
		लृा
४	९५	लाजा, लालिता, अम्बुला, ललिता, प्लावित।

कोषांक	श्लोकांक	
		लृं
४	९५	ख, लालित, ललनामुख।
		ल्ल
४	५०	लोक, तर्क।
		ल्ला
४	५०	गोरी।
		ल्लं
३	९७	परं, ब्रह्मन्, सनातन।
४	५०	लक्ष्म।
		ल्ल्या
४	१९	सर्वजगदम्बा, सर्वेशानी, सुरेश्वरी।
		ल्व
४	३९	लव, रामपुत्र।
		ल्वा
४	३९	लव्या।
		ल्वं
४	३९	सूदन।
		व
२	७२	सान्त्वन, वायु, संयम, वरुण, स्मर।
३	८६	पङ्क, सुखिन।
५	१०३,१०४, १०५	स्वान्तग, वात, मरण, संयम, अधर, प्रबोध, मदन, नयन, वाह, समुच्चय, उपमा, विकल्प, निश्चय।
६	६४	सान्त्वन, वायु, संयम, वरुण, स्मर।
७	१४	पश्चिमदिगीश, औपम्य।
८	३९,४०	वात, वरुण, रुद्र, सान्त्वन, एव, पा० ७ पदार्थ, उपमान, विकल्प, समुच्चय।

कोषांक	श्लोकांक	
९	२९	सत्वर, वारुण, वात, वह्नि, बुध, श्रेयस् ।
१०	३१,३२	प्रचेतस्, शङ्कर, पद्म, घट, औपम्य ।
११	३९	सान्त्वन, वरुण, वात ।
१२	३२	मानस, वरुण, सान्त्वन ।
१३	१८	महेश्वर, वरुण, पा० ४ पश्चिमदिगीश, मारुत, औपम्य ।
१४	२४	कुम्भ, वरुण, इव, सान्त्वन ।
१५	३२,३३	पद्म, वरुण, घट, शम्भु ।
१७	२४	पवन ।
१८	४४	वरुण, श्वेत, स्वेच्छाभिवृद्धिद, आकर्षण, जलध्वान, अशेषज्वरनाशन ।
१९	३२	सान्त्वन, वात, वरुण ।
२०	४७	वाल, वामांसनिलय, मेद, वारिद, वारुण, उत्कारी, उत्कारिन्, जल, खड्गीश ।
२१	४२	विकल्प, इन्द्रियसंयम, पञ्चशर, तूर्ण, समुच्चय, जाग्रद, सृष्टादर, विनिर्गम, वट ।
२२	१४	पाशिन्, रिण, वज्र ।
२३	३२	सान्त्वन, वरुण, पा० २ वात, गति, नयन, श्रेष्ठ, विकार ।
२४	२८	सान्त्वन, वरुण, वात ।
२५	१२५	गत्वर, वायु, संयम, वरुण, स्मर, कान्तार, अग्नि, बध, रुद्र, सान्त्वन ।

वा

कोषांक	श्लोकांक	
२	७२	विकल्प, उपमा, एवार्थ, समुच्चय ।
३	८६	त्रिदशप्रसू ।
५	१०४	शिक्षाभृद्, गन्ध, गति ।
११	३९	वितर्क, विकल्प ।
१४	२४	वात, तात, ग्रन्थि ।
१५	३३	औपम्य, गण ।
१७	२४	समुच्चय, विकल्प, उत्प्रेक्ष ।
१९	३३	विकल्प, उपमा, वितर्क, पादपूरण, समुच्चय, विस्रम्भ, नानार्थ, अतीत ।

वाग्

७	७	भारती, वचस् ।
१०	३२	वचस्, श्रुतदेवी ।
१५	३२	भारती, वचस् ।
२५	१२८	भारती, वचस् ।

वां

८	४१	युष्मच्छब्दे द्वितीया ।
११	४०	युवयोः ।
२५	१२६	युष्मच्छब्दे, विभक्तीनां द्वित्वे, विश्वासां ।

वि

२	७३	चक्षुस्, व्योमन्, वात, परमात्मन्, पक्षिन् ।
३	८६	पक्षिन्, गरुड, सूर्य, जलधि, सोम ।
५	१०४,१०६	विहग, गगन, उपसर्ग, विश्लेष, पृथक्, विकारक, विलय, विशेष, विहृति ।
६	६४	चक्षुस्, व्योमन्, वात, परमात्मन्, पक्षिन् ।
८	४०,४२	श्रेष्ठ, अतीत, पा० ८ भीत, नानार्थ, आकाश, विहग ।
१०	३१,३२	नर, अवस्कर, वैश्य,

कोषांक	श्लोकांक	
१०	३१,३२	पक्षिन्, नभस् ।
११	४०	पक्षिन्, गगन ।
१२	३२	पक्षिन्, गगन ।
१४	२४	खग, आकाश ।
१५	३३	खग, ख ।
१६	३४,३५	निग्रह, नियोग, पदपूरण, निश्चय, असहन, हेतु, अव्याप्ति, विनियोग, ईषद्, परिभव, शुद्धि, आलम्बन ।
२३	३३	पक्षिन्, गगन ।
२५	१२७,१२८	पदार्थ, उपमान, विकल्प, समुच्चय, श्रेष्ठ, अतीत, हेतु, नानार्थ, पादपूरण, नेत्र, व्योमन्, वार, परमात्मन्, पक्षिन् ।
		विट्
२	७३	पुरीष, जन, वैश्य ।
६	६५	वैश्यजन, पुरीष ।
७	१५	प्रवेश, नृ, वैश्य ।
१५	३२	प्रवेश, नर, वैश्य ।
२५	१२६	वैश्य, जन पुरीश, परदाररत, काक, प्रदेश, कुण्डल, कटि ।
		वी
३	८७	विष्णु ।
२५	१२८	विवाद, विज्ञान ।
		वु
३	८७	पदाति ।
		वू
३	८७	सङ्घ, गज ।
		वे
३	८७	पारिजात ।
		वै
३	८७	सार ।

कोषांक	श्लोकांक	
८	४०	हेतु, पादपूरण ।
१६	३४	सम्बोधन, पादपूरण, अनुनय ।
		वो
३	८७	काल ।
		वौ
३	८७	सुखावह ।
		वं
३	८८	सुख, वसन, रक्त, वपुस्, वचन, आसुर ।
५	१०४	शिक्षाभृद्, गन्ध, गति ।
१७	२३,२४	प्रचेतस्, इव, गन्धन, सन्तान ।
१६	३२	प्रचेतस, इव ।
२५	१२४	शत्रुहनन, वंश, गिरिभेदक ।
२६	१६	प्रचेतस् ।
		वः
३	८८	पङ्गु, सुखिन् ।
८	४१	युष्मच्छब्दे द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी ।
११	३६,४०	युष्माकम्, युष्मभ्यम्, युष्मान् ।
२५	१२५	युष्मच्छब्दे, द्वितीयायाः, चतुर्थ्याः, षष्ठ्याः, बहुत्वके ।
		व्य
४	१७	अब्धि, वयस्, पक्षिन्, कूबर, वायु, व्याल, ईशान ।
		व्या
४	१७	भव्या, वडवा, सुधा ।
		व्यं
४	२४	वियत्, वदन, वस्त्र ।

कोषांक	श्लोकांक	
		व्र
४	९६	वर, अवर, वास्त्र, पाडव, वासर, अम्बुधि।
		व्रा
४	९६	श्रेष्ठा, गिरिजा, लक्ष्मी, रत्नाकरगता।
		व्रं
४	९७	लुलायमुख, भीम, भासुर, श्रेष्ठ।
		श
१	१०८,१०९	सूर्य, शोभन, शीत, शशाङ्क, अच्छवारि, रश्मि, शस्त, स्वच्छ, महेश, महार्णव, पा० २ प्रशस्त।
२	७६	परोक्ष।
३	८८	शम्भु।
५	१०७,१०८	गिरिश, शिष्य, स्व, तनूकृत, वल्मीक, कच्छप, शयन, आशिस्।
६	६७,६८	वल्मीक, शिव, कूर्म, भूप, शिष्य, तनूकृति।
९	२९,३०	शर्व, शास्त्र, परोक्ष।
१२	३	सीमन्, शयन, हिंसा।
१४	२५	शतायुष्, हिंसा।
१८	४५	शङ्कर, तेजःवर्धन, सौभाग्यवर्धन, अन्योन्यकलह, देववैरिनाशन।
१९	३६	शस्त्र।
२०	४८	मृत्यु, बक, वृषघ्न, हृद, दक्षकरस्थिति, शङ्कुकर्ण, अस्थिन्।
२१	४३	इन्द्रधनु वल्मीक, कच्छप, नृपभक्ति, देवपूजा, कुस्त्रीकृत (?),
२१	४३	पा० ६ कुश्रीकृत, कुस्वीकृत, दग्ध, कमला।
२२	२४	अस्व, शूद्र, अम्बु, भर्तृ।
२३	३३	परोक्ष, शान्ति, पा० ३ शान्त, शोभा, वरेण्य।
२५	१३३	परोक्ष।
२६	२०	शस्त्र।
		शा
१	१०८	रमा, अम्बा।
३	८८	गौरी, कमलालया।
५	१०८	वेदपूजा, शान्त, शोभा, वरेण्य, शक्ति, भक्ति, रमा।
६	६७,६८	देवपूजा, शक्ति, शोभा, वरेण्य, रमा।
८	४२	शान्त, सास्ना।
११	४१	शान्त।
१३	१९	सास्ना।
१४	२५	मातृ।
१६	२२	शास्तृ।
१९	३७	शास्त्र।
२५	१३०,१३१	शात, शास्ता, शाखा, मरण, वाल्मिक, शिव, कूर्म, भूप।
		शि
२	७६	शिव, शिवकान्ता, स्वाप, निर्वाण, हिंसा।
३	८९	पक्षिन्।
५	१०७	सदाशिव।
६	६९	शम्भु, विवश, अन्त।
२५	१३१,१३२	तनु, कुति (कुतु), देवपूजा, शक्ति, शोभा, वरेण्य, बाणौघ, हनन,

कोषांक	श्लोकांक	
२५	१३४	जीव, शम्भु, शिवकान्ता, बाण, हिंसा, स्वाप ।
		शी
१	१०८	आशीर्वाद ।
३	८९	सौभाग्य, शिशु ।
६	६९	बाण, हिंसा, स्वाप ।
८	४२	शय, हिंसन ।
९	३०	शय ।
१०	३९	स्वाप ।
११	४१	शयन ।
१३	१९	शयन ।
१४	२६	स्त्री, स्वस्त्री, परस्त्री, सदन, निद्रा ।
१५	४०	शय ।
१६	२३	शयन ।
१९	३७	शयन ।
२३	३४	शयान, पा० ५ शयन शपन, निन्दा, हिंसा ।
२४	२९	शयन ।
२५	१३२,१३४	शोक, क्षय, बुध, रमा, शय ।
		शु
३	८९	शार्कर, अचल ।
८	४३	चन्द्र ।
१०	३९	निशानाथ ।
११	४१	हिंसा ।
१३	१९	निशाकर ।
१५	४०	विधु, पा० ७ सुधाकर ।
१६	२३	हिंसा ।
२५	१३०,१३४	शोक, स्तब्ध, स्वन, शूद्र, वसुधारक, निशाकर ।
		शू
३	८९	शूद्र ।
५	१०९	वितति, हिंसा ।

कोषांक	श्लोकांक	
९	३०	हिंसा ।
२४	२९	हिंसा ।
		शृ
५	१२९	शैलकटक ।
		शे
३	८९	शिरीष, अग ।
		शै
३	८९	धन्धुहा, नृप ।
		शो
३	९०	दोष ।
		शौ
३	९०	शिशु, शङ्ख ।
		शं
१	१०८	सुख ।
२	७६	सुख, अर्थ, अज्ञ, शक्ति ।
३	९०	सुख, शरण, वपुस् ।
६	६८,६९	शास्त्र, श्रेयस्, मङ्गल, कीर्त्ति, शक्ति, आयुध, स्वर्ग, सौख्य ।
८	४२	श्रेयस्, सुख ।
९	३०	श्रेयस्, पा० ८ शास्त्र, शयन ।
१०	३९	सुख, श्रेयस् ।
११	४१	श्रेयस् ।
१२	३३	सुख, शङ्कर, श्रेयस् ।
१३	१९	शुभ ।
१४	२५	धर्म ।
१५	४०	सुख, कल्याण ।
१६	२२	श्रेयस् ।
१९	३६	श्रेयस् ।
२३	३४	शिव, पा० ४ सिता, शोभा ।
२४	२९	श्रेयस्, शास्त्र ।
२५	१३२,१३३	शास्त्र, प्रेयस्, मङ्गल,

कोषांक	श्लोकांक	
२५	१३२,१३३,१३४	कीर्त्ति, शस्त्रायुध, स्वर्ग, सत्य, शङ्कर, शेष, कान्तावदनलोकन, सुख ।
२६	२०	सुख, शर्मन्, श्रेयस् ।
		शः
३	६०	शम्भु ।
		श्य
४	१८	आश, आशय, नारी ।
		श्या
४	१८	वेश्या, कृषि ।
		श्यं
४	२४	शाप, पा० २ स्वाप, वश्य ।
		श्र
४	६७	शर, असारद, असार, शरण्य, सारथि, शिव ।
		श्रा
४	६८	गौरी, रमा, रामा, रत्नाकरकृतालया ।
		श्री
२	६६	वेष, रचना, वृक्ष, भा, सम्पत्, सरथ, वाणी, लक्ष्मी, लवङ्ग, विष, बिल्व ।
५	१२७	बिल्ववृक्ष, विष, लक्ष्मी ।
६	६२	वेष, रचना, शोभा, सम्पत्, सरल, शाखिन्, वाणी, लक्ष्मी, लवङ्ग, विष, बिल्व ।
७	१२,१३	लक्ष्मी, सरलद्रव, वेषोपकरण, वेषरचना, मति, गिर्, शोभा, त्रिवर्ग, सम्पत्
१०	३८,३९	सरलद्रव, सम्पत्, लक्ष्मी, प्रभा, भारती ।
१४	२१,२२	लक्ष्मी, भारती, शोभा,

कोषांक	श्लोकांक	
१४	२१,२२	प्रभा, सरलद्रुम, वेश, त्रिवर्गसम्पत्ति, वेषोपकरण, पा० ४ शेषोकरण, मति ।
१५	४०	प्रभा, भारती, लक्ष्मी, सम्पत्, सरलद्रव ।
१७	२०,२१	पेष, रचना, शोभा, भारती, सरलद्रुम, लक्ष्मी, तिसर्गसम्पत्ति, वेषोपकरण ।
१९	२९,३०	वेश, रचना, शोभा, भारती, सरलद्रुम, लक्ष्मी, त्रिवर्ग-सम्पत्ति, विविधोपकरण, विभूति, मति ।
२५	१२०,१२१	वेष, रचना, शोभा, सम्पत्, सरलशाखिन्, कन्या, चरुकामिनी, सरलद्रव, वाणी, लक्ष्मी, लवङ्ग, विष, बिल्व, जटा, द्राक्, पूरण, व्योमन्, मन्दगति ।
२६	१८	वेश, रचना, शोभा, भारती, सरलद्रव, लक्ष्मी, तिवर्गसम्पत्ति, वेशोपकरण ।
		श्रं
४	६८	शरण्य, सुनृ्ण (?) पा० ४ सुतूण, सुमुण, तारुण्य, तादृक्, शिव ।
		श्ल
४	४८	शिल, शलभ, शुक्ल ।
		श्ला
४	४८	शलाका, शिला ।
		श्लं
४	४८	शुक्ल, चूर्ण, आधार, गगन पा० ४ गमन, शूलभृत्, शिरस् ।

कोषांक	श्लोकांक	
		श्व
४	४०	प्रातरशन, हय ।
		श्वा
४	४०	अश्वा, चन्द्रमापत्नी ।
		श्वं
४	३९,४०	शल्य, शरण, यन्त्र, मैथुन, गगन, पा० ५ गमन, गत, शयन, यान ।
		ष
१	१०९	अतिरोष, अपवर्ग, प्रक्षर, सानु, वेधस्, पा० ३ अतिरोग ।
२	७७	विषय, स्वर्ग ।
३	९०	खञ्ज, वह्नि, सूर्य, रण, कण, परिखा ।
५	१०९,११०, १११	त्रिदिव, परोक्ष, मधुरा, अवसान, गर्भमोह, सुषेण, नित्राण, निवह, रव, चैत्यादि, विशेष्यनिघ्न, श्रेष्ठ ।
६	६९	स्वर्ग, विषय ।
८	४३	सदार, पा० ११ सादर, इष्ट ।
९	३१,३२	श्रेष्ठ, गम्भीरलोचन, खङ्ग, गर्भविमोचन, ईश्वर, उपसर्ग ।
१०	३९	वर ।
११	४२	श्लेष्मन् (श्लेष्मा), पा० ८ श्रेष्ठ, सदार ।
१२	३४	श्रेष्ठ, गम्भीरलोचन, उपसर्ग, परोक्ष ।
१३	१९	श्रेष्ठ ।
१४	२६	श्रेष्ठ, गर्भविमोचन ।

कोषांक	श्लोकांक	
१५	४१	श्रेष्ठ ।
१६	२३	श्लेष्मन् ।
१८	४६	द्वादशादित्य, ज्योतिर्वर्धन, आरोग्यवर्धन, समन, सर्वरोगाभिवर्धन, आयुरभिवर्धन, विद्याभिर्धन ।
१९	३७	कच, श्रेष्ठ ।
२०	४९	वृष, श्वेत, ईश्वर, श्वेतेश्वर, पीता, मज्जा, हृद्, वामबाहुग, षडानन, ज्वर ।
२२	१५	शून्य, अर्क, अग्नि, कीनाश ।
२३	३५	परोक्ष ।
२४	३०	खङ्ग ।
२५	१३५	स्वर्ग, विषय, श्रेष्ठ, सारस, इष्ट, स्तम्भ, खर्जूर ।
		षा
१	१११	वृषस्यन्ती, सती, नभस्, नक्षत्र ।
२	७७	श्री ।
३	९१	खरी, शावा ।
६	७०	रमा ।
९	३२	गौरी ।
२३	३५	लक्ष्मी ।
२५	१३६	रमा ।
		षि
३	९१	शङ्ख, वर्तुल ।
		षी
३	९१	पुत्र ।
		षु
१	१११	अनित्य, नृप, उत्तम, नृपोत्तम ।
३	९१	खुर, पुर ।
१६	२३	गर्भविमोचन ।

कोषांक	श्लोकांक	
२५	१३५	प्रसूति।
		षू
३	६१	सोम, म्लेच्छ।
८	४३	प्रसव।
९	३२	स्वर्गविमोचन।
१०	३९	प्रसूति।
११	४२	गर्भविमोचन।
१२	३४	गर्भमोचन।
१३	१९	गर्भविमोक्ष।
१५	४१	प्रसूति।
१६	२३	गर्भविमोचन।
२४	३०	गर्भविमोचन।
		षे
३	६२	सार्थ।
		षै
३	६२	खर, पार।
		षो
३	६२	देह, मलिन, जन।
		षौ
१	१११	सुख, दुःख, सम।
३	६२	खट्वा, धरणी, बुद्धि।
		षं
१	११०	नार्याश्लेष, सुख, पण्डित, ऊर्मिरहित, जालक, भेषज।
२	७७	विरासक, गर्भमोक्ष, मर्षण, परोक्ष, श्रेष्ठ।
३	६२	सस्य, मधु, धारण।
६	७०	गर्भमोक्ष, अवसान, मर्षण, परोक्ष, श्रेष्ठ।
२५	१३६	गर्भमोक्ष, अवसान, मर्षण, परोक्ष, श्रेष्ठ।
		षः
३	६३	खञ्ज, वह्नि, सूर्य, रण, कण।

कोषांक	श्लोकांक	
		ष्ट
४	११०	षण्ठ, अनुस्वार, अङ्गार, पा० ७ अगार षण्ढ, मुखर, अघासुर, असुरसत्तम, गोविन्द, गरुड, गण्ड, घास, अगार, अगर, अमर।
		ष्टा
४	१०९	घुष्टा, गृहणी, गाली, सूर्य-पत्नी, जलालया।
		ष्टि
४	१०८	यष्टि, विष्टि, आवृष्टि, आवृत्ति, वरुणाङ्गना।
		ष्टी
४	१०८	यष्टी, सरमा, भ्रष्टा, आमका, आभिरासुरी, आमिरी, पा० ६ सुरी।
		ष्टं
४	१०९	श्रेष्ठ, शरण, साधु, गदन, वदन, मधु।
		ष्ट्र
४	१०७	भ्रष्ट, शकट, व्रात्य, विप्र, वरुण, आसव।
		ष्ट्रु
४	१०७	सुष्ठु, शरण, भ्रष्ट, भासुर, भक्त।
		ष्य
४	१८	प्रेष्य।
		ष्या
४	१८	सुरा, शुद्धा।
		ष्रू
४	६९	सुरेश, अदिति, ईश, अर्क, अरुण, अर्णव, उरुक्रम।

कोषांक	श्लोकांक	
		षृा
४	९९	गौरी, सारवत्पत्नी, वारणा, परमा, अमरी ।
		षृं
४	१००	कष्ट, फरुण, काष्ठ, कोमलेतर, उज्ज्वल ।
		स
१	११२	सोम, सोमपान, सूर्य, पक्षिन्, तापस, वृष, सदानन्द ।
२	७८	उमासुत, वायु, देह, भास्, श्री, द्रु, वाजिन् ।
३	९३	सूर्य ।
५	११२	गौरीपुत्र, प्रभञ्जन, धर्म, हित ।
६	७१	उमासुत, वायु ।
८	४३,४४	सूर्य, परोक्ष, सङ्ग, शोभना, प्रकृष्ट, समर्थ, तदःस्थाने प्रथमान्तः, स्मृति, लक्ष्मी ।
९	३३,३४	कोप; धनुस्, परोक्ष, ईश्वर, काम, वरण, शूलिन्, सत्कार, वारण ।
१०	४०	परोक्ष ।
११	४३	परोक्ष, काम, कोप, वारुण, सूर्य ।
१२	३५	कोप, वरण, शूलिन्, ईश्वर ।
१३	१९	परोक्ष ।
१४	२७	श्री, श्रुत, अच्युत, पार्वती ।
१५	४१	परोक्ष ।
१६	२४	परोक्ष, कोप, वारण ।
१८	४७	भारतीबीज, श्वेत, सारस्वतप्रद, प्रतिविद्वज्जनजय, परवश, योषितद्वश ।
२०	५०	भृगु, श्वेत, हंस, ह्रद, दक्षिणपादग, समय, सामग, शुक्र, सङ्गति, शशिन् ।
२१	४४	साकार, प्रभञ्जन, अविचल, शकटपथ, ध्यान, सधर्मशून्य, देहकला, उमातनय ।
२२	१५	अस्त्रभुक्, सिंह, दुर्जन ।
२३	३५	श्रेष्ठ, शूलिन् ।
२४	३०	परोक्ष ।
२५	१३७,१३८, १३९	मदन, वायु, परोक्ष, सूर्य, सनातन, सत्यवत्, शङ्का, सङ्ग, शोभना, प्रकृष्ट, समर्थ, प्रथम, तदवस्थान, निवास, सफल, अलिनिकर, नीर, क्रोध, गर्भोपभाषण ।
		सत्
२	८०	सत्य, विद्वस्, श्रेष्ठ, साधु, उडु ।
६	७२	सत्य, विद्वस्, श्रेष्ठ, साधु ।
७	९	विद्यमान, सत्य, प्रशस्त, अर्चित, साधु ।
१०	४१	पूजित, सत्य, साधु, शोभा ।
१५	४१,४२	शोभन, प्रशस्त, विद्यमान, सज्जन, सत्य, पूजित ।
२५	१४१	सत्य, विद्वस्, श्रेष्ठ, साधु ।
		सन्
२५	१४२	नित्य, शोभन, व्योमन्, विद्यमान, सत्, स्वादि, पूजित ।

कोषांक	श्लोकांक	
		सा
१	११२,११४	श्री, देवी, सरस्वती ।
३	९३	सीता ।
५	११२	गौरीपुत्र, प्रभञ्जन, धर्म, हित, देहकान्ति ।
६	७१	देहकान्ति ।
९	६३	लक्ष्मी, गौरी ।
१०	४०	लक्ष्मी ।
११	४२	लक्ष्मी ।
१२	३५	लक्ष्मी, गौरी ।
१३	२०	लक्ष्मी ।
१४	२७	अन्धु, रमा, रति ।
१५	४१	श्री ।
१६	२४	लक्ष्मी ।
१९	३९	जीवेच्छा, पञ्चवक्त्र, भृगु, भास्, निशापति, शक्ति,
२४	३०	लक्ष्मी ।
२५	१३९	स्मृति, लक्ष्मी, रामा, देहकान्ति ।
		सि
१	११४	परोक्ष ।
३	९३	सखिन्, अमर ।
		सी
३	९३	सुखिन् ।
		सीसं
५	११४	धातुभेद ।
		सु
१	११३	पूजा ।
३	९३	कुठार, अर्क ।
५	११३	गर्भमोक्ष, सन्धान, विनिवारण, ज्ञान, रथपथ ।
१९	३९	प्रसव, गर्भमोचन ।
२५	१४१	सेवन, भृत्य, पूजन ।
२६	२१	पूजा, भृश, अनुमति,

कोषांक	श्लोकांक	
२६	२१	कृच्छ्र, समृद्धि ।
		सू
१	११३,११४	मातृ, सोमसू, प्रसवार्त्ता, नितम्बिनी ।
२	७९	प्रेरण, गर्भमोक्ष ।
३	९३	धरा, गर्भिणी, नरी ।
६	७२	प्रेरण, गर्भमोचन ।
२५	१४०	शब्द, प्रेरण, गर्भमोक्षण ।
		से
२	७९	अभिधेय, सेवन ।
३	९४	सार ।
६	७३	सेवन, सेवक ।
१४	२७	श्री, श्रुत ।
		सै
३	९४	शुक, स्वाद ।
		सो
३	९४	सोम ।
		सौ
३	९४	सहोदर ।
		सं
१	११२,११३, ११४	वन, धन, यौवन, वस्तुवृन्द, परोक्ष ।
२	७९	पक्षिस्पन्दन, ज्ञान, ध्यान, निवारण ।
३	९४	सुख, शरण, कार्य, प्रधान, सरण, वर, पा० १ गमन ।
५	११४	श्रेष्ठ, विकल्प, सद्वृत्त, उपसर्जन ।
६	७१,७२	स्यन्दनपथ, ज्ञान, ध्यान, निवारण, ऋक्ष ।
८	४३,४४	शङ्कु, पा० १२ सङ्कोच, सङ्ग, शोभन, प्रकृष्ट, समर्थ ।
११	४३	सम्यक् ।

कोषांक	श्लोकांक	
२५	१४०	स्यन्दन, मार्ग, ज्ञान, ध्यान, विचारण, नक्षत्र ।
२६	२०	सङ्ग, प्रकृति, शोभना, समर्थ ।
		सः
३	९४	सूर्य ।
		स्क
४	४६	शुष्क, स्कन्धशूर ।
		स्का
४	४६	स्कन्दजननी, सुरा ।
		स्कं
४	४६	शुक्र, शरण, वृत्त, वादित्र, वदन, पा० २ गदन, सुख ।
		स्त
४	१०५	सूत ।
		स्ता
४	१०५	प्रशस्ता, शदा, पा० ३ सदा, पक्षिपत्नी, पाटलगो ।
		स्ति
४	१०५	सुर, शङ्ख, सुता, सारस-योषिता ।
		स्तु
४	१०६	सारस्तूण, आचार्य, लक्ष, पा० ४ लक्ष्य ।
		स्तू
४	१०६	तोरण ।
		स्तं
४	१०६	शस्त, शरण, राजगृह, गगन, उद्धत ।
		स्त्री
२	६८	कामिनी, वस्त्रिक ।
५	१२८	स्त्री ।
६	६१	कामिनी, वस्त्रि(र्मि)क ।
		स्न
४	४४	सार ।
		स्ना
४	४४	प्रमुच्छ्रेष्ठा, पा० १ प्रम-च्छ्रेष्ठा ।
		स्नं
४	४४	स्नान, मधुवारण ।
		स्फ
२	५६	झञ्झानिल, आस्फोट, फूत्कार, वारण ।
		स्फा
१४	१५	वृद्धि, फेरव ।
		स्फू
१४	१५	स्फुट, फुल्ल, भाषा ।
		स्य
४	१८	प्रशस्य, अमराधिप ।
२५	११४	प्रहार, काल, स्पर्श, अव-खण्डन ।
		स्या
४	१९	कृषि, कृषिदेव ।
४	२५	सस्य, कास्य ।
		स्र
४	१००	शर, सरमाभर्तृ, भवत, अभासुर, भासुर ।
		स्रा
४	१०१	शिवा, अभयपत्री, अभय-पत्नी, भवता, ब्रह्मसुता ।
		स्रं
४	१०१	श्रेष्ठ, शारद, वस्तु, वदन, वरुणातन ।
		स्म
१९	२६	अतीत, पादपूरण ।
२६	१५	अतीत, पादपूरण ।
		स्ल
४	४७	षट्पद, बाण, नर, अमर, दैत्य, राक्षस्, गरुड, अरुण ।
		स्ला
४	४७	सरमा ।

कोषांक	श्लोकांक	
		स्लं
४	४७	शूल, असुख, पा० ३ ससुख ।
		स्रुक्
२	७०	जटा, पूरण, होमाङ्ग, गति ।
६	६३	जटा, प्राप्तरण, द्योमार्ग, गति ।
		स्रु
१४	२२	स्रव, निर्झर ।
१७	२१	स्रव, निर्झर ।
१९	३०	निर्झर, स्रव ।
		स्रू
७	१३	स्रव, निर्झर ।
२६	१७	स्रव, निर्झर ।
		स्व
२	७४	धन, ज्ञाति, आत्मीय, आत्मन् ।
४	४१	निज, भगवान्, विष्णु, भक्त, भासुर ।
५	१२७	स्वात्मन्, ज्ञाति, धन, स्वकीय ।
६	६५	धन, ज्ञाति, आत्मीय, आत्मन् ।
७	१४	ज्ञाति, आत्मन्, निज, धन ।
१०	४०	ज्ञाति, आत्मन् ।
१४	२५	ज्ञाति, आत्मन्, आत्मीय, धन ।
१५	४२	ज्ञाति, आत्मन् ।
१७	२३	ज्ञाति, आत्मन्, धन, आत्मीय ।
१९	३६	आत्मन्, ज्ञाति, आत्मीय, धन ।
२५	१४३	आत्मन्, धन, ज्ञाति, तद्ब्रह्मन्, गुणत्रय ।

कोषांक	श्लोकांक	
		स्वा
४	४१	स्वकीया, योषित्, गौरी, शक्ति, परेश्वरी ।
		स्वं
४	४२	गृह, धन, आयुष्य, पुण्य, पाप्मन्, गति, सुख ।
७	१४	निज, धन ।
१०	४१	निज, द्रविण ।
१४	२५	आत्मीय, धन ।
१५	४२	निज, अर्थ ।
२६	१९	ज्ञाति, आत्मन्, धन, आत्मीय
		स्वर् स्वः
		आत्मीय ।
२	७४	स्वर्ग, परलोक ।
५	१२८	त्रिविष्टप, उषा ।
६	६६	त्रिदिव ।
१०	४०	स्वर्ग, भद्र, परलोकगति ।
१५	४२	स्वर्ग, परलोक ।
२५	१४२	स्वर्ग, परलोक ।
		ह
१	११५	हीर, हार, हरि, पा० ५ हर ।
२	८०,८१	शङ्कर, हर, हंस, रण, रोमाञ्च, वाजिन्, गर्भ, प्रचेतस् ।
३	९५	हर्ष, हिरण्याक्ष, तस्कर ।
५	११५,११६, ११७,११९	जनन, हरिणी, हरि, सिंह, ईश्वर, सावशेष, रेणु, रोचन, वाजिन्, अङ्गी-करण, क्षणित, मणि-रोचिस्, धारणि(णी)
६	७३,७४	शङ्कर, हरि, हंस, रण, रोमाञ्च, वाजिन्, गर्व, प्रचेतस् ।

कोषांक	श्लोकांक	
८	४५	शूलिन्, कर, नीर, क्रोध, गर्भप्रभाषण, निवास, सम्बुद्धि, पादपूरण।
९	३४	शिव।
१०	४१,४२	वीर, रुद्र, भयङ्कर, सम्बुद्धि, पादपूर्त्ति।
११	४४,४६	कोप, रण, शूल, निपात, बोध, हस्त, दारु, शूलिन्।
१२	३६	कोप, वारण, पा० २ धारण, शूलिन्।
१३	२०	निपात, हस्त, दारु, शूलिन्।
१४	२८	सरोषवारण, हीर।
१५	४२,४३	शिव, कर, वीर, भयङ्कर, सम्बुद्धि, पादपूरण।
१६	२४	शूलिन्।
१८	४८	सदाशिव, धूम्र, ज्ञानार्थसिद्धिद, अणिमाद्यष्टसिद्धि, चतुःषष्ठिकला।
१९	४०,४१	शिव, सलिल, शून्य, धारण, मङ्गल, गगन, नकुलीश, रक्त, नाक, सम्बोधन, पादपूरण, विनिग्रह, नियोग, क्षिपा, कुत्सा।
२०	५१	नभस्, वराह, नकुल, ह्रद, वामपदस्थित, सदाशिव, अव्रणप्राण, हयानन।
२	४५	हास्यरस, चतुर्मुख, राजहंस, वीणाक्वणित, शोणमणिरुचि, पा० ७ शाक, मणिरुचि, रोमाञ्च।
२२	१५	काम, शूर, गमन।
२३	३६	हर।
२४	३१	सत्कारवारण, शूलिन्।

कोषांक	श्लोकांक	
२५	१४३,१४४	शङ्कर, हरि, हार, हरण, पुलक, भट, मानविशेष, मन्यु, नदीतीर, भयङ्कर, हर्ष, वायुपुत्र, सम्बुद्धि, पादपूरण, गज, प्रचेतस्।
२६	२१	सम्बोधन, पादपूरण, शिव।

हा

२	८१,८२	त्याग, गति, वीणा, परिदेवन।
३	९५	गन्धर्व।
५	११६,११८	त्यजन, गति, वीणा, उपमा, हास्य, कुष्ट, शोक, आर्त्ति, सर्जन।
६	७४	त्याग, गति, वीणा।
८	४६	शोक, दुःख, विषाद।
९	३५	गर्ता।
१०	४२	दुःख, शुग्, विषाद।
११	४५	कष्ट।
१५	४३	शुग्, दुःख, विषाद।
१९	४२	विषाद, शोक, कुत्सा, दुःख।
२५	१४५,१४६, १४८	त्याग, गीत, बाण, हास्य, विषाद, विस्मय, प्रोन्मत्त, हास्य।
२६	२२	विषाद, शोक, दुःख।

हाहा

५	११९	गन्धर्व, दैत्याद्भुत, भेद।
५	१२०	दैत्य, भूत, भेद।
२६	२४	दुखः।

हाह

५	११९	सम्बोधन।

हि

२	८३	हेतु, अवधारण।

कोषांक	श्लोकांक	
३	६५	सर्प ।
५	११६	हित, प्रसिद्ध ।
८	४६	हेतु, पादपूर्त्ति, विशेष, अवधारण, स्फुट, दान ।
९	३५	छेद, पाद्याचरण, हेतु, अवधारण ।
१०	४३	हेतु, पादपूर्त्ति ।
११	४४	हेतु, वितरण, पा० १ विवरण, अवधारण ।
१२	३६	पद्यावरण, हेतु, अवधारण ।
१४	२८	ईश, आत्मज ।
१५	४४	हेतु, पादपूर्त्ति, विशेष, अवधार ।
१६	४२,४३	पादपूरण, हेतु, विशेष, अवधारण, प्रश्न, अपदेश, सम्भ्रम, असूया ।
२५	१४५	हेतु, पादपूर्त्ति, विशेष, अवधारण ।
२६	२२	पादपूरण, हेतु, विशेष, अवधारण ।
		ही
२	८३	विस्मय विषाद ।
३	६५	नर, हर्षवत्, मृग ।
५	११७	अब्रह्मण्य, शास्त्र, आमन्त्रण, सुख, विशेषण ।
८	४७	दुःख, हेतु, विस्मय, विषाद ।
१०	४२	विस्मय, विषाद ।
१५	४३	विषाद, विस्मय, दुःख, हेतु ।
१६	४३	दुःख, हेतु, विषाद, विस्मय ।
२३	३६	विचित्र ।

कोषांक	श्लोकांक	
२५	१४६	हेतु, वह्नि, स्वल्प, परप्रश्न, वितर्क ।
२६	२३	दुःख, हेतु, विस्मय, विषाद ।
		हु
३	९६	नघुष, पा० २ नहुष ।
८	४८	परिप्रश्न, वितर्क ।
२५	१४८	परिप्रश्न, वितर्क ।
		हुहु
२६	२४	गन्धर्व, हर्ष ।
		हुं
२	८३	वितर्क, परिप्रश्न, न्यास, भय, दान ।
११	४५	प्रश्न, होम ।
१५	४८	परप्रश्न, वितर्क, स्वप्न ।
२६	२३	वितर्क, परिप्रश्न, रुषोक्ति, अनुनीति ।
		हू
३	९६	विप्र ।
२५	१४९	सम्बोधन ।
५	१४९	गन्धर्व ।
		हे
३	९३	प्रसादकृत् ।
५	११८	सम्बोधन ।
८	४८	कुत्सा, हूति, सम्बोधन ।
१०	४३	सम्बुद्धि ।
११	४५	सम्बोधन ।
१५	४५	हूति, सम्बुद्धि ।
१६	४४	सम्बोधन, आह्वान, असूयादि ।
२३	३६	सम्बोधन ।
२५	१४७,१४९	हेतु, सम्बुद्धि, कुत्सा ।
२६	२४	व्यस्ति, समस्ति, हूति, सम्बोधन, अनर्थ ।
		है
३	९६	हास ।

कोषांक	श्लोकांक	
११	४५	कष्ट ।
१९	४४	सम्बोधन, आह्वान ।
२५	१४९	सम्बोधन ।
२६	२४	व्यस्ति, समस्ति, हूति, सम्बोधन, अनर्थ ।

हो

३	९६	सम्बुद्धि ।
१९	४४	सम्बोधन, आह्वान ।
२६	२५	एवंविधि, सम्बुद्धि, आह्वान ।

हौ

१	११५	त्याग, चरण, व्याधि ।
३	९६	विरञ्चि, षडानन ।
८	४८	वचन, हूति, सम्बोधन ।
१९	४४	सम्बोधन, आह्वान ।
२५	१४८,१४९	पवन, सम्बोधन ।
२६	२५	एवंविधि, सम्बुद्धि, आह्वान ।

हं

१	११५	हर्ष, हिंसा ।
२	८१	अस्त्र, सुख, क्वणित, मणिरोचिस्, परब्रह्मन्, आमन्त्रण, उन्मत्त, हास्य, हेतु, सम्बोधन ।
३	९७	चौर्य, हरण, पूर्ण, भासुर, भरण, भर ।
६	७४,७५	अस्त्र, सुख, क्वणित, मणिरोचिस्, परब्रह्मन्, आमन्त्रण, उन्मत्त, हास ।
८	४७	अनुनय, कोपभाषण ।
१०	४२,४३	स्वाप, प्रश्न, वितर्क, खेद, क्रोधोक्ति, संस्मृति ।

कोषांक	श्लोकांक	
११	४५	परब्रह्मलक्षण ।
१५	४५	खेद, रोषभाषण, संस्मृति ।
२५	१४७	खेद, रोषभाषण, अस्त्र, सुख, क्वणित, मणिरोचिस्, परब्रह्मन्, आमन्त्रण ।

हः

३	९७	हर्ष, हिरण्याक्ष, तस्कर ।

लं

१८	४९	पृथिवीबीज, शाम, सिद्धिकर, पर, दोषराशिसंहेरत्,
१८	४९	भूद्रव्यदर्शन ।
२०	५२	हृदयान्नाभिसंस्थान, शिवेश, विमल, असित, लघुप्रयत्न, उपान्त्य ।

ह्य

४	१९	हय ।
५	१२९	गतदिवस ।

ह्या

४	१९	तुरङ्गमा ।

ह्यं

४	२५	हस्तिवदन, गृह ।

ह्र

४	१०२	हर, हरिण, हार, हरि, हाहा, हुहु, हय, हर्ष, हंस, अहर्, उद्धर्ष, हास, हस्तिन्, नाहुष ।

ह्रा

४	१०३	गौरी, हरिणी, हंसी, हर्षयुक्ता, हस्तिनी, देवयानी, शर्मिष्ठा ।

कोषांक	श्लोकांक	
		ह्रं
४	१०३	चौर्य, चर, गर।
		ह्री
५	१२६	व्रीडा।
१४	२२	व्रीडा, लज्जित।
१७	२०	लज्जा।

कोषांक	श्लोकांक	
		ह्व
४	४२	प्रह्व, शतजिह्व।
		ह्वा
४	४२	जिह्वा, तरुणी, सरित्।
		ह्वं
४	४३	वायुगमन, क्ष्वेडा।

शब्द-सूची

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
१	अ	३४	कू	६७	क्नु	१००	क्षै
२	अज्ञ	३५	के	६८	क्नू	१०१	क्षो
३	अंश	३६	कै	६९	क्नं	१०२	क्षौ
४	आ	३७	को	७०	क्म	१०३	क्षं
५	आङ् (अ०)	३८	कौ	७१	क्मा	१०४	क्षः
६	आम् (अ०)	३९	कं	७२	क्मि	१०५	क्ष्मा
७	इ	४०	कः	७३	क्मी	१०६	क्ष्या
८	ई	४१	क्ण	७४	क्मु	१०७	क्ष्यं
९	उ	४२	क्णा	७५	क्मू	१०८	क्ष्र
१०	उं (अ०)	४३	क्णि	७६	क्मौ	१०९	क्ष्रा
११	ऊ	४४	क्णु	७७	क्मं	११०	क्ष्रं
१२	ऊं (अ०)	४५	क्णू	७८	क्य	१११	क्ष्ल
१३	ऋ	४६	क्णौ	७९	क्या	११२	क्ष्ला
१४	ॠ	४७	क्णं	८०	क्यं	११३	क्ष्लं
१५	ऌ	४८	क्त	८१	क्र	११४	क्ष्व
१६	ॡ	४९	क्ता	८२	क्रा	११५	क्ष्वा
१७	ए	५०	क्ति	८३	क्री	११६	क्ष्वं
१८	ऐ	५१	क्ती	८४	क्रं	११७	ख
१९	ऐं	५२	क्तु	८५	क्रू	११८	खा
२०	ओ	५३	क्तौ	८६	क्रैं	११९	खि
२१	ओं	५४	क्तं	८७	क्ल	१२०	खी
२२	औ	५५	क्थ	८८	क्ला	१२१	खु
२३	अं	५६	क्था	८९	क्लं	१२२	खू
२४	अः	५७	क्थि	९०	क्व	१२३	खे
२५	क	५८	क्थी	९१	क्वा	१२४	खै
२६	का	५९	क्थु	९२	क्वं	१२५	खो
२७	कां	६०	क्थू	९३	क्ष	१२६	खौ
२८	काकु	६१	क्थे	९४	क्षा	१२७	खं
२९	कि	६२	क्थौ	९५	क्षि	१२८	खः
३०	किं	६३	क्थं	९६	क्षी	१२९	ख्य
३१	की	६४	क्न	९७	क्षु	१३०	ख्या
३२	कु	६५	क्ना	९८	क्षू	१३१	ख्यं
३३	कुं	६६	क्नि	९९	क्षे	१३२	ख्र

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
१३३	ख्रा	१६८	घू	२०३	ङ्रा	२३८	छ्या
१३४	ख्रं	१६९	घे	२०४	ङ्रं	२३९	छ्यं
१३५	ख्ल	१७०	घै	२०५	च	२४०	छ्र
१३६	ख्ला	१७१	घो	२०६	चञ्चु	२४१	छ्रा
१३७	ग	१७२	घौ	२०७	चा	२४२	छ्रं
१३८	गां	१७३	घं	२०८	चि	२४३	छ्ल
१३९	गि	१७४	घः	२०९	चिञ्चा	२४४	छ्ला
१४०	गी	१७५	घ्न	२१०	ची	२४५	छ्लं
१४१	गु	१७६	घ्ना	२११	चु	२४६	छ्व
१४२	गू	१७७	घ्नं	२१२	चू	२४७	छ्वा
१४३	गे	१७८	घ्य	२१३	चे	२४८	छ्वं
१४४	गै	१७९	घ्या	२१४	चै	२४९	ज
१४५	गो	१८०	घ्यं	२१५	चो	२५०	जा
१४६	गौ	१८१	घ्र	२१६	चौ	२५१	जि
१४७	गं	१८२	घ्रा	२१७	चं	२५२	जी
१४८	गङ्गा	१८३	घ्रं	२१८	चः	२५३	जु
१४९	गः	१८४	घ्ल	२१९	च्य	२५४	जू
१५०	ग्य	१८५	घ्ला	२२०	च्या	२५५	जृ
१५१	ग्या	१८६	घ्लं	२२१	च्यं	२५६	जॄ
१५२	ग्यं	१८७	घ्व	२२२	च्र	२५७	जे
१५३	ग्र	१८८	घ्वा	२२३	च्रा	२५८	जै
१५४	ग्रा	१८९	घ्वं	२२४	च्रं	२५९	जो
१५५	ग्रं	१९०	ङ	२२५	छ	२६०	जौ
१५६	ग्ल	१९१	ङा	२२६	छा	२६१	जं
१५७	ग्ला	१९२	ङि	२२७	छि	२६२	जः
१५८	ग्लो	१९३	ङी	२२८	छी	२६३	ज्ञ
१५९	ग्लं	१९४	ङु	२२९	छु	२६४	ज्ञा
१६०	ग्व	१९५	ङू	२३०	छू	२६५	ज्य
१६१	ग्वा	१९६	ङे	२३१	छे	२६६	ज्या
१६२	ग्वं	१९७	ङै	२३२	छै	२६७	ज्यं
१६३	घ	१९८	ङो	२३३	छो	२६८	ज्रं
१६४	घा	१९९	ङौ	२३४	छौ	२६९	ज्रा
१६५	घि	२००	ङं	२३५	छं	२७०	ज्रं
१६६	घी	२०१	ङः	२३६	छः	२७१	ज्व
१६७	घु	२०२	ङ्र	२३७	छ्य	२७२	ज्वा

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
२७३	ज्वं	३०८	ञ्रा	३४३	ठ्य	३७८	ढे
२७४	झ	३०९	ञ्रं	३४४	ठ्या	३७९	ढै
२७५	झा	३१०	ट	३४५	ठ्यं	३८०	ढो
२७६	झि	३११	टा	३४६	ठ्रं	३८१	ढौ
२७७	झी	३१२	टि	३४७	ठ्रा	३८२	ढं
२७८	झु	३१३	टी	३४८	ठ्व	३८३	ढः
२७९	झू	३१४	टु	३४९	ठ्वा	३८४	ढ्य
२८०	झे	३१५	टू	३५०	ठ्वं	३८५	ढ्या
२८१	झै	३१६	टे	३५१	ड	३८६	ढ्यं
२८२	झो	३१७	टै	३५२	डा	३८७	ढ्र
२८३	झौ	३१८	टो	३५३	डि	३८८	ढ्रा
२८४	झं	३१९	टौ	३५४	डी	३८९	ढ्रं
२८५	झः	३२०	टं	३५५	डु	३९०	ढ्ल
२८६	झ्य	३२१	टः	३५६	डू	३९१	ढ्ला
२८७	झ्या	३२२	ट्य	३५७	डे	३९२	ढ्लि
२८८	झ्यं	३२३	ट्या	३५८	डै	३९३	ढ्लं
२८९	झ्र	३२४	ट्यं	३५९	डो	३९४	ढ्व
२९०	झ्रा	३२५	ट्र	३६०	डौ	३९५	ढ्वा
२९१	झ्रं	३२६	ट्रा	३६१	डं	३९६	ढ्वं
२९२	झ्व	३२७	ट्रं	३६२	डः	३९७	ण
२९३	झ्वा	३२८	ट्व	३६३	ड्य	३९८	णा
२९४	झ्वं	३२९	ट्वा	३६४	ड्या	३९९	णि
२९५	ञ	३३०	ट्वं	३६५	ड्यं	४००	णी
२९६	ञा	३३१	ठ	३६६	ड्र	४०१	णु
२९७	ञि	३३२	ठा	३६७	ड्रा	४०२	णू
२९८	ञी	३३३	ठि	३६८	ड्रं	४०३	णे
२९९	ञु	३३४	ठी	३६९	ड्व	४०४	णै
३००	ञू	३३५	ठु	३७०	ड्वा	४०५	णो
३०१	ञे	३३६	ठू	३७१	ड्वं	४०६	णौ
३०२	ञै	३३७	ठे	३७२	ढ	४०७	णं
३०३	ञो	३३८	ठै	३७३	ढा	४०८	ण्य
३०४	ञौ	३३९	ठो	३७४	ढि	४०९	ण्या
३०५	ञं	३४०	ठौ	३७५	ढी	४१०	ण्यं
३०६	ञः	३४१	ठं	३७६	ढु	४११	ण्र
३०७	ञ्र	३४२	ठः	३७७	ढू	४१२	ण्रा

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
४१३	णूं	४४९	था	४८४	द्या	५१९	ध्रु
४१४	ण्व	४५०	थि	४८५	द्यु	५२०	ध्रं
४१५	ण्वा	४५१	थी	४८६	द्यौ	५२१	ध्व
४१६	ण्वं	४५२	थु	४८७	द्यं	५२२	ध्वा
४१७	त	४५३	थू	४८८	द्र	५२३	ध्वं
४१८	तत्	४५४	थे	४८९	द्रा	५२४	न
४१९	तत	४५५	थै	४९०	द्रु	५२५	ना
४२०	तति	४५६	थो	४९१	द्रं	५२६	नि
४२१	तन्तु	४५७	थौ	४९२	द्व	५२७	निर्
४२२	ता	४५८	थं	४९३	द्वा	५२८	नी
४२३	तात	४५९	थः	४९४	द्वार्	५२९	नु
४२४	ति	४६०	थ्य	४९५	द्वं	५३०	नुन्न
४२५	ती	४६१	थ्या	४९६	द्वि	५३१	नू
४२६	तु	४६२	थ्यं	४९७	ध	५३२	नूनं
४२७	तुं	४६३	थ्र	४९८	धा	५३३	नृ
४२८	तू	४६४	थ्रा	४९९	धि	५३४	ने
४२९	ते	४६५	थ्रं	५००	धिक्	५३५	नै
४३०	तै	४६६	थ्व	५०१	धी	५३६	नो
४३१	तो	४६७	थ्वा	५०२	धु	५३७	नौ
४३२	तौ	४६८	थ्वं	५०३	धू	५३८	नं
४३३	तं	४६९	द	५०४	धृ	५३९	नः
४३४	तः	४७०	दा	५०५	धे	५४०	न्यग्
४३५	त्य	४७१	दि	५०६	धै	५४१	न्य
४३६	त्या	४७२	दिवि	५०७	धो	५४२	न्या
४३७	त्यं	४७३	दी	५०८	धौ	५४३	न्यं
४३८	त्र	४७४	दु	५०९	धं	५४४	न्र
४३९	त्रा	४७५	दू	५१०	धः	५४५	न्रा
४४०	त्रं	४७६	दृक्	५११	ध्न	५४६	न्रं
४४१	त्रि	४७७	दे	५१२	ध्ना	५४७	न्व
४४२	तृट्	४७८	दै	५१३	ध्नं	५४८	न्वा
४४३	त्व	४७९	दोस्	५१४	ध्य	५४९	न्वं
४४४	त्वा	४८०	दो	५१५	ध्या	५५०	प
४४५	त्वं	४८१	दं	५१६	ध्यं	५५१	पा
४४६	त्वक्	४८२	दः	५१७	ध्र	५५२	पाप
४४७	त्विट्	४८३	द्य	५१८	ध्रा	५५३	पि
४४८	थ						

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
५५४	पी	५८९	फ्य	६२४	भी	६५९	म्या
५५५	पु	५९०	फ्या	६२५	भु	६६०	म्यं
५५६	पुं	५९१	फ्यं	६२६	भू	६६१	म्र
५५७	पू	५९२	फ्र	६२७	भे	६६२	म्रा
५५८	पे	५९३	फ्रा	६२८	भै	६६३	म्रं
५५९	पै	५९४	फ्रं	६२९	भो	६६४	म्व
५६०	पो	५९५	फ्लं	६३०	भोभों	६६५	म्वा
५६१	पौ	५९६	ब	६३१	भौ	६६६	म्वं
५६२	पं	५९७	बा	६३२	भं	६६७	य
५६३	पंपा	५९८	बाग्	६३३	भः	६६८	यत्
५६४	पः	५९९	बि	६३४	भ्य	६६९	यदु
५६५	प्य	६००	बिट्	६३५	भ्या	६७०	या
५६६	प्या	६०१	बी	६३६	भ्यं	६७१	यायी
५६७	प्यं	६०२	बे	६३७	भ्र	६७२	यि
५६८	प्र	६०३	बै	६३८	भ्रा	६७३	यी
५६९	प्रप	६०४	बो	६३९	भ्रं	६७४	यु
५७०	प्रा	६०५	बौ	६४०	भ्व	६७५	यू
५७१	प्रं	६०६	बं	६४१	भ्वा	६७६	ये
५७२	प्ल	६०७	बः	६४२	भ्वं	६७७	यै
५७३	प्ला	६०८	ब्य	६४३	म	६७८	यो
५७४	प्लं	६०९	ब्या	६४४	मा	६७९	यौ
५७५	प्व	६१०	ब्यं	६४५	मास्	६८०	यं
५७६	प्वा	६११	ब्र	६४६	मि	६८१	य्य
५७७	प्वं	६१२	ब्रा	६४७	मी	६८२	य्या
५७८	फ	६१३	ब्रं	६४८	मु	६८३	य्यं
५७९	फा	६१४	ब्ल	६४९	मू	६८४	य्र
५८०	फी	६१५	ब्ला	६५०	मे	६८५	य्रा
५८१	फु	६१६	ब्लं	६५१	मै	६८६	य्रं
५८२	फू	६१७	ब्व	६५२	मो	६८७	य्रि
५८३	फे	६१८	ब्वा	६५३	मौ	६८८	य्व
५८४	फै	६१९	ब्वं	६५४	मं	६८९	य्वा
५८५	फो	६२०	भ	६५५	मः	६९०	य्वं
५८६	फौ	६२१	भा	६५६	म्न	६९१	र
५८७	फं	६२२	भास्	६५७	म्ना	६९२	रा
५८८	फः	६२३	भि	६५८	म्य	६९३	रि

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
६९४	री	७२९	ल्व	७६६	श्य	८०१	षृा
६९५	रु	७३०	ल्वा	७६७	श्या	८०२	षृं
६९६	रुग्	७३१	ल्वं	७६८	श्यं	८०३	स
६९७	रुरु	७३२	व	७६९	श्र	८०४	सत्
६९८	रू	७३३	वा	७७०	श्रा	८०५	सन्
६९९	रे	७३४	वाग्	७७१	श्री	८०६	सा
७००	रै	७३५	वां	७७२	श्रं	८०७	सि
७०१	रो	७३६	वि	७७३	श्ल	८०८	सी
७०२	रौ	७३७	विट्	७७४	श्ला	८०९	सु
७०३	रं	७३८	वी	७७५	श्लं	८१०	सू
७०४	रः	७३९	वु	७७६	श्व	८११	से
७०५	ल	७४०	वू	७७७	श्वा	८१२	सै
७०६	लव	७४१	वे	७७८	श्वं	८१३	सो
७०७	ला	७४२	वै	७७९	ष	८१४	सौ
७०८	लाला	७४३	वो	७८०	षा	८१५	सं
७०९	लि	७४४	वौ	७८१	षि	८१६	सः
७१०	ली	७४५	वं	७८२	षीं	८१७	स्क
७११	लु	७४६	वः	७८३	षु	८१८	स्का
७१२	लू	७४७	व्य	७८४	षू	८१९	स्कं
७१३	ले	७४८	व्या	७८५	षे	८२०	स्त
७१४	लै	७४९	व्यं	७८६	षै	८२१	स्ता
७१५	लो	७५०	व्र	७८७	षो	८२२	स्ति
७१६	लौ	७५१	व्रा	७८८	षौ	८२३	स्तु
७१७	लं	७५२	व्रं	७८९	षं	८२४	स्तू
७१८	लः	७५३	श	७९०	षः	८२५	स्तं
७१९	ल्य	७५४	शा	७९१	ष्ट	८२६	स्त्री
७२०	ल्या	७५५	शि	७९२	ष्टा	८२७	स्न
७२१	ल्यं	७५६	शी	७९३	ष्टि	८२८	स्ना
७२२	लृ	७५७	शु	७९४	ष्टी	८२९	स्नं
७२३	लृा	७५८	शू	७९५	ष्टं	८३०	स्फ
७२४	लृं	७५९	शृ	७९६	ष्ट्र	८३१	स्फा
७२५	ल्ल	७६०	शे	७९७	ष्ट्रृ	८३२	स्फू
७२६	ल्ला	७६१	शै	७९८	ष्य	८३३	स्य
७२७	ल्लं	७६२	शो	७९९	ष्या	८३४	स्या
७२८	ल्ल्या	७६३	शौ	८००	षृ	८३५	स्र
		७६४	शं				
		७६५	शः				

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
८३६	स्रा	८४६	स्वा	८५६	हुहु	८६६	ह्य
८३७	स्रं	८४७	स्वं	८५७	हुं	८६७	ह्या
८३८	स्म	८४८	स्वर् स्वः	८५८	हू	८६८	ह्यं
८३९	स्ल	८४९	ह	८५९	हे	८६९	ह्ल
८४०	स्ला	८५०	हा	८६०	है	८७०	ह्ला
८४१	स्लं	८५१	हाहा	८६१	हो	८७१	ह्लं
८४२	स्रुक्	८५२	हाहो	८६२	हौ	८७२	ह्ली
८४३	स्रु	८५३	हि	८६३	हं	८७३	ह्व
८४४	स्रू	८५४	ही	८६४	हः	८७४	ह्वा
८४५	स्व	८५५	हु	८६५	ळं	८७५	ह्वं

विद्वत्प्रबोधान्तर्गत-एकाक्षरवर्णसूची

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
१	क्ण	२१	ख्य	४१	घ्ल	६१	ज्र
२	क्णा	२२	ख्या	४२	घ्ला	६२	ज्रं
३	क्त	२३	ख्रु	४३	घ्लौ	६३	ज्व
४	क्ता	२४	ख्रा	४४	घ्व	६४	ज्वा
५	क्ति	२५	ख्रं	४५	घ्वी	६५	झ्य
६	क्थ	२६	ख्ल	४६	घ्वं	६६	झ्या
७	क्था	२७	ख्ला	४७	ङ्र	६७	झ्र
८	क्थं	२८	ग्य	४८	ङ्रा	६८	झ्रा
९	क्थेड्	२९	ग्या	४९	च्य	६९	झ्रां
१०	क्थे	३०	ग्य	५०	च्रु	७०	झ्व
११	क्न	३१	ग्ल	५१	च्रा	७१	झ्वा
१२	क्ना	३२	ग्लौ	५२	छ्य	७२	झ्वं
१३	क्नु	३३	ग्व	५३	छ्या	७३	ञ्य
१४	क्म	३४	ग्वा	५४	छ्यं	७४	ञ्या
१५	क्मा	३५	घ्न	५५	छ्र	७५	ञ्र
१६	क्मू	३६	घ्ना	५६	छ्ल	७६	ञ्रा
१७	क्य	३७	घ्य	५७	छ्ला	७७	ट्या
१८	क्व	३८	घ्या	५८	छ्व	७८	ट्र
१९	क्वा	३९	घ्रु	५९	छ्वा	७९	ट्रा
२०	क्वं	४०	घ्रं	६०	ज्य	८०	ट्व

क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द	क्रमांक	शब्द
८१	ट्वा	११७	द्या	१५३	भ्रा	१८९	ष्ट्र
८२	ट्वं	११८	द्यो	१५४	भ्राग्	१९०	ष्ट्रा
८३	ठ्य	११९	द्रा	१५५	भ्ला	१९१	ष्टि
८४	ठ्यं	१२०	द्विट्	१५६	भ्व	१९२	ष्टु
८५	ठ्र	१२१	द्वं	१५७	भ्वा	१९३	ष्ठ
८६	ठ्व	१२२	ध्न	१५८	म्य	१९४	ष्ठा
८७	ड्य	१२३	ध्नं	१५९	म्या	१९५	ष्ठं
८८	ड्यं	१२४	ध्य	१६०	म्र	१९६	स्कन्
८९	ड्र	१२५	ध्रा	१६१	म्व	१९७	स्तप्
९०	ड्व	१२६	ध्व	१६२	म्वा	१९८	स्ति
९१	ड्वा	१२७	न्यक्	१६३	य्य	१९९	स्था
९२	ढ्या	१२८	न्र	१६४	य्या	२००	स्म
९३	ढ्र	१२९	न्व	१६५	य्र	२०१	स्य
९४	ढ्रा	१३०	न्वा	१६६	य्रा	२०२	स्रक्
९५	ढ्रं	१३१	प्य	१६७	य्रि	२०३	स्राक्
९६	ढ्ल	१३२	प्या	१६८	य्व	२०४	स्ल
९७	ढ्ला	१३३	प्र	१६९	य्वा	२०५	स्ला
९८	ढ्लि	१३४	प्राक्	१७०	ल्य	२०६	स्व
९९	ढ्व	१३५	प्री	१७१	ल्या	२०७	स्वर्
१००	ढ्वं	१३६	प्व	१७२	ल्र	२०८	ह्नो
१०१	ण्या	१३७	प्वा	१७३	ल्रा	२०९	ह्य
१०२	ण्र	१३८	फ्य	१७४	ल्ल	२१०	ह्र
१०३	ण्रा	१३९	फ्या	१७५	ल्ला	२११	ह्री
१०४	ण्व	१४०	फ्र	१७६	ल्व	२१२	ह्लत्
१०५	ण्वा	१४१	फ्रा	१७७	ल्वि	२१३	ह्व
१०६	त्य	१४२	फ्ल	१७८	व्रि	२१४	ह्वा
१०७	त्या	१४३	फ्लं	१७९	श्य	२१५	क्ष्णुत्
१०८	त्रा	१४४	ब्य	१८०	श्या	२१६	क्ष्मा
१०९	त्विद्	१४५	ब्र	१८१	श्र	२१७	क्ष्य
११०	थ्य	१४६	ब्रक्	१८२	श्रा	२१८	क्ष्या
१११	थ्या	१४७	ब्ल	१८३	श्र्या	२१९	क्ष्यि
११२	थ्र	१४८	ब्व	१८४	श्व	२२०	क्ष्र
११३	थ्रा	१४९	ब्वा	१८५	ष्य	२२१	क्ष्रा
११४	थ्रं	१५०	भ्य	१८६	ष्या	२२२	क्ष्रं
११५	थ्व	१५१	भ्या	१८७	ष्र	२२३	क्ष्वि
११६	थ्वा	१५२	भ्यः	१८८	ष्रा	२२४	क्ष्वेद्